आधुनिक राजस्थानी

का

संरचनात्मक व्याकरण

काली चरण बहल
शिकागो विश्वविद्यालय

भाषा अन्वेषण सहायक

डा. सोहनदान चारण
जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर

श्री नारायणसिंह साधू
राजस्थान संगीत नाटक अकेडेमी, जोधपुर

राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर
(जोधपुर विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त शोध केन्द्र)

प्रकाशक
चौपासनी शिक्षा समिति द्वारा संस्थापित
राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी
जोधपुर

मूल्य २५ रुपये

सन १९८०

मुद्रक
एम० एल० प्रिन्टर्स
जोधपुर, राजस्थान (भारत)

A STRUCTURAL GRAMMAR

OF

MODERN RAJASTHANI

KALI CHARAN BAHL
The University of Chicago

Research Assistants

Dr SOHAN DAN CHARAN
Jodhpur University, Jodhpur

Sh NARAYAN SINGH SANDHU
Rajasthan Sangeet Natak Academy, Jodhpur

Rajasthani Shodh Sansthan, Chopasni, Jodhpur
Research Centre Recognised by University of Jodhpur Jodhpur (India)

Publishers
Rajasthani Research Institute
Chopasni Jodhpur
Established by the Chopasni Shiksha Samiti

Price Rupees 25

1980

Printed at
M L Printers
Jodhpur Rajasthan (India)

निदेशकीय

राजस्थानी भाषा के बृहत् शब्द कोश के प्रकाशन के साथ हमारी यह इच्छा थी कि इस भाषा का सांगोपांग व्याकरण भी प्रकाशित किया जाना चाहिए। संयोग से गत वर्ष ही बृहत् राजस्थानी शब्द कोश का प्रकाशन कार्य सम्पूर्ण हुआ और इसी वर्ष हमने डा. कालीचरण बहल द्वारा रचित 'आधुनिक राजस्थानी का संरचनात्मक व्याकरण' प्रकाशित करने का विचार किया। राजस्थानी भाषा के व्याकरण लिखने के प्रयास पहले भी होते रहे हैं और उन सब का अध्ययन कर डा. बहल ने एक भाषण सन् १९७२ में संस्थान में दिया था जिससे उन प्रयासों की विशेषताओं और कमियों की ओर इंगित किया गया था।

डा. बहल ने राजस्थानी व्याकरण के अध्ययन का कार्य शिकागो विश्वविद्यालय के तत्वावधान में यहां सन् ७०-७१ में प्रारंभ किया था, और लगभग एक दशक के परिश्रम के फलस्वरूप यह संरचनात्मक व्याकरण इन्होंने प्रस्तुत किया है। इन्होंने मूल कार्य अंग्रेजी के माध्यम से किया था परन्तु हमारे अनुरोध पर उस सामग्री का प्रयोग करते हुए दुबारा उसे हिन्दी में लिखा है, इससे भाषा विज्ञान के विद्यार्थियों के लिये यह और अधिक उपयोगी बन गया है। वैसे यह राजस्थानी का संरचनात्मक व्याकरण है परन्तु विषय को ऐसे पारम्परिक ढांचे में प्रस्तुत किया गया है कि उसे समझने में बड़ी सहूलियत होती है। इस व्याकरण का अध्ययन करने पर ही इसकी विशेषताओं पर विद्वान विचार कर सकेंगे परन्तु भाषा की अभिव्यंजक संरचना तथा अभिव्यंजक संरचना का जो पार्थक्य इसमें दिखलाया गया है वह भारतीय भाषाओं की व्याकरण परम्परा में अपनी किस्म का सर्वप्रथम प्रयास कहा जा सकता है। पूरे व्याकरण के अध्ययन के पश्चात इस सशक्त भाषा की जो अभिव्यक्तिगत खूबियां हैं उन पर विचार करने के लिये विद्वान प्रेरित होंगे।

हम आशा करते हैं कि इस भाषा के रूपान्तरों की व्याकरणिक विशेषताओं के विषय में किये गये अपने प्रयास को डा. बहल और आगे बढ़ायेंगे।

नारायणसिंह भाटी
निदेशक
राजस्थानी शोध संस्थान
चौपासनी, जोधपुर

भूमिका

आधुनिक राजस्थानी (= आ० राजस्थानी) व्याकरण पर लेखक का कार्य अमरिकन इन्स्टीच्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज द्वारा प्रदत्त शोधवृत्ति से सन् १९७०-७१ में प्रारम्भ हुआ। यह शोधवृत्ति स्मिथसोनियन इन्स्टीच्यूशन, वाशिंगटन डी सी से प्राप्त अनुदान पर आधारित थी। आ० राजस्थानी से लेखक का अभिप्राय भाषा के उस परिनिष्ठित रूप से है जो कि सामान्यत जोधपुर और बीकानेर मे प्रचलित है। इस शोधकार्य के प्रारम्भिक परिणामो का प्रकाशन लेखक के "आधुनिक राजस्थानी व्याकरण की वर्तमान अवस्था" शीर्षक निबन्ध द्वारा हुआ था। यह निबन्ध राजस्थानी शोध सस्थान, चौपासनी द्वारा सन् १९७२ मे प्रकाशित हुआ था। प्रारम्भ मे लेखक इस उद्देश्य को लकर चला कि आ० राजस्थानी का व्याकरण अग्रेजी मे ही लिखा जाकर प्रकाशित हो। इस उद्देश्य के आधार पर लेखक ने इस भाषा के व्याकरण की रचना की, किन्तु वह व्याकरण अंग्रेजी म लिखा होने और आकार म बडा होने के कारण राजस्थान मे प्रकाशित करना अनुपयुक्त था।

अंग्रेजी मे आ० राजस्थानी व्याकरण लेखन के कार्य मे लगा हुआ परिश्रम और समय व्यर्थ नही गया। लेखक ने इस अवसर का उपयोग भाषा की व्याकरणिक अर्थतात्विक सरचना को अधिक गहराई मे समझने के लिए किया। इस प्रयास द्वारा उसे भारतीय आर्य परिवार की अन्य भाषाओ की सरचनात्मक विशेषताओ के विषय मे बहुत कुछ सीखने का सुयोग भी मिला। इसी बीच मे आ० राजस्थानी पर कार्य करने क सुअवसर से प्राप्त अनुभव का प्रयोग लेखक ने आधुनिक हिन्दी भाषा के वृहत् व्याकरण को तैयार करने मे किया, और उस व्याकरण को हिन्दी मे लिखा। इस प्रकार आ०राजस्थानी और आधुनिक हिन्दी व्याकरणो की रचना करने के इस द्विविध सयोग से प्राप्त परिणामो मे प्रेरणा लेकर लेखक आ० राजस्थानी के सरचनात्मक व्याकरण की हिन्दी मे ही सागोपाग रूप से पुनर्रचना के कार्य मे लग गया। व्याकरण के पुनर्लेखन मे इस बात का ध्यान भी रखा गया है कि पुस्तक का आकार और रूप ऐसा हो कि उसे प्रकाशित करने मे किसी प्रकार की असुविधा की सभावना कम-से-कम हो। इस प्रकार आ० राजस्थानी का सरचनात्मक व्याकरण अपने प्रस्तुत रूप मे अपने पूर्व-वर्णित रूप पर आधारित तो है, किन्तु पूर्णतया फिर से लिखा गया है। साथ ही साथ इसमे पूर्ववर्णित द्विविध प्रयास म प्राप्त परिणामो और अनुभवो का भी समावेश है।

प्रस्तुत व्याकरण की मुख्य विशेषता यह है कि इसमे आ० राजस्थानी की व्याकरणिक-अर्थतात्विक सरचना का विवरण इस प्रकार से किया गया है जिसमे भाषा-विज्ञान से सुपरिचित जिज्ञासु का भी परितोष हो और साथ ही साथ सामान्य रूप मे भाषा सीखने के उद्देश्य से इसका प्रयोग करने वाले को आधुनिक भाषा-विज्ञान की विशिष्टीकृत पारिभाषिक शब्दावली तथा इसी प्रकार के अन्य विवरणो का भार वहन न करना पड़े। इस प्रकार इस व्याकरण मे सरचनात्मक और "पारम्परिक" व्याकरणो की विवरण विधियो का समुचित सयोग है। इस व्याकरण की अन्य मुख्य देन है इसमे भाषा की अभिसनक और अभिव्यजक

संरचनाओं के पार्थक्य की स्थापना। दक्षिण-एशियाई भाषाओं की व्याकरण परम्परा में किसी भी भाषा के सांगोपांग व्याकरणिक-अर्थतात्विक विवरण में उपर्युक्त स्थापना को यथायोग्य स्थान देने का यह सर्वप्रथम प्रयत्न है।

प्रस्तुत व्याकरण के एक पूर्व रूप में आ० राजस्थानी के प्रादेशिक रूपान्तरों (अथवा बोलियों) का विवरण एक अध्याय में किया गया था। बाद में यह निर्णय किया गया कि इस विवरण को व्यवस्थित रूप से कहीं अन्य प्रकाशित किया जाय। किन्तु यहाँ मात्र यह कह देना पर्याप्त होगा कि आ० राजस्थानी के प्रादेशिक रूपान्तरों पर लेखक द्वारा किए कार्य से यह प्रतीत होता है कि भाषा के प्रादेशिक रूपान्तर नागौर जिले की ओर अपने केन्द्रीय अथवा साम्य स्थल के रूप में इंगित कर रहे हैं।

भाषा की स्वनिमिक संरचना का विवरण, यद्यपि मथानिया और बाम्दा की बोलियों पर आधारित है, तो भी यह विवरण जोधपुर और बीकानेर में प्रचलित रूपान्तरों तथा अन्य रूपान्तरों (जिनका अध्ययन लेखक ने किया है) पर भी लागू होता है। व्याकरण के अन्य अध्यायों में आ० राजस्थानी के गद्य-लेखकों के ग्रंथों का उपयोग किया गया है। इन ग्रंथों के उद्धरण जिन्हें उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत किया गया है, भाषा के लिखित रूप पर आधारित हैं। साथ ही यह भी प्रयत्न किया गया है कि उदाहरणों में कम से-कम परिवर्तन करना पड़े। इस पुस्तक में दिये गये उदाहरणों के चयन में लेखक का मात्र उद्देश्य यही रहा है कि वे यथासम्भव सरल हों और स्पष्ट रूप से समझ में आने योग्य।

इस कार्य के लिए लेखक अपने अन्वेषण सहायकों, मित्रों, शुभेच्छुओं तथा आ० राजस्थानी के गद्य-लेखकों का आभारी है।

लेखक डा० नारायणसिंह भाटी, निदेशक, राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी के प्रति आभार प्रदर्शन करता है। उन्होंने पुस्तक को हिन्दी में प्रकाशित करने की स्वीकृति देकर, पुस्तक लेखन में यथेष्ट प्रेरणा प्रदान की है। श्री जगदीश ललवानी, एम एल प्रिन्टर्स ने व्याकरण की सुन्दर छपाई आदि के कार्य में विशेष सहयोग दिया है। श्री मुरली मनोहर माथुर ने भी इस कार्य में बहुत सहायता की है।

कालीचरण बहल
शिकागो विश्वविद्यालय

PREFACE

The work for the preparation of a grammar of modern Rajasthani, based on the standard form of the language current in Jodhpur and Bikaner, was begun in the year 1970 71 under a fellowship granted to the author by the American Institute of Indian Studies and funded by the Smithsonian Institution, Washington, D C Preliminary results of this research work were reported in 1972 in a monograph entitled *On the present state of modern Rajasthani grammar* published by the Rajasthani Research Institute Chopasni, district Jodhpur It was the aim of the author to prepare and publish a structural description of the language written in English This endeavor led to the preparation of a pre final draft of the work which, because of its being written in English and its size, was unsuitable for publication in Rajasthan

However, this endeavor was not entirely fruitless It gave the author an opportunity to dig deeper into the grammatico-semantic structure of modern Rajasthani and learn a great deal more about the structural properties of other modern Indo-Aryan languages as well Equipped with the experience gained in working on Rajasthani, the author had an opportunity to prepare an extensive treatment of modern standard Hindi written in Hindi Encouraged by the results achieved thus far prompted the author to re undertake the work on the preparation of Ādhunika Rājasthānī kā samracanātmaka vyākarana *(A structural grammar of modern Rajasthani)* in Hindi and in a size that should not be too difficult to publish The present grammar is thus a completely rewritten version of the earlier work and also incotporates the results and experience gained in the two fold endeavor, i e, writing the English version of a grammar of Rajasthani as well as preparing a grammar of Hindi

The major contribution of the work in its present from lies in its ability to present the facts of the grammatico-semantic structure of modern Rajasthani in a form which is equally accessible to one well versed in modern linguistics as well as to one who is interested in learning the language without being burdened with the highly specialized terminology of modern linguistics and other similar details It is thus a blend of the formats of structural as well as traditional grammars The other contribution of this work involves an explicit recognition of the

distinction between the expressive and cognitive structures of modern Rajasthani a matter which was received the attention it deserves in a full scale study of the grammatico semantic structure of a modern South Asian language for the first time

An earlier Hindi version of the work also included a chapter on pronominal and verbal forms of regional variants (or dialects as the term is used by Sir George Grierson in his *Linguistic Survey of India*) assembled from almost all the districts of Rajasthan Later it was decided to publish that information in a more systematic form elsewhere It is however necessary to make one observation about the work done so far by the author on regional variants of modern Rajasthani and i e the data so far gathered seems to point in the direction of Nagore district as a central or focal area

Phonological description of the language as contained in chapter one though based on the Mathaniya and Borunda dialects applies equally to the forms of the language spoken in other areas of Jodhpur and Bikaner, as well as to other dialects tested by the author The rest of the description utilizes the works of the prose writers of modern Rajasthani and reproduces excerpts from their texts as examples of various phenomena in the written form of the language (as contained in those works) with minimal modification The examples of written Rajasthani, as they appear in the text of this grammar are thus chosen on the basis of their simplicity and clarity of understanding

The author is grateful to his assistants many other friends and well wishers as well as the authors of modern Rajasthani prose

I am also grateful to Dr Narain Singh Bhati Director, Rajasthani Research Institute Chopasni, district Jodhpur who encouraged the writing of this book in Hindi by agreeing to publish it, and to Shri Jagdish Lalwani of M L Printers who took enormous personal care in the printing of the text Shri Murli Manohar Mathur also rendered considerable assistance in this work

Kali Charan Bahl
The University of Chicago

अनुक्रम

१. स्वन प्रक्रिया तथा लिपि

१ १. आ राजस्थानी का स्वनप्रक्रियात्मक विवरण भाषा के शब्दों को तद्विषयक बृहत्तम खड मानकर प्रस्तुत किया जा रहा है।

१ २ भाषा के स्वनप्रक्रियात्मक एकको की तालिका नीचे प्रस्तुत की जा रही है।

१ २ १ व्यंजन

व्यंजन कोटि	उभयोष्ठ्य	जिह्वान्त-दन्त्य	जिह्वान्त-मूर्धन्य	जिह्वोपाग्रीय तालव्य	पश्चजिह्वा-कठ्य
स्पर्श					
अघोष अल्पप्राण	प्	त्	ट्	च्	क्
अघोष महाप्राण	फ्	थ्	ठ्	छ्	ख्
घोष श्वास-द्वारीय रजित	ब्	द्	ड्	ज्	ग्
घोष महाप्राण	भ्	ध्	ढ्	झ्	घ्
घोष अल्पप्राण	ब़्	द़्	ड़्		
नासिक्य	म्	न्	ण		ङ्
उत्क्षिप्त		र्	ड़्		
पार्श्विक		ल्	ळ		
उत्क्षिप्त					
अघोष		स्			स़्
घोष	व्	ज़्		य्	ह़्

१२२ स्वर

	अग्र		मध्य		पश्च	
	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व
उच्च	ई	इ			ऊ	उ
मध्य	अॆ			अ	ओ	
निम्न	अॅ		आ		औ	

१२३ अधिखण्डात्मक

नासिक्यता

स्वराघात निरपक्ष-

आरोही- / (इस चिह्न का प्रयोग अक्षर के बाद किया गया है।)

१२४ उपरिलिखित स्वनप्रक्रियात्मक एककों के पारस्परिक पार्थक्य का निदर्शन करने के लिए नीचे आवश्यक शब्दों के उदाहरण दिये जा रहे हैं।

(१) प् फ्

पीडौ "मटकी रखने का स्थान"	पालौ "बेर की झाडी का सूखा पत्ता"
फीडौ "बिचकी हुई नाक वाला"	फालौ "फोडा"
पुरी "पुर, नगर"	पाग "पगडी"
फुरी "पीछे मुडना"	फाग "एक सामूहिक नृत्य"

(२) ब् भ् ब्

बौड "मुर्गे की बांग"	बट्ट "तेजी से"
भौड "तोडना"	भट्ट "भट्ट"
बौड "गाडी मे तेल देना"	बट्ट "टेढा-मेढा होना"
बारी "खिडकी, छोटा झाडू"	बालौ "जलाओ"
भारी "भारी, लकडियो का गट्ठर"	भालौ "देखो"
बारी "बारी"	बालौ "छोटा नाला"

(३) ब् व्

बल "ताकत"	बाअेरौ "बिना"
वल "बाक्पन"	वाअेरौ "हवा"
बाट "अधकचरा गेहू"	बाडौ "बसैला"
वाट "इन्तजार"	वाड "काटो की बाड"
बौम्मण "ब्राह्मण"	बाकल "उबाले हुए चने या मोठ"

बौम्मण "भाभी जाति की स्त्री" बाकल "मुहल्ले के बीच का मैदान"
वैंवणौ "बैठना" बाइ "बहिन"
बैंवणौ "चलना" बाई "शरीर का फूलना"

(४) त् थ्

तारौ "तारा" तेल्ली "तेली"
थारौ "तुम्हारा" थेल्ली "थैली"
तक्यिौ "सिराहना" ताक्नै "ताक कर"
थक्यिौ "थका हुआ" थाक्नै "थक कर"

(५) द् ध् द्

दडौ "बडी गेंद" दौम "मूल्य"
धडौ "तकडी का धडा" धौम "धाम"
दडौ "रेत का टीबा" दौम "जलकर राख होना"
दाव "दाव, मौका"
दाव "पशु"

(६) ट ठ

टग "पत्थर का सहारा" टमकौ "नखरा"
ठग "ठग" ठमकौ "पायल का शब्द"

(७) ड् ड् ड्

डाढी "दाढी" डेरौ "डेरा"
डाढी "एक जाति" डेरौ "मूर्ख, ऊन काटने का औजार"
डागौ "एक जाति, वृद्ध ऊंट" डावौ "बाया"
डागौ "वृद्ध बैल" डावौ "नदी का कगार"
अण्डौ "अण्ड" डाल "पेड की डाल"
अण्डौ "दिन का तीसरा प्रहर" डाल "ढलान"
डौंग "लकडी"
डौंग "ढोंग"

(८) ज् झ्

जक "शान्ति" जारी "जारी"
झक "झक (मारना)" झारी "छोटा लोटा"

(९) ग् , घ्

गुण "गुण"
घुण "घुन"

(१०) क् ख् · ग्

कौण्ड "काड"

खौण्ड "शक्कर"

गौण्ड "एक अश्लील शब्द"

(११) म् ण ट

टम्को "नखरा"

टण्को "जबरदस्त"

टण्काई "बल, सामर्थ्य"

टड्काई टाकने की क्रिया"

(१२) न् ण्

कौन "कान" कन "चौपड़ की कौडी को कान से छुआ कर गिराना"

कौण "तराजू की कान" कण "कण"

धन "धन" मन "मन"

धण "पत्नी" मण "एक तौल"

(१३) व् ब व

वारी खिडकी

बारी बारी

वारी न्यौछावर

(१४) ल् ल्

पालौ "बेर की झाडी का सूखा पत्ता" चालक "चलाने वाला"

पाळौ "पीतल का बर्तन" चाळक "आवड देवी का दूसरा नाम"

पाल "मना करना" चालणौ "चलना"

पाळ "पालन करना" चाळणौ "छेड़ना"

झोल "झूलने की क्रिया"

झोळ "सब्जी की झोल"

(१५) ड् ड़्

आडौ "दरवाजा" नाडौ "छोटा तालाब"

आड़ौ "बालहट" नाड़ौ "पायजामे की डोरी"

(१६) स् ह्

स़ल "सलवट"

हल "हल"

(१७) ह्रस्व स्वर दीर्घ स्वर

इ ई

दिन "दिन"

दीन "गरीब"

उ ऊ

घुर "नकारे की आवाज" धुन "धुन"

घूर "सार तत्त्व का बाहर आ जाना" धूण "ध्यान लगाव"

गुण्ती "२९"

गूण्ती "गधे पर का बोरा"

अ आ

च/ऊ "हल की लकडी का नुकीला भाग" थल "स्थल"

चा/ऊ "चाहने वाला" थाल "थाल"

(१८) ए ऐ

वेद "वेद" छे "अत"

वैद "वैद्य" छै "६"

(१९) ओ औ

ढोलौ "गिरा दो" ओरणौ "ओढनी"

ढौलौ "निर्बल" औरणौ "वर्षा का होना"

कोम "जाति"

कौम "काम"

(२०) औ ऊ

उपाडौ "उठाओ" करडौ "कडा"

उपाडू "अधिक खर्च करने वाला" करडू "अनाज का सस्ता दाना"

(२१) ई . ऐ

राईको "एक जाति" ओंईणी "वह गाय जो दूध न दे"

राऐती "रायता" मौंऐनै "अन्दर"

चौंऐ "बाल झडने का रोग"

(२२) सानुनासिक स्वर निर्गुनासिक स्वर

खाँड "चीनी" ऊब "बरसात का कम जल वाला बादल"

खाड "क्यारी" ऊब "उबने का भाव"

(२३) स्वराघात — / (नीचे के उदाहरणों मे निरपेक्ष स्वराघात को अचिह्नित रहने दिया गया है)

पीर "पीर"	सोरो "आसान"
पी/र "पीहर"	सो/रो "ससुर"
सारो "अस्तित्व"	कोड "उमग मिश्रित आनन्द"
सा/रो "ससुराल"	को/ड "कुष्ठ रोग"
सई "सही"	छेडै "छेड़ता है"
स/ई "स्याही"	छे/डै "किनारे"
बाटी "घोटना क्रिया का पूर्णता वाचक रूप"	दाई "धाय"
बा/टी "कासे का बर्तन"	दा/ई "समान"
गोरी "गौरवर्ण की स्त्री"	जाजो "जाओ"
गो/री "ग्वाला"	जा/जो "ज्यादा"
ओड "एक जाति विशेष"	देवरो "देवर (बहु वचन)"
ओ/ड "कुए पर बना स्थान"	दे/वरो "देवालय"
मैणी "मैना जाति की स्त्री"	पोर "पिछला वर्ष"
मै/णी "उपालम्भ"	पो/र "प्रहर"
मौली "छाछ जो खट्टी न हो"	मेलणो "गाय दुहना"
मौ/ली "मौली का धागा"	मे/लणो "भेजना"
थोरी "एक जाति का नाम"	थोणो "थाना"
थो/री "आग्रह"	थो/णो "मिट्टी सहित अन्य स्थान पर लगाने के लिए उखाडा हुआ पौधा"

१ ३ आ राजस्थानी लिपि देवनागरी लिपि का ही तनिक परिवर्तित रूप है। इस अध्याय के खण्ड (१ २ २) तथा (१ २ ३) मे चयन किये गये व्यजन और स्वर चिह्नो स इस तथ्य को लक्षित किया जा सकता है। नीचे आ राजस्थानी वर्णमाला और तत्सम्बन्धी स्वनिमिक एकको की सूची प्रस्तुत की जा रही है। इस सूची मे पहले स्वर तथा व्यजन वर्णों को सूचित करके प्रत्येक वर्ण के साथ उसके स्वनिमिक पर्याय को कोष्ठक मे लिखा गया है।

स्वर अ (अ), आ (आ), इ (इ) ई (ई), उ (उ), ऊ (ऊ), अे~ए (अे), अै~ऐ (अै), ओ (ओ), औ (औ)।

व्यजन क (क्), ख (ख्), ग (ग्), घ (घ्), ङ (ङ्), च (च्), छ (छ्), ज (ज् ज्), झ (झ्), ञ, ट (ट्), ठ (ठ्), ड (ड्), ढ (ढ्, ढ्),

ण (ण) त (त) थ (थ) द (द द) ध (ध द) न (न)
प (प) फ (फ) ब (ब ब) भ (भ) म (म्) य (य) र (र)
ड (ड) ल (ल) ळ (ळ) व (व ब) स (म स) ह् (ह)।

उपरोक्त वर्णमाला म घाष श्वासद्वारीय रजित स्वनिम / ब द ड ज ग / और घाप अल्पप्राण स्वनिम / ब द ड / को चिह्नित करने की प्रणाली उल्लखनीय तथ्य है। इसी प्रकार उत्क्षिप्त घोष स्वनिम / ज / का वर्ण ज द्वारा सकेत भी उल्लखनीय है।

अधिखण्डात्मक स्वनिम नासिक्यता का लिपि मे बिन्दु ( ) द्वारा सकेत किया जाता है। अधिखण्डात्मक स्वनिम निरपेक्ष स्वराघात के लिये लिपि म कोई चिह्न नही है जो कि युक्ति युक्त है। आरोही स्वराघात का सकेत जिस अक्षर पर इस स्वराघात की अवस्थिति हो उसके साथ ( ) चिह्न के द्वारा स केत किया जाता है यथा (/ गा/री / ग्वाला गो री / पौ/र / प्रहर पौ र) इत्यादि अनेकश आरोही स्वराघात को लिखित आ राजस्थानी मे अचिह्नित भी जोड दिया जाता है।

२. आधुनिक राजस्थानी की अभिव्यंजक संरचना

२ १ सामान्य रूप से भारतीय आर्य भाषाओं में अभिव्यंजक संरचना के अभिसंज्ञक संरचना से पार्थक्य के विषय में वैयाकरणों का ध्यान नाम-मात्र को ही गया है। ऐसा क्यों हुआ है, इसका उत्तर तो भाषा विज्ञान की ऐतिहासिक प्रगति को समझकर किये गये विश्लेषण द्वारा ही दिया जा सकता है। इस अध्याय का उद्देश्य तो अत्यन्त सीमित है, और वह यह कि अभिसंज्ञक संरचना विषयक विवरण के साथ आ राजस्थानी की अभिव्यंजक संरचना सम्बन्धी कतिपय तथ्यों का उल्लेख करना और इस तथ्य की स्थापना करना है कि अभिव्यंजक संरचना किसी भी भाषा का, विशेष रूप से आ राजस्थानी की सर्वांग संरचना का, मूलभूत अंग है। भाषा के व्याकरण में इसे मात्र अपवादात्मक स्थान न देकर, इसका पूर्ण रूप से समुचित विवरण प्रस्तुत करना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

२ २ अभिव्यंजक संरचना के अभिसंज्ञक संरचना से पार्थक्य को स्पष्ट करने के लिये निम्नलिखित दो उदाहरणों की पारस्परिक तुलना की जा सकती है।

(१) इण विध साच-विचार करतौ हौ के उणरै साथ वाळी फौज उठै आय पूगी। पण उठै तौ राव अेकलौ ई निगै आयौ। दुसमी री फौजा रौ अेक ई सिपाई उठै कोनी हा। हजारू सस्तर जमी माथै पडियोडा हा, फगत फौजा री उठती खेह सामी दीखती ही।

(२) *राव आपरी फौज रा सिपाइया नै कैयौ—थे हकनाक लारै क्यू आया!* खैर थे आय गया हौ तौ अबै अै खीला-पाती चुगनै आपा रै अठै ले आवौ। याद बणी रैवैला कै कोई जोधा लडण सारू आया तौ हा।

प्रथम उदाहरण में जिन तलवार आदि वस्तुओं को सस्तर की संज्ञा से अभिहित किया गया है, द्वितीय उदाहरण में उन्ही को खीला-पाती अर्थात् "कील-पत्ती" आदि से सम्बोधित किया गया है। युद्ध करने के हेतु सेना द्वारा लाये शस्त्र उनके द्वारा डर कर भाग जाने पर युद्ध-भूमि पर फैंक दिये जाने से कील-पत्ती आदि हो गये। इन दोनो वाक्यों के वक्ता ने अपनी मनो-भावना के अनुकूल एक ही वस्तु का दो भिन्न-भिन्न नामो से उल्लेख करके, दोनो ही स्थितियो में शस्त्र आदि उक्त वस्तुओं के प्रति अपनी भावनाओं की अभिव्यंजना की है। शस्त्रों को खीला-पाती कह कर शत्रु का तिरस्कार, भूमि पर पड़े हुए

शब्दों की महत्वहीनता और अपने महत्त्व का जो प्रतिपादन किया गया है, ये सारे तत्व अभिव्यजक सरचना का अग हैं ।

उपरिलिखित उदाहरणों मे सरतर एव खीला-पाती दो भिन्न सज्ञाओ द्वारा भिन्न तथ्यों का सकेत किया गया है, उन्ही तथ्यों का सकेत निम्न उदाहरण मे भी है किन्तु यहाँ भिन्न शब्दों के प्रयोग द्वारा ऐसा नही किया गया ।

(३) अणछक डाढाळो ढबियौ । वो तू ड गडाय अठी-उठी हेरण लागौ । बाजरी रै इण खेत आगै कठै ई खोज नी ढूका । निस्चै चारू चीलहरा इण खेत मे चापळाया दीसै । बाजरी ताळा छेक ऊभी झोला खावती ही । वो तू ड उठाय खेत साम्ही जोयौ । बाजरी री बूटी-बूटी जाणै उणरी रिछ्या हारू उमायौ ऊभी ही । डाढाळै री जीव ई हरियौ चकन हुयग्यौ ।

इस उदाहरण मे बाजरी के हवा में झूमने वाले पौधो का वर्णन करते हुए यह कहा गया है कि मानो वे शिकारियों से सूअर की रक्षा करने के भाव से आविष्ट होकर खडे है, इत्यादि । यहाँ भी वक्ता की मन स्थिति का आरोप किया गया है जो कि अत्यन्त उपयुक्त ही नही, अपनी प्रभविष्णुता से स्रोता अथवा पाठक को प्रभावित किये बिना नही रहता ।

ऊपर अभिव्यजक और अभिसजक अर्थों का जो पार्थक्य दिया गया है वह आ राजस्थानी भाषा की व्याकरणिक अर्थ-तात्विक सरचना का अविभाज्य अग है । नीचे भाषा की विविध युक्तिया का उल्लेख किया जा रहा है, जिनसे व्याकरणिक अर्थ-तात्विक दृष्टि से अभिव्यजक सरचना के महत्त्व का प्रति-पादन होता है ।

२ ३ सामान्यतया शाब्दिक दृष्टि से आदरार्थक, अपकर्षार्थक एव सामान्य अवस्थितियो का पारस्परिक पार्थक्य बहुज्ञात तथ्य है । नीचे इस प्रकार के पार्थक्य के भाषा के विविध सवर्गो स उदाहरण एकत्रित किये जा रहे हैं ।

(क) सज्ञाओ की अभिव्यजक अवस्थिति

आदरार्थक	अपकर्षार्थक	सामान्य
छाळी (स्त्री०)	टाटौ (पु०) भोनौ (पु०)	बकरी (स्त्री०)
घोडल्ी (स्त्री०)	टारडी (स्त्री०)	घोडी (स्त्री०)
रावळौ (पु०)	खोलडौ (पु०)	घर (पु०)
देवी (पु०)	राड (स्त्री०)	लुगाई (स्त्री०)
बैड (स्त्री०)	खोपी (स्त्री०)	गाय (स्त्री०)

आदरार्थक	अपकर्षार्थक	सामान्य
नारियौ (पु०)	खोपौ (पु०) ढागौ (पु०)	बळद (पु०)
वागलौ (पु०)	बोचौ (पु०)	हाडौ (पु०)
वासण (पु०)	तबरौ (पु०)	वर्तन (पु०)
—	खादरडौ (पु०)	कॉम (पु०)
सत (पु०) मातमा (पु०)	मोडौ (पु०) भगडौ (पु०)	साध (पु०)
भोटौ (स्त्री०)	रौडौ (पु०), भाइयौ (पु०), खोरौ (पु०)	भैंस (स्त्री०)
गिंडक (पु०)	कुतरडौ (पु०)	कुत्तौ (पु०)
जाखोडौ (पु०) पागल (पु०)	ढागौ (पु०)	ऊंट (पु०)
—	कुणकेयौ (पु०) जिणीतौ (पु०)	वाप (पु०)
—	डौल (पु०)	उणियारौ (पु०)
सीस (पु०)	भोडौ (पु०) भोडक (पु०) खोपडौ (पु०) पुटपडौ (पु०)	माथौ (पु०)
बासण (पु०)	ठीकरौ (पु०)	ठाम (पु०)

(ख) क्रियाओं की अभिव्यंजक अवस्थिति

आदरार्थक	अपकर्षार्थक	सामान्य
(थाल) अरोगणौ जीमणौ	गिटणौ	खावणौ
(रोटी) पोवणौ	घडणौ	बनावणौ
पधारणौ	गदणौ	आवणौ, जावणौ

२४ आदरार्थक अपकर्षार्थक एव सामान्य के अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी अभिव्यजना भाषा मे होती है। इस तथ्य को स्पष्ट करने के लिए नाव रौ म्यानौ शीर्षक लोककथा से सुणणौ क्रिया के भाव का कितने प्रकार से अभिव्यजित किया गया है इसके उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(४) अक खाधिया सू हौळै सी क पूछियौ—बीरा कुण चलियौ ! अमरौ

औ नाव उणरै कांनां मे सख ज्यू गूजियौ।

(५) धक जावता उणनै अक मगतौ साम्ही धकियौ। चौधरण उणरौ नाव पूछियौ। अबै नाव सुभट सुणीजियौ—धनियौ।

चौधरण रै काना औ नाम भंडिद करतो रौ टकरायौ।

(६) वे मोटियार कैयौ कै वा भली लुगाई कोनी भगतण है। चौधरण पूछियौ—वाल्हा थारौ नाव काई। भगतण मुळकनै बोली—सीता। चौधरण रै काना औ नाव बिच्छु रा डक ज्यू लागौ।

(७) मिंदर रा हेटला पगौतिया माथै अेक कोढण बैठी माखिया उडावती ही। चौधरण दो टका फिलाय नाव पूछियौ तौ पतौ लागियौ कै उणरौ नाव है लिछमी। चौधरण रै काना बुग माथै बुग वडता ज्यू लखाया।

उपरिलिखित उदाहरणा मे समस्त रेखाकित वाक्य सुणणौ क्रिया के अभिव्यजक पर्याय हैं।

२५ प्रस्तुत अध्याय का उद्देश्य जैसा कि पहले कहा जा चुका है। मात्र आ राजस्थानी की अभिव्यजक सरचना की स्थापना करना है। व्याकरणिक सरचना के विवरण की पूर्णता की दृष्टि से इस पुस्तक के प्रत्यक अध्याय के वण्य विषय के प्रसग मे ही अभिव्यजक सरचना सम्बन्धी समस्त उपलब्ध तथ्यो को सग्रहीत कर दिया गया है। अत यहा उन्ही तथ्यो को अलग से दोबारा सकलित नही किया जा रहा।

३. संज्ञा

३ १ आ राजस्थानी सज्ञाओ को उनके लिंग के आधार पर दो कोटियो मे विभाजित किया जा सकता है—(क) ऐसी सज्ञाए जिनका लिंगानुसार सवर्गीकरण कतिपय प्रत्ययो का सहवर्ती होता है, और (ख) ऐसी सज्ञाए जिनका लिंगानुसार सवर्गीकरण प्रत्ययो का सहवर्ती न होकर अन्य तत्त्वो पर आधारित होता है ।

३ २ प्रत्ययो के सहवर्ती लिंगानुसार सवर्गीकृत सज्ञाओ की लिंग व्यवस्था मे अन्तर्निहित सभावनाओ को भी दो भागो मे विभाजित किया जा सकता है—(क) वे सज्ञाए *जिनके लिंगानुसार रूप सामान्यतया अभिव्यजक होते हैं, तथा (ख) वे सज्ञाए* जिनके लिंगानुसार रूप अन्य तत्त्वो पर आधारित होते हैं ।

३ २.१ नीचे कोटि (क) की सज्ञाओ के ज्ञात वर्गों को सोदाहरण सूचित किया जा रहा है । इन सज्ञाओ मे **–औ, –इयौ** तथा **–ई** प्रत्ययो की अवस्थिति एव अनवस्थिति के आधार पर प्रत्येक सज्ञा के अधिकतम चतुर्विध रूप हो सकते हैं, यद्यपि इस कोटि की समस्त सज्ञाओ के अधिकतम सम्भावित रूप नही मिलते ।

(१) **प्रदत्त पुरुष नामो के लिंगानुसार रूप :**

सामान्य पुंल्लिग	विशिष्ट पुंल्लिग	अल्पार्थक पुंल्लिग	स्त्री लिंग
सौन	सोनौ	सोनियौ	सोनी
आद	आदौ	आदियौ	आदी
ऊद	ऊदौ	ऊदियौ	ऊदी
राम	रामौ	रामियौ	रामी

(२) प्रदत्त स्त्री नामों के लिंगानुसार रूप ·

सामान्य पुल्लिग	विशिष्ट पुल्लिग	अल्पार्थक पुल्लिग	स्त्री लिंग
प्यार	प्यारौ	प्यारियौ	प्यारी
विमल	विमलौ	विमलियौ	विमली
जसोद	जसोदौ	जसोदियौ	जसोदो
भीक	भीकौ	भीकियौ	भीकी

(३) मानवेतर एव मानव प्राणीवाचक सज्ञाओ के लिंगानुसार रूप

बकर	बकरौ	बकरियौ	बकरी
तोड	तोडौ	तोडियौ	तोडी
ऊदर	ऊदरौ	ऊदरियौ	ऊदरी
बादर	बादरौ	बादरियौ	बादरी
काच	काचौ	काचियौ	कांचो
हिरण	हिरणौ	हिरणियौ	हिरणी
टोगड	टोगडौ	टौगडियौ	टोगडी
कबूड	कबूडौ	कबूडियौ	कबूडी
घेट	घेटौ	घटियौ	घेटी
घोड	घोडौ	घोडियौ	घोडी
डोकर	डोकरौ	डोकरियौ	डोकरी

(४) अप्राणीवाचक सज्ञाओ के लिंगानुसार रूप

काचर	काचरौ	काचरियौ	काचरी
ढोकळ	ढोकळौ	ढोकळियौ	ढोकळी
तामळ	तासळौ	तासळियौ	तासळी
वाटक	वाटकौ	वाटकियौ	वाटकी
रोट	रोटौ	रोटियौ	रोटी
जूत	जूतौ	जूतियौ	जूती
डोर	डोरौ	डोरियौ	डोरी
मटक	मटकौ	मटकियौ	मटकी
भोड	भोडौ	भोडियौ	भोडी
तू ब	तू बौ	तू बियौ	तू बी
घोर	घोरौ	घोरियौ	घोरी
खाळ	खाळौ	खाळियौ	खाळी

गेड	गेडौ	गेडियौ	गेडी
ढिगल	ढिगलौ	ढिगलियौ	ढिगली
दातळ	दातळौ	दातलियौ	दातळी
खील	खीलौ	खीलियौ	खीलो
ठीकर	ठीकरौ	ठीकरियौ	ठीकरी
ढक्ण	ढकणौ	ढकणियौ	ढक्णी
कुलड	कुलडौ	कुलडियौ	कुलडी
खोप	खोपौ	खोपियौ	खोपी
कोथळ	कोथळौ	कोथळियौ	कोथळी
खेजड	खेजडौ	खेजडियौ	खेजडी
खोपड	खोपडौ	खोपडियौ	खोपडी
डाळ	डाळौ	डाळियौ	डाळी
गोड	गोडौ	गोडियौ	गाडी
सीगड	सीगडौ	सीगडियौ	सीगडी

(५) विकल रूपावलो वाली संज्ञाए

(क) प्राणीवाचक संज्ञाए जिनके सामान्य पुल्लिग रूप अनुपलब्ध हैं।

पाडौ	पाडियौ	पाडी
मिन्नौ	मिनियौ	मिन्नी
छोरा	छोरियौ	छोरी
कीडौ	कीडियौ	कीडी
पावणौ	पावणियौ	पावणी

(ख) अप्राणीवाचक संज्ञाए जिनके सामान्य पुल्लिग रूप अनुपलब्ध हैं।

कवाडौ	कवाडियौ	कवाडी
डब्बौ	डबियौ	डब्बी
फर्रौ	फर्रियौ	फर्री
भारौ	भारियौ	भारी
तवौ	तवियौ	तवी
डळौ	डळियौ	डळी
तडौ	तडियौ	तडी
तुर्रौ	तुर्रियौ	तुर्री
बचकौ	बचकियौ	बचकी
थप्पौ	थपियौ	थप्पी
भडौ	भडियौ	भडी

छुरो	छुरियौ	छुरी
कडौ	कडियौ	कडी

(ग) त्रिविध रूपीय सज्ञाए जिनके विशिष्ट पुल्लिग रूप अनुपलब्ध हैं।

ताकड	ताकडियौ	तावडी
काकड	काकडियौ	वाकडी
टेलड	टेलडियौ	टलडी

(घ) त्रिविध रूपीय सज्ञाए जिनके अल्पार्थक पुल्लिग रूप अनुपलब्ध हैं।

थेपड	थेपडौ	थेपडी
फळ	फळौ	फळी

(ङ) त्रिविध रूपीय सज्ञाए जिनके स्त्री लिंग रूप अनुपलब्ध हैं।

आकड	आकडौ	आकडियौ
धेंड	धेंडौ	धेंडियौ
खरडक	खरडकौ	खरडकियौ
रौड	रौडौ	रौडियौ
खौर	खौरौ	खौरियौ
धोव	धोवौ	धोवियौ
गार	गारौ	गारियौ

(च) द्विविध रूपीय सज्ञाए जिनके सामान्य पुल्लिग और स्त्री लिंग रूप ही उपलब्ध हैं।

सागर	सागरी
ताल	ताली
कुडक	कुडकी
पोपळ	पोपळी

(छ) द्विविध रूपीय सज्ञाए जिनके विशिष्ट पुल्लिग और अल्पार्थक पुल्लिग रूप ही उपलब्ध हैं।

खाजौ	खाजियौ
खवोचौ	खवोचियौ
तूंडौ	तूंडियौ
मोलौ	मोलयौ

(ज) द्विविध रूपीय सज्ञाए जिनके विशिष्ट पुल्लिंग और स्त्रीलिंग रूप उपलब्ध है।

बिकरौ	बिकरी
खू टौ	खू टी
चकारौ	चकारी
अधारौ	अधारी
फूदौ	फूदी
फेरौ	फेरी
थुथकौ	थुथकी

(झ) द्विविध रूपीय सज्ञाए जिनके सामान्य पुल्लिंग और अल्पार्थक पुल्लिंग रूप ही उपलब्ध है।

वूक	वूकियौ
तळाव	तळावियौ
राड	राडियौ
मोर	मोरियौ

(ञ) द्विविध रूपीय सज्ञाए जिनके सामान्य और विशिष्ट पुल्लिंग रूप ही उपलब्ध हैं।

बिगाड	बिगाडौ
सुधार	सुधारौ
उधार	उधारौ
आक	आकौ
अफड	अफडौ
अदाज	अदाजौ
आगण	आगणौ
घू घट	घू घटौ
फद	फदौ
वाम	वामौ
पाप	पापौ
जाळ	जाळौ
गोट	गोटौ
भपीड	भपीडौ
भचीड	भचीडौ
फटीड	फटीडौ
सटीड	सटीडौ

दटीड	दटीडौ
खळिद	खळिदौ
हबिद	हबिदौ
कचद	कचदौ
तबद	तबदौ
सीधापण	सीधापणौ
गैलापण	गैलापणौ
ओछापण	ओछापणौ
तीखापण	तीखापणौ
बाडापण	बाडापणौ
खरापण	खरापणौ
सुगरापण	सुगरापणौ
नुगरापण	नुगरापणौ
हळकापण	हळकापणौ
बोदापण	बोदापणौ
मिनखापण	मिनखापणौ

(द) द्विविधरूपीय सज्ञाए जिनके अल्पाधक पुल्लिग और स्त्रीलिंग रूप उपलब्ध हैं।

चौपनियौ	चौपनी
कोकडियौ	कोकडी
तावडियौ	तावडी

३ २ २ -औ, -इयौ तथा -ई प्रत्ययो की अवस्थिति अनवस्थिति से निष्पन्न रूपा के अतिरिक्त अन्य प्रत्ययो से भी सज्ञाओ के लिग रूपा की रचना होती है । इस प्रकरण म इन इतर प्रत्ययो से निष्पन्न रूपा का उल्लेख किया जाएगा ।

(१) पुल्लिग रूप से -आणी प्रत्यय के योग से निष्पन्न स्त्रीलिंग रूप ।

वाणियौ	वणियाणी
कवर	कवराणी
नौकर	नौकराणी
सेठ	सेठाणी
पुरोहित	पुरोहिताणी पिरोयताणी
ठाकर	ठकराणी
रजपूत	रजपूताणी
धणी	धणियाणी

भाटी	भटियाणी
तुरक	तुरकाणी
साध	साधाणी

(२) पुल्लिंग रूप से –अण प्रत्यय के योग से निष्पन्न स्त्रीलिंग रूप।

पुजारी	पुजारण
दरजी	दरजण
नाई	नायण
भिखारी	भिखारण
साथी	साथण
तेली	तेलण
धोबी	धोबण
भंगी	भंगण
मोची	मोचण
माळी	माळण
भावो	भावण
मामो	मामण
खाती	खातण
पटवारी	पटवारण
गाधी	गाधण
मालक	मालकण
चौधरी	चौधरण

(३) पुल्लिंग रूप के साथ –णी प्रत्यय के योग से निष्पन्न स्त्रीलिंग रूप।

जाट	जाटणी
नटियौ	नटणी
डाक्टर	डाक्टरणी
मास्टर	मास्टरणी
मुसलमान	मुसलमानणी
हाथी	हथणी
सिंघ	सिंघणी
बींद	बींदणी
भाट	भाटणी
खटीक	खटीकणी
सेर	सेरणी
बडियौ	बडणी

(४) पुंल्लिंग रूप के साथ –ई प्रत्यय के योग से निष्पन्न स्त्रीलिंग रूप ।

चारण	चारणी
बामण	बामणी
लवार	लवारी
दास	दासी
कुमार	कुमारी
गोप	गोपी
सुथार	सुथारी
कुम्हार	कुम्हारी
सरगरौ	सरगरी

(५) स्त्रीलिंग रूपा के साथ –औ प्रत्यय के योग से निष्पन्न पुंलिंग रूप ।

स्त्रीलिंग	पुंल्लिग
चाळ	चाळौ
चाट	चाटौ
छाट	छाटौ
झाळ	झाळौ
ताक	ताकौ
गाठ	गाठौ
फाचर	फाचरौ
फु फाड	फू फाडौ
मरण	मरणौ
सभाळ	सभाळौ
लेण देण	लेणौ देणौ
लार	लारौ
हाक	हाकौ
हु कार	हु कारौ
वचाक	वचाकौ
पचडाक	पचडाकौ
पचराक	पचराकौ
डिचकार	डिचकारौ
बुचकार	बुचकारौ
भणकार	भणकारौ
टणकार	टणकारौ
छणकार	छणकारौ
चिल्लाट	चिल्लाटौ

छळछळाट	छळछळाटौ
भल्लाट	भल्लाटौ
ठक्ठकाट	ठक्ठकाटौ
सवा	सवौ

(६) सस्कृत तत्सम सज्ञाए जिनके पुल्लिग तथा स्त्रीलिग भाषा म यथावत् प्रचलित है ।

पुल्लिग	स्त्रीलिग
भगवान	भगवती
बुद्धिमान	बुद्धिमती
गुणवाण	गुणवती
बळवाण	बळवती
अभिनेता	अभिनेत्री
दाता	दात्री
विधाता	विधात्री
बालक	बालिका
पाठक	पाठिका
नायक	नायिका
अध्यक्ष	अध्यक्षा
कात	काता
प्रिय	प्रिया
स्वामी	स्वामिनी
तपस्वी	तपस्विनी

(७) फारसी-अरबी तत्सम सज्ञाए जिनके पुल्लिग तथा स्त्रीलिग रूप प्रचलित है ।

सायब	सायबा
मलिक	मलिका
वालिद	वालिदा
सुलतान	सुलताना

३ २ ३ निम्नलिखित सज्ञाओ के लिगानुसार युग्म शब्द भेद पर आधारित हैं ।

पुल्लिग	स्त्रीलिग
बाप	मा
पिता	माता
साड	गाय
मोर	ढेल
धणी	लुगाई

३२४ अनेक पुल्लिग सज्ञाए ऐसी है जिनके स्त्रीलिग प्रतिरूप भाषा मे उपलब्ध नही होते।

चित्राम	घी	पीजरौ
खज	आटौ	दुसाकौ
मादर	गुळ	वाम
पाणी	कु जौ	होठ
साबू	भाटौ	दात
तेल	गदौ	

३२५ अनेक स्त्रीलिग सज्ञाए ऐसी है जिनके पुल्लिग प्रतिरूप भाषा मे अनुपलब्ध है।

दारू	जट	जाजम	पावर
गाज	मू ण	सतरज	काया
मक्कर	गिलास	ईम	आख

३२६ भाषा म अनेक सज्ञाए ऐसी है जो रूप भेद के बिना पुल्लिग अथवा स्त्रीलिग दोनो मे अवस्थित होती है।

तेवड	कडमड	निसास
तनपट	कळकळ	सिकार
घात	काळम	पू छ
चैन	थाग	ओखद
आळ-जजाळ	ना	बगत
थावस	काकड	

उक्त सज्ञाओ मे से कतिपय की वाक्यो मे अवस्थिति के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१) वा घणी वार ई समझावती के नी नी व्है जैडी तेवड करनै रात-दिन जीमावती रू, जे मिनखा नै खावणा बद करदै तौ पण बात निभावणी तौ दैत रै हाथ ही।

(१क) आपरै वासै आय कमेडी नेवळै अर कागळै मारू घणा ई तेवड करिया।

(२) अबै तौ वे बाता सपनै री आळ-जजाळ हुयगी।

(२क) रात रा सपनै मे ई उणनै धन कमावण रा ई आळ-जजाळ आवना।

३२७ भाषा मे अनेक स्त्रीलिग सज्ञाए हैं जिनके साथ –ई प्रत्यय के योग से अतिरिक्त स्त्रीलिग रूप निर्मित होते हैं।

मूल स्त्रीलिंग रूप	–ई प्रत्यय युक्त स्त्रीलिंग रूप
अतावळ	अतावळी
खळबळ	खळबळी
गाळ	गाळी
जुगत	जुगती
भड	भडी

आस और आ–अन्त्य आसा जो कि दोना स्त्रीलिंग हैं इसी कोटि की सज्ञाए हैं।

३ २ ८ कतिपय अन्य सज्ञाए ऐसी है जिनके मूल स्त्रीलिंग रूपो से –ई और –औ प्रत्ययो के योग स अतिरिक्त स्त्रीलिंग और पुल्लिग रूपो की रचना होती है। यथा आट से आटी आटो ढाण से ढाणी ढाणौ इत्यादि।

३ ३ आ राजस्थानी सज्ञाए सामान्यत एक तथा बहु वचन म अवस्थित होती हैं। अनेक सज्ञाए वचन सम्बन्धी इस सामान्य नियम का अपवाद हैं किन्तु उनका विवरण आग किया जायगा।

३ ३ १ वचन की दृष्टि से आ राजस्थानी सज्ञाओ के निम्नलिखित शब्दगत रूप वर्ग है —

(अ) पुल्लिग सज्ञाए
- (१) औ–अन्त्य सज्ञाए यथा काकौ छोरौ बेटौ टोगडियौ
- (२) ई–अन्त्य सज्ञाए यथा माळी पापी भगी
- (३) ऊ–अन्त्य सज्ञाए यथा भाणू गगू
- (४) आ–अन्त्य सज्ञाए यथा राजा मातमा
- (५) इतर सज्ञाए यथा जाट ठाकर

(आ) स्त्रीलिंग सज्ञाए
- (१) ई–अन्त्य सज्ञाए यथा जाटणी मिठाई घडी नगरी टोगडी भगोली लुगाई लुगावडी पाडी पाडकी नाडी नाडडी वाटकी नगरी मूरली
- (२) आ–अन्त्य सज्ञाए यथा आसा चिता मा
- (३) अनुचरित अ–अन्त्य सज्ञाए यथा रुत बिगत परात आस लालटेण, मूरत वैर
- (४) इतर सज्ञाए यथा पापण माळण तलण खातण गाधण पटवारण धोबण ढोलण भावण सामण दरजण मालकण पुजारण मोचण चौधरण पातर खातर इत्यादि सज्ञाए भी स्त्रीलिंग सज्ञाओ के वग (४) म ही सम्मिलित की जा सकती है।

वाक्य-परिसरा म अवस्थिति के आधार पर उपरिलिखित सज्ञा-शब्दगत रूपवर्गों की रूप रचना की दो परस्पर अपवर्जित पद्धतिया है जिन्हे ऋजु तथा तिर्यक कारक कहा जाता है। इन दोनो परिसरो मे अवस्थिति के आधार पर उपरोक्त वर्गों की सज्ञाओ की शब्दगत वचन रूपावली का निदर्शन प्रत्येक वर्ग की कतिपय मानक सज्ञाओ द्वारा नीचे किया जा रहा है।

सज्ञा अग		एक वचन		बहुवचन	
		ऋजु रूप	तिर्यक रूप	ऋजु रूप	तिर्यक रूप
पु० (१)	काको	काको	काका∼काके	काका	काका
पु० (२)	माळी	माळी	माळी	माळी	माळिया
पु० (३)	भाणू	भाणू	भाणू	भाणू	भाणुवा∼भाणवा
पु० (४)	राजा	राजा	राजा	राजा	राजावा
पु० (५)	जाट	जाट	जाट	जाट	जाटा
स्त्री (१)	जाटणी	जाटणी	जाटणी	जाटणिया	जाटणिया
स्त्री (२)	आसा	आसा	आसा	आसावा	आसावा
स्त्री (३)	रत	रत	रत	रता	रता
स्त्री (४)	माळण	माळण	माळण	माळणिया	माळणिया
	पातर	पातर	पातर	पातरिया	पातरिया

स्त्रीलिंग वर्ग (२) की कतिपय सज्ञाओ के (यथा लुगाई, मिठाई आदि) रूपा मे तनिक भिन्नता है। इसका उल्लेख नीचे किया जा रहा है।

लुगाई सज्ञा की शब्दगत रूपावली

	एकवचन	बहुवचन
ऋजु	लुगाई	लुगाया
तिर्यक	लुगाई	लुगाया

मिठाई सज्ञा की रूपावली भी लुगाई शब्द के समान है।

लुगाई शब्द के अभिव्यजक रूप **लुगावडकी** की रूपावली निम्नलिखित है।

	एकवचन	बहुवचन
ऋजु	लुगावडकी	लुगावडक्या
तिर्यक	लुगावडकी	लुगावडक्याँ

उच्चारण भेद के कारण कोई लेखक *समस्त –ई अन्त्य सज्ञाओ* के बहुवचन रूप (स्त्रीलिंग सज्ञाओ के ऋजु और तिर्यक तथा पुल्लिग सज्ञाओ के केवल तिर्यक) लुगावडकी

संज्ञा के समान लिखते हैं । यथा माल्यां (माळी तिर्यक बहुवचन) अथवा नाड्यां (नाडी ऋजु तथा तिर्यक बहुवचन) इत्यादि । इसी प्रकार स्त्रीलिंग वर्ग (४) की संज्ञाओं की भाषा में स्थिति है ।

३ ३ २ कतिपय अल्पार्थक पुल्लिंग संज्ञाओं और उनकी प्रतिरूपीय –ई अन्त्य संज्ञाओं की शब्दगत रूपावली में, विशेष रूप से तिर्यक बहुवचन में, रूपगत अस्पष्टता आ जाती है । यथा, कावरियौ (अल्पार्थक पुल्लिंग) तथा कावरी (स्त्रीलिंग) दोनों का तिर्यक बहुवचन रूप कावरियां∼कावरयां ही होगा । इस प्रकार की स्थितियों में अवस्थिति-संदर्भ के आधार पर ही अस्पष्टता का निराकरण किया जा सकता है ।

३ ३ ३ अनेक संज्ञाओं के सम्बोधनात्मक रूप भी भाषा में प्रचलित हैं । सामान्यतः सम्बोधनात्मक और तिर्यक रूपों में कोई भेद नहीं होता । कतिपय संज्ञाओं के सामान्य सम्बोधनात्मक रूपों के अतिरिक्त अन्य रूप भी भाषा में प्रचलित हैं जो कि अभिव्यंजक होते हैं । यथा माळी संज्ञा के सामान्य सम्बोधनात्मक रूपों ओ माळी (एक वचन) और ओ माळियां (बहुवचन) के अतिरिक्त अभिव्यंजक सम्बोधनात्मक रूप हैं ओ माळां (एक वचन) तथा ओ माळां (बहुवचन) इत्यादि ।

सामान्य सम्बोधनात्मक बहुवचन का एक व्यक्ति के लिए आदरार्थक प्रयोग भी होता है ।

३ ३ ४ अनेक समूहवाची संज्ञाएं अन्तर्निहित बहुवचन में होने के कारण शब्दरूपगत दृष्टि से बहुवचन में अवस्थित नहीं होती । इस कोटि के कतिपय उदाहरण हैं । समस्त सामान्य पुल्लिंग संज्ञाएं, जिनका विवरण प्रकरण संख्या (३ २) में किया जा चुका है, तथा कतिपय अन्य संज्ञाएं यथा मांनखौ, भाव, कमठाण, दाव∼धाव, पसेव, नदियांण, हमायत, तमामत, जोमलियार इत्यादि ।

माईत, टाबर, जनेतर आदि शब्द, यद्यपि स्त्री अथवा पुरुष व्यक्तियों का समुद्देशन करते हैं फिर भी इनकी शब्दगत रूपावली पुल्लिंग वर्ग (५) के समान ही होती है ।

अनेक संज्ञाएं, यथा भाइयौ, सलादन, काया, ओल्द एकवचन में ही अवस्थित होती हैं । इस कोटि की संज्ञाओं की सूची काफी विस्तृत है ।

इस प्रकरण में वर्णित अपवाद स्वरूप संज्ञाओं के विषय में और अधिक अनुसन्धान की आवश्यकता है ।

३ ४ आ राजस्थानी में दो संज्ञाओं की परस्पर आसत्ति से यौगिक संज्ञाओं की रचना होती है । इस प्रकार की यौगिक संज्ञाओं के तीन वर्ग हैं—(क) मानववाची यौगिक संज्ञाएं, (ख) मानवेतर प्राणीवाचक यौगिक संज्ञाएं तथा (ग) वस्तु इत्यादि वाचक यौगिक संज्ञाएं ।

३.४१ मानववाची यौगिक सज्ञाओ के उनमे अवस्थित अग-स्वरूप सज्ञाओ के लिंग और क्रमानुसार निर्मित चारो कोटियो के कतिपय उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

पुल्लिग-स्त्री लिंग यौगिक सज्ञाएं

ठाकर–ठकराणी	साध–साधाणी
सेठ–सेठाणी	सामी–सामण
राजा–राणी	भगी–भगण
राजपूत–राजपूताणी	ढोली–ढोलण
चारण–चारणी	भाबी–भावण
बामण–बामणी	दरजी–दरजण
तेली–तेलण	दोहितौ–दोहती
सुथार–सुथारी	लोग–लुगाई
खाती–खातण	धणी–लुगाई
लवार–लवारी	बींद–बींदणी
कुम्हार–कुम्हारी	छोरौ–छोरी
सरगरौ–सरगरी	दादौ–दादी
दास–दासी	भाई–भोजाई
पटवारी–पटवारण	काकौ–काकी
चौधरी–चौधरण	मामौ–मामी
पुजारी–पुजारण	नानौ–नानी
मालक–मालकण	बींद–वहू
डोकरौ–डोकरी	भाई–बैंन
बेटौ–बेटी	भाणजौ–भाणजी
मामौ–मासी	जेठ–जेठाणी
देवर–देराणी	साळौ–साळी

स्त्री लिंग-पुल्लिग यौगिक संज्ञाएं

मा–बाप	बैंन–भाई
मामु–सुसरौ	मामी–भाणजौ
देवी–देवता	भुवा–भतीजौ
छोरी–छोरौ	बैंन–बहनोई

पुल्लिग-पुल्लिग यौगिक सज्ञाएं

राजा–रक	गरीब–गुरबौ
चोर–साहूकार	गरीब–श्रमार

कुटम–कबीलौ	बूढौ–बडेरौ
नौकर–चाकर	वैरी–दुस्मी
ठाकर–ठेठर	किमाण–मजूर
बाळ–बिचियौ	

स्त्रीलिंग-पुल्लिग यौगिक सज्ञाएँ

भुवा–भतीजौ
मा–बेटौ
नणद–भौजाई
मासी–भांणजौ
बैंन–बेटौ
मामू–वहू
बाई–माई
देराणी–जेठाणी

लोक म प्रसिद्ध व्यक्तिया के नामो म पुरुष-स्त्री ग्रथवा स्त्री-पुरुष के क्रम से व्यक्तिवाचक यौगिक सज्ञाग्रो के कतिपय उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

पुरुष स्त्री यौगिक सज्ञाएँ	स्त्री पुरुष यौगिक सज्ञाएँ
ढोला–मरवण	सीता–राम
शिव–पावती	राधा–कृष्ण
कृष्ण–रुक्मिणी	सोरठ–बीभौ
जेठवा–ऊजळी	निहालदे–सुल्तान
जलाल–बूबना	सयणी–बीजानद
नल–दमयन्ती	रत्ना–हमीर

३ ४ २ मानवेतर प्राणीवाचक सज्ञाग्रा से निर्मित यौगिको के भी मानववाची सज्ञाग्रो के समान ही चार वर्ग होते है।

पुल्लिग-स्त्रीलिंग यौगिक	स्त्रीलिंग-पुल्लिग यौगिक
सेर–सेरणी	गाय–बळद
कबूडौ–कबूडी	सर्भ–पाडौ
घोडौ–घोडी	कीडी–मकौडौ
हाथी–हथणी	
गधौ–गधी	
बछेरौ–बछेरी	
बिछियौ–बिछकी	

कागलौ–कागली
चिड़ी–चिड़ी

पुल्लिग-पुल्लिग यौगिक	स्त्रीलिंग-स्त्रीलिंग यौगिक
पछी–जिनावर	चिड़ी–कमेडी
	गाय–भैंस

३ ४ ३ वस्तु इत्यादि वाचक यौगिक सज्ञाओं में उनमें अवस्थित अंगों के लिंग का महत्त्व उतना नहीं जितना कि परस्पर आसन्न अवस्थित सज्ञा युग्मों का। इस प्रक्रम द्वारा समिश्र कोटि की संकल्पनाओं का भाषा में प्रजनन होता है। यथा—छाण-बीण, जमीं-जायदाद, दान-पुन्न, दवा-दारू, धन-माल इत्यादि। ये समस्त सज्ञा युग्म ऐसे हैं जिनमें प्रत्येक युग्म के दोनों अंग सामाजिक प्रथाओं के आधार पर साथ-साथ अवस्थित होते हैं। जैसे जमीं-जायदाद का अर्थ है 'जमीन, जायदाद एवं इनकी समिश्र कोटि में सम्मिलित की जा सकने वाली अन्य वस्तुएँ इत्यादि।" इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि कोश में प्रदत्त अर्थों के अनुसार इन यौगिकों का अर्थ उनके अंगों के योगफल से अतिरिक्त है।

इस कोटि की यौगिक सज्ञाओं के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

छळ–कपट	हरख–उच्छव	चारौ–पाणी
छळ–छद	हीरा–मोती	चिलम–तबाकू
छळ–प्रपच	हीरा–जवारात	चीज–वुस्त
छळ–बळ	हीडौ–चाकरी	चुग्गौ–पाणी
छाण–बीण	हाथ–तोबा	चौका–परिंडो
छिड़का–छाटा	चाल–चलगत	जात–पात
जाच–पडताल	सिरख–पथरणौ	फळ–फूल
पूस–बाईंदौ	पत्ता–पानडा	पुन्न–परताप
पुराण–सास्तर	कुरब–कायदौ	फूका–रोळौ
केसर–कस्तूरी	सोनौ–चादी	खरच–खातौ
समद–तळाव	साठ–गाठ	माज–माद
लाड–कोड	साळ–सभाळ	सिनान–सपाडौ
सिनान–पाणी	सीर–सस्कार	सुख–आणद
सँध–पिछाण	सेवा–बदगी	सैर–सपाटौ
सोच–विचार	रगडौ–झगडौ	राव–रत्तो
राळी–गूदडा	रीझ–खीज	रूप–रग
रोटी–गाभा	रोळौ–दगौ	वारौ–न्यारौ
लाग–लपेट	लाज–विपदा	लाज–सरम

लाड–दुलार	लिहाज–लचको	लुका–छिपी
लेणो–देणो	काण–कायदो	माण–ताण
माया–सपत	माल–मलीदा	भाग–मुलफा
मोह–परीत	मौज–मजा	पूजा–पाठ
बाटा–चूटा	बात–बिगत	साज–माद
विणाव–सिणगार	बिस–इमरत	धरम–अधरम
सुख–दुख	दिन–रात	जलम–मरण
बेरो–बावडी	व्रत–उपवास	जप–तप
भाटा–दग्गड	अतर–फुलेल	कागद–पतर
अरजी–पानडो	आगो–लारो	आफत–बिपदा
आळ–जजाळ	आव–आदर	इनाम–इकरार
ओळख–पिछाण	ओखद–उपचार	करम–धरम
काम–धधो	काम–काज	काम–हलीलो
नाव–नामून	धरम–ध्यान	धरम–करम
नावो–लेखो	दया–मया	दाणो–पाणो
दुख–दरद	देण–दाफ	धन–माल
खिखरा–ठट्ठा	गरब–गुमाण	गाजा–बाजा
गाभा–लत्ता	गेणो–गाठो	घडी–पलका

३४४ समस्त मानववाची एव मानवेतर प्राणी-वाचक यौगिक सज्ञाओ की लिंगानुसार निम्न कोटिया है —

(क) पुरष + स्त्री
(ख) पुरष + पुरुष
(ग) स्त्री + पुरुष
(घ) स्त्री + स्त्री

कोटि (क), (ख), (ग) की यौगिक सज्ञाए पुल्लिग होती हैं, और कोटि (घ) की सज्ञाए स्त्रीलिग।

समस्त वस्तु इत्यादि वाचक सज्ञाओ की उनम अवस्थित घटको की सख्येयता अथवा असख्येता के आधार पर दो उपकोटिया हो जाती है। इनम सख्येय वस्तु इत्यादि वाचक सज्ञाओ का लिंगानुसार वर्गीकरण भी मानववाची एव मानवेतर प्राणीवाचक सज्ञाओ के समान होता है। किन्तु असख्येय वस्तु इत्यादि वाचक यौगिक सज्ञाए सामान्यतया चार उपकोटियो मे विभाजित हो जाती हैं।

(क) पुल्लिग + स्त्रीलिग
(ख) स्त्रीलिग + स्त्रीलिग

(ग) पुल्लिग + पुल्लिग
(घ) स्त्रीलिंग + पुल्लिग

कोटि (क) (३-५) और (ख) (६) की यौगिक सज्ञाए स्त्रीलिंग होती है, तथा कोटि (ग) (७-९) और (घ) (१०-१२) की सज्ञाए पुल्लिग।

(ख) (३) दूजो जोर ई काई हो। बैन-बहुवा रै साथै हवेली री सगळी सुख-सांयत ई बिलायगी।

(४) पुरखा रै इण गांव री मोह-परीत छोडनै थू दिसावर मे कमाई सारू अवस जाजै।

(५) वा तौ किणी री मान-मनवार नी करी। रूपा रा कठोम्दाण सू आधौ लाडू तोडनै झट मू डा म धरियो।

(ख) (६) रतो माया रौ धणी हुवता थका ई उण सेठ रै मोठ-मरजाद नैडी आगी ई नी ही।

(ग) (७) वो आखिया मीचनै इण भात रौ सोच-विचार करतौ ई हौ कै राजाजी रौ असवार जतावळ करतौ बोलियौ—सता अवै काई हुकम फरमावौ।

(८) मिनख जीवन मे ई सगळा धरम-करम, भगती अर ग्यान है। जीवणै-जीवणै म फरक हुय सकै, आ बात म्हैं मानू।

(९) थारौ करम-धरम था रै साथै। म्हैं तौ ठीकरी माथै लिखनै सही कर दू ला।

(घ) (१०) म्हारै पूजा-पाठ मे किणी तरह रौ राफो नी पडणौ चाहीजै। नवलखै हार री बात अबै कालै तडकै ई व्हैला।

(११) सामू गाळी री नाव सुणियौ'र बोली ई—मर बळजाणी ! हित्यारी पापण ! थारा हाथ री रोटी-पाणी छोडणी पडसी।

(१२) रेसमी पोसाक माथै लागियोडौ जरी-गोटो ई अधारै मे पळापळ करतौ हौ।

३ ४ ५ शब्दगत रूप रचना की दृष्टि से समस्त यौगिक सज्ञाओ की तीन कोटिया हो सकती है —

(क) ऐसी यौगिक सज्ञाए जिनके द्वितीय घटक के साथ शब्दगत रूप प्रत्ययो का योग होता है।

(ख) ऐसी यौगिक सज्ञाए जिनके दोनो घटको के साथ शब्दगत रूप प्रत्ययो का योग होता है।

(ग) ऐसी यौगिक सज्ञाए जिनके शब्दगत रूप सामान्यत कोटि (क) के समान होते हैं, किन्तु इसके अतिरिक्त तिर्यक बहुवचन मे विकल्प से कोटि (ख) के समान दोनो घटको के साथ शब्दगत रूप प्रत्ययो का योग भी हो सकता है।

इन तीनो कोटियो की यौगिक सज्ञाओं की शब्दगत रूपावली के उदाहरण नीचे दिये जा रहे है।

सज्ञा	एक वचन		बहुवचन	
कोटि	ऋजु रूप	तिर्यक रूप	ऋजु रूप	तिर्यक रूप
(क)	कुटुम-कबीलो	कुटम-कबीला	कुटम-कबीला	कुटुम-कबीला
	टाबर-बूढो	टाबर-बूढा	टाबर-बूढा	टाबर-बूढा
	छळ-कपट	छळ-कपट	छळ-कपट	छळ-कपटा
	घडी-पलक	घडी-पलक	घडी-पलका	घडी-पलका
	जाच-पडताल	जाच-पडताल	जाच-पडताला	जाच-पडताला
	कीडी-मकोडो	कीडी-मकोडा	कीडी-मकोडा	कीडी-मकोडा
	रोटी-गाभो	रोटी-गाभा	रोटी-गाभा	रोटी-गाभा
	मान-मनवार	मान-मनवार	मान-मनवारा	मान-मनवारा
(ख)	गाभो-लत्तो	गाभा-लत्ता	गाभा-लत्ता	गाभा-लता
	खुणो-खोचरो	खुणा-खोचरा	खुणा-खोचरा	खुणा-खोचरा
	पत्तो-पानडो	पत्ता-पानडा	पत्ता-पानडा	पत्ता-पानडा
	चोर-साहूकार	चोर-साहूकार	चोर-साहूकार	चोर-साहूकारा
	छळ-बळ	छळ-बळ	छळ-बळ	छळा-बळा
	गाय-भैंस	गाय-भैंस	गाया-भैंसा	गाया-भैंसा
	बात-बिगत	बात-बिगत	बाता-बिगता	बाता-बिगता
(ग)	बरतन-वासण	बरतन-वासण	बरतन-वासण	बरतन-वासणा बरतना-वासणा
	ठाकर-ठेठर	ठाकर-ठेठर	ठाकर-ठेठर	ठाकर-ठेठरा ठाकरा-ठेठरा
	ठाम-ठीकरो	ठाम-ठीकरा	ठाम-ठीकरा	ठाम-ठीकरा ठामा-ठीकरा
	बेल-पानडो	बेल-पानडा	बेल-पानडा	बेल-पानडा बेला-पानडा

उपरिलिखित ओ-अन्त्य सज्ञाओ के वैकल्पिक तिर्यक रूप (यथा पानडो से पानडं) का उल्लेख नही किया गया है।

उपरिलिखित रूपावलियो के अतिरिक्त अनेक यौगिक सज्ञाआ के रूप भाषा मे रूढ हैं। इनके नीचे दिये हुए रूपो के अतिरिक्त रूप नही होते।

खोसा-लूटी	राजा-रक	धणी-धोरी
ताळा-कूंचो	चाल-चलगत	धन-माल
दया-मया	जमी-जायदाद	धन-सपत
दान-पुन्न	छाण-बीण	निसाण-पातौ
गरब-गुमान	धरम-करम	नाग-नामून

कई यौगिक सज्ञाए मूल म बहुवचन म ही होती हैं यथा हीरा-जवाहरात हीरा-जवाहराता, खिखरा-ठट्टा खिखरा-ठट्टा इत्यादि।

३४६ सहिति अथवा प्रमाणाधिक्य वाचक बहुवचन की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है—(१३-१५)।

(१३) उठै धान रौ काई तोटो—ढिगला धान पडियो।

(१४) उणरै उठै अनाप मनाप गाया-भैंस्या इण सारू वो मणा दूध सैर बेचण जावै।

(१५) थोडा दिना मे ई पीजारौ बरसा बूढौ हुयग्यौ।

३४७ अनेक सज्ञाए सामान्यतया बहुवचन मे ही अवस्थित होती है। इनके कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१६) आ बात सुणनै सगळा जिनावर उण खिरगोस रा मोर थेपडिया।

(१७) मासरै रौ उमायौ धर सू बहीर हुयौ अर मारग मे ईं मौत सू भेटका हुय गया।

(१८) दूजोडौ भाई राजकवरी नै तलण री वात बताई तौ राजाजी रा होस गुम हुय ग्या।

(१९) म्हारी निजरा औ सगळी ई नजारौ जोयौ।

(२०) दोनू हाथा म भागा चढी चरी लेय वा बा रै पाखती आई।

(२१) उणरी खीभ तौ जाणै आकासा चढगी। गोफणवाळी रै साम्ही तौ उणरी माथौ ई ऊचौ नी हुयौ।

(२२) भूडण लाजा मरती बोली—आ बात सुणनै तौ म्हनै थारी अकल रौ ई पीदौ उघडतौ दीसै।

(२३) माळण नै आदेस फरमाय सेजा फूल मगावण री महर करावौ म्हैं जिण काम मे हाथ घालू वो तौ पार पडै इज।

३.४८ संज्ञाओं की तिर्यक बहुवचन में आदरार्थक एवं संज्ञा-समुद्देशक अवस्थिति भी होती है। इन अवस्थितियों के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(२४) म्हे तौ पछै सगळी लाज-सरम नै आगी न्हाखनै पांवणां रै गाभा माथै हाथ घेरिया।

(२५) पण अणचक उणरै काना अेक कुम्हारी रै मूंडै एक अजब ई वात री सुरपुर सुणीजी—देखौ अै मावड़िया आ सेठां री हवेली कैड़ी पटकी पड़ी।

(२६) खतोड़ म मार्वं जको ई पैलपोत आ इज वात पूछै कै कारीगरा काई करो।

३.५ आ राजस्थानी म संज्ञा$_1$ + का + संज्ञा$_2$ (= स$_1$ का स$_2$) रचनाओं की पर्याप्त जटिल और समुन्नत व्यवस्था है जिसका इस भाषा की अभिव्यंजक संरचना से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। इन रचनाओं में अवस्थित स$_2$–घटक अपने सहवर्ती स$_1$–घटकों की अर्थ-तात्विक वृत्तियों का निर्धारण करते हैं। यथा वाक्य संख्या (२७ २८) में

(२७) दुख अर बिखै रौ अधारौ नैड़ौ ई नी फरकैला।

(२८) माया रै अधारै म भटकै परमात्मा रै अखड उजास म अलघ उडाणा भर।

अवस्थित रचनाए दुख अर बिखै रौ अधारौ तथा माया रौ अधारौ ऐसी रचनाए हैं जिनम स$_1$–घटको दुख अर बिखौ तथा माया दोनों म अधारौ नामक तत्त्व अथवा गुण के अन्तर्निहित होने की सकल्पना विद्यमान है। यहाँ दुख अर बिखौ तथा माया पर अधारौ का मात्र वक्ता दृष्टिकोण से अध्यारोपण ही न होकर अर्थ-तात्विक दृष्टि से इन स$_1$–घटको की अन्धकारमयता (बौद्धिक कुण्ठाजन्य मानसिक स्थिति) का उद्घाटन किया गया है जो कि एक व्यावहारिक एव सामाजिक सत्य है। इन वाक्यो म आलकारिकता के साथ-साथ अंधारौ स$_2$–घटक द्वारा दुख अर बिखौ तथा माया नामक सकल्पनाओं का जो आविर्भूत मूर्तीकरण किया गया है, वह व्यावहारिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण तो है ही, किन्तु इसके अतिरिक्त राजस्थानी भाषा-भाषी समाज की रीति-नीतियो और मान्यताओं का निर्धारक साधन भी।

व्याकरणिक दृष्टि से दोना वाक्यो म फरकैला (२७) और भटकै (२८) क्रियापदो का चयन भी इनमे अवस्थित स$_2$–घटको से सम्बन्धित है।

स$_1$ का स$_2$ रचनाओं का, उनम अवस्थित स$_2$–घटका के प्रकार्यों के आधार पर, निम्न प्रकार से कोटि विभाजन किया जा सकता है

(क) गुणबोधक स$_1$ का स$_2$ रचनाए

(ख) बहुलताबोधक स$_1$ का स$_2$ रचनाए

(ग) स्वल्पताबोधक स$_1$ का स$_2$ रचनाए

(घ) सीमाबोधक स₁ का स₂ रचनाए

(ङ) माप निर्धारक स₁ का स₂ रचनाए

(च) विशिष्टिकृत स₁ का स₂ रचनाए

३ ५ १ गुणबोधक रचनाओं की वाक्यो म अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे सूचित किय जा रहे हैं।

(२९) सेवट मूंड री टोकरी ववराणी सा माथै ई ग्रावणी ही।

(३०) बीनणी मुळक री धार रै सागै मोसा री डक मारती बोली—थें को जाणो ई हो ?

(३१) नित हिवडै म विछोव री लाय लागै ग्रर उणनैं आंखियां रै पाणी सू नित बुझाणी पडै।

(३२) ववरा रै ग्रदीठ हुया राजा डग-डग हुमियो। विसरा करतो कैवण लागो—मोठी बोली री वासणी सू आरा खोटा करम खरा नी हुय सकै।

(३३) राजकवरी पैला तो थोडी मुळकी, पण तुरत मुळक नै रीस रै ढकणा सू ढाक दी।

(३४) गिरस्ती री ग्ररटियो गणण-गणण घूमण लागो।

३ ५ २ बहुलताबोधक रचनाओं की वाक्यो मे अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे सूचित किय जा रहे हैं।

(३५) वटा री उजियारो देख-देख वा बिलै रै मालरा रो ई भार ऊचाय सकै

(३६) ममोबा रा माखर गुडकावता-गुडकावता वे सेवट मामलै घडै माथै धूगा ई।

(३७) ग्रसमान जोगी वारै ग्रासुवा री लडिया देख डग-डग हसण ढूकै जकी ढबै ई नी।

(३८) ढोल मू सोरम री ममरोळा फूटै।

(३९) लोगा कैयो तो म्हनै भरोसो नी हुयो। निजरा सू पतवाणिया पछै हसो री तू ताडियां मतै ई छूटगी।

(४०) तूटियोडी टागा सू लोई रा रेला वहण लागा।

३ ५ ३ स्वप्ना-बोधक रचनाओं की वाक्यो मे अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(४१) दुख ग्रर बिलै रो तो पाछो सपनो ई नी ग्रायो।

(४२) उण दिन रै विजोग पछै की खायो-पीयो नी। आखिया मे नींद रो कस ई नी ग्रायो।

(४३) झमझम करता धरती माथै पग दियो पण कठै ई चानणं री तिरण ई निगै नी आई।

३ ५ ४ सीमा-बोधक रचनाम्रो की वाक्यो मे अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(४४) सो पेट रै प्रयाग खाडा नै भरण सारू वा मौत सू ई बता कळाप करिया जणै बुढ़ापै री माठ लग पूगी।

(४५) रीस री पौंदो फाटता ई उणरै होठा खिल-खिल हसी नाचण ढूकी।

(४६) वा री बाता सुणनै वेटी री रीस रो तळो आय ग्यो हो।

३ ५ ५ माप-निर्धारक रचनाम्रो की वाक्यो मे अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखत हैं।

(४७) राजकवरी अपूठी ऊभी ही। कडिया रळकता सोना रा केस जाणै सूरज री किरणां री झूमको विखरियोडो।

(४८) हीरा-मोती, लाला अर गुलाल रो ढिग हुय ग्यो।

(४९) वेटी रै व्याव मेर ई उजास रो पुज दमकतो हो।

(५०) सुणी कै आपरी हवेली मे तो माया रा भडार भरिया।

(५१) बतूळिया रा गोट माथै गोट उठावतो, माटी रा गिडा ठोकरा सू उछाळतो दैत दो घडी दिन चढिया आपरी हवेली तो आयो इज।

(५२) सोगरा मे उदई रा ढेपा थेपडीज ग्या हा।

इसी कोटि की कतिपय अन्य रचनाए हैं—चिडियां री झूळ, गायां री छाग सिधणियां री झुड, पिणिधारिया री झूलरो हाडा री जान टाबरां री टोळ लुगायां री मेळो इत्यादि।

३ ५ ६ विशिष्टिकृत मूर्त्तता-बोधक रचनाम्रो के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं।

पीड री सळावौ	सुख रा दिन	मरदा री जात
हौल री उठाव	ईसका रा झपीड	सिंघा री जात
हरख री फु दिया	पवन रा लहरका	
आणद री ज्वार	मिनख री खोळियो	
रूप री झाळ	लुगाई री जमारो	
दरद री चटीडो	मसाण री ठायो	

३ ६ आमेडित संज्ञा अनुक्रमो के भाषा मे विविध प्रकार्य हैं। इस प्रकरण मे उनका सोदाहरण विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

(क) निम्नलिखित उदाहरणों में आम्रेडित संज्ञा अनुक्रमों का अर्थ है 'प्रत्येक अथवा एक-एक करके सब" (५३, ५४)।

(५३) झट अपळ-गपळ हुकम फरमाय दियौ कै बाजरी रौ बूंटौ-बूंटौ सूं द न्हाकौ।

(५४) पण आज रै दिन भाग फाटा पैली-पैली जद उणरी सासू घर-घर में जायनै सोगरा वाळी बात बताई तौ लोग सुणनै वगता हुय ग्या।

(ख) निम्न उदाहरण में आम्रेडित संज्ञा अनुक्रम का अर्थ है "बार-बार" (५५)।

(५५) महात्मा घडी-घडी कैंवतौ—भला मिनखा ! म्हारै हाथ में की सिद्धाई कोनी।

(ग) निम्न उदाहरणों में अवस्थित अनुक्रमों में प्रत्येकता अथवा समस्तता के साथ-साथ तीव्रता की ध्वनि भी विद्यमान है (५६, ५७)।

(५६) म्हैं अैड़ौ काई कसूर करियौ। वा ! म्हारी बोटी बोटी छून न्हाखौ पण म्हारै गुमान री रिछ्या करौ।

(५७) बादरा री फौदी-फौदी बिखरगी।

(घ) निम्न उदाहरणों में कथित क्रिया-व्यापार की मात्र आवृत्ति का उल्लेख है (५८, ५९)।

(५८) कबूतरा हरख सूं गुटरगूं-गुटरगूं करण लागा।

(५९) साप सळपट-सळपट करतौ पाछौ पीपळी माथै चढण लागौ कै नोळियौ पेर पूंछ पकडनै नीचौ ताणियौ।

(ङ) निम्न उदाहरणों में आम्रेडित संज्ञा अनुक्रम एक ही संज्ञा की आवृत्ति से उनके वाच्यार्थ में भेद की ध्वनि वर्तमान है (६०, ६१)।

(६०) राजा-राणी रै हरख रौ पार नी। हिवडै रै हरख-हरख रौ सचौ न्यारौ हुया करै। कोई हार देय राजी व्है तौ कोई हार खाय राजी व्है। जित्ता हिवडा उत्ता ई हरख।

(६१) हाल तौ घणा बरसा ताई औ ठागौ चलावणौ है। हाल अैडौ लाबौ-चौडौ सुख ई काई पायौ। फगत धूणी-धूणी तापी है।

(च) निम्न वाक्यों में आम्रेडित संज्ञा अनुक्रमों द्वारा परिमाणाधिक्य अथवा अमूल्य अथवा बाहुल्य ध्वनित हो रहा है (६२, ६३)।

(६२) राजकवर अरडां-अरडा रोया। राजा री आंखिया में ई आसू आय ग्या।

(६३) इण खास दीवाण पद रै लारै धोवां-धोवां धूड़ ।

(छ) निम्नलिखित रो-अन्तर्निविष्ट अनुक्रमा में अप्रत्याशितता के साथ-साथ वाच्य की सम्पूर्णता का उल्लेख है (६४, ६५) ।

(६४) दैत खेजड़ी री खेजड़ी उठाय लायौ ।

(६५) तीन दिना में दालो री दालो मिरगू भेळो नी करै तो मायौ दाढ़ण री आदेस ।

(६६) वा बोली-बोली सगळी गैणो-गाठौ तीव री तीव उतार दियौ ।

(ज) माथै अन्तर्निविष्ट अनुक्रमा में चरम तीव्रता का अर्थ ध्वनित होता है (६७, ६८) ।

(६७) डाका री घड़ि माथै घड़िग उडण लागी ।

(६८) काळ माथै काळ पड़ण लागा । कुदरत ई मिनखा री मस्तो री बासो छोड उण जगळ में बेगम डेरा जमाय लिया ।

(झ) ई—अन्तर्निविष्ट अनुक्रमा में सज्ञाओं के वाच्य के परिमाणाधिक्य चरमावस्था के साथ-साथ इतर किसी वस्तु अविद्यमानता का बोध होता है (६९ ७०) ।

(६९) च्यारू खानी गुडी-गरणो पाणी । पांणी ई पांणी । इण पाणी री तो नी कोई थाग अर नी कोई पार ।

(७०) पयाळ लोक री तो माया ई अनूठी । सोनै-रूपै रा रूख । हीरा-मोतिया रा झूमका । धरती माथै कांकरा री ठौड मिणियां ई मिणियां ।

(ञ) निषेध-निपात के साथ पर्याय-पदों की आवृत्ति के उदाहरण निम्नलिखित हैं (७१, ७२) ।

(७१) नीं कोई मो नी कोई डर । आपरी नींद सूवता और आपरी नींद उठता ।

(७२) चिड़ो अर चिड़ै रै आणद री कोई पार 'न कोई छेह ।

(ट) आमेडित सज्ञा अनुक्रमा के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे सूचित किय जा रहे हैं (७३, ७६) ।

(७३) रात-रात म्हारै पेट में सुणी बात समा रेवै तो दिहुगै नै आफर ढोल हुय जाऊं ।

(७४) सोनर मछी पाणी पाणी वाल्है ई नै लेय माय वडगी ।

(७५) स्याळ री जात—छूटा मायलो छूट ।

(७६) अै बैंगा सू बैंगा इण राग वारै निकळै जरो बात करो, पछै म्हारै सू मला बिचारण री मन में लावो, पैला म्हैं थेक सबद ई नी सुणणी चावू ।

४. सर्वनाम

४ १ आधुनिक राजस्थानी सर्वनामो को निम्नलिखित वर्गों मे परिगणित किया जा सकता है।

४.१ १. पुरुषवाचक—

			एक वचन			बहु वचन	
उत्तम पुरुष			म्है	"मैं"	अभिनिहित	आपाँ	'हम"
					समर्याद	म्हे	"हम"
मध्यम पुरुष		सामान्य	थू	"तू"		थें	"तुम, आप"
		आदरार्थ	–			आप	
अन्य पुरुष	आसन्न	पुल्लिग	ओ	"यह"		अँ	"मे"
		स्त्रीलिग	आ	"यह"			
	व्यवहित	पुल्लिग	वो	'वह"		वे	"वे"
		स्त्रीलिग	वा	"वह"			

उत्तम पुरुष एक वचन म्हैं का वैकल्पिक रूप हूं भी है।

पुरुष वाचक सर्वनामो के तिर्यक रूप निम्न सारणी मे सूचित किये जा रहे हैं।

पुरुष वाचक सर्वनाम का ऋजु रूप	बद्धतिर्यक रूप — ग्रवस्थिति के परिसर: कर्त्ता स्थानीय	— नैं	— रो, — णो	ग्रन्य परसर्ग	स्वतन्त्र तिर्यक रूप
म्हैं	ऋजु रूप के समान		म्हनै म्हारो	—	—
ग्रापैं	,,	ग्रापानैं	ग्रापारो~ ग्रापाणो	—	ग्रापा
म्हे	,,	म्हानैं	म्हारो	—	म्हां
थू	,,	थनैं	थारो	—	—
थें	,,	थानैं	थारो-थाणो	—	था
ग्राप	,,	ग्रापनैं	ग्रापरो	—	ग्राप
ग्रो, ग्रा	इण	इणनैं~इन्नैं	इणरो	—	इण
ग्रैं	इ́णा	इणानैं~इयानैं ~ग्रानैं	इणारो~इयारो ~ग्रारो	—	इणा~ग्रा
वो, वा	उण	उणनैं~उन्नैं उवैनैं	उणरो	—	उण
वे	उणा	उणानैं~उवानैं ~वानैं	उणारो~उवारो वारो	—	उणा~वा

४ १ २ निजवाचक

ग्राप, ग्रापैं, ग्रापोग्राप, सुतैं, मतैं, खद, खुदोखुद, सापत, सैंदरूप

उपरिलिखित निजवाचक सर्वनामो के ग्रतिरिक्त विशेषण स्थानीय परिसरों मे समस्त पुरुषवाचक सर्वनामो के निजवाचक रूप उनके सम्बन्धवाचक रूपो के समान ही होते हैं। ये समस्त रूप नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम रूप	उसका सम्बन्ध वाचक अथवा विशेषण स्थानीय निजवाचक रूप
म्हैं	म्हारौ
आपां	आपारौ आपाणौ
म्हे	म्हारौ
थू	थारौ
थें	थारौ
आप	आपरौ
औ आ	इणरौ
अै	इणारौ
वो वा	उणरौ
वे	उणारौ

विकल्प से समस्त अन्य पुरुष सर्वनामों का विशेषण स्थानीय निजवाचक रूप आपरौ भी हो सकता।

आदरार्थक विशेषण स्थानीय निजवाचक रावलौ की भी भाषा म अवस्थिति होती है।

साम्रत "व्यक्तिगत रूप से, प्रयत्नत, स्वय" को भी अन्य निजवाचक सर्वनामो को कोटि म माना जा सकता है। इसकी वाक्यों मे अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं (१, २)।

(१) म्हैं साम्रत म्हारी निजरा स्याळिया नै थे म जावता देखियौ।

(२) राणी रै मैल मू साम्रत देखता नवलखौ हार उचकाय लेजै।

सुर्त "स्वत" तथा मतै "स्वत" की स्वतन्त्र रूप से अवस्थिति के अतिरिक्त विशेषण स्थानीय निजवाचक रूपो के साथ भी आसक्ति होती है। इस प्रकार से निर्मित समस्त रूप नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

म्हैं म्हारै	मुनै मनै	औ आ	इणरै आपरै	मुनै मनै
आपै आपारै	मुनै मनै	अे	इणारै आपरै	मुनै मनै
म्हे म्हारै	मुनै मनै	वो बा	उणरै आपरै	मुनै मनै
थू थारै	मुनै मनै			
थें थारै	मुनै मनै	वे	उणारै आपरै	मुनै मनै
आप आपरै	मुनै मनै			

विनरक निजवाचकों की अवस्थिति विशेषण स्थानीय निजवाचक रूपों की आवृत्ति से होती है, यथा म्हारो म्हारो, थारो-थारो। विकल्प से आप आप अथवा आपोआप की अवस्थिति भी होती है (३, ४)।

(३) अबै थे सगळा आपोआप रै घरै जावौ।

(४) गरमी री छुट्टी हुई. अध्यापक आप-आपरै घरै गया।

४ १ ३... अन्योन्याश्रयवाचक

माहोमाह, अेक-दूजो, आपस

इन तीनों सर्वनामों की वाक्यों में अवस्थिति के उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(५) एक हुती चिड़ो नै एक हुती उंदरो। वे माहोमाह धरमला करिया।

(६) सगळा अेक दूजै रै सुख मे त्यार अर अेक-दूजै रै दुख मे त्यार। नित रात रा दरबार जुड़तो।

(७) आपा तो आ'र खराब हुया। बालकां रै आपस री बाता चलती आवै है।

४ १ ४ सम्बन्धवाचक

जको, जिण

जको की रूपावली निम्नलिखित है।

		एकवचन	बहुवचन
पुंल्लिंग	ऋजु	जको	जका
	तिर्यक	जका जकै	जका
स्त्रीलिंग	ऋजु	जकी	—
	तिर्यक	जकी	—

जिरा मूल मे ही तिर्यक एकवचन रूप है। इसका तिर्यक बहुवचन जिरा होता है। जिरा का वैकल्पिक रूप ज्या भी है।

४ १ ५ सहसम्बन्ध वाचक
सो

सो का तिर्यक रूप तिरा है। तिरा का बहुवचन रूप तिरा है। तिरा का वैकल्पिक रूप त्या भी भाषा मे उपलब्ध है।

४ १ ६ अन्यवाचक
दूजो, बीजो

दूजो 'अन्य, कोई और' की अवस्थिति का उदाहरण निम्नलिखित है।

(८) अेक निजर पतळी तो दूजी निजर जाडी अेक पलक ऊनी तो दूजी पलक ठाडी। खुद रै मन री खुद नै ई जाच नी पडै तो दूजै नै पहण रो तो मारग ई कठै।

४ १ ७ अनिश्चयवाचक
कोई, केई, कीं, निरी, अेक जणो

कोई एकवचन सर्वनाम है। इसका तिर्यक रूप किणी है।

केई मूल म बहुवचन सर्वनाम है। इसका तिर्यक बहुवचन रूप किणी है। कीं "कुछ" अविकार्य सर्वनाम है।

निरी "अनेक (स्त्रीलिंग)" किन्ही परिसरो म केई के स्थान पर अवस्थित होता है (९)।

(९) राणीजी निरी वार सगळा नै सावळ घर मे समझाया-बुझाया, तौ ई बारो भूत नी उतरियो।

अेक जणो 'कोई व्यक्ति" की अवस्थिति का उदाहरण निम्नलिखित है (१०)।

(१०) थारो बड भाग कै थारै दरद ने अेक जणो तो समझै है।

अनिश्चय वाचक कोई तथा केई के साथ को, सो तथा का, सा की क्रमश आसत्ति से कोई को, कोई सो, केई का, केई सा रूप निर्मित होते हैं (११, १२)।

(११) म्हनै आज मेळै मे आपा रै गाव रो कोई को आदमी इज निगै आयो।

(१२) इतरा वाक्य म्हैं देख लीना हू। वा माप सू केई का गळत है अर केई का सही है।

४ १ ८. प्रश्नवाचक
कुण~किण, कैंणौ, काई

कुण~किण "कौन" की अवस्थिति ऋजु एकवचन, तिर्यक एकवचन तथा ऋजु बहुवचन में होती है। इसका तिर्यक बहुवचन रूप किणां है।

कैंणौ 'किसका" अनियमित सर्वनाम है। भाषा में इसकी अवस्थिति अधिक नही होती (१३)।

(१३) वे अेक लाठी छाव लेयनैं हाजरिया नैं पूछियो—म्रो कैंणौ हाकौ है रे ?
परभात री बेळा अै जे जैं करता कुण कान खावैं ?

काई "क्या" अविकार्य सर्वनाम है। निम्न वाक्य में, जहा सामान्यत कौं की अवस्थिति शक्य है काई का प्रयोग हुआ है।

(१४) वो काई ई काड'न देवणवाळौ नो।

४ १.९ समूहवाचक
सगळी सैंग, सै, सब, मरब

सगळौ "सब, सब कोई" का स्त्रीलिंग रूप सगळी है। इसकी रूपावली निम्न-लिखित है

	एकवचन		बहुवचन	
	ऋजु	तिर्यक	ऋजु	तिर्यक
सगळौ	सगळौ	सगळैं~सगळा	सगळा	सगळा
सगळी	सगळी	सगळी	—	—

सगळौ एकवचन मे सहिति वाचक सज्ञाम्रो का समुद्देशन करता है ग्रौर बहुवचन मे सख्येय सज्ञाम्रो का।

सैंग "समस्त, सब" का तिर्यक बहुवचन सैंगां होता है। अन्य रूपो मे कोई विकार नही होता।

सैं सैंग का वैकल्पिक रूप है ग्रौर ग्रविकार्य है। सामान्यत इसकी ग्रवस्थिति ग्रभिव्यजक परिसरो में ही होती है (१५)।

(१५) दुनिया मे फगत दो ई चीजा रूपाळी अेक कुदरत नै दूजी नार। बाकी सैं
पपाळ।

सब की रूपावली की रचना सैंग के समान ही होती है। इसकी ग्रवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं (१६, १७)।

(१६) बेटो बाप रै दाई चतर हो। सब समझग्यो।

(१७) पछै दैत जाणै, आ प्रजा जाणै अर राजा जी जाणै। सबा नै आप-आप रो जीव बालो लागै।

सरव की अवस्थिति केवल सख्येय सज्ञाओ के समुद्देशन मे होती है।

४ १ १० निर्देशितावाचक

सै, सागै

सै "उसी, वही" तथा सागै "वही, (पहले) जैसा" की वाक्यो मे अवस्थिति के उदाहरण निम्नलिखित हैं (१८, १९)।

(१८) चादणी चवदस रै सै दिन उण रो जलम हुयो, पछै बस वयू नी उजागर व्है।

(१९) इत्तो बार भलो करिया ई राजा जी रो तो वो रो वो सागै आदेस। तीन दिन मे कौल पूरो नी हुयो तो घाणी त्यार।

४ १ ११ व्याप्तिवाचक

हर, हरेक, दीठ

हर "प्रत्येक" का अर्थ तो स्पष्ट ही है। किन्तु हरेक के सामान्य अर्थ "प्रत्येक" के अतिरिक्त एक विशिष्ट अर्थ है "कोई भी" (२०)।

(२०) म्हारो नाव लेयनै उणरै घरै हरेक नै कैय दीजै। थारो काम बण जासी।

दीठ का मुख्यार्थ है "दृष्टि।" किन्तु निम्न वाक्य मे इसका अर्थ है "प्रति, हर" इत्यादि।

(२१) पिणियारी दीठ राज री तरफ सू पीतळ रो अेक-अेक भाडो दिरवाय दियो।

४ १ १२ परिमाणवाचक

इतरो~इत्तो	"इतना"
उतरो~उत्तो	"उतना"
कितरो~कित्तो	"कितना"
जितरो~जित्तो	"जितना'
तितरो~तित्तो	"उतना ही"

इन मूल सर्वनामो के अतिरिक्त इनसे कतिपय सर्वनाम सयोजन भी निर्मित होते हैं। इतरो-उतरो, कितरो-जितरो इत्यादि।

समस्त परिमाण वाचक सर्वनामो की रूपावली की रचना विकार्य विशेषणो के समान होती है।

४ १ १३ गुणवाचक

अँडो 'ऐसा" ऊडो, वँडो 'वैसा"
कँडो "कैसा'
जँडो "जैसा" तँडो "तैसा"

इनके अतिरिक्त किसो~कियो 'कौन सा, कैसा," कियोड़ो (कियो का अभिव्यजक रूप) तथा जिसो~जियो 'जौन सा, जैसा" भी इसी कोटि म परिगणित किये जा सकते हैं।

उपरिलिखित गुणवाचक सर्वनामो के निम्नलिखित सयोजन भी भाषा मे प्रचलित हैं

अँडो—ऊडो
अँडो—वँडो
जँडो—तँडो
जँडो—कँडो

समस्त गुणवाचक सर्वनामो की शब्दगत रूपावली की रचना विकार्य विशेषणो के समान ही होती है।

४ १ १४ प्रकारता बोधक

इतरै~इत्तै
उतरै~उत्तै
कितरै~कित्तै
जितरै~जित्तै
तितरै~तित्तै

समस्त प्रकारता बोधक सर्वनाम वस्तुत प्रमाणवाचक सर्वनामो के एकवचन तिर्यक रूप हैं।

४ १ १५ रीतिवाचक

इउ ~यू, ईं, व्यू, क्यू ज्यू, त्यू

इन सर्वनामो के कतिपय सयोजन नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

ज्यू—ज्यूं
त्यू—त्यू
ज्यू—त्यू

कीकर 'कैसे'' तथा कींकर ''क्योंकर'' भी इसी कोटि मे परिगणित किये जा सकते हैं।

४ १ १६ स्थानवाचक

(क) ग्रठै ''यहाँ इस स्थान पर''
उठै ''वहाँ, उस स्थान पर''
जठै ''जहाँ, जिस स्थान पर''
तठै ''वहां, उस स्थान पर''
कठै ''कहाँ, किस स्थान पर''

४ १ १७ दिशावाचक

(ख)- ग्रठी ''इधर''
उठी ''उधर''
जठी ''जिधर''
तठी ''तिधर''
कठी ' किधर''

४ १ १८ इतर दिशा ग्रथवा स्थानवाचक सर्वनाम रूप नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

(ग) ग्रठीनै
उठीनै
जठीनै
तठीनै
कठीनै

(घ) ग्रठै ई ''यहा ही''
उठै ई ''वहा ही''
जठै ई ''जहा ही''
तठै ई ' तहा ही''
कठै ई ''कहा ही''

(ङ) ग्रठा
उठा
उठा~जा
तठा~ता
कठा

(च) ग्रठैकर, उठैकर, जठैकर, तठैकर, कठैकर,
ग्रठीकर, उठीकर, जठीकर, तठीकर, कठीकर,
ग्रठाकर, उठाकर, जठाकर, तठाकर, कठाकर,

उपरिलिखित स्थानवाचक सर्वनामो की परस्पर ग्रासत्ति से निम्नलिखित सयोजनो की रचना होती है।

(छ) ग्रठै–उठै, ग्रठै–जठै, जठै–तठै, जठै–कठै,
ग्रठी–उठी, ग्रठी–जठी, जठी–तठी, जठी–कठी,
ग्रठा–उठा, ग्रठा–जठा, जठा–तठा, जठा–कठा,
ग्रठै ई–उठै ई, ग्रठै ई–जठै ई, जठै ई–तठै ई, जठै ई–कठै ई,
ग्रठैकर–उठैकर, ग्रठैकर–जठैकर, जठैकर–तठैकर, जठैकर–कठैकर,

अठीकर–उठीकर, अठीकर–जठीकर, जठीकर–तठीकर, जठीकर–कठीकर
अठीनै–उठीनै, अठीनै–जठीनै, जठीनै–तठीनै, जठीनै–कठीनै ।

आमेडित स्थान वाचक सर्वनामो की रचना रूप सख्या (क–ङ) की आवृत्ति से होती है, तथा अठै–अठै, अठी–अठी, अठीनै–अठीनै, अठै ई–अठै ई, अठा–अठा इत्यादि ।

री अन्तर्निविष्ट आमेडित सर्वनामो की रचना आमेडित रूपों मे रीके अन्तर्निवेष से होती है, यथा अठै री अठै, उठै री उठै इत्यादि । इस प्रकार न अन्तर्निविष्ट स्थान-वाचको की भी रचना होती है, यथा अठै न अठै, उठै न उठै इत्यादि ।

४ १.१९ कालवाचक

(क) हमैं, जद, तद, कद

(ख) अबै, जदै, तदै, कदै

(ग) हमार हमारू, हमकै, हमको, हमकी, हमलकै,
हमकलै, हम कोई

(घ) अबार, अबारू, अबकै, अबको, अबकी, अबलकै,
अबकलै, अब कोई

(ङ) हणं, हणं ई
जणं, जणं ई
कणं, कणं ई

(च) जणंकलो, कणं कलो

(छ) जरा, करा

(ज) अबै ई, जदै ई, तदै ई, कदै ई

(झ) अजै, अजै ई

कालवाचक सर्वनामो के अन्य सयोजन निम्नलिखित हैं ।

कदै ई कदै
जद इज तो
जठै कठै ई
कदै ई न कदै ई
अबारू री अबारू
कदास कणं ई

४. २ अन्य प्रकार के सार्वनामिक सयोजन नीचे सूचित किये जा रहे हैं ।

की–न–काई	कुण–न–कुण
केई–केई	काई–न–काई

जिण–तिण
किणी थेक
जिणँ–जिणँ
कोई–न–कोई
की–न–की

प्रकरण सख्या (४ १) मे उल्लिखित आदरवाचक मध्यम पुरुष सर्वनामो के अतिरिक्त राज तथा हुकम की भी भाषा म अवस्थिति होती है (२२, २३)।

(२२) म्हैं म्हारै हाथ सू बारणौ उघाड, राज वेगा सिधावै जकी बात करैं ।

(२३) आप तो हुकम पोढिया हा पण भखावटै-भखावटै ई लोग तौ दरसणा वास्तै अडवडिया जको मळौ मच ग्यो ।

जिण, तिण, किण से जिणी, तिणी, किणी रूप भी निर्मित होते हैं ।

५. विशेषण

५ १ श्रा राजस्थानी मे विशेषण कोई शब्दगत रूप वर्ग न होकर वाक्य विन्यास के श्राधार पर निर्धारित सवर्ग है। इस सवर्ग की निम्नलिखित मुख्य कोटियां हैं।

(क) गुणवाचक विशेषण
(ख) सख्यावाचक विशेषण
(ग) निर्धारक विशेषण
(घ) सार्वनामिक विशेषण

५ १ १ गुणवाचक विशेषणो के द्वारा अपने विशेष्यो के गुण-धर्मों का ही कथन नही होता क्योंकि कोश की दृष्टि से पारिभाषिक श्राधार पर प्रत्येक सज्ञा आदि विशेष्य शब्द स्वतन्त्र रूप से अपने पारिभाषित गुण-धर्मों का पु ज होता है। यथा कौश्रा नामक पक्षि को काला कौश्रा कहा जाय तो काला विशेषण द्वारा समधिक्ता दोष उत्पन्न हो जायगा क्योंकि कौश्रा नामक पक्षि का काला होना एक सर्वविदित तथ्य है, और कौश्रा सज्ञा की कोश मे दी गई परिभाषा में उसके सामान्य रूप से काला होने का उल्लेख भी रहता है। अत यह कहना अधिक युक्ति सगत है कि गुणवाचक विशेषणो का मुख्य प्रकार्य है स्वचाचित गुण-धर्मों को अपने विशेष्यो पर अध्यारोप तथा तज्जनित वैशिष्ट्य के उल्लेख द्वारा वाक्य मे वाचित विशेष्य व्यक्ति अथवा वस्तु आदि के प्रति वक्ता के दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति। निम्नलिखित उदाहरण से इस तत्त्व को स्पष्ट किया जा सकता है (१)।

(१) हेटै उतर वा खेत मे सूअर अर भाचरिया नै हेरण लागी। इण मोल्या कवर सू आगे बात करण रौ मन नहीं व्हियो। उणरी आख्यां तो धावा रिसता सूअर मे अटकियोडी ही।

उक्त वाक्य मे वक्ता ने किसी राजकवर को उसके घृणित कर्म के कारण मोल्या 'पुरुषार्थहीन' कहकर उसके वैशिष्ट्य के उद्घाटन के साथ-साथ उसके प्रति अपने दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति भी की है। विशेष्य के गुण-धर्म के कथन के साथ वक्ता के विशेष्य के प्रति दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति भी विशेषणो का महत्त्वपूर्ण अर्थ-तात्त्विक प्रकार्य है।

गुणवाचक विशेषणो का अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकार्य यह भी है कि विरुद्धार्थक गुणवाचक विशेषण युग्मो के वास्तिवाचक घटक अपने अभिहित गुण-धर्मों के अनस्तित्व अथवा अभाव

के सूचक न होकर, नास्तिवाचकता के माध्यम से गुण-धर्मों के अस्तित्व का अभिधान करते हैं। निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित नास्तिवाचक विशेषणों की अवस्थिति से इस तथ्य को लक्षित किया जा सकता है (२-६)।

(२) उणरैं अदीठ हुया खबर रैं जीव में जीव आयौ।

(३) बिणास री आकी आवैं जद स वीं बाता इं उघी बण जावैं।

(४) इण मगती रौ औ बेजोड़ रूप तौ सगळी गणिया अर सगळी दासिया रैं रूप माथै पाणी फर दियौ।

(५) खेत री रखवाळण राणी बणता इं अबळा हुयगी।

(६) सूरज रौ उजास अनाप। चदरमा री चाणनी अनाप। बगत परवाण रितुवौं रा गेडा हुवता।

५ १ २ आ राजस्थानी के सामासिक गुणवाचक विशेषणों को, उनमें अवस्थित अंगों के आधार पर तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है —

(क) गुवि$_1$–गुवि$_2$ सामासिक विशेषण जिनके दोनों अंगों से सहगामी गुण-धर्मों का बोध होता है, यथा मूखौ-तिरसौ, फोरौ-पतळौ, फूठरौ-फररौ, गैलौ-गूगौ इत्यादि।

(ख) विरुद्धार्थक गुवि$_1$–गुवि$_2$ सामासिक विशेषण, यथा अलगौ-नैड़ौ, गोरौ-काळौ, खारौ-मीठौ, ढाडौ-ऊनौ इत्यादि।

(ग) प्रतिध्वन्यात्मक गुवि$_1$-गुवि$_2$ सामासिक विशेषण यथा अनाप-सनाप, गैलौ-गूलौ इत्यादि।

५ १ ३ गुणवाचक विशेषणों से निर्मित पदबन्धों के आ राजस्थानी में निम्नलिखित वर्ग किये जा सकते हैं —

(क) समतावाचक विशेषण पदबन्ध

(ख) तुलनावाचक गुणवाचक विशेषण पदबन्ध

(ग) तुलनावाचक विशेषण पदबन्ध

(घ) प्रसृत विशेषण पदबन्ध

५ १ ३ १ समतावाचक विशेषण पदबन्धों में किसी उपमान को विशेष गुण-धर्म का मानक मानकर किसी उपमेय की उक्त गुण-धर्म के आधार पर उससे (अर्थात् उपमान से) समता की अभिव्यक्ति की जाती है। इन पदबन्धों की आतंरिक संरचना उपमान बोधक संज्ञा$_1$ + समतावाचक परसर्ग$_2$ + गुण धर्मवाचक विशेषण$_3$ + उपमेय वाचक संज्ञा$_4$ के आधार पर होती है (७)।

(७) उवा ईडा सू मुखमल$_1$ री जात$_2$ फूटरा-रुपाळा$_3$ चिचिया$_4$ निकळिया।

समतावाचक गुणवाचक विशेषण पदबन्धों का उनमें अवस्थित परसर्गों के आधार पर वर्गीकरण किया जा सकता है। आ० राजस्थानी के गुण-धर्म समतावाचक परसर्ग निम्नलिखित हैं --

रै उनमान (८)	रै जैडो (१५)
रै उणियार (९)	रै जितरो~रै जित्तो (१६)
री कळाई (१०)	रै जिमो (१७)
री जात (११)	रै ज्यू (१८)
रै दाई (१२)	
रै सरीखो~रै सरीसो (१३)	
सो (१३)	
रै प्रमाण (१४)	

इण परसर्गों की वाक्यों में अवस्थिति के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(८) औ वन तो मा री गोद रै उनमान सुखदाई।

(९) उणनै सातमों महीना हो। दसमैं महीनै चाद रै उणियार रूपाळो बेटो जलमियो।

(१०) पण राजकुमारी तो कवर री कळाई साव अबूझ ही।

(११) अबै थोडी-थोडी घाटी हिळण लागी। रूपै री जात धोळा केस।

(१२) बेटो बाप रै दाई चतुर हो, सब समझग्यो।

(१३) कुच जाणै पाकी नारगियां, सोपारी सा कठोर। पान सरीखो पेट। केसर लकी।

(१४) अर इण वगत तो सेठाणू दूध रै झागों रै प्रमांण उणरो मन हळको अर निरमल हुयग्यो।

(१५) तीजोडो भाई नाडो वाळै देंत री बात बताई। दूध जैडै मीठै पाणी री चार बावडियां री जाणै जित्तो गुण अर औसाण आखो परथै मानियो।

(१६) थारै जितरो मूरख इन धरती माथै सायद ई व्हैला।

(१७) म्हारा वीरा यू तो म्हारै जितोई निरभागी है।

(१८) इण घर मे थारी देह गगाजळ ज्यूं पवित्र रैवेला।

निम्न उदाहरण मे एक ही वाक्य (१९) म अनेक समतावाचक गुणवाचक विशेषण पदब धो की अवस्थिति हुई है।

(१९) सूअै री चाच जैडी तीखी नाक कवळ रै उनमान रूपाळौ उणियारौ कोयल सरीखी मधरी वाणी हिरणी सरीखी चचल आखिया काले नाग रा बिचियौ जैडा काळा केस हाथी री कळाई मतवाळी चाल सिध रै उनमान पतळी कमर हस री कळाई लाबी नस—अै सगळी बाता मतवाळा कवर नै अक ढौड ई निगै आई।

५ १ ३ २ तुलनावाचक गुणवाचक विशेषण पदब धो मे उपमेय का उपमान से किसी गुणधम म प्रमाण अथवा मात्रा आधिक्य/अनाधिक्य का उल्लेख रहता है (२०)।

(२०) वारै विखै अर फोडा री बात सुणनै पछी कैयौ—बड इचरज री बात है कै था मिनखा म साप सू बत्ता हित्यारा व्है।

आतरिक सरचना की दृष्टि से इन पदब धो के विभिन्न अग है उपमान (सज्ञा) + सू + आधिक्यानाधिक्य सूचक विशेषण + उपमेय (सज्ञा) जैसा कि उदाहरण सख्या (२०) से स्पष्ट है। इन पदब धो की विविध सभावनाए सोदाहरण नीचे सूचित की जा रही है।

(क) सू बत्ता (देखिये उदाहरण सख्या २०)

(ख) सू ई वत्ता (२१)

(२१) महागणी उणरै पगा मे माथौ निवाय बोली— मासी थू म्हारै वास्तै जलम देवणवाली मा सू ई बत्ती।

(ग) सू कम/निबलौ इत्यादि (२२)

(२२) इण बळ रै उपरात ई म्हैं आ बात कैवू कै लुगाई सू निबळी तो कोडी ई नी हुवै।

(घ) सू इदक (२३)

(२३) भू डण धणी री आखिया मे मीट गडाय कैवण लागी—इण दुनिया मे था सू इदक समझवान म्हनै तौ कोई दूजो निगै नी आयौ।

तुलनावाचक गुणवाचक विशेषण पदब धो मे सू के अतिरिक्त कतिपय अन्य परसर्गों की अवस्थिति के उदाहरण भी नीचे सूचित किये जा रहे है।

(ङ) रै टाल गुवि (२४)

(२४) पछै वाणियै टाळ लाज बचावणियौ कोई दूजौ कोनी।

(च) रैं विचैं गुवि (२५, २६)

(२५) अर दूजी खास बात आ ही कैं छोटी राणी वडी राणी विचैं रूपाळी अर इज घणी ही ।

(२६) इण विचैं तो वेटो नैं हाथा मारणी वत्ती है ।

(छ) रैं सामी गुवि (२७)

(२७) पच्चीस वरसों रा भर मोटियार तौ आपरैं सामी फीका लागैं ।

तुलनावाचक गुणवाचक विशेषणों के अन्तर्गत् ही अतिशयता बोधक पदबन्धों को भी सम्मिलित किया जा सकता है ।

(२८) दुनिया मे धन कैं बित्त ई सबसूं सिरैं चीज है ।

अतिशयता बोधक पदबन्धों म उपमान स्थानीय सज्ञा के बदले मे सब आदि सर्वनामों की अवस्थिति है, जैसाकि उपरिलिखित उदाहरण से स्वत स्पष्ट है । इस कोटि की रचनाओ के अन्य उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है ।

(२९) अैड़ो खुसी तो आज पैली किणी रूपाळैं सूं रूपाळैं राजकवर नैं ई नी हुई व्हैला ।

(३०) अेक अळगैं राज सूं फिरतौ-घिरतौ सासिया रौ डेरौ आयो । सासी एक सूं एक डयाळ ।

तुलनावाचक गुणवाचक विशेषण पदबन्धों के अतिरिक्त भाषा मे कतिपय गुणवाचक विशेषणों तुलनावाचक शब्दगत रूप भी निर्मित होते हैं यथा

	मूल गुणवाचक विशेषण रूप	तुलनावाचक रूप
(क)	बडो	बडेरौ
	मोटो	मोटेरौ
	छोटो	छोटेरौ
	लाठो	लाठेरौ
	बोदो	बोदेरौ
	घणो	घणेरौ
(ख)	नवो	नवादो

जैसाकि उपरिलिखित उदाहरणो से स्वत स्पष्ट है उक्त प्रकार की शब्द रूप रचना भाषा मे केवल कुछ गिने-चुने विशेषणो तक ही सीमित है ।

गुणवाचक विशेषणो के अभिव्यजक रूप भी निर्मित होते हैं। रूप रचना के आधार पर इनका निम्नलिखित कोटियो मे विभाजन किया जा सकता है।

कोटि	सामान्य रूप	अभिव्यजक रूप		
(क)	मीठौ	मोठोडौ	मीठोडकौ	मीठलौ
(ख)	मोटौ	मोटोडौ	मोटोडकौ	—
(ग)	धीमौ	धीमाडौ	धीमोडकौ	—
	नवौ	नवोडौ	नवोडकौ	—
(घ)	अेकलौ	अेकलोडौ	—	—

काळौ के अभिव्यजक रूप कालोडौ तथा काळोडकौ के अतिरिक्त कालूटौ रूप भी उपलब्ध होता है।

उपरोक्त अभिव्यजक रूपो के अल्पार्थक पुल्लिग (यथा मीठोडियौ इत्यादि) तथा स्त्रीलिंग (मीठोडी इत्यादि) रूप भी निर्मित होते हैं।

सामान्यतया उक्त अभिव्यजक रूपो से तुलनात्मकता की अभिव्यजना भी होती है। यथा लबौ का तुलनात्मक रूप लम्बोडौ तथा तम-भाव रूप लम्बोडकौ आदि।

अनेक अविकार्य गुणवाचक विशेपणो के (जिनका उल्लेख प्रकरण सख्या (५,४) मे किया गया है) भी अभिव्यजक रूप निर्मित होते हैं। इनके कतिपय उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं

अविकार्य गुणवाचक विशेपण	अभिव्यजक रूप
अंदो	अंदोडौ
बाभ	बाभडौ
मोटियार	मोटियारडौ
मूंझी	मूंझोडौ
असनी	असलीडौ
कमसल	कमसलडौ
खामची	खामचोडौ
सफेद	सफेदियौ

समस्त अविकार्य गुणवाचक विशेपणो के अभिव्यजक रूप विकार्य हो जाते है जैसा कि ऊपर के उदाहरणो से स्वत स्पष्ट है।

अनेक अभिव्यजक स्त्रीलिंग रूपो की तम-भाव गुणवाचक विशेषणो के रूप मे भाषा मे अवस्थिति रूढ है। मीठकी, मोटकी, खारकी, काळकी, काणकी इत्यादि विशेषण इस कोटी के तम-भाव रूढ विशेषण हैं।

इस प्रकार –च प्रत्यय निर्मित कतिपय गुणवाचक विशेषणो के अभिव्यजक स्त्रीलिंग रूप भी तम-भाव का अर्थ ध्वनित करते हैं, यथा काणची, काळची, धोळची, पीळची, कूडची इत्यादि।

५ १ ३ ३ तुलनावाचक विशेषण पदबन्धो म उपमेय की उपमान से समानता का कथन न करके दोनो की परस्पर तुलना की जाती है (३१)।

(३१) भगवान री मूरत बिचै उण मे जडियोडा हीरा-मोती घणा सुहाणा लागा।

तुलनावाचक पदबन्धो मे रैं बिचै, रैं आगै, रैं सामी इत्यादि परसर्गों की अवस्थिति होती है।

(३२) वा दुखा सामी तो श्रा साव नाकुछ बात है, हुसैं जैडी।

(३३) ऊदरो कंयो—अक्कल रैं बळ आगैं भाखर नैं ई कणूकैं बिरोबर हूवणो पडैं।

(३४) भगती रैं जोर आगैं तो श्रो साव मामूली बाता है।

(३५) अर लुगाया रैं अग-मग टाळ दूजो कोई सुख है ई कठै।

(३६) अर वानैं ईं म्हारैं सुख री टाळ दूजी की लालसा है।

५ १ ३ ४ प्रसृत विशेषण पदबन्धो के अन्तर्गत सज्ञा अथवा तुमर्थ + परसर्ग + गुणवाचक विशेषण की पारस्परिक सगति के आधार पर निर्मित अनेक रचनाए हैं। इनकी मुख्य विशेषता यह है कि सम्पूर्ण प्रसृत विशेषण पदबन्ध का उसम अवस्थित गुणवाचक विशेषण के स्थान पर आदेश किया जा सकता है, यथा (३७, ३८)।

(३७) एक राजा रैं एक परधान हो। वो घणो हुसियार अर परवीण।

(३८) एक राजा रैं एक परधान हो। वो घणो हुसियार अर काम-काज म परवीण।

वाक्य सख्या (३७) म गुणवाचक विशेषण परवीण के स्थान पर काम-काज मे परवीण (३८) प्रसृत विशेषण पदबन्ध का आदेश हुआ है।

प्रसृत विशेषण पदबन्धो का उनम अवस्थित परसर्गों के आधार पर वर्गीकरण और विवरण किया जा सकता है। नीचे मे, रैं लग, रैं लारैं, रो, रो खातर, रैं मिस रैं बिचाळै, रैं आपैं इत्यादि परसर्गों से निर्मित प्रसृत विशेषण पदबन्धो के उदाहरण दिये जा रहे हैं।

(३९) तीर-क्वाण अर सिकार री विद्या मे पारगत हुयग्यो।

(४०) परसेवा मे लथोपथ डावडी सपाडो करनै बिसाई खावणी चावती ही।

(४१) म्हनै इक्कीस आना पतियारौ हुयग्यौ कै के सगळा म्हनै मारण री जाळ-माळी मे भेळा हा ।

(४२) बापडा गरीब जिनावरा नै फगत पेट रै खातर मारणा वठा लग वाजब है ।

(४३) म्हनै तौ इण ग्रखड मून-समाध मे फगत ग्रा अेक बात समझ मे ग्राई कै जय-तप, ध्यान, भगती इत्याद थै सगळी बाता इण दुनिया रै लारै साधी लागै ।

(४४) म्हैं तो ग्रापरौ पीडिया रौ चाकर हू ।

(४५) जवानी रो भूखौ बकरौ सेवट ग्रापरो जीव गमायो रै यौ ।

(४६) म्हारो काई जितात कै म्हैं ग्रापनै म्हारी खातर दुखी करू ।

(४७) पगकरा पथा रै भोणै जाला मलूभियोडा भेख रै मिस धरम री जूनो झाटो कूटै ।

(४८) दोय पग ग्रकै ग्रर दोय पग लारै करनै बेरा रै बिचाळै उभै तो चूचू ।

(४९) स्याळ ग्रापरै मगज रै ग्रापै निरभै हो ।

५ २ ग्रा० राजस्थानी के सख्यावाचक विशेषणो की विभिन्न कोटिया हैं— (क) गणनामूलक सख्यावाचक, (ख) प्रभागक सख्यावाचक, (ग) क्रमसूचक सख्यावाचक, (घ) ग्रानुपातिक सख्यावाचक, (ङ) समुच्चयबोधक सख्यावाचक, (च) वितरक सख्यावाचक, (छ) समुच्चयात्मक एकलबोधक सख्यावाचक, (ज) योगबोधक सख्यावाचक, (झ) सन्निकट सख्यावाचक, (ञ) ग्रनिश्चित् सख्यावाचक, (ट) ग्रनिश्चित् सन्निकट सख्यावाचक, (ठ) गुणात्मक सख्यावाचक, (ड) इतर सख्यावाचक रचनाए, (ण) सख्यावाचक पदबन्ध तथा (त) सहितिवाचक सख्यावाचक रचनाए। इन समस्त सख्यावाचको का सोदाहरण विवरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है ।

५ २ १ ग्रा० राजस्थानी के गणनामूलक सख्यावाचक नीचे सूचित किये जा रहे हैं —

१. एक	६ छ
२ दो~बे	७ सात
३ तीन	८ ग्राठ
४. च्यार~चार	९ नव
५ पाच	१० दस

११	इग्यारै~इग्यारै	४७	संतालीस
१२	बारै	४८	अडतालीस
१३	तेरै	४९	गुणपच्चास
१४	चऊदे	५०	पच्चास
१५	पन्दरे	५१	इक्कावन
१६	सोळ	५२	बावन
१७	सतरे	५३	तेपन
१८	अटठारै	५४	चोपन
१९	उगणीस	५५	पचपन
२०	वीस	५६	छप्पन
२१	इक्कीस	५७	सतावन
२२	बाईस	५८	अटठावन
२३	तईस	५९	गुणसाठ
२४	चौईस	६०	साठ
२५	पच्चीस	६१	इकसठ
२६	छाईस	६२	बासठ
२७	सताईस	६३	तेसठ
२८	अटठाईस	६४	चौसठ
२९	गुणतीस	६५	पैंसठ
३०	तीस	६६	छासठ
३१	इकतीस	६७	सिडसठ
३२	बत्तीस	६८	अडसठ
३३	तेतीस	६९	गुणन्तर~गुणसित्तर
३४	चौतीस	७०	सित्तर
३५	पैंतीस	७१	इकोतर
३६	छत्तीस	७२	बावोतर
३७	संतीस	७३	तिबोतर
३८	अडतीस	७४	चौवोतर
३९	गुणचालीस	७५	पिचत्तर
४०	चालीस	७६	छियतर
४१	इगतालीस	७७	सितन्तर
४२	बयालीस	७८	इठंतर
४३	तयालीस	७९	गुणियासी
४४	चम्मालीस	८०	अस्सी
४५	पतालीस	८१	इकियासी
४६	छियालीस	८२	बयासी

८३ तयासी~तियासी	९२ बराणू
८४ चौरासी	९३ तेराणू
८५ पिचियासी	९४ चौराणू
८६ छियासी	९५ पचाणू
८७ सितियासी	९६ छिन्नू
८८ इठियासी	९७ सताणू
८९ गुणनेवे~गुणनेऊ	९८ अठाणू
९० नेवे~नेऊ	९९ निनाणू
९१ इकराणू	१०० सौ

सौ से ऊपर के गणनामूलक सख्यावाचक भारतीय आर्य भाषाओ की तदविषयक रचनाओ के अनुसार निर्मित होते है, अत उनका यहाँ विशेष वर्णन प्रस्तुत करने की आवश्यकता नही है।

शून्य के राजस्थानी का वाचक शब्द है सुन।

उपरिलिखित गणनामूलक सख्यावाचको के अतिरिक्त आ० राजस्थानी वर्षो की गणना करने के लिए एक अन्य कुलक का व्यवहार होता है, जिसके ऋजु तथा तिर्यक रूप भाषा मे उपलब्ध हैं। इस कुलक के एक से सौ तक की सख्या के वाचक गणनामूलक नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

ऋजु रूप	तिर्यक रूप
एकौ	एकै
दुऔ~बीऔ	दुए~बीए
तीऔ	तीए
चौकौ	चौकै
पाचौ	पाचै
छक्कौ	छक्कै
सातौ	सातै
आठौ	आठै
नवौ	नवै
दसौ	दसै
इग्यारौ	इग्यारै
बारौ	बारै
तेरौ	तेरै
चऊदौ	चऊदै
पनरौ	पनरै

ऋजु रूप	तिर्यक रूप
सोळौ	सोळैं
सतरौ	सतरैं
अठारौ	अठारैं
उगणीसौ	उगणीसैं
बीसौ	बीसैं
इक्कीसौ	इक्कीसैं
बाईसौ	बाईसैं
तेईसौ	तेईसैं
चौईसौ	चौईसैं
पचीसौ	पचासैं
छाईसौ	छाईसैं
सताईसौ	सताईसैं
अठाईसौ	अठाईसैं
गुणतीसौ	गुणतीसैं
तीसौ	तीसैं
इकतीसौ	इकतीसैं
बत्तीसौ	बत्तीसैं
तेतीसौ	ततीसैं
चौतीसौ	चौतीसैं
पैंतीसौ	पैंतीसैं
छतीसौ	छतीसैं
सैंतीसौ	सैंतीसैं
अडतीसौ	अडतीसैं
गुणचाळीसौ	गुणचाळीसैं
चाळीसौ	चाळीसैं
इकताळीसौ	इकताळीसैं
बयाळीसौ	बयाळीसैं
तयाळीसौ	तयाळीसैं
चम्माळीसौ	चम्माळीसैं
पैंताळीसौ	पैंताळीसैं
छीयाळीसौ	छीयाळीसैं
सैंताळीसौ	सैंताळसैं
अडताळीसौ	अडताळीसैं
गुणपचासौ	गुणपचासैं
पचासौ	पचासैं

ऋजु रूप	तिर्यक रूप
इकावनो	इकावनै
बावनो	बावनै
तेवनो	तेवनै
चोपनो	चौवनै
पचपनो	पचपनै
छपनो	छपनै
सतावनो	सतावनै
अठावनो	अठावनै
गुणसाठो	गुणसाठै
साठो	साठै
इकसठो	इकसाठै
बासठो	बासठै
तेसठो	तेसठै
चौसठो	चौसठै
पैंसठो	पैंसठै
छासठो	छासठै
सिडसठो	सिडसठै
अडसठो	अडसठै
गुणसित्तरो	गुणसित्तरै
सित्तरो	सित्तरै
इकोतरो	इकोतरै
बावोतरो	बावोतरै
तेवोतरो	तेवोतरै
चोवोतरो	चोवोतरै
पिचतरो	पिचतरै
छियतरो	छियतरै
सितन्तरो	सितन्तरै
इठन्तरो	इठन्तरै
गुणियासियो	गुणियासियै
असियो	असियै
इकियासियो	इकियासियै
बयासियो	बयासियै
तयासियो	तयासियै
चौरासियो	चौरासियै
पिचियासियो	पिचियासियै

ऋजु रूप	तिर्यक रूप
छियासियौ	छियासियै
सितियासियौ	सितियासियै
इठियासियौ	इठियासियै
गुणनेवौ	गुणनेवै
नेवौ	नेवै
इकराणवौ	इकराणवै
बराणवौ	बराणवै
तराणवौ	तराणवै
चौराणवौ	चौराणवै
पच्चाणवौ	पच्चाणवै
छिनवौ	छिनवै
सताणवौ	सताणवै
अठाणवौ	अठाणवै
निन्नाणवौ	निन्नाणवै
सईकौ	सईकै

५ २ २ प्रभागक सख्यावाचकों के लिए भाषा में निम्नलिखित शब्द प्रचलित हैं।

$\frac{1}{4}$	पाव	$1\frac{1}{2}$	डोड, डोडो, डेढ
$\frac{1}{2}$	आधो, साढो~साढा	$2\frac{1}{2}$	ढाई~अढाई
$\frac{3}{4}$	पूण~पूणो, पूणौ	$3\frac{1}{2}$	सूटौ
$1\frac{1}{4}$	सवा	$4\frac{1}{2}$	ढचौ

पूणो, सवा तथा साढो के योग से अन्य प्रभागक सख्यावाचक भी निर्मित होते हैं, यथा

पूणो दो	$1\frac{3}{4}$	साढो तीन~साढा तीन	$3\frac{1}{2}$
पूणो तीन	$2\frac{3}{4}$	साढो च्यार~साढा च्यार	$4\frac{1}{2}$
सवा दो	$2\frac{1}{4}$	पूण सौ	७५
सवा तीन	$3\frac{1}{4}$	सवा सौ	१२५
		डोढ सौ	१५०
		पूणो दो सौ	१७५
		साढो तीन सौ	३५०

इत्यादि।

५ २ ३ क्रमसूचक सख्यावाचकों में एक से लेकर छ तक वाचक शब्द निम्नलिखित हैं —

पैलो
दूजो~बीजो
तीजो
चौथो
पाचवों
छठो

छ से ऊपर के क्रमसूचको की रचना गणनामूलको के साथ -मो प्रत्यय के योग से होती है। इनके कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं —

गणनामूलक सख्यावाचक	क्रमसूचक सख्यावाचक
सात	सातमो
आठ	आठमो
नव	नमो
दस	दसमो
इगियारै	इगियारमो
बारै	बारमो
तेरै	तेरमो

५ २ ४ आनुपातिक सख्यावाचको की रचना गणनामूलक सख्यावाचक के साथ -गुणो प्रत्यय के योग से होती है।

दोगुणो	सातगुणो
तीनगुणो	आठगुणो
चौगुणो	नवगुणो
पाचगुणो	दसगुणो
छगुणो	

इन आनुपातिक सख्यावाचको के उपरिलिखित एकवचन रूपो के अतिरिक्त बहुवचन रूप भी भाषा मे निर्मित होते हैं, यथा दसगुणो बत्तो घन (एकवचन), तथा दसगुणा बत्ता रिपिया (बहुवचन)। एक वचन मे अवस्थिति मे इनसे सहिति का बोध होता है और बहुवचन मे सख्येयता का।

आनुपातिक सख्यावाचको के एक अन्य कुलक की रचना गणनामूलको के साथ -लडो प्रत्यय के योग से होती है :

इकेवडो	छलडो
दोलडो~बेलडो	सातलडो
तेलडो	आठलडो
चौलडो	नवलडो
पाचलडो	दसलडो

आनुपातिक सख्यावाचकों का एक अन्य वर्ग –वडो प्रत्यय के योग से भी निर्मित होता है। इस वर्ग में एक से लेकर चार तक के गणनामूलकों के रूप ही निर्मित होते हैं, यथा इकेवडो, दोवडो~वेवडो, तेवडो तथा चोवडो।

५.२.५ समुच्चयबोधक सख्यावाचकों की रचना गणनामूलक सख्यावाचकों के साथ –आँ अथवा –ऊ प्रत्ययों के योग से होती है। इनके कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

दूना~दूनू~दानू
तीना~तीनू
चारा~च्यारा~चारू ~च्यारू
पाचा~पाचू
छवा~छवू
साता~सातू
आठा~आठू
नवा~नवू
दसा~दसू

दस से ऊपर समुच्चयबोधक सख्यावाचकों की रचना उतने नियमित रूप से नहीं होती। फिर भी कतिपय उपलब्ध रूप नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

बीसा~बीसू
चालीसा~चालीसू
पचासा~पचासू
सैकडा~सैकडू
हजारा~हजारू
लाखा~लाखू
किरोडा~किरोडू

५.२.६ वितरक सख्यावाचकों की रचना गणनामूलकों की मात्र एकबार आवृत्ति से होती है, यथा अेक-अेक, दो दो, च्यार-च्यार, छ-छ, दस-दस इत्यादि। उच्चारण सौकर्य अथवा प्रयोजनीयता के कारण अनेक सभावित वितरक सख्यावाचकों के रूप भाषा में उपलब्ध नहीं होते, यद्यपि उनकी रचना पर कोई व्याकरणिक प्रतिबन्ध नहीं है।

५.२.७ समुच्चयात्मक एकल बोधक सख्यावाचकों की रचना गणनामूलक सख्यावाचक के रौ/रा/री परसर्ग की आसक्ति एव तत्पश्चात् उक्त गणनामूलक की आवृत्ति द्वारा होती है। इनके कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं –

अेक रौ/री अेक
दोई रौ/री दोई

परसर्ग रौ/रा/री के स्थान पर इनके ह्रस्वीकृत का भी आदेश ऐसी रचनाओं में होता है, यथा अेक'र अेक, दोय'र दोय इत्यादि।

समुच्चयात्मक एकल बोधक सख्यावाचको के एक ग्रन्य कुलक की रचना समुच्चय-बोधक सख्यावाचक के पश्चात् र की ग्रासत्ति, एव तत्पश्चात् उक्त समुच्चयबोधक सख्या-वाचक की ग्रावृत्ति से होती है। इस कुलक के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

अेक'र अेक	तीनू 'र तीनू	पाचू 'र पाचू
दोनू 'र दोनू	च्यारू'र च्यारू	छवू 'र छवू

समुच्चयात्मक एकल बोधक सख्यावाचको की रचना एक से लेकर दस तक गणना-मूलका की ग्रावृत्ति तथा उनके साथ मध्यप्रत्यय -ग्रा- की ग्रवस्थिति से भी होती है।

अेकाअेक	छवाछव
दोयादोय	सातासात
तीनातीन	ग्राठाग्राठ
च्याराच्यार	नवानव
पाचापाच	दसादस

५ २ ८ योगबोधक सख्यावाचको के एक कुलक की रचना गणनामूलक सख्या-वाचको की ग्रावृत्ति एव उनके साथ मध्यप्रत्यय -न- की ग्रवस्थिति से होती है। इन रचनाग्रो के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(५०) मिणधारी साप बारै'न बारै चौईस कोस री भांय मे किणी जीव नै नी छोडती।

(५१) वणै कह्यौ ई वीस'न वीस काई करै। पूरा पैंतीस रिपिया लेय वळद म्हारे हवाले करै जकी बात करै कनी।

५ २ ९ समुच्चयबोधक सख्यावाचको की ग्रावृत्ति के साथ मध्यप्रत्यय -न- की ग्रवस्थिति से भी योगबोधक सख्यावाचको की रचना होती है। यथा,

(५२) किसनजी लाखू 'न लाखू रिपिया लगायनै मिदर चुणायौ।

(५३) रामूडै नै सैंकड्'न सैंकड् बार समझाय दियौ पण वो तौ अेडी नकटाई धारली कै म्हनै सबूरी झेलणी पडी।

५ २ १०. सन्निकट सख्यावाचको की रचना गणनामूलका के साथ 'क' के योग से होती है। एक को छोडकर ग्रन्य गणनामूलको से सन्निकट सख्यावाचक निर्मित हो सकते है। गणनामूलक सन्निकट सख्यावाचकों के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

दोये'क
तीने'क
च्यारे'क
सौळै'क
उगणीसे'क

उपरोक्त नियमानुसार प्रभागक सन्निकट सख्यावाचको की भी रचना होती है। इनके उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

पावे'क	डोडे'क
आधो'क, आघो'क, आधे'क	पूणोदोय'क
पूणे'क	सवादोय'क
सवा'क	अढाई'क

पूणोदोय'क तथा सवादोय'क आदि विकल्प रूप पूणो'क दोय तथा सवा'क दोय भी भाषा मे उपलब्ध हैं।

५ २ ११ अनिश्चित् सख्यावाचको की रचना किन्ही दो सगत गणनामूलको की परस्पर आसत्ति से होती है। ऐसे सयुक्त शब्द भाषा में सामान्यरूप से सिद्धप्रयोग ही होते हैं। इनक कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

तीन–चार

दोय–चार

पाच-सात

सितर–अस्सी

दोय-च्यार हजार

५ २ १२ –क प्रत्यय की अवस्थिति अनिश्चित सख्यावाचको के साथ भी होती है। इस प्रकार से निर्मित कतिपय अनिश्चित् सन्निकट सख्यावाचको के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(५४) पाच-सातेक दिन काम री तोजी नो बैठो लो धर्के री सोय करैला।

५ २ १३ रा० राजस्थानी गुणात्मक सख्यावाचक कई दृष्टियो से महत्वपूर्ण है। एक तो इसमे प्रयुक्त गणनामूलक सख्यावाचको के स्वनप्रक्रियात्मक रूप कई स्थितियो मे भिन्न है और दूसरे कई शब्दो के सिद्धप्रयुक्त रूप भी भिन्न हैं। इन तथ्यो का स्पष्टीकरण के हेतु नीचे दो से चालीस तक गुणात्मक रचनाओ को उद्धृत किया जा रहा है।

एक दू दू	एक तिरी तिगी	~	एक तियो तियो
दो दू च्यार	दो तिरी छ		दो तिया छ
तीन दू छ	तीन तिरी नव		तीन तिया नऊ
च्यार दू आठ	च्यार तिरी बारै		च्यार तिया बारै
पाच दू दस	पाच तिरी पन्दरै		पाच तिया पन्दरै
छ दू बारै	छ तिरी अट्ठारै		छ तिया अट्ठारै
सात दू चउदै	सात तिरी इक्की(स)		सात तिया इक्की(स)
आठ दू सोळै	आठ तिरी चोई(स)		आठ तिया चोइ(स)
नऊ दू अट्ठारै	नव तिरी सताई(स)		नव तिया सताई(स)
दायँ दूवा बीस	दायँ तिरी ती(स)		दायँ तिया तीं(स)

एक चौक चौक	एक पजो पजो	एक छग छग
दो चौक आठ	दो पजा दस	दो छग बारै
तीन चौक बारै	तीनो पजा पन्दरै	तीन छग अट्ठारै
च्यार चौक सोळै	च्यारो पजा वी(स)	च्यार छग चौई(स)
पाच चौक बीस	पजो क पच्ची	पाच छग ती(स)
छ चौक चौई(स)	छ पजा ती(स)	छ छग छत्ती(स)
सात चौक अट्ठाई(स)	सातो पजा पैंती(स)	सात छग बयाळी(स)
आठ चौक बत्ती(स)	आठो पजा चाळी(स)	आठ छग अडताळी(स)
नऊ चौक छत्ती(स)	नऊ पजा पैंताळी(स)	नव छगा रो चौपनै
दायें चौक चाळी(स)	दायें पजा (पूरी) पचा(स)	दायें छग साठ

एक सातो सातो	एक आठो आठो	एक नम्मो नम्मो
दो साता चऊदै	दो आठा सोळै	दो नम्मा अट्ठारै
तीनो साता इक्की(स)	तीनो आठ चौई(स)	तीन नम्मा सत्ताई(स)
च्यारो साता अट्ठाई(स)	च्यारो आठा बत्ती(स)	च्यार नमा री छत्ती(स)
पाचो साता पैंती(स)	पाचो आठा चाळी(स)	पाच नम पंताळी (स)
छ सातू बयाली(स)	छ आठू अडताळी(स)	छ नमां री चौपनै
सातो साती गुणपचा(स)	सातो आठू छप्पन	सात नमा री तेरेसठ
आठ सातै री छप्पन	आठो आठी चौसठ	आठ नमा री बोयतर
नऊ साता री तेरीसठ	नऊ आठा री बोयतर	नम्मै नम्मै इकियासी
दायें साता सित्तर	दायें आठा अस्सी	दायें नम्मा नेऊ

एक दा दा	इगियारै एका इगियारै
दो दा बी(स)	इगियार दुआ बाई(स)
तीन दा ती(स)	इगियार तिया तैंती(स)
च्यार दा चाळी(स)	इगियार चौक चमाळी(स) (इगियारें चौका चमाळी(स))
पाच दा पच्चा(स)	इगियार पाण पचपन
छ दा साठ	इगियार छक छासठ
सात दा सित्तर	इगियार सात सितंतर (इगियारो साता सितंत्तर)
आठ दा अस्सी	इगियारो आठा इठियासी
नऊ दा नेवें	इगियार नम निनाणू
दायें दाई सौ	इगियारो दावा एक सौ ने दस

बारै एका बारै	तरे एका तेरै
बार दुआ चोईस(म)	तेर दुआ छाईस(म)
बार तिया छत्ती(म)	तेर ती गुणचाळी(म)
बारै चौकू अडताळी(म)	तेर चौका बावन
बार पाणिया साठ के	तेर पाण पैंसठ
बार छकै नै बोयन्तर	तेर छक इठन्तर
बारो साता चौरासी	तरो साता इक्राणू
बारो आठा छिन्नू	तेरी आठ चिडोतरिया
बार नम इठडोतरियो	तेर नम सतरावा हो
बारो दाया एक सौ ने बीस	तेरी दाया तीसा हो (तेर दावा एक सौ ने तीस)

चऊदे एका चउदे	पनरे एका पनरे
चवद दू अट्ठाई	पनर दुआ ती(स)
चवद ती बयाळी(स)	ती पैंताळी(स)
चउद चौक छप्पन	चौका साठ
चऊद पाण सित्तर	पाण पिचन्तर
चऊद छकै ने चौरासी	छकडो नेऊ
चऊदो साता अठाणू	सात पिचढोतर
चऊद आठ बाडोतरियो (चऊद आठ बारोतरियो)	आठू बीया
चऊद नम छाईया हो (चऊद नम छाईसा हो)	नऊ पैंतीया
चऊदा दा चाळिया हो	डबली में डोढ सौ
~(चऊदा दावा एक सौ नै चाळी(स))	

सोळे एका सोळै	सतरे एक सतरे
सोळ दुआ बत्ती(स)	सतर दुआ चौती(स)
सोळ ती अडताळी(स)	सतर ती इक्कावन
सोळ चौका चौसठ	सतर चौका अडसठ
सोळ पाण अस्सी	सतर पाण पिचियासी
सोळ छक्का छिन्नू	सतर छक बिलगरियो
सोळ सात बाढोतरियो	सतरो सात उगणिया हो
सोळा आठ अट्ठाइया हो	सतरो आठ छत्तिया हो
सोळ नम चम्माळो	सतर नमा रो तेपन
सोळो दाया साठा हो	सतर दावा एक सौ ने सित्तर
~(सोळो दावा एक सौ नै साठ)	

अट्ठारे एका अट्ठारे	उगणी एका उगणी
अट्ठार दुआ छत्ती(स)	उगणी दुआ अडती(स)
अट्ठार तिरी चौपने	उगणी ती सत्तावने
अट्ठार चौका बोयतर	उगणी चौका छियन्तर
अट्ठार पाण नेऊ	उगणी पांण पचाणू
अट्ठार छक इठडोतरियौ	उगणी छक चऊदा हौ
अट्ठारी सात छाईया हौ	उगणी सात तेतीया हौ
अट्ठारी आठ चम्माळी	उगणी आठ बावनौ
अटठार नमौरो बासठियौ	उगणी नम इकोतरियौ
अट्ठारा दावा एक सौ ने अस्सी	उगणी दाया एक सौ नै नेवै

बी एका बी	इक्की एका इक्की
बी दुआ चाळी(स)	इक्की दुआ बेयाळी
बी तिया साठ	इक्की तिया तेरीसठ
बी चौका अस्सी	इक्की चौका चौरासी
बी पाणिया सौ	इक्की पाण पिचडोतरियौ
बी छकै नै बीया हौ	इक्की छक छाईया हौ
बी सातू चाळी	इक्की सात मं ताळी
बीयो आठो साठा हो	इक्की आठा अडसठिया हौ
बी नमा असियौ	इक्की नम गुणनेऊ हौ
बीयो दावा एक सौ नै बीस	इक्की दाया दो सौ नै दस

बाई एका बाई	तेई एका तेई
बाई दुआ चम्माळी	तेई दुआ छियाळी
बाई तिया छामठ	तेई ती गुणन्तर
बाई चौका इठियासी	तेई चौका बराणू (तेई चौका बाणू)
बाई पाण दाडोतरियौ	तेई पाण पनरावा हौ
बाई छक बतीया हौ	तेई छक अडतिया हौ
बाई साता चौपनियौ	तेई साता इकसठियौ
बाई आठा छियतरियौ	तेयौ आठा चौरासी
बाई नम अठाणू हौ	तेई नमा दो सौ नै सात
बाई दावा दो सौ नै बीस	तेयौ दावा दो सौ नै तीस

चौई एका चौई	पच्ची एका पच्ची
चौई दुआ अडताळो (चौई दुआ अडताळा)	पच्ची दुआ पच्चा
चौई ती बोयतर	पच्ची ती पिचन्तर
चौई चौका छिन्नू	पच्ची चौका सौ
चौई पाण बीया हो	पच्ची पाण पच्चिया हो
चौई छक चम्माळो	पच्ची छकडो डाड सौ
चौई साता अडमठियो	पच्ची सात पिचतरियो
चौई आठा बराणु	पचियो आठा दोय सौ
चौई नमा दो सौ नें सोळं	पच्चो नम दा पच्चियो
चौई दावा दो सौ नें चाळी(स)	पच्ची) दावा दो सौ नें पच्चा पचियो)

छाई एका छाई	सत्ताई एका सत्ताई
छाई दुआ बावन	सत्ताई दुआ चौपन
छाई ति इठन्तर	सत्ताई तिया इकियासी
छाई चौक चिडोतरियो	सत्ताई चौक इठडोतरियो
छाई पाण तिया हो	सत्ताई पाण पैंतीया हो
छाई छका छप्पन हो	सत्ताई छक बासटियो
छाई सात बयासियो	सत्ताई सात गुणनेवा हो
छाई आठा दो सौ नें आठ	सत्ताई आठा दो सौ नें सोळं
छाई नमा दो चौतीयो	सत्ताई नम दो तयाळो
छाई दावा दो सौ नें साठ	सत्ताई दावा दो सौ नें सित्तर

अट्ठाई एक्न अट्ठाई	गुणती एका गुणती
अट्ठाई दुआ छपन	गुणती दुआ अट्ठावन —
अटठाई तिया चौरासी	गुणती तिया सितियासी
अट्ठाई चौक बायोतरियो	गुणती चौक सोलावो
अट्ठाई पाण चाळिया हो	गुणती पाण पैंताळो
अट्ठाई छका अडमटियो	गुणती छक चौवोतरियो
अट्ठाई साता छिन्नू हो	गुणती साता दो सौ नें तीन —
अट्ठाई आठ दो चौइयो	गुणती आठा दो बतीयो
अट्ठाई नम दो बावनियो	गुणती नमा दो इकसठियो
अट्ठाई दावा दो सौ नें अस्सी	गुणती दावा दो सौ नें नेवें —

ती एका ती
ती दुग्रा साठ
ती तिया नेवै
ता चौका बीया हो
ती पाण डौड सौ
ती छका ग्रस्सियौ
ती साता दो सौ ने दस
ती ग्राठा दो सौ नै चाळो
ती नमा दो नै सित्तर
ती दावा तीन सौ

इकती एका इकती
इकती दुग्रा बासठ
इकती तिया तेराणू
इकती चौक चौइया हो
इकती पाण पचपनियौ
इकती छक छियामियौ
इकती साता दो सत्ताई
इकती ग्राठा दो ग्रडताळी
इकती नम दो गुणियासी
इकती दावा तीन सौ नै दस

बत्ती एका बत्ती
बत्ती दुग्रा चौसठ
बत्ती तिया छिन्नू
बत्ती चौक ग्रठाइया हो
बत्ती पाण साठा हो
बत्ती छका बाणू (बराणू)
बत्ती सात दो चौइयौ
बत्ती ग्राठा दो छप्पनियौ
बत्ती नम दो इठियासी
बत्ती दावा तीन सौ नै बीस

तेती एका तेती
तेती दुग्रा छासठ
तेती ती निनाग
तेती चौक बत्तियौ
तेती पाण पैंसठियौ
तेती छक अठाणुग्रो
तेती सात दो इकतिया
तेती ग्राठ दो चौसठौ
तेती नम दो सताणू
तेती दाया तीन सौ नै तीस

चौती एका चौती
चौती दुग्रा ग्रड्सठ
चौती ती बिलगरियौ
चौती चौक छतीया हो
चौती पाण सितरियौ
चौती छका दो सौ ने च्यार
चौती साता दो ग्रडतियौ
चौती ग्राठ बुवोतरियौ
चौती नमा तीन सौ नै छ
चौती दावा तीन चाळियौ

पैंती एका पैंती
पैंती दुग्रा सित्तर
पैंती ती पिचडोतर
पैंती चौक चाळिया हो
पैंती पाण एक पिचडोनर
पैंती छका दो सौ नै दस
पैंती सात दो पैंताळी
पैंती ग्राठा दो ग्रास्सयौ
पैंती नम तीन पनरावो
पैंती दावा तीन सौ नै पच्चा

छत्ती एका छत्ती	सैंती एका सैंती
छत्ती दुवा बोयतर	सैंती दुवा चौवोतर
छत्ती तो इठ्योतर	सैंती तो इगियारा हो
छत्ती चौक चम्माळो	सैंती चौवा एक अडताळा
छत्ती पाण एक असियो	सैंती पाण एक पिचियाई हो
छत्ती छका दो सोळावो	सैंती छका दो बाइयो
छत्ती सात दो बावनियो	सैंती सात दो गुणासठो
छत्ती आठ दो इठियाळो	सैंती आठ दो छिन्नुओ
छत्ती नम तीन चोईयो	सैंती नम तीन तेतिया
छत्ती दावा तीन सो नै साठ	सैंती दावा तीन सित्तरओ

अडती एका अडती	गुणचाळी एका गुणचाळी
अडती दुआ छियतर	गुणचाळी दुआ इठन्तर
अडती तिया एक चऊदे हो	गुणचाळी तिया एक सतरावो
अडती चौक बावनियो	गुणचाळी चौका छप्पनियो
अडती पाण एक नेऊ हो	गुणचाळी पाण पचाणुओ
अडती छक दो अट्ठाईयो	गुणचाळी छक दो चौतीमो
अडती सात दो छासाठियो~छासठियो	गुणचाळी साता दो तेवोतरियो
अडती आठा तीन सो नै च्यार	गुणचाळी आठा तीन सो नै बारे
अडती नम तीन बयाळो	गुणचाळी नम तीन सो इकावनियो
अडती दावा तीन सो नै अस्सो	गुणचाळा दावा तीन सो नै नेवें

चाळी एका चाळी
चाळी दुआ अस्सी
चाळी तिया बिया हो
चाळम चौकडो साठा हो
चाळी पाण दाय सो
चाळी छक दो चाळियो
चाळम साता दो अस्सियो
चाळम आठा तीन सो नै बास
चाळी नम तीन सो नै साठ
चाळी दावा च्यार सो

५ २ १४ इतर संख्यावाचक रचनाओं के अन्तर्गत भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में व्यवहृत गणनामूलकों के नामों को सूचित किया जा रहा है।

(क) गणनामूलक शब्दों के नाम

अेकौ	सातौ
दुग्रौ	आठौ
तीग्रौ	नव्वौ
चौकौ	दस्सौ
पाचौ	मीडौ~सुम
छक्कौ	अेकी
	बेकी

(ख) ताश के खेल में व्यवहृत गणनामूलक नाम

दक्कौ
दुग्गी~दुर्री
तिग्गी~तिर्री
चौगो
पाचो
छग्गो
सातो
आठो
नवो~नवलो~नवलो
दसो~दसलो~दसलो

(ग) तिथियों के लिए व्यवहृत गणनामूलक नाम

अेकम
दूज~बीज
तीज
चौथ
पाचम
छठ
सातम
आठम
नम
दसम
इग्यारम
बारस

तेरस
चऊदस

इसी कोटि के अन्य शब्द पूनम, सुद~सुदी, बद~बदी, अधारपख, ऊजळपख~चादणोपख इत्यादि हैं।

(घ) सन्तान के लिए परिवार मे व्यवहृत गणनामूलक शब्द

मोभरो	"प्रथम पुत्र"	पूठलो	"अन्तिम पुत्र"
मोभरी	"प्रथम पुत्री"	पूठली	"अन्तिम पुत्री"
बिचेटियो	"बीचवाला पुत्र"		
बिचेटकी	"बीचवाली पुत्री"		

(ङ) गाय-भैसो के ब्याने के क्रमसूचक शब्द
पैलीयाण
दूजीयाण
तीजीयाण
चौथीयाण
पाचीयाण, इत्यादि

(च) गिप के खेल मे एक से दस तक की सख्या के गणनासूचक शब्द

मोर	"प्रथम"
दुल	"द्वितीय"
तिल	"तृतीय"
चौल	"चतुर्थ"
पाचल	"पचम"
छल	"षष्ठ"
सातल	"सप्तम"
आठल	"अष्टम"
नवल	"नवम"
दसल	"दशम"

५ २ १५ गुणित एकको अथवा भागकों द्वारा योग-सख्या सूचित करने की भी भाषा मे पद्धति है। एतद्विषयक सहितिवाचक सख्या पदबन्धो का निदर्शन करने वाले कतिपय वाक्य नीचे उदाहृत किये जा रहे हैं।

(५४) बारै नै बारै चोईस कोस ताई जीव नाव बाकी नी छोडियो।
(५५) तीस घाट सो बरसा रै लगैटगै पूगो हू, म्हनै तो सुख नाव इण अमूमणो रौ ई आयो।

(५६) आप तो अेक री बात करो, म्हैं अैडी अठारा बीसां अणदरावां आपरै पगा तावनै पटक दूं ।

आ राजस्थानी री कतिपय संहितिवाचक संख्यावाचक रचनाए सोदाहरण नीचे सूचित की जा रही है ।

आरटो "आधी दूरी"

(५७) आरटै आय कान्हूडो च्यारू खानी भाल ऊंचौ आमै साम्हीं जोयो । इण समन्दर री तौ लीला ईन्यारी ।

आधोआध "आधा-आधा"

(५८) सेठ अर दिवाणै रै आधोआध । दोना नै अेक दूजै मायै पूरो भरोसो ।

आधोऊधो "कुछ कुछ"

(५९) आधोऊधो चेतौ हुवो जणै च्यारू हथमार किलङ्कनै बैठा हुआ ।

पाच-पच्चीस "एक अनिश्चित संख्या"

(६०) जगळ में पाच-पच्चीस भेळा होय टणकाई करता तो जिनावर वांनै मतै ई ससट लेता, इण वास्तै रात रा घरै सूता सापै बात करो ।

इक्की-दुक्की "कोई-कोई कोई हीं"

(६१) बरसा म कै जुगा मे ऊडै मायै रा इक्का-दुक्का जलमै ।

अनेतू "अगणित"

(६२) काळ री नी भरोसो कोनीं तौई हरसिंघ अलेखू जीव जलमैला ।

अगणित "अगणित"

(६३) मुगत हुवोडो अगणित सुपाया घूमर घाल-घाल ई नाची । घणा ई गीत गावा ।

अेकोअेक "प्रत्येक, हर एक, समस्त"

(६४) करता-करता मोटियार रो पदयतिया सू लेय मडै ताई री अेकोअेक मूला निवळगी"

अेकाअेक "केवल एक"

(६५) गाडू भारै परसिया-पाडिया, वौदसिया रूपाळी । अेकाअेक नाद गो भगौ नाह रावे ।

अेकासाथै "एक साथ"

(६६) अेकासाथै माठू-री माठू दिसायगी ।

दो-एक "दो एक एक-दो"

(६७) थोडा हेटे उतर घोबा दो-एक ढालू तो लाय दो।

एक सू दूजो "एक से अधिक"

(६८) घणकरा लोग तो अेक सू दूजो बातई नी छोडो।

सईको "सो, सैकडा"

(६९) छती भरी-तरी गवाडी। म्हैं आज थ्यारो सीधो कर। सईकै रै लगै-टगै पूगी हूँ।

सहितिवाचक प्रत्यय की अवस्थिति के भी कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(७०) सैंकड़ू न रिपिया भेळा करिया पछै मिंदर विणाणो सरू करियो।

(७१) सेठ दिसावर जायनै करोडान रिपिया भेळा करिया।

५ ३. निर्धारक विशेषण अन्य विशेषणो, सज्ञाम्रो तथा क्रियाम्रो के पूर्व अवस्थित होकर, अपने इन विशेष्यो के गुण-धर्मों आदि के प्रमाण अथवा मात्रा का निर्धार करते हैं। यथा निम्नलिखित वाक्यो मे (७२, ७३)

(७२) राजा लोभी अतइज घणो हो।

(७३) डाकण रो बेटो रा दात पीळा पट्ट हा।

राजा को बहुत लोभी मात्र न कहकर (७२) "अतइज घणो लोभी" कहा है। उसी प्रकार वाक्य सख्या (७३) मे दातो को मात्र पीला न कहकर ' पीळा-पट्ट" कहा है। इन दोनो वाक्यो मे अतइज एव पट्ट शब्द क्रमश लोभी स्वभाव और दातो के पीलेपण के प्रमाणाधिक्य अथवा आत्यान्तिकता का बोध कराते हैं। साथ-ही-साथ ये दोनो शब्द श्रोता के सम्मुख एक ऐसी स्थिति उपस्थित करते हैं जिससे उसके हृदय मे वर्णित व्यक्ति, वस्तु इत्यादि के प्रति विविध भावो का उद्वेलन हो उठता है और श्रोता वर्ण्य विषय के प्रति उन्मुक्त भाव से निर्द्वन्द्व होकर तत्त्व ग्रहण मे समर्थ हो जाता है।

वर्ण्य विषय की दृष्टि से इन निर्धारको के विभिन्न कोटिया हैं—(क) यथावत्‌ता बोधक, (ख) आतिशय्य बोधक, (ग) मापबोधक।

५ ३ १ यथावत्‌ता बोधक निर्धारक विशेषणो का प्रकार्य है किसी गुण अथवा स्थिति को मात्रा अथवा परिमाण का प्रबल रूप से इस प्रकार समर्थन करना कि वक्ता ने उसके विषय मे जैसा कहा है श्रोता को उसके वैसा होने मे सशय न रहे। इस कोटि के अात निर्धारक-विशेषणो की सूची नीचे प्रस्तुत की जा रही है और यथासम्भव उदाहरण भी।

अगं (७४)	दरजै (८२)
अतइज (७५)	छक्कै-पजै (८३)
अकछ (७६)	नक्की
अक्न (७७)	नामो
अगूतौ (७८)	धापनै
अडोजत (७९)	निपट
अलल (८०)	निरघ
इदक	नेगम
अंत	पूरौ
'क	बडौ
काठौ (८१)	फगत
खासौ	बिलकुल
खासौ भलौ	बोळी
घणौ	भर
जबर	मुळगौ (८४)
टेट	सफा
थोडौ-घणौ	साव (८५)
	हदभात (८६)

(७४) पण इचरज री बात कै देस निकाळै री बात सुणिया ई राजक्वर अगं ई दुमना नी हुया।

(७५) राजा लोभी अतइज घणौ हो।

(७६) घणकरा अकछ हथियार भेळ रै ओलै इच्छा परवाण मौजा माणै।

(७७) छोटोडो राजकवरी बोली—परणीजू ला तौ इण केम वाळा मोटियार नै ई, नीतर अक्न कवारी रैवू ला।

(७८) अेक धोबी री गधौ अगूतौ इज माठौ अर जिद्दी हौ।

(७९) *ठाकर अर ठिकाणै री परगै अेक पग रै पाण हाथ जोडिया हाजरी म* अडोजत त्यार।

(८०) हजार मिनखा जितौ अेकलौ ई अलल-हिसाब झूठ बोलियौ तौ ई की सुख पायौ नी।

(८१) ऊदरौ तौ काठौ भाती मायोडौ हौ इज।

(८२) दरजै लाचार होय राजाराणी नै राजकवरी री बात मानणी पड़ी।

(८३) स्याळ तौ छक्कै पजे सावचेत हौ। वो तौ हुक्को करतौ उठै सू सौकड मनाई।

(८४) थारै मन मूं ओ डर मुळगो ई काढ दै ।

(८५) सगळो दरीखानो चुप हुय ग्यो । साव नवो सवाल हो । सगळा सोचन लागा ।

(८६) नीबडो हूदभात घेर-घुमेर हो । सूरज री किरणा ई काई हुय जावै ।

५ ३ २ आतिशय्य बोधक निर्धारक विशेषणो की आतरिक सरचना के आधार पर पाच वर्ग किये जा सकते हैं । इस कोटि के समस्त निर्धारक वस्तुत अभिव्यजक हैं ।

इन पाचो वर्गो के निर्धारको के उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं ।

गुणवाचक विशेषण	निर्धारक विशेषण सहित अभिव्यजक रूप
(क) खारो	खारो खट्ट, खारो खिट्ट, खारो घुट्ट
गोळ	गोळ गट्ट, गोळ गिट्ट, गोळ गिट्ट
गीलो	गीलो गच्च, गीलो गिच्च, गीलो गुच्च
ढीलो	ढीलो ढच्च
तीखो	तीखो तच्च
(ख) खाली	खाली खणक, खाली खणच
तीखो	तीखो तणच
फूटरो	फूटरो फणक
फीरो	फीरो फणक

(ग) इस कोटि के निर्धारक सामान्यत गुणवाचक विशेषणो सहित ही अवस्थित होते हैं ।

टिप्पाटोळ	धोळो फक्क	कालो कुराड
हुब्बा होळ	काळो मिट्ट	ठालो ठलाक
ऊजलो फट	काळो धाक	मोटियार काटो
चानणो धट्ट	त्यार टच्च	बूडो खखर
नागो तडग	मीठो गुटक	सूखो खणक
पाधरो सणक	धाबू धप्प	

(घ) इस कोटि के निर्धारक भी सामान्यत गुणवाचक विशेषणो सहित ही अवस्थित होते हैं ।

ठाडो हेम	खारो आक	खारो जैर
लाल ममोलिया	लाबो लक्कड	बूडो ढैण

काचौ फिग	फीकौ थूक	रातौ लाल
ऊडौ धंड	चौडौ चौगान	फाटौ पूर
सफेद फिग	पाधरौ धूम	धोलौ चन्दन
मोठौ मिसरी		

(ङ) अन्य कोटि के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं ।

रातौ चोळ	लीलौ चम	गोरौ निछोर
हरियौ चकन	लीलौ झोर	मणा वद

५ ३ ३ माप बोधक निर्धारक विशेषण ऐसे पारम्परिक मापक हैं जिनके द्वारा प्रसगानुसार वर्णित विषय, वस्तु इत्यादि के गुण धर्म की मात्रा अथवा परिमाण-निर्धारण की अभिव्यक्ति होती है । यथा—

मात्रा निर्धारक

सोलै आना परबस	दरदर रौ मगतौ
इक्कीस आना पतियारौ	भुजभुज रा लाख
दो बास ऊडौ	
पाच मण गुळ	
धोबौ-धोबौ धूड	
घडा रै मूडै दारू	

परिमाणाधिक्य वाचक निर्धारक

इन निर्धारकों की वाक्यों मे अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

(८७) छोरौ भळै खुणचिया-खुणचिया पाणी पायौ ।

(८८) इण भात माथै मे धोबा-धोबा धूळ उछाळतौ हाथ पग हिलायण रै सुख नै बिडदावतौ वो अ्रतलोक मे नाचतौ-कूदतौ रमग्यौ ।

(८९) मोठा री पोट खोल अणुतै कोड सू वांनै चराया। तिगरा-तिगरा लाय पाणी पायौ ।

५ ३ ४ कतिपय माप निर्धारकों को अभिव्यञ्जकता उनके अभिधेयार्थ पर निर्भर न होकर, सन्दर्भ की लाक्षणिकता के माध्यम से व्यक्त होती है, यथा वाक्य सख्या (९०) मे "एक गगाल भरनै साढिया रौ दूध" देखने म सामान्य कथन है किन्तु इतनी मात्रा मे दूध की प्राप्ति असाध्य कार्य है । यहा लक्ष्यार्थ द्वारा असाध्य साधन का सकेत है । इसी प्रकार के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

(९०) बावड़ी रै माय पफावती राणी काळै दिन ऊगता पाण मूवैला। ज्यारू पागै चार सिंघ ऊभा। पेफावती रै माथै कमू वल साल ओदियोड़ी। पगातियै हळदी री रूख। सिरातियै मेहदी री रूख। सिंघा नै अेक गगाल भरनै साढिया री दूध पाया वै चुस्कारी ई नी करै। नीतर च्यारू अेकण सागै भपटै नै रू-रू फाड न्हाकै।

(९१) तद राजा जी री सानी मिलिया दीवांण जी पैली सरत बताई। नदी रै माय सात खारी चिरमिया अेक ठौड राळैला। सगळी चिरमिया तीन दिन मे पाछी भेळी नी करै तो धाणी मे पीलीजैला।

५ ३ ५ नीचे कतिपय माप बोधक निर्धारक पदबन्धो की अवस्थिति के उदाहरण निर्दशित किये जा रहे हैं।

(९२) माखण री भोग्म अर मिसरी रै मिठास सू वो मन मे जाणै जित्तो राजी हुयो।

(९३) राजा हुरतड घ्है ज्यू मचियोड़ो हो।

(९४) म्हैं गलती माव घा इज करू कै इण कमसल जात नै जीवती छोड्ड।

५ ४ शब्दगत रचना के आधार पर समस्त विशेषणो को दो कोटियो मे परिगणित किया जा सकता है (क) विकाय अर्थात जिनके साथ अपन विशेष्यो के अनुसार लिंग तथा वचन के वाचक प्र ययो का योग होता है (यथा भलो छोरो भली छोरी इत्यादि) तथा (ख) अविकार्य अर्थात जिनके साथ अपने विशेष्यों के अनुसार लिंग तथा वचन के वाचक प्र ययो का योग नही होता (यथा रोगी मिनख अनूट आणद अखूट माया इत्यादि)।

विकाय विशेषणो मे समस्त विकाय गुणवाचक तथा कतिपय निर्धारक विशेषण, विकाय तथा अविकाय विशेषणो के अभिव्यजक रूप गणनामूलक संख्यावाचक कतिपय प्रभागक सख्यावाचक (यथा आधो पूणो डोडो इत्यादि), क्रमसूचक सख्यावाचक आनुपातिक सख्यावाचक अथवा इन सख्यावाचको के अभिव्यजक रूपो को परिगणित किया जा सकता है। नीचे विकाय विशेषणा की शब्द रूप गत रूपावली और उनके विशेष्यो के साथ लिंग वचनानुसार अन्वय का निदर्शन भलो विशेषण की छोरो और छोरी सज्ञाओ के साथ अवस्थिति के उदाहरणो द्वारा किया जा रहा है।

		एक वचन	बहुवचन
पुल्लिग	ऋजु	भलो छोरो	भला छोरा
	तियक	भला~भलै छोरा-छोरै	भला~भला छोरा
स्त्रीलिंग	ऋजु	भली छोरी	भली छोरिया
	तियक	भली छोरी	भली छोरिया

संख्येय संज्ञाओं से निर्मित यौगिकों में अवस्थित घटकों में लिंग भेद होने पर विकार्य विशेषण की अवस्थिति पुल्लिंग बहुवचन में होती है (९५)।

(९५) दोनू भाई-बैन अणूता भला है।

५.५ अभिव्यंजक रूप रचना के अतिरिक्त वाक्यों में विशेषणों की अवस्थिति "वैण सगाई" (अथवा अनुप्रास) के आधार भी होती है। वैण सगाई का निदर्शन करने वाले कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

(९६) हूबाहूब हिबोळा भरतौ डाडौ थर निरमल पाणी।

(९७) वानै देखता ई ठळाक ठळाक रोवण लागी, जाणै सावण री काळी कळायण वरसी व्है।

(९८) बनैरी मा किवाड रै ओळै झीणै झीणै सूं मूडौ काढनै बोली

(९९) जे गती रोही मे अेकलै मिनख नै मिळ जावै तौ छाती फाट जावै।

५.६ विशेषणों से निर्मित आमेडित रचनाएं (जिनमें से कतिपय का उल्लेख संख्यावाचकों की रचना के प्रकरण में किया जा चुका है) भी अभिव्यंजक संरचना का अंग हैं। इनके कतिपय उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

(१००) भोपणा भदारा कडबटीला। बोखौ मूडौ। नीचै लुलियोडौ तीखौ नाक। फाटोडी-फाटोडी आखिया।

(१०१) उण कवळै-कवळै उरणिया नै देखता ई उणरै लाळा पडण ढूकी।

(१०२) बनै री मा अर बडो मा चाकी पीसती थारी भूडी-भूडी बाता करती ही।

(१०३) दोना रै न्यारी-न्यारी आखिया है अर न्यारी-न्यारी जेता है।

री-अन्तर्निविष्ट आमेडित रचनाओं के भी कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(१०४) पाछौ रौ पाछौ गाव रपटू, म्हनै केई काम सारणा है।

(१०५) अठै औ ठोट रौ ठोट रै जावैला।

५.७ सार्वनामिक विशेषण कोई भिन्न शब्द रूपात्मक सवर्ग न होकर, सर्वनामों की विशेषण स्थानीय अवस्थिति पर आधृत उनके वाक्यविन्यासात्मक सवर्गीकरण का वाचक शब्द है। भाषा के समस्त सर्वनामों का विवरण प्रकरण संख्या (४) में किया जा चुका है। इसलिये उनके वाक्य विन्यासात्मक प्रकार्यों की मात्र सूची प्रस्तुत करके आवृत्ति करना न तो व्याकरणिक दृष्टि उपयुक्त है और न ही संरचनात्मक स्पष्टीकरण के लिए उपयोगी। इसलिए इस विषय का विवेचन वाक्यविन्यास विभाग में किया जायगा।

६. क्रिया

६ १ आ राजस्थानी क्रिया प्रकृतिया अपनी आंतरिक सरचना के अनुसार वर्गीकृत होती हैं और पक्ष, वृत्ति तथा काल आदि के वाचक प्रत्ययो से मुक्त होकर इनके समापिका क्रिया रूपो की रचना होती है। आन्तरिक सरचना के अन्तर्गत इनके प्रकृतिरूप निर्माण तथा वाच्यादि तत्त्वा का विवेचन आवश्यक होता है।

६ २ प्रकृतिरूप निर्माण के आधार पर क्रियाओ का निम्न वर्गों मे विभाजन किया जा सकता है

(क) अनुकरणात्मक क्रिया-प्रकृतिया, यथा कचरणो, घमीडणों, धरडणो, धरहडणो, धसमसणो, पपोळणो इत्यादि। इनका विशेष विवरण अनुकरणात्मक प्रातिपदको के रूपनिर्माण के अध्याय मे किया जायगा।

(ख) सज्ञा तथा विशेषण जात क्रिया प्रकृतिया, यथा

कोडावणो	अकुरणो	मीठावणो
मोलावणो	अणमणो	पूरणो
उजाडणो	अवेरणो	अधियारणो
उफाणणो	अफडणो	
उबाळणो	सिणगारणो	
खोतरणो	अेठणो	
डामणो	उथापणो	
खरचणो	उथाळणो	
डरणो	खीभणो	
ठगणो	आदेसणो	

(ग) क्रियाप्रकृति अनुक्रम, जो कि दो स्वतन्त्र क्रियाप्रकृतियो की पारस्परिक आसत्ति से व्युत्पन्न होते हैं यथा खावणो-पीवणो, खावणो-कमावणो, कमावणो-खावणो, कैवणो-सुणणो आदि।

(घ) यौगिक क्रियायें जिनमे सज्ञा अथवा विशेषण के साथ विशिष्ट रचनाग क्रियाओ की आसत्ति से क्रियाप्रकृति रूपो की रचना होती है। यथा राजी हूवणों, ध्यान राखणो, ध्यान लगावणो, सोच करणो, काबू राखणो इत्यादि।

(ङ) सयुक्त क्रियाए, जिनमे मूल क्रिया प्रकृतियो के साथ (जिनमे उपरोक्त वर्णित सभी वर्गों की क्रियायें तथा वर्ग (च) की क्रियायें भी सम्मिलित हो सकती हैं), कतिपय विवाग्क क्रियाग्रो की ग्रासक्ति होती है। यथा कवर जावणो, खा-पी लेवणो, काबू राख सकणो, निकळ जावणो, उमड ग्रावणो, छलक ग्रावणो, सुण चुकणो, ले पधारणो इत्यादि।

(च) मूल क्रियायें जिनके ग्रन्तर्गत् मात्र क्रियाप्रकृति शब्दा को सम्मिलित किया जाता है। यथा जावणो, ग्रावणो बैठणो, देखणो, राखणो इत्यादि।

(छ) $कि_1$–$कि_2$ क्रियाप्रकृति ग्रनुक्रम जिनमे ग्रन्य विविध ग्रनुक्रमो यथा छोडणो चावणो, बोलणो ग्रावणो, कूटण समणो, कूटण लागणो, ग्रावणो पडणो ग्रादि को सम्मिलित किया जा सकता है। इस कोटि के ग्रन्तगत् ग्रन्य ग्रनेक प्रकार के $क्रि_1$–$क्रि_2$ ग्रनुक्रम भी हैं। इन सबका विवरण प्रकरण सख्या (६ १४) मे किया जायगा।

६ ३ ग्रा राजस्थानी क्रियाप्रकृति ग्रनुक्रमो मे रूप एव ग्रर्थ की दृष्टि से निम्न कोटियो की रचनाग्रो को सम्मिलित किया जा सकता है।

(क) सम्बन्धित क्रियाप्रकृति ग्रनुक्रम
(ख) पर्यायवाची क्रियाप्रकृति ग्रनुक्रम
(ग) विपर्यायी क्रियाप्रकृति ग्रनुक्रम
(घ) ग्रा- क्रियाप्रकृति ग्रनुक्रम
(ङ) प्रतिध्वन्यात्मक क्रियाप्रकृति ग्रनुक्रम
(च) इतर क्रियाप्रकृति ग्रनुक्रम

६ ३ १ सम्बन्धित क्रियाप्रकृति ग्रनुक्रमो मे पूर्ववर्ती क्रियाप्रकृति द्वारा वाचित क्रिया-व्यापार का उसके ग्रनुवर्ती गौण क्रियाप्रकृति के क्रिया व्यापार से प्रचलित व्यवहार की दृष्टि से सम्बन्ध होता है, ग्रौर दोनो क्रियाप्रकृतियो का ग्रर्थ, कोश मे प्रदत्त ग्रर्थों के ग्रनुसार होते हुए भी, मात्र उनका योगफल नहीं होता। यथा, खावणो-पीवणो ग्रनुक्रम का सामान्य ग्रर्थ है 'खाने तथा पीने के क्रिया-व्यापार मे प्रवृत्त होना।" यह ग्रर्थ कोश मे प्रदत्त इन क्रियाग्रो के पृथक पृथक ग्रर्थों के योगफल पर ग्राधारित तो है परन्तु सम्पूर्ण ग्रनुक्रम खावणो पीवणो का वास्तविक ग्रर्थ नही माना जा सकता (१)।

(१) लुगाई हू, लुगाई रा दुख-दरद नै जाणू हू। म्हारो घरम बिगडियो, म्हारा बस थका थारो नी बिगडण दू। इण घर मे थारो अजळ है, सीर-सस्कार है, थारी मरजी व्है ज्यू खा-पी। थनै कुण ई ग्रोडो देवणियो नी। लक्खी री बाता सुणनै बामणी रा जीव मे जीव ग्रायो।

उपरोक्त उदाहरण मे खावणो-पीवणो के सामान्य अर्थ के अतिरिक्त यह अर्थ भी है कि "तुम निश्चिन्त होकर मेरे घर मे रहो" इत्यादि।

एक ही क्रियाप्रकृति अनुक्रम के भाषा मे विविध प्रसगानुसार विविध अर्थ भी हो सकते हैं। खावणो-पीवणो अनुक्रम की निम्न अवस्थितियो मे इसके क्रमश अर्थ हैं 'किसी की खातिरदारी करना (२)" तथा 'किसी के गृह मे अव्यवस्था का होना (३)" इत्यादि।

(२) खावण पीवण री सगळी माकूल इतजाम पैली सू हुयोड़ो हो।

(३) म्हारा तो सगळा खाणा-पीणा ई छूटग्या।

कई सम्बन्धित क्रियाप्रकृति अनुक्रमो के दोनो अगो मे क्रमभेद से अर्थभेद भी होता है (४, ५)।

(४) जका मैनत कर कमावै-खावै, सभ्यता ग्रौर मिलणसारी नै समझै। गुणा री कदर करै, मिनखा री अदब करै।

(५) हाल बिचिया कवळा है। खावण-कमावण जोगा हुया पैली जे थू दुभात लायनै घरे बैठाण दी तो टाबरा री काई गत बिगड़ैला, इणरो थनै की अदाज है।

उपरिलिखित वाक्यो म कमावणो-खावणो (४) का सामान्य अर्थ है "कुछ वृत्ति, व्यापार आदि करना," और खावणो-कमावणो (५) का सामान्य अर्थ है "स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने के योग्य हो जाना" इत्यादि।

६ ३ २ पर्यायवाची क्रियाप्रकृति अनुक्रमो के दोनो अग प्राय एक-दूसरे के पर्याय-वाची होते हैं। यथा उछळणो-फादणो, उछलणो कूदणो घूमणो-फिरणो, लड़णो-झगड़णो, लोवणो पोतणो, जाणणो-बूझणो इत्यादि। अर्थ की दृष्टि से इन अनुक्रमो को समअकोटि अनुक्रमो की सज्ञा से अभिहित किया जा सकता है (६,७)।

(६) लोग-बाग काई देख्यो कै सूवटा री तूटोड़ी टाग रै समचै ई राणी री दूजोड़ी टाग तूटनै अळगी जाय पडी। राणी हेटै गुडगी। तूट्योड़ी टागा सू लोई रा रेला बहण लागा। जोम म अठी-उठी उछळती-फादती री।

(७) जवाई जीमै है, लुगाया गीत गावै है, अर टाबर-टीगर *उछळता-कूदता* किलोळ करै है।

६ ३ ३ विपर्यायवाची क्रियाप्रकृति अनुक्रमो के दोनो अग प्राय एक-दूसरे के *विपर्याय होते हैं। यथा* आवणो-जावणो, घटणो बढणो उळझावणो सुलझावणो बणणो-बिगड़णो, चढणो-उतरणो इत्यादि। अर्थ का दृष्टि से इन अनुक्रमो को विपर्याय समिश्र-कोटि अनुक्रमो की सज्ञा से अभिहित किया जा सकता है (८)।

(८) इण भात रै नवा विचारा रा काचौ सूत उळझावतौ-सुळझावतौ वा उठै पूगी तौ राजकवरी पूछ्यौ— भुवा जी, आज मोडा घणा आया। घूमण नै अळगी भाय गिया काई ?

६ ३ ४ आ-क्रियाप्रकृति अनुक्रमो की रचना मुख्य क्रिया के साथ उसी से निर्मित आ-प्रेरणार्थक रूप की आसत्ति से होती है। यथा, करणौ-करावणौ, फुरणौ-फुरावणौ इत्यादि। अर्थ की दृष्टि से इस कोटि के अनुक्रम भी समिश्र अर्थवाची रचनाए हैं (९)।

(९) रामा-सामा कर-कराय'र, बामण कैयौ इज–स्याळ भाई, आज तौ अेक बात माथै म्हारै दूंना रै भोड हुयगी।

६.३ ५ प्रतिध्वन्यात्मक क्रियाप्रकृति अनुक्रमो की रचना मुख्य क्रिया के साथ उसी से निर्मित उसके प्रतिध्वन्यात्मक रूप की आसत्ति से होती है। यथा, छागणौ-छूगणौ, घूमणौ-घामणौ, लिखणौ-विखणौ, इत्यादि।

६ ३ ६ इतर क्रियाप्रकृति अनुक्रमो मे सामान्यत ऐसी रचनाओ को सम्मिलित किया जा सकता है जिनका द्वितीय अग भाषा मे स्वतन्त्र क्रिया के रूप मे अवस्थित नही होता। यथा, परणणौ पालणौ, मागणौ-तागणौ, मिळणौ-जुळणौ, इत्यादि।

६ ४ अन्य भारतीय आर्य भाषाओ के समान आ राजस्थानी मे भी क्रिया-नामिक पदबन्धो (सज्ञा$_2$ + परसर्ग + सज्ञा$_1$ अथवा संज्ञा$_2$ + परसर्ग + गुणवाचक विशेषणो) के साथ रचनाग क्रियाओ की आसत्ति से विविध प्रकार की *क्रिया-व्यापार बोधक* रचनाए होती हैं, जिन्हे सामान्यत यौगिक क्रियाओ की सज्ञा से अभिहित किया जाता है। जैसा कि उपरोक्त परिभाषा से स्पष्ट है, इन यौगिक क्रियाओ के दो मुख्याग होते हैं— (क) क्रियानामिक पदबन्ध तथा (ख) रचनाग क्रिया। यथा, ध्यान सज्ञा को सज्ञा$_1$ (=स$_1$) मानकर, इससे निर्मित यौगिक क्रियायें हैं, स$_2$ रौ ध्यांन आवणौ, स$_2$ रौ ध्यांन लगावणौ, स$_2$ सारू ध्यान लगावणौ, सं$_2$ रौ ध्यान करणौ, सं$_2$ रौ ध्यान देवणौ, सं$_2$ माथै ध्यान देवणौ, सं$_2$ रो ध्यान राखणौ, स$_2$ रो ध्यान रैवणौ, सं$_2$ रै वास्तै ध्यान धरणौ, सं$_2$ रो ध्यान छोडणौ, स$_2$ नै ध्यान बवणौ, इत्यादि। इमी प्रकार सं$_2$ + परसर्ग + राजी क्रियानामिक पदबन्ध को (जिसमे स$_1$ के स्थान पर विशेषण राजी को अवस्थिति हुई है) सातत्य मानकर, इससे निर्मित यौगिक क्रियाओ के उदाहरण हैं सं$_2$ माथै राजी हुवणौ, स$_2$ सू राजी हुवणौ, स$_2$ रै सारू राजी हुवणौ, स$_2$ नै राजी करणौ, सं$_2$ नै राजी राखणौ, स$_2$ माथै राजी रैवणौ, इत्यादि।

इन दोनो कोटियो के उदाहरणो मे क्रमश ध्यान सज्ञा और राजी विशेषण का क्रियाकरण हुआ है। इसके साथ-ही-साथ यह तथ्य भी द्रष्टव्य है कि एक ही क्रियानामिक पदबन्ध के साथ विविध रचनाग क्रियाओ की अवस्थिति हो सकती है, और एक ही रचनाग क्रिया के साथ विविध क्रियानामिक पदबन्धो की।

६ ४ १ यौगिक क्रियाओ मे अन्य समस्त अगो का सातत्य होने पर भी परसर्गो की अवस्थिति म विभेद होने पर विविध रूप से सूक्ष्म अर्थ-भेद हा जाता है (१०, ११)।

(१०) कोई अबूझ बाळक सोनै मू लदियोड़ो अेकलोई घर्के पड जावै तौ ठग सपना मे ई उण बाळक रै साथै धोखो नीं करै।

(११) ईया कर कर केई बिळिया बूढा-वडेरा नै धोखो दीनो, धूवै मू उलटी करी ग्रर होकै रो पाणी गिटियो।

इन वाक्यो मे स$_1$-सज्ञा धोखो के अर्थ मे परसर्ग रै साथै (१०) और नै (११) के आधार पर जा सूक्ष्म अर्थ-भेद हुआ है वह स्वत स्पष्ट ही है।

६ ४ २ क्रियानामिक पदबन्धो म अवस्थित स$_1$—सज्ञाए सामान्यतया भाववाचक होती हैं जैसा कि उपर के उदाहरणो से स्पष्ट है। किन्तु वस्तुवाचक स$_1$—सज्ञाओ की इन परिसरो मे अवस्थिति पर विशेष प्रतिबन्ध नही है। वस्तुवाचक स$_1$—सज्ञाए दो प्रकार की होती हैं —(क) शारीरिक अग नाम बोधक तथा (ख) आधारवाचक अभिव्यजक सज्ञाए।

शारीरिक अग नाम बोधक सज्ञाओ की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१२) सावळ कान देयनै सिंघ री हौकारा सुणी तौ वानै सता रै मुकाम सू ई आवती सुणीजी।

(१३) जद बाप ई आखिया फेर लो तौ पछै फूनक्वर किण आगे मुरझायोड़ै हिवड़ै रो सताप परगट करै।

उपरोक्त वाक्यो मे कान देवणो (१२) तथा आखिया फेर लेवणो (१३) दोनो यौगिक क्रियाए हैं जिनमे कान सज्ञा श्रवण तथा आखिया दृष्टि की प्रतिस्थानीय है। ये दोनो यौगिक क्रियाए क्रमश ध्यानपूर्वक सुनने तथा किसी के प्रति घृणा आदि भावो की अभिव्यक्ति कर रही हैं।

गुणवाचक अभिव्यजक रचनाओ के अनेक उदाहरण प्रकरण सख्या (३ ५ १) म दिये जा चुके हैं। नीचे एक और उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है (१४)।

(१४) घर रो मिनख ई जद लाज री बाढ लाधै तौ पछै कुण उणरो रुखिया कर सकै।

इस वाक्य मे अवस्थित यौगिक क्रिया लाज री बाढ लाधणो मे स$_2$—सज्ञा बाढ गुणवाचक अभिव्यजक सज्ञा है और समस्त यौगिक क्रिया के अर्थ "किसी से निन्दनीय अथवा शर्मनाक व्यवहार करने" के आधार पर इस वाक्य म बाढ शब्द का प्रयोग सर्वथा सगत है।

यौगिक क्रियाओं में वस्तुवाचक $स_1$–संज्ञाओं की अवस्थिति तत्सम्बन्धी संकल्पनाओं की विविध आविर्भावनाओं से सम्बन्धित होती हैं और उपरोक्त प्रकार के वाक्यों में इनका अर्थ कोश में दिये अर्थ से भिन्न हो जाता है।

६.४.३ कई यौगिक क्रियाओं के संरचना की दृष्टि से एकाधिक रूप भी भाषा में उपलब्ध होते हैं। यथा $स_2$ रै माथै काबू राखणौ (१५) तथा $स_2$ नै काबू में राखणौ (१६)।

(१५) थारै वेचेतै हुता हूं म्हनै रीस तो अणूती आई पण मन माथै काबू राखियौ।

(१६) आज पोहरे री बात इत्ती खारी लागै तौ पैला मन नै काबू में राखणौ हो।

इसी प्रकार के कुछ अन्य उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

(१७ क) $स_2$ रै माथै कब्जौ कर लेवणौ

(१७ ख) $स_2$ नै कब्जै मैं कर लेवणौ

(१८ क) $स_2$ नै इनाम देवणौ

(१८ ख) किणी नै $स_1$ इनाम में देवणौ

(१९ क) $स_2$ नै रीस आवणौ

(१९ ख) $स_2$ रौ रीस में आवणौ

अनेक रचनाओं, यथा धोखे में आवणौ, काम (में) आवणौ धोखे में रैवणौ आदि के मूल $स_2$ + परसर्ग + $स_1$ + रचनागत क्रिया रूप भाषा में उपलब्ध नहीं होते।

अनेक यौगिक क्रियाओं (यथा, किणी री आदर करणौ) के प्रतिस्थानीय क्रिया पदबन्ध भी (यथा, किणी नै आदरणौ) आदि भाषा में उपलब्ध होते हैं। इस प्रकार के अतिरिक्त उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं (२०-२३)।

(२० क) किणी री रुखाळी करणौ

(२० ख) रुखाळणौ

(२१ क) किणी री पिछाण करणौ

(२१ ख) पिछाणणौ

(२२ क) पूरो करणौ

(२२ ख) पूरणौ

(२३ क) किणी रै माथै रीस आवणौ/करणौ

(२३ ख) रिसावणौ

६ ४ ४ सकर्मक और अकर्मक यौगिक क्रियाओं के कई युग्मों में रचनाग क्रियायें भिन्न-भिन्न भी होती हैं (२४-२६)।

सकर्मक यौगिक क्रिया	अकर्मक यौगिक क्रिया
(२४) स₂ नै नसीयत देवणौ	म₂ नै नसीयत मिलणौ
(२५) स₂ में सळ घालणौ	स₂ में सळ पड़णौ
(२६) स₂ रौ पिदड़कौ काढणौ	स₂ रौ पिदड़कौ निकळणौ

उपरोक्त उदाहरणों में क्रमश देवणौ. मिलणौ, घालणौ पड़णौ तथा काढणौ निकळणौ रचनाग क्रियायें एक-दूसरे की सकर्मक अकर्मक प्रतिस्थानीय हैं। यह प्रवृत्ति भाषा में यौगिक क्रियाओं तक ही सीमित है।

६ ५ संयुक्त क्रियाओं द्वारा किसी भी क्रियाप्रकृति के वाच्य व्यापार की विशिष्ट आविर्भावनाओं का विवरण प्रस्तुत किया जाता है। उक्त आविर्भावनाओं के विविध पक्षों अथवा प्रावस्थाओं की अभिव्यक्ति एव इन दोनों के प्रति वक्ता के दृष्टिकोण की अभिव्यजना, मुख्य क्रिया से आसक्त विवारक क्रियाओं द्वारा होती है।

आ राजस्थानी विवारक क्रियाओं को तीन कोटियों में विभाजित किया जा सकता है—(क) पक्ष विवारक क्रियाए (ख) प्रावस्था विवारक क्रियाए, तथा (ग) अभिव्यजक विवारक क्रियाए। इन तीनों कोटियों की विवारक क्रियाओं का उनके प्रकार्यों एव उदाहरणों सहित विवरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

विवारक क्रियाओं के साथ अवस्थिति के आधार पर समस्त राजस्थानी क्रिया-प्रकृतियां के दो विभाग हैं—(क) व्यजनात (यथा कर–, जाण–, ऊठ– इत्यादि), और (ख) स्वरान्त (यथा आ–, जा– खा– पी–, हू– इत्यादि)। विवारक क्रियाओं के साथ अवस्थिति होने पर समस्त स्वरान्त क्रियाप्रकृतियां के साथ –य का आगम हो जाता है, यथा आय सकणौ, जाय चुकणौ, खाय लेवणौ, पीय जावणौ हूय सकणौ इत्यादि। कभी-कभी इस नियम के अपवाद भी मिल जाते हैं किन्तु इन अपवादों के होते हुए भी य–आगम को वैकल्पिक नहीं माना जा सकता।

६ ५ १ आ राजस्थानी की पक्ष विवारक क्रियाए निम्नलिखित हैं।

(१) शक्यताबोधक
- सहजता अथवा
- अध्यवसिति वाचक — सकणौ (२७-३१)।

(२) प्रक्रमबोधक
- नैरन्तर्यवाचक — रहणौ (३२, ३३)।
- समापनवाचक — चुकणौ (३४)।

(३) सक्रमणबोधक
    अवसितिवाचक   आवणो (३५, ३६)।
    पर्यवसितिवाचक   जावणो (३७ ३८)।

(४) सक्रमणबोधक
    स्वनिमित्तवाचक   लेवणो (३९ ४०)।
    परनिमित्तवाचक   देवणो (४१ ४२)।

इन पक्ष-विकारको की वाक्यो मे अवस्थिति के उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे है।

(२७) गोफणवाळी रै डर आगै वा उणरै रूप नै सावळ निरख ई नी मकियौ। उणियारा रै माम्ही जोवण रो होमा नी हुई।

(२८) झूठ नी बोलिया तौ बाणिया बिणज ई नी कर सकै, पछै उणरै ता चोरी रो धधो हौ।

(२९) उण मिथ रै मित्त वा पेफावती राणी री माया ही। नीतर बापडा सिंघ री काई जिनात के घोडा सू आगै जाय सकै।

(३०) च्यारू रा भाग अेडा माडा नी हुय मकै। राम जाणै काल रो सूरज काई बधाई लावै। इण धात री घडी भर पैला किणनै बेरो हौ। अणचीत्यौ दुख प्रगटै तौ अणचीत्यौ मुख ई तूठ मकै।

(३१) अर उठी च्यारू वीदणियां नै औ पक्को विस्वास हो कै जको मोटियार पैंफ रा फूल लाय सकै वो यू सोरै सास मरणियौ कोनी।

(३२) आयनै राणी नै कैयौ–राजा तौ आज दूजौ ब्याव कर रिया है, जको औ पहलै रौ सैंमान लेयनै जाय रियौ हू।

(३३) पण आपरो ब्याव म्हानै कबूल है। म्हे दूना ई राजौ कुसौ आपनै पच थाप रिया हा।

(३४) की तौ गाववाळा पैली सू ई उण रै बारै मे केई बाता सुण चुका हा।

(३५) मा-बेटी नै रोवता देख उणरी आखिया मे आसू छळक आया।

(३६) आप जैडै तपसो री सेवा रौ मौकौ म्हानै फेर कद बण आवैला।

(३७) अबै किणी भात रो चढावौ कै भेंट आवती तौ आधो उण रा सासरिया लेय जावता, अर आधो ठिकाणै तालकै हुय जाती।

(३८) पण थारै बिना म्हारो जीव फडका चढ जावै।

(३९) वो सगळी बस्ती नै हाथ जोडतो बोलियौ– थे तौ सगळा म्हनै उठता ई रौड लियौ।

(४०) भर ठाकर सा जे भो सोच लियो कै म्हैं हवा मे भधर उडतो जाय सकूं तो वे घोडो देवैला ई कोनी ।

(४१) साथणिया बीदणी नै धक्को देय मेडी माम रोड दी ।

(४२) चिडी तो भापगे चाव मे ऊंदरी री पूंछ पकडनै भट करती रा बारै काढ दी ।

६.५ २ भा राजस्थानी की प्रावस्था विवारक क्रियाए निम्नलिखित हैं ।

(५) उत्क्रमण बोधक

भावेगात्मक	ऊठणो (४३) ।
सवेगात्मक	बैठणो (४४,४५) ।

(६) भवक्रमण बोधक

भाकस्मिक	पडणो (४६,४७) ।
भनाकस्मिक	न्हाखणो (४८) ।

(७) सीमाक्रमण बोधक

भारम्भ माणोत्तर	चालणो (४९,५०) । हालणो
समापणपूर्व	छूटणो (५१) ।

(८) उपक्रमण बोधक

प्रत्यक्ष	रखणो (५२,५३) ।
परोक्ष	छोडणो (५४) ।

उपरोक्त विवारक क्रियाओ की वाक्यो मे भवस्थिति के उदाहरण निम्नलिखित हैं ।

(४३) जै जै कारा सू कोट गूंज ऊठियो । भिरोखै मे बैठी लुगाया ई सता री जै बोली ।

(४४) ' वानै कैयो कै भापारा भूवाजी कठै ई भापा रै सागै घात नी कर बैठै ।

(४५) भै लुगाया तो सगळी दुनिया नै ई ले बैठेला ।

(४६) उणरी आखिया मे भासू उमड पडिया ।

(४७) इण भात बदळीजियोडै दिन-राता रो गेडो भकय भाणद रै सागै घूमतो हो कै भणछक भेक भज भाय पडियो ।

(४८) वो तो पछै भलो सोची नीं कोई भू डो, वेद व्याम नै भापरै दोनू हाथां भाल उणरी घाटी मरोड न्हाखी ।

(४९) म्हनै राज-दरबार मे ले चालो म्हैं इणरो म्यानौ बतावू ला।

(५०) पैली सटके देणी रा थे म्हनै थारी घुरकाळ खनै ले हालौ।

(५१) तद वो नागी तरवार लेय कायर री क्ळाई भाग छूटौ।

(५२) पगरखिया कादै मे धसण कारण डावै हाथ मे झेल राखी ही।

(५३) थे म्हानै काई समझ राखिया हो।

(५४) सत राव चोरियोडा खजाना री पाई री पाई चोरा खनै सू खोसनै आपरै मुकाम मे जावतै सू राख छोडी ही।

६ ५ ३ आ राजस्थानी की अभिव्यजक विवारक क्रियाए निम्नलिखित हैं।

(९) सक्रमण बोधक
अवसिति अथवा
पर्यवसिति वाचक पधारणौ (५५)।

(१०) सक्रमण बोधक
स्वनिमित्तवाचक लिरावणौ (५६)।
परनिमित्तवाचक दिरावणौ (५७,५८)।

(५५) आपरी दाय पडै जित्ता नगीना ले पधारौ।

(५६) चेलौ तुरत जवाब दियौ— बाप जो, आखिया मीच लिरावौ, आपै ई अधारो हुय जावैला।

(५७) आप फोडा नी खावणो चावौ तौ म्हनै मया बगसाय दिरावौ, म्हैं तोड लावू।

(५८) तद राजकवर कैयौ— अबारू तौ म्हारै की नी चाहीजे। फगत दूध रो मया कर दिरावौ तौ जाणै आखी दुनिया रौ राज भरपायौ।

६ ६ मूल क्रियाप्रकृतियो के अतिरिक्त कतिपय विवारक क्रियाओ की अवस्थिति पूर्णतावाचक तथा अपूर्णतावाचक कृदन्तो के साथ भी होती है।

पूर्णतावाचक कृदन्त परक रूपो के साथ अवस्थित होने वाली विवारक क्रियाए हैं **आवणौ** (५९,६०) तथा **रैवणौ** (६१,६२)।

(५९) चितारण रै समचै ई दौडिया आवाला। हाथिया रो सिरदार इण नैनै सैं'क ऊदरियै रो बाल सुणनै डगडग हमियो।

(६०) इण अबखी वेळा मे हाथी उणनै याद करियौ। याद करता ई ऊदरा रो सिरदार तौ न्हाटौ आयौ।

(६१) अेक वार लोग उखड गया तो पछै बस मे करणो दोरो है। राज-काज सभाळण मे हरदम खुडको बणियो रैवेला।

(६२) गवाळियो अेक लाठी डाग लेयनै लुकियोडो बैठो रियो।

अपूर्णतावाचक कृदन्त परक रूपो के साथ प्रवस्थित होने वाली विवारक क्रियाए हैं आवणो (६३), जावणो (६४) तथा रैवणो (६५)।

(६३) छान रै माय ऊभा रा गाभा आला व्है जको थे तो मारग चालता आया।

(६४) हाथिया रो सिरदार आपरै पगा सू धूड नै खूदतो गयो।

(६५) वो भगती भाव सू झूमतो रियो अर बस्ती रा मगळा लोग ई घाटिया हिलावता रिया।

६.७ वाच्य के आधार पर आ राजस्थानी क्रियाप्रकृतियो के निम्नलिखित शब्द-रूपात्मक सवर्ग स्थापित किये जा सकते हैं।

(क) –ईज प्रत्यय युक्त मूल भाववाच्य क्रियाए, यथा **उपरीजणो, कदीजणो, घैळीजणो, चूंघीजणो, गोटीजणो, कजळालइजणो, गैळीजणो, कांबीजणो, गदीजणो, गरमीजणो, तुईजणो, थाबीजणो, नजरीजणो, पसीजणो** इत्यादि।

(ख) मूल अकर्मक क्रियाए जिनके सकर्मक प्रतिरूप भाषा मे उपलब्ध नही होते, *यथा* ***आवणो, जावणो, सूवणो, जागणो, डूबणो*** *इत्यादि।*

(ग) अकर्मक वाच्य क्रियाए जिनके सकर्मक वाच्य प्रतिरूप विविध प्रक्रमो द्वारा व्युत्पन्न होते है। क्रियाओ के निम्न वर्ग हैं।

(१) व्यजनात अकर्मक क्रियाप्रकृतिया जिनके मध्यवर्ती –अ– के स्थान पर –आ– का आदेश करके सकर्मक वाच्य प्रतिरूप निर्मित होते हैं।

अकर्मक वाच्य रूप	**सकर्मक वाच्य प्रतिरूप**
अकणो	आकणो
अजणो	आजणो
कटणो	काटणो
कतणो	कातणो
खचणो	खाचणो
गळणो	गाळणो
गठणो	गाठणो

(२) व्यजनात अकर्मक क्रियाप्रकृतिया जिनके मध्यवर्ती –इ– के स्थान पर –ए– का आदेश करके सकर्मक वाच्य प्रतिरूप निर्मित होते हैं।

अकर्मक वाच्य रूप	सकर्मक वाच्य प्रतिरूप
खिरणौ	खेरणौ
घिरणौ	घेरणौ
टिकणौ	टेकणौ

(३) व्यंजनांत अकर्मक क्रियाप्रकृतियां जिनके मध्यवर्ती –उ– के स्थान पर –ओ– का आदेश करके सकर्मक वाच्य रूप निर्मित होते हैं।

अकर्मक वाच्य रूप	सकर्मक वाच्य प्रतिरूप
कुरणौ	कोरणौ
घुटणौ	घोटणौ
घुळणौ	घोळणौ
चुभणौ	चोभणौ
चुळणौ	चोळणौ
जुडणौ	जोडणौ
टुळणौ	टोळणौ
खुबणौ	खोबणौ

(४) व्यंजनांत अकर्मक वाच्य क्रियाएं जिनके मध्यवर्ती –इ– के स्थान पर –ई– अथवा –उ– के स्थान –ऊ– का आदेश करके सकर्मक वाच्य प्रतिरूप निर्मित होते हैं।

अकर्मक वाच्य रूप	सकर्मक वाच्य प्रतिरूप
चिरणौ	चीरणौ
पिसणौ	पीसणौ
पिटणौ	पीटणौ
हुनणौ	हूनणौ
पुछणौ	पूछणौ
लुटणौ	लूटणौ

(५) व्यंजनांत अकर्मक वाच्य क्रियाओं के उपान्त्य –अ– के स्थान पर दीर्घ –आ– का आदेश करने से उनके सकर्मक वाच्य रूप निर्मित होते हैं।

अकर्मक वाच्य रूप	सकर्मक वाच्य रूप
अवतरणौ	अवतारणौ
उखड़णौ	उखाडणौ
उद्धरणौ	उद्धारणौ

(६) कई –अ– स्वरान्त अकर्मक वाच्य क्रियाओं में –अ के स्थान पर –आव का आदेश करने से उनके सकर्मक वाच्य रूप निर्मित होते हैं।

अकर्मक वाच्य रूप	सकर्मक वाच्य रूप
उगणौ	उगाणौ~उगावणौ
उचकणौ	उचकाणौ~उचकावणौ
खमकणौ	खमकाणौ~खमकावणौ
गिरणौ	गिराणौ~गिरावणौ

(घ) अनेक सकर्मक वाच्य क्रियाएं ऐसी हैं जिसके अकर्मक वाच्य रूप भाषा में उपलब्ध नहीं है। यथा करणौ, लिखणौ, देवणौ, लेवणौ, न्हाखणौ इत्यादि।

(ङ) अनेक अकर्मक वाच्य क्रियाओं के सकर्मक वाच्य प्रतिरूप उपरिलिखित नियमानुसार निर्मित नहीं होते।

अकर्मक वाच्य रूप	सकर्मक वाच्य प्रतिरूप
बिकणौ	बेचणौ
टूटणौ	तोडणौ
फूटणौ	फोडणौ
छूटणौ	छोडणौ
दुडणौ	दोडणौ
धुपणौ	धोवणौ
बिखरणौ	बिखेरणौ
निमणौ	नामणौ
निवडणौ	निवेडणौ

(च) अनेक क्रियाप्रकृतियां ऐसी हैं जिनकी अकर्मक एवं सकर्मक दोनों वाच्यों में, बिना किसी व्याकरणिक प्रतिबन्ध के, अवस्थिति होती है। ऐसी क्रियाओं के अन्तर्गत अनुकरणात्मक (विशेष रूप से –आ प्रत्यय) संज्ञा तथा विशेषण-जात क्रियाओं को भी सम्मिलित किया जा सकता है। इस कोटि की क्रिया-प्रकृतियों के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

खटखटावणौ	आदरणौ
फडफडावणौ	भूलणौ
खडखडावणौ	मलापणौ
तगतगावणौ	मावणौ
भणभणावणौ	भरणौ
झपझपावणौ	पलटणौ
टमटमावणौ	बदलणौ
मुळमुळावणौ	उलटणौ
छटपटावणौ	
जगमगावणौ	

(छ) अनेक क्रियाप्रकृतियों के एकाधिक रूप भाषा में प्रचलित हैं।

दीसणौ~दीखणौ~दीठणौ
बैसणौ~बैठणौ
डरणौ~डरपणौ
खदबदणौ~खदबदावणौ
जगमगणौ~जगमगावणौ
डगमगणौ~डगमगावणौ
हड़बड़णौ~हड़बड़ावणौ

६ ७ १ प्रकरण संख्या (६ ७) में (ग ६) कोटि की सकर्मक क्रियाप्रकृतियों के –आ और –आव अन्त्य वैकल्पिक परिवर्तों का उल्लेख किया गया है। वस्तुतः भाषा का सामान्य नियम है कि प्रत्येक –आ अन्त्य मूल अथवा व्युत्पन्न क्रियाप्रकृति का एक अन्य –आव अन्त्य वैकल्पिक परिवर्त होता है। इस प्रकार की क्रियाप्रकृतियों के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

आणौ~आवणौ
जाणौ~जावणौ
लगाणौ~लगावणौ
उठाणौ~उठावणौ
अटकाणौ~अटकावणौ
रमाणौ~रमावणौ
रखाणौ~रखावणौ
गवाणौ~गवावणौ

६ ८ आ राजस्थानी क्रियाप्रकृतियों के साथ पक्ष, वृत्ति, तथा काल आदि तत्त्वों के बोधक प्रत्ययों के योग से इनके समापिका क्रियारूप निर्मित होते हैं।

पक्ष, वृत्ति, काल आदि तत्त्वों के अतिरिक्त क्रियारूपों के साथ कर्ता अथवा कर्म के बोधक तत्त्व पुरुष, लिंग आदि भी अन्वय द्वारा सन्निहित रहते हैं।

६ ८ १ समापिका क्रियारूपों में विन्यस्त समस्त तत्त्वों की व्यवस्था को समझने के लिए यह आवश्यक है कि आ राजस्थानी क्रिया रूपावली का रचनात्मक वर्गीकरण करके, उसमें अन्तर्निहित परिच्छेदक अभिलक्षणों का विश्लेषण प्रस्तुत किया जाए। रचनात्मक वर्गीकरण की दृष्टि से समस्त आ राजस्थानी समापिका क्रियारूपों को चार कोटियों में विभक्त किया जा सकता है।

(क) पूर्णतावाचक कृदन्त से निर्मित क्रियारूप
(ख) अपूर्णतावाचक कृदन्त से निर्मित क्रियारूप

(ग) कृदन्त विशेषण से निर्मित क्रियारूप
(घ) क्रियाप्रकृति से निर्मित क्रियारूप

६८११ पूर्णतावाचक कृदन्त की रचना क्रियाप्रकृति के साथ –यौ अथवा –इयौ प्रत्यय के योग से होती है। समस्त –आ प्रत्यय क्रियाप्रकृतियों के साथ –यौ का योग होता है और समस्त व्यंजनान्त क्रियाप्रकृतियों के साथ –इयौ का। इस प्रकार निर्मित पूर्णतावाचक कृदन्तों के लिंगवचनानुसार रूप नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं। इन रूपों में उगाणौ क्रिया को –आ प्रत्यय क्रियाप्रकृतियों का और उतरणौ क्रिया को व्यंजनान्त क्रियाप्रकृतियों का प्रतिनिधि मानकर रूप प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

इस विषय में कतिपय अपवाद भी हैं। उनका उल्लेख नीचे किया जा रहा है।

क्रियाप्रकृति	एकवचन		बहुवचन	
रूप	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग
उगा–	उगायौ	उगाई	उगाया	उगाई
उतर–	उतरियौ	उतरी	उतरिया	उतरी

कई क्रियाप्रकृतियों के पूर्णतावाचक कृदन्त रूप अनियमित होते हैं। यथा

जा–	ग्यौ	गी	ग्या	गी
दे–	दीनौ	दीनी	दीना	दीनी
ले–	लीनौ	लीनी	लीना	लीनी
कर–	कीनौ	कीनी	कीना	कीनी

६८१२ अपूर्णतावाचक कृदन्त की रचना क्रियाप्रकृति के साथ –तौ प्रत्यय के योग से होता है। स्वरान्त क्रियाप्रकृतियों में –तौ के योग से पूर्व –वा– का आगम हो जाता है।

अपूर्णतावाचक कृदन्त के लिंगवचनानुसार रूप नीचे उद्धृत किये जा रहे हैं।

क्रियाप्रकृति	एकवचन		बहुवचन	
रूप	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग
उगा–	उगावतौ	उगावती	उगावता	उगावती
उतर–	उतरतौ	उतरती	उतरता	उतरती
जा–	जावतौ	जावती	जावता	जावती
दे–	देवतौ	देवती	देवता	देवती
ले–	लेवतौ	लेवती	लेवता	लेवती
कर–	करतौ	करती	करता	करती

६ ८ १ ३ कृदन्तविशेषण की रचना क्रियाप्रकृति के साथ –णौ प्रत्यय के योग से होती है। स्वरान्त क्रियाप्रकृतियो मे –णौ के योग से पूर्व –वा– का आगम हो जाता है।

कृदन्तविशेषण के लिंगवचनानुसार रूप नीचे उद्धृत किये जा रहे हैं।

क्रियाप्रकृति	एकवचन		बहुवचन	
रूप	पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
उगा–	उगावणौ	उगावणी	उगावणा	उगावणी
उतर–	उतरणौ	उतरणी	उतरणा	उतरणी
जा–	जावणौ	जावणी	जावणा	जावणी
दे–	देवणौ	देवणी	देवणा	देवणी
ले–	लेवणौ	लेवणी	लेवणा	लेवणी
कर–	करणौ	करणी	करणा	करणी

६ ८ १ ४ पूर्णतावाचक कृदन्त, अपूर्णतावाचक कृदन्त तथा कृदन्त विशेषण के साथ हुवणौ सहायक क्रिया के वृत्ति और काल बोधक रूपो की आसक्ति से उक्त तीनो कोटियो के आ राजस्थानी समापिका क्रियारूप निर्मित होते हैं। इन वृत्ति तथा काल बोधक रूपो के उनमे अन्तर्निहित तत्त्वो के अभिलक्षणो के अनुसार नाम नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

इन तीनो कोटियो की समापिका क्रिया रूपावली मे वृत्ति तथा काल आदि की अवस्थिति में भेद होने के कारण निम्न तीनो स्तम्भो मे + चिह्न से अभिप्राय है कि उक्त तत्त्व समिश्र की अवस्थिति होती है और – चिह्न से उक्त तत्त्व-समिश्र की अनवस्थिति अभिप्रेत है।

वृत्ति आदि तत्त्व समिश्र नाम	समापिका क्रिया रूपावली		
	पूर्णतावाचक कृदन्त	अपूर्णतावाचक कृदन्त	कृदन्त विशेषण
१ असिद्धि	+	+	+
२ अनुमित प्रतिज्ञप्ति	+	+	+
३ असदिग्ध सभावना	+	+	+
४ सदिग्ध सभावना	+	+	+
५ भूत	+	+	+
६ वर्तमान्	+	–	+
७ वृत्ति-काल विरहित रूप अवस्थिति	+	+	+

इन तीनो कोटियो के समापिका क्रियारूपो की सख्या २० है।

मात्र क्रियाप्रकृति के साथ प्रत्ययो के योग से निर्मित रूपावली के उसमे अन्तर्निहित तत्त्वो के अभिलक्षणानुसार नाम नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

प्रत्यययुक्त क्रियाप्रकृति समापिका क्रिया रूप नाम

(२१) उद्‌बोधन
(२२) आज्ञा
(२३) अनुमित प्रतिज्ञप्ति
(२४) असदिग्ध सभावना
(२५) वर्तमान् सभावना
(२६) सम्भावना

६ ८ १ ५ आ राजस्थानी की समापिका क्रिया रूपावली के समस्त २६ रूपो के अनेक वैकल्पिक परिवर्त भाषा मे उपलब्ध हैं। इन वैकल्पिक परिवर्तो के समस्त ज्ञात रूपो को, उनके पुरुष, लिंग, वचन सहित, आवणो क्रियाप्रकृति को आधार मानकर नीचे सूचित किया जा रहा है।

आवणो के समापिक क्रिया रूप

समापिका क्रिया रूप नाम	पुरुष	लिंग		समापिका क्रिया रूप एकवचन		बहुवचन
(१) पूर्णअसिद्धि वाचक	अन्य	पुल्लिग	ग्यो	हुतो~व्हैतो~ व्हैवतो~हूवतो	ग्या	हुता~व्हैता~ व्हैवता~हुवता
		स्त्रीलिंग	गो	हूतो~व्हैती~ व्हैवती~हुवतो	गी	हूती~व्हैती~ व्हैवती~हुवती
(२) पूर्णअनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक	उत्तम	पुल्लिग	ग्यो	हू'ऊ~हू'वू~ व्है'ऊ~व्है'वू	ग्या	हू'आं~हू'वा व्है'आ~व्है'वा
		स्त्रीलिंग	गी	हू'ऊ~हू'वू~ व्है'ऊ~व्है'वू	गी	हू'आ~हू'वा व्है'आ~व्है'वा
	मध्यम	पुल्लिग	ग्यो	हू'ई~व्है'ई~ व्हू'ई	ग्या	हू'ओ~हू'वो~ व्है'ओ~व्है'वो
		स्त्रीलिंग	गी	हू'ई~व्है'ई~ व्हू'ई	गी	हू'ओ~हू'वो~ व्है'ओ~व्है'वो

समापिका क्रिया रूप नाम	पुरुप	लिंग	समापिका क्रिया रूप एकवचन		बहुवचन	
	अन्य	पुल्लिग	ग्यौ	हू'ई~व्है'ई~व्हू'ई	ग्यो	हू'ई~व्है'ई व्हू'ई
		स्त्रीलिंग	गी	हू'ई~व्हू'ई~व्हू'ई	गी	हू'ई~व्है'ई व्हू'ई
(३) पूर्ण असंदिग्ध सभावना वाचक	उत्तम	पुल्लिग	ग्यौ	व्हूला~व्हूलौ	ग्या	व्हाला
		स्त्रीलिंग	गी	व्हूला व्हूली	गी	व्हाला व्हाली
	मध्यम	पुल्लिग	ग्यौ	व्हैला व्हैलौ	ग्या	व्होला
		स्त्रीलिंग	गी	व्हैला व्हैली	गी	व्होला व्होली
	अन्य	पुल्लिग	ग्यौ	व्हैला व्हैलौ	ग्या	व्हैला
		स्त्रीलिंग	गी	व्हैला व्हैली	ग्या	व्हैला व्हैली
(४) पूर्ण सदिग्ध सभावना वाचक	उत्तम	पुल्लिग	ग्यौ	व्हूं	ग्या	व्हा
		स्त्रीलिंग	गी	व्हूं	गी	व्हो
	मध्यम	पुल्लिग	ग्यौ	व्है	ग्या	व्हो
		स्त्रीलिंग	गी	व्है	गी	व्हो
	अन्य	पुल्लिग	ग्यौ	व्है	ग्या	व्है
		स्त्रीलिंग	गी	व्है	गी	व्है
(५) पूर्ण भूत	अन्य	पुल्लिग	ग्यौ	हो	ग्या	हा
		स्त्रीलिंग	गी	ही	गी	ही

समापिका क्रिया रूप नाम	समापिका क्रिया रूप: पुरुष	लिंग	एकवचन	बहुवचन
(६) पूर्ण वर्तमान्	उत्तम	पुल्लिंग	ग्यो हूं	ग्या हां
		स्त्रीलिंग	गी हूं	गी हां
	मध्यम	पुल्लिंग	ग्यो है	ग्या हो
		स्त्रीलिंग	गी है	गी है
	अन्य	पुल्लिंग	ग्यो है	ग्या है
		स्त्रीलिंग	गी है	गी है
(७) पूर्णता वाचक	अन्य	पुल्लिंग	ग्यो	ग्या
		स्त्रीलिंग	गी	गी
(८) अपूर्ण असिद्धि वाचक	अन्य	पुल्लिंग	जावतो हुतो~व्हैतो~व्हैवतो~हूवतो	जावता हुता~व्हैता~व्हैवता~हूवता
		स्त्रीलिंग	जावनो हुनी~व्हैती~व्हैवती~हूवती	जावती हुती~व्हैती~व्हैवती~हूवती
(९) अपूर्ण अनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक	उत्तम	पुल्लिंग	जावतो हू'ऊ~हू'वूं~व्हे'ऊ~व्हे'वूं~व्हू'वूं	जावता हू'आ~हू'वा~व्हे'आ~व्हे'वा~व्हूवा
		स्त्रीलिंग	जावती हू'ऊ~हू'वूं~व्हे'ऊ~व्हे'वूं~व्हू'वूं	जावती हू'आ~हू'वा~व्हे'आ~व्हे'वा~व्हूवा
	मध्यम	पुल्लिंग	जावतो हू'ई~व्हे'ई~व्हू'ई	जावता हू'ओ~हू'वो~व्हे'ओ~व्हे'वो~व्हू'वो
		स्त्रीलिंग	जावती हू'ई~व्हे'ई~व्हू'ई	जावती हू'ओ~हू'वो~व्हे'वो~व्हे'ओ~व्हू'वो

समापिका क्रिया रूप नाम	पुरुष	लिंग	एकवचन		बहुवचन	
	अन्य	पुल्लिग	जावतौ	हू'ई~व्है'ई ~व्हू'ई	जावता	हू'ई~व्है'ई ~व्हू'ई
		स्त्रीलिंग	जावती	हू'ई~व्है'ई ~व्हू'ई	जावता	हू'ई~व्है'ई ~व्हू' ई
(१०) अपूर्ण असंदिग्ध संभावना वाचक	उत्तम	पुल्लिग	जावतौ	व्हूला	जावता	व्हाला
		स्त्रीलिंग	जावती	व्हूला व्हूली	जावती	व्हाला व्हाली
	मध्यम	पुल्लिग	जावतौ	व्हैला	जावता	व्हैला
		स्त्रीलिंग	जावती	व्हैला व्हैली	जावती	व्हैला व्हैली
	अन्य	पुल्लिग	जावतौ	व्हैला	जावता	व्हैला
		स्त्रीलिंग	जावती	व्हैला व्हैली	जावता	व्हैला व्हैली
(११) अपूर्ण संदिग्ध संभावना वाचक	उत्तम	पुल्लिग	जावतौ	व्हू	जावता	व्हा
		स्त्रीलिंग	जावती	व्हू	जावती	व्हा
	मध्यम	पुल्लिग	जावतौ	व्है	जावता	व्हौ
		स्त्रीलिंग	जावती	व्है	जावती	व्हौ
	अन्य	पुल्लिग	जावतौ	व्है	जावता	व्है
		स्त्रीलिंग	जावती	व्है	जावती	व्है
(१२) अपूर्ण भूत	अन्य	पुल्लिग	जावतौ	हो	जावता	हा
		स्त्रीलिंग	जावती	हो	जावती	ही

	समापिका क्रिया रूप नाम	पुरुष	लिंग	एकवचन		बहुवचन
(१३)	अपूर्णता वाचक	अन्य	पुल्लिग	जावतो		जावता
			स्त्रीलिंग	जावती		जावती
(१४)	असिद्ध सकेत वाचक	अन्य	पुल्लिग / स्त्रीलिंग	जावणो	हुतो~व्होता ~व्हैवतो ~हूवतो	एक वचन के समान
(१५)	अनुमित प्रतिज्ञप्ति सकेत वाचक	अन्य	पुल्लिग / स्त्रीलिंग	जावणो	हू'ई~व्हू'ई व्हू'ई	एक वचन के समान
(१६)	असदिग्ध सभावना सकेतवाचक	अन्य	पुल्लिग / स्त्रीलिंग	जावणो	व्हेलो	एक वचन के समान
(१७)	सदिग्ध सभावना सकेतवाचक	अन्य	पुल्लिग / स्त्रीलिंग	जावणो	व्है	एक वचन के समान
(१८)	भूत सकेत वाचक	अन्य	पुल्लिग / स्त्रीलिंग	जावणो	ही	एक वचन के समान
(१९)	वर्तमान् सकेत वाचक	अन्य	पुल्लिग / स्त्रीलिंग	जावणो	है	एक वचन के समान
(२०)	सकेत वाचक	अन्य	पुल्लिग / स्त्रीलिंग	जावणो		एक वचन के समान
(२१)	उद्‌बोधन वाचक	मध्यम		जाजे~जाइजे		जाजो~जाइजो
(२२)	आज्ञा वाचक	मध्यम		जा		जावो~जाओ

समापिका क्रिया रूप नाम	पुरुष	लिंग	एक वचन	बहु वचन
(२३) अनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक	उत्तम		जा'ऊ~जासू ~ जास्यू	जा'वा~जा'आ~ जामा~जास्या
	मध्यम		जा'ई~जासी	जा'ओ~जा'वो~जासो
	अन्य		जा'ई~जासी	जा'ई~जासी
(२४) असंदिग्ध संभावना वाचक	उत्तम		जाऊला	जावाला~जाआला
	मध्यम		जावैला	जावोला
	अन्य		जावैला	जावैला
(२५) वर्तमान् संभावना वाचक	उत्तम		जाऊ हू~जावू हू	जावा हा~जाआ हा
	मध्यम		जावै है	जावो हो
	अन्य		जावै है	जावै है
(२६) संभावना वाचक	उत्तम		जाऊ~जावू	जावा~जाआ
	मध्यम		जावै	जावो
	अन्य		जावै	जावै

रूप संख्या (१४-२०) के सीमित परिसरो मे स्त्रीलिंग रूप भी उपलब्ध होते हैं। इस स्थिति मे अकर्मक क्रिया के कृदन्त विशेषण के स्त्रीलिंग रूप (यथा, जावणी) के साथ सहायक क्रिया की अवस्थिति होती है।

६८१६. समस्त उपरिलिखित रूप भाषा मे सामान्य रूप से अधिमान्य नही हैं। अत मात्र अधिमान्य रूपो को लेकर नीचे लिखणो क्रिया की समापिका क्रिया रूपावली का निदर्शन किया जा रहा है।

सकर्मक क्रियाओ के पूर्णतावाचक कृदन्त तथा कृदन्त विशेषण से निर्मित समापिका क्रिया रूपो मे कृदन्त और कर्मस्थानीय संज्ञा मे लिंग-वचनानुसार अन्वय होना है और सहायक क्रिया एव कर्त्ता स्थानीय संज्ञा मे (अन्य पुरुष को छोड़कर) पुरुष-वचनानुसार अन्वय होता है। इन तथ्यो का निर्देश लिखणो क्रिया की समापिका क्रिया रूपावली मे कर दिया गया है।

लिखणो की समापिका क्रिया रूपावली

(१) पूर्ण प्रसिद्ध वाचक

	एकवचन	बहुवचन
पुल्लिग	लिखियौ हुतौ	लिखिया हुता
स्त्रीलिंग	लिखी हुती	लिखी हुती

(२) पूर्ण अनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक

उत्तम पुरुष	पुल्लिग	लिखियौ (ए व) लिखिया (ब व)	हूं'ऊ	लिखियौ (ए व) लिखिया (ब व)	हूं'आ
	स्त्रीलिंग	लिखी हूं'ऊ		लिखी हूं'आ	
मध्यम पुरुष	पुल्लिग	लिखियौ (ए व) लिखिया (ब व)	हूं'ऊ	लिखियौ (ए व) लिखिया (ब व)	हू'वौ
	स्त्रीलिंग	लिखी हू'ई		लिखी हू'वौ	
अन्य पुरुष	पुल्लिग	लिखियौ (ए व) लिखियौ (ब व)	हू'ई	लिखियौ (ए व) लिखिया (ब व)	हू'ई
	स्त्रीलिंग	लिखी हू'ई		लिखी हू'ई	

(३) पूर्ण असदिग्ध सभावना वाचक

उत्तम पुरुष	पुल्लिग	लिखियौ (ए व) लिखिया (ब व)	व्हूला	लिखियौ (ए व) लिखियौ (ब व)	व्हाला
	स्त्रीलिंग	लिखी व्हूला		लिखी व्हाला	
मध्यम पुरुष	पुल्लिग	लिखियौ (ए व) लिखिया (ब व)	व्हैला	लिखियौ (ए व) लिखिया (ब व)	व्हौला
	स्त्रीलिंग	लिखी व्हैला		लिखी व्हौला	
अन्य पुरुष	पुल्लिग	लिखियौ (ए व) लिखियौ (ब व)	व्हैला	लिखियौ (ए व) लिखिया (ब व)	व्हैला
	स्त्रीलिंग	लिखी व्हैला		लिखी व्हैला	

(४) पूर्ण सदिग्ध सभावना वाचक

उत्तम पुरुष	पुल्लिग	लिखियौ (ए व) लिखिया (ब व)	व्हूं	लिखियौ (ए व) लिखिया (ब व)	व्हा
	स्त्रीलिंग	लिखी व्हूं		लिखी व्हा	

मध्यम पुरुष	पुल्लिग	लिखियौ (ए व) / लिखिया (ब व) व्है	लिखियौ (ए व) / लिखिया (ब व) व्हौ
	स्त्रीलिग	लिखी व्है	लिखी व्हौ
अन्य पुरुष	पुल्लिग	लिखियौ (ए व) / लिखिया (ब व) व्है	लिखियौ (ए व) / लिखिया (ब व) व्है
	स्त्रीलिग	लिखी व्है	लिखी व्है

(५) पूर्ण भूत

	एक वचन	बहु वचन
पुल्लिग	लिखियौ हो	लिखिया हा
स्त्रीलिग	लिखी ही	लिखी ही

(६) पूर्ण वर्तमान्

उत्तम पुरुष	पुल्लिग	लिखियौ (ए व) / लिखिया (ब व) हू	लिखियौ (ए व) / लिखिया (ब व) हा
	स्त्रीलिग	लिखी' हू	लिखी हा
मध्यम पुरुष	पुल्लिग	लिखियौ (ए व) / लिखिया (ब व) है	लिखियौ (ए व) / लिखिया (ब व) हौ
	स्त्रीलिग	लिखी है	लिखी हौ
अन्य पुरुष	पुल्लिग	लिखियौ (ए व) / लिखिया (ब व) है	लिखियौ (ए व) / लिखिया (ब व) है
	स्त्रीलिग	लिखी है	लिखी है

(७) पूर्णता वाचक

पुल्लिग	लिखियौ	लिखिया
स्त्रीलिग	लिखी	लिखी

(८) अपूर्ण असिद्धि वाचक

पुल्लिग	लिखतौ व्हैतौ	लिखता व्हैता
स्त्रीलिग	लिखती व्हैती	लिखती व्हैती

(९) अपूर्ण अनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक

उत्तम पुरुष	पुल्लिग	लिखतौ हू'ऊ	लिखता हू'आ
	स्त्रीलिग	लिखती हू'ऊ	लिखती हू'आ

		एक वचन	बहुवचन
मध्यम पुरुष	पुल्लिग	लिखतौ हू ई	लिखता हू ओ
	स्त्रीलिग	लिखती हू ई	लिखती हू ओ
अन्य पुरुष	पुल्लिग	लिखतौ हू ई	लिखता हू ओ
	स्त्रीलिग	लिखती हू ई	लिखती हू ई

(१०) अपूर्ण असंदिग्ध संभावना वाचक

उत्तम पुरुष	पुल्लिग	लिखतौ व्हूला	लिखता व्हाला
	स्त्रीलिग	लिखती व्हूला	लिखती व्हाला
मध्यम पुरुष	पुल्लिग	लिखतौ व्हैला	लिखता व्हौला
	स्त्रीलिग	लिखती व्हैला	लिखती व्हौला
अन्य पुरुष	पुल्लिग	लिखतौ व्हैला	लिखता व्हैला
	स्त्रीलिग	लिखती व्हैलो	लिखती व्हैला

(११) अपूर्ण संदिग्ध संभावना वाचक

समस्त रूप जावणौ क्रिया के रूपों के समान है।

(१२) अपूर्ण भूत

समस्त रूप जावणौ क्रिया के रूपों के समान है।

(१३) *अपूर्णता वाचक*

समस्त रूप जावणौ क्रिया के रूपों के समान है।

(१४) असिद्ध संकेत वाचक

	एक वचन	बहु वचन
पुल्लिग	लिखणौ व्हैतौ	लिखणा व्हैता
स्त्रीलिग	लिखणी व्हैती	लिखणी व्हैती

(१५) अनुमित प्रतिज्ञप्ति संकेत वाचक

पुल्लिग	लिखणौ व्है ई	लिखणा व्है ई
स्त्रीलिग	लिखणी व्है ई	लिखणी व्है ई

(१६) असंदिग्ध संभावना संकेत वाचक

पुल्लिग	लिखणौ व्हैला	लिखणा व्हैला
स्त्रीलिग	लिखणी व्हैला	लिखणी व्हैला

		एक वचन	बहुवचन
(१७) संदिग्ध संभावना संकेत वाचक			
	पुल्लिंग	लिखणो व्है	लिखणा व्है
	स्त्रीलिंग	लिखणी व्है	लिखणी व्है
(१८) भूत संकेत वाचक			
	पुल्लिंग	लिखणो हो	लिखणा हा
	स्त्रीलिंग	लिखणी ही	लिखणी ही
(१९) वर्तमान संकेत वाचक			
	पुल्लिंग	लिखणो है	लिखणा है
	स्त्रीलिंग	लिखणी है	लिखणी है
(२०) संकेत वाचक			
	पुल्लिंग	लिखणो	लिखणा
	स्त्रीलिंग	लिखणी	लिखणी
(२१) उद्बोधन वाचक			
	मध्यम पुरुष	लिखजे	लिखजो
(२२) आज्ञा वाचक			
	मध्यम पुरुष	लिख	लिखो
(२३) अनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक			
	उत्तम पुरुष	लिखसू ~ लि'खू	लिखसा ~ लि'खा
	मध्यम पुरुष	लिखसी ~ लि'खी	लिखसो ~ लि'खो
	अन्य पुरुष	लिखसी ~ लि'खी	लिखसी ~ लि'खी
(२४) असंदिग्ध संभावना वाचक			
	उत्तम पुरुष	लिखूं ला	लिखाला
	मध्यम पुरुष	लिखैला	लिखोला
	अन्य पुरुष	लिखैला	लिखैला
(२५) वर्तमान् संभावना वाचक			
	उत्तम पुरुष	लिखू हू	लिखा हा
	मध्यम पुरुष	लिखै है	लिखो हो
	अन्य पुरुष	लिखै है	लिखै है

		एक वचन	बहुवचन
(२६) सभावना वाचक			
	उत्तम पुरुष	लिखू	लिखा
	मध्यम पुरुष	लिखै	लिखौ
	अन्य पुरुष	लिखै	लिखै

६ ८ १ ७ उपरिलिखित समापिका क्रिया रूपावली की वाक्यो म अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किय जा रहे हैं।

(१) पूर्ण असिद्धि वाचक

(६६) गुमेज में बोलियो—बावळो भाटो गिटग्यो हुतो तो ई म्है उणनें मू है बोलाय लेतो पण थारी तो जिनात ई काई है।

इस वाक्य म गिटग्यो हुतो पूर्ण असिद्धि वाचक रूप है जबकि निम्न वाक्य म समझायो हुतो (६७) रूप का अर्थ है समझाया था। इस प्रकार की सन्दिग्ध रचनाओं का समाधान वाक्य परिसरों और सहायक क्रिया के रूप हुतो तथा याजक क्रिया (प्रकरण ६ १०) के रूप हुतो~हो के पारस्परिक पार्थक्य के आधार पर किया जा सकता है।

(६७) जद कुत्तो उणनें कैयो—भाई म्है थनें पैला इ समझायो हुतो पण थू तो मानी नी।

(८) अपूर्ण असिद्धि वाचक

(६८) आज बाबो जीवतो हुतो तो थारा मामा नैं औ फोडा नी पडता।

(१४) असिद्ध सकेत वाचक

(६९) जे थारो धन वित्त अर जमी जायदाद म्हारै अटावणी हुती तो म्है थनें इतरो लाठो वयू हुवण देवतो। छोटै थकै नै इज मार र खाडाबूच नीं कर देतो।

(२) पूर्ण अनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक

(७०) जे पेड रै नीचू लागा हू ई तो म्है बेरै मू आवतो लेतो आजू ना जीतर व्हा।

(९) अपूर्ण अनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक

(७१) कुण थारै धू प खेवतो हुसी ? हाय मा आज थू अनाथ हुयगी म्हारै जीवता जीव कुण जाणै थनें काई काई दुख भोगणा पडता हुसी।

(१५) अनुमित प्रतिज्ञप्ति सकेत वाचक

(७२) म्हारै सू तो किणी री गरजा नी करीजै उणनें रोटा खावणी हुई तो खाय लेसी अर नीतर भूखो इज पड रै ई।

(३) पूर्ण असदिग्ध सभावना वाचक

(७३) आ दुनिया थपिया पछै ई कोई मिनख आज दिन तक जीवतो मिच नै नी पकडियो व्हैला।

(१०) अपूर्ण असदिग्ध सभावना वाचक

(७४) थ्ह बीस बरसा तक ऊका री गोद मे म्हैं रमी, इत्ती लाठी हुई, म्हनै ई वारै विना कीकर आवडती व्है ला। आप इणरो नी अदाज लगा सको।

(१६) असदिग्ध सभावना सकेत वाचक

(७५) मोवण नै कठै जावणो व्हैला।

(४) पूर्ण सदिग्ध सभावना वाचक

(७६) म्हे सपने मे ई आपरै सार्थ दगौ करण रो विचार करियो व्हा तो म्हानै नरक मे ई ठौड नी मिळै।

(११) अपूर्ण सदिग्ध सभावना वाचक

(७७) तद घरवाळी कैयौ—यैं कमाई करता व्हो तो वळपू ई किण वास्तै।

(१७) सदिग्ध सभावना सकेत वाचक

(७८) आप लोगा रै भगती भाव सू म्हैं अणु तो राजी हू। पण जको हूवणो व्है वा कीकर टळ सकै ?

(४) पूर्ण भूत

(७८) भावना रै कारण ई तो भगवान राम चदरजी सबरी रै हाथ सू ऍठवाडा बोर खाया हा।

(१२) अपूर्ण भूत

(७९) वो तौ आपरी धुन मे निचीतो हुवोडो फदाफद करतो जावतो हो कै अजाणचक उणनै ठा पडी कै लारै सू कोई उणरी टागडी अपडली है।

(१८) भूत सकेत वाचक

(८०) जे इण सरीर नै ई सू पणो हो तो राजकवर री रगमैल किसो भू डो हो।

(८१) केई दिना ताई लिछमा रो भोळू आई, पण छेक्ट भूलणो ई हो।

(६) पूर्ण वर्तमान्

(८२) ठेट मुकाम पधारण री वपू तकलीफ फरमावो। म्हैं म्हारै माथै ई आपरो भोजन मगाय लियो हू।

(१९) वर्तमान संकेत वाचक

(८३) आपनै तो फगत पाणी पीवणो है, अठीकर ही सई उठीकर सई।

(७) पूर्णता वाचक

(८४) राजा देखै तो राणी रथ सू उतर री।

(८५) मै आयो तो म्हनै गलिया ई नरमी।

(१३) अपूर्णता वाचक

(८६) रोयनै निबळापणो बताय दियो तो मूळो काल मिळती दणो सायत मिळ जावेला।

(८७) मा पाछो पड़ूत्तर दियो—म्हनै कोई पूछियो व्है तो म्हैं ई थनै पूछती वेटी।

(२०) संकेत वाचक

(८८) इणरै बिस नै तो अकल सू दाटणो पडमी। डील मे करार नी व्है तो बगत आया अकल सू काम सारणो।

(८९) थानै म्हारै दुख-दरद सू काई लेणो-देणो।

(९०) वो उभो-उभो मन रा लाडू खावण लागो कै पैला बिचिया नै खावणा कै पैला स्याळ-स्यालणी नै।

(२१) उद्‌बोधन वाचक

(९१) अेकर ढगळो गान नै कयो—बेली थू म्हनै अकेलो छोडनै मत जाजे।

(९२) नवलखो हार गमजो अर अंडा मता रा अठै आवणा हूजो। ओ नवलखो हार तो भलो ई गमियो।

(२२) आज्ञा वाचक

(९३) थोडी निरायत कर। ध्यान सू बात सुण।

(९४) खिरगोसियो बत्तो जोस दिरावण सारू सिंग नै कैवण लागो—अदाता, अेकर निरायत सू सावळ बिचार कर लिरावो।

(९५) रोटी बीजी खायनै आवा पछै मलाई किती जेज लागै।

(२३) अनुमित प्रतिज्ञप्ति वाचक

(९६) म्हारै सरीर रै हाथ मत लगाजो, बाकी थे कंवीला उठै चालसू परी, म्हनै नीतर ई कठै ई जावणो तो है ई।

(९७) म्हैं म्हारै घरै मोकळा मिनखा नै देखिया तो मन मे जाणियो—म्हारो मीठो बाघ है। जीवत सिनान करावै है धर अबै म्हनै वखण नै जासो।

(२४) असंदिग्ध संभावना वाचक

(९८) राजकंवर सोचियौ के जिण लुगाई रा केस अंडा है तौ वा खुद कैड़ी रूपाळी व्हैला।

(२५) वर्तमान् संभावना वाचक

(९९) आप निचीता रौ, म्हैं नगरी रा सगळा ऊंदरा लेयनैं इणी सायत पाछौ आऊं हूं।

(१००) हजार बुद्धि बोलियौ—थे साव साची कौ हौ। आ सायद है अर टाली आख सूं काणी है।

(१०१) म्हैं नित-नेम सूं निव्रत होयनैं अबार्‌ई दरबार में हार लेयनैं आऊं हूं।

(१०२) आपरै आगरै लागूं जीव पढ़ै है। इण बाळक माथै थोडी दया बिचारौ, अबै आपरै सरणै है।

(२६) संभावना वाचक

(१०३) हसती-हसती ई बोली—राजा, म्हैं तौ जाणती कै थूं इतौ मोटौ राज संभाळौ जकौ थारै में की न की अकल तौ व्हैला इज।

(१०४) सूरज आथूंण में ऊगै तौ म्हैं म्हारै वचन सूं टळूं।

(१०५) वा अभ्यागत बामणौ जिण भांत बिखा रा दिन काढ़िया, ऊंडा दिन भगवान किणी नैं सपनै में ई नीं बतावै।

(१०६) म्हैं थनै सोळै साल री मौलत दूं।

६.८.२. आ राजस्थानी योजक क्रिया हुवणौ की रूपावली के भूत और वर्तमान् कालों के आधार पर दो कुलक हैं, जिनका विवरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

	एकवचन		बहुवचन	
भूतकालिक रूप	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
	हौ~हुतौ	ही~हुती	हा~हुता	ही~हुती

वर्तमान् कालिक रूप

उत्तम पुरुष	हूं	हां
मध्यम पुरुष	है	हौ
अन्य पुरुष	है	है

६.९. समापिका अथवा असमापिका क्रिया रूपों के साथ निश्चयार्थक नियात परौ की वैकल्पिक अवस्थिति होती है। परौ के लिंग-वचन वाक्य के कर्ता के अनुरूप ही होते हैं।

नीच परौ की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण दिये जा रहे हैं।

(१०७) आठू दिसावा मे मन कर उठीनै जावौ परा। अब आप आपरै अ पै जू भो। किणी रै भरोसै माथै जीवण बितावणौ निबळापणौ है।

(१०८) दत कह्यौ—थन दुख काई है सो म्हनै बता। ब्याव करिया तो थू म्हनै छोड जावै परो। म्हैं किणी भाव अेकलो नी रैय सकू।

(१०९) बेली मगळा मिल परा नै माय रो माय अक दूजो ई जाळ रचियो।

(११०) थू काई धापिया परा। रोटी तो च्यार ई खाई कोयनी अर धापग्या।

(१११) *कठै वो उठै तौ नी जावैला परौ।*

(११२) राम प्यारौ ई भलौ है परौ नी।

६ १० अतर्निहित भाववाच्य क्रियाओ को छोडकर सामान्यत समस्त अकमक और सकमक क्रियाओ से उनके प्ररणाथक रूप व्युत्पन्न होते हैं।

प्रेरणाथक रूपो की व्युत्पत्ति आ राजस्थानी व्याकरण म एक अत्यन्त जटिल एव उलझा हुआ विषय है। कोश एव उपलब्ध व्याकरणो मे इस विषय का उचित समाधान नही प्राप्त होता। इसलिए निम्नलिखित विवरण मे परीक्षापेक्ष युक्तियो का सहारा लिया गया है। प्रस्तुत वर्णण प्रकरण सख्या (६ ७) म दिये गये क्रियाप्रकृतियो व अकमक-सकमक वाच्य सवर्गीकरण पर आधृत है।

६ १० १ सामान्य रूप से अकमक और सकमक क्रियाप्रकृतियो के प्ररणाथक वाच्य रूप स्वत त्र रूप से निर्मित होते हैं। यथा अकमक वाच्य क्रिया कटणौ और इसके सकमक वाच्य प्रतिरूप काटणौ दोनो क्रियाप्रकृतियो की प्ररणाथक वाच्य रूपावली स्वतन्त्र रूप से निर्मित होगी।

इन दानो सवर्गों की क्रियाप्रकृतियो क साथ सयुक्त होने वाल प्ररणाथक वाचक प्रत्ययो की सामान्य सूची नीचे प्रस्तुत की जा रही है।

(क) —आव
(ख) —आण
(ग) —आड

६ १० २ *—ईज प्रत्यय युक्त भाववाच्य क्रियाओ के प्ररणाथक वाच्य रूप निर्मित* नही होत।

मूल अकमक क्रियाए (कोटि ख प्रकरण ६ ७) मे अधिकाश के साथ प्ररणाथक वाच्य क प्रत्ययो का अवस्थिति होती है। इस कोटि की क्रियाओ के प्ररणाथक वाच्य रूपा के कतिपय उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं

मूल अकर्मक वाच्य रूप	व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप क	ख	ग
आवणो	अवावणो	अवाणणो	अवाडणो
जावणो	जवावणो	जवाणणो	जवाडणो
रोवणो	रोवावणो	रोवाणणो	रोवाडणो
सूवणो	सूवावणो	सूवाणणो	सूवाडणो
जागणो	जगावणो	जगाणणो	जगाडणो
लागणो	लगावणो	लगाणणो	लगाडणो
दूखणो	दूखावणो	दुखाणणो	दूखाडणो
हसणो	हसावणो	हसाणणो	हसाडणो
अटकणो	अटकावणो	अटकाणणो	अटकाडणो
चूकणो	चूकावणो	चूकाणणो	चूकाडणो
डूबणो	डुबावणो	डूबाणणो	डूबाडणो
गिरणो	गिरावणो	गिराणणो	गिराडणो
धूजणो	धुजावणो	धूजाणणो	धूजाडणो
ऐंठणो	ऐंठावणो	ऐंठाणणो	ऐंठाडणो
थाकणो	थकावणो	थकाणणो	थकाडणो

व्यंजनांत अकर्मक-सकर्मक क्रिया प्रकृतियों के (कोटि ग (१) प्रकरण ६ ७) प्रेरणार्थक वाच्य रूप निम्न उदाहरणों के अनुसार निर्मित होते हैं।

अकर्मक तथा सकर्मक वाच्य रूप		व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप		
अकर्मक	अकणो	अकावणो	—	—
सकर्मक	आकणो	अकवावणो	—	—
अकर्मक	कटणो	कटावणो	—	कटाडणो
सकर्मक	काटणो	कटवाव	—	कटवाडणो
अकर्मक	गळणो	गळावणो	—	—
सकर्मक	गाळणो	गळवावणो	—	—
अकर्मक	खचणो	खचावणो	—	—
सकर्मक	खाचणो	खचवावणो	—	—
अकर्मक	गठणो	गठावणो	—	—
सकर्मक	गाठणो	गठवावणो	—	—
अकर्मक	मरणो	मरावणो	—	मराडणो
सकर्मक	मारणो	मरवावणो	—	मरवाडणो
अकर्मक	पळणो	पळावणो	—	—
सकर्मक	पाळणो	पळवावणो	—	पळवाडणो

क्रियाप्रकृति कोटि ग (२) के प्रेरणार्थक वाच्य प्रतिरूप निम्नलिखित हैं।

अकर्मक तथा सकर्मक वाच्य रूप		व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप		
अकर्मक	खिरणो	खिरावणो	—	—
सकर्मक	खेरणो	खिरवावणो	—	—
अकर्मक	घिरणो	घिरावणो	—	—
सकर्मक	घेरणो	घिरवावणो	—	—
अकर्मक	टिकणो	टिकावणो	—	—
सकर्मक	टेकणो	टिकवावणो	—	—
अकर्मक	फिरणो	फिरावणो	—	—
सकर्मक	फेरणो	फिरवावणो	—	—
अकर्मक	छिदणो	छेदावणो	—	—
सकर्मक	छेदणो	छिदवावणो	—	—
अकर्मक	भिदणो	भेदावणो	—	—
सकर्मक	भेदणो	भेदवावणो	—	—

क्रियाप्रकृति कोटि ग (३) के प्रेरणार्थक वाच्य प्रतिरूप निम्नलिखित हैं।

अकर्मक तथा सकर्मक वाच्य रूप		व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप		
अकर्मक	घुटणो	घुटाणणो	घुटावणो	घुटाडणो
सकर्मक	घोटणो	घुटवावणो	घुटवाणणो	घुटवाड़णो
अकर्मक	घुळणो	घुळावणो	—	—
सकर्मक	घोळणो	घुळवावणो	—	—
अकर्मक	जुडणो	जुडावणो	—	—
सकर्मक	जोडणो	जुडवावणो	—	—
अकर्मक	खुबणो	खुबावणो	—	—
सकर्मक	खोबणो	खुबवावणो	—	—
अकर्मक	मुडणो	मुडावणो	—	—
सकर्मक	मोडणो	मुडवावणो	—	—
अकर्मक	चुभणो	चुभावणो	—	—
सकर्मक	चोभणो	चुभवावणो	—	—
अकर्मक	खुलणो	खुलावणो	—	—
सकर्मक	खोलणो	खुलवावणो	—	—

क्रियाप्रकृति कोटि ग (४) के प्रेरणार्थक वाच्य प्रतिरूप निम्नलिखित हैं।

अकर्मक तथा सकर्मक वाच्य रूप		व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप		
अकर्मक	पिसणो	पिसावणो	—	पिसाड़णो
सकर्मक	पीसणो	पिसवावणो	—	पिसवाड़णो
अकर्मक	चिरणो	चिरावणो	—	—
सकर्मक	चीरणो	चिरावणो	—	—
अकर्मक	पिटणो	पिटावणो	—	पिटाड़णो
सकर्मक	पीटणो	पिटवावणो	—	पिटवाड़णो
अकर्मक	लुटणो	लुटवावणो	—	लुटाड़णो
सकर्मक	लूटणो	लुटवावणो	—	लुटवाड़णो
अकर्मक	छुनणो	छुनावणो	—	—
सकर्मक	छूनणो	छुनवावणो	—	—
अकर्मक	पुछणो	पुछावणो	—	—
सकर्मक	पोछणो	पुछवावणो	—	—

क्रियाप्रकृति कोटि ग (५) के प्रेरणार्थक वाच्य प्रतिरूप निम्नलिखित हैं।

अकर्मक तथा सकर्मक वाच्य रूप		व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप		
अकर्मक	उखड़णो	उखड़ाणो	—	—
सकर्मक	उखाड़णो	उखड़वाणो	—	—
अकर्मक	उछरणो	उछराणो	—	—
सकर्मक	उछारणो	उछरवाणो	—	—

व्यंजनान्त अकर्मक-सकर्मक क्रियाप्रकृतियां (कोटि ग (६) प्रकरण ६ ७) के प्रेरणार्थक वाच्य रूप निम्न उदाहरणो के अनुसार निर्मित होते हैं।

अकर्मक तथा सकर्मक वाच्य रूप		व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप		
अकर्मक	ऊठणो	उठावणो	उठावणो	उठाड़णो
सकर्मक	उठावणो	उठवावणो	उठवावणो	उठवाड़णो
अकर्मक	बैठणो	बैठावणो	बैठाणणो	बैठाड़णो
सकर्मक	बैठावणो	बैठवणाणो	बैठवाणणो	बैठवाड़णो
अकर्मक	दबणो	दबावणो	—	दबाड़णो
सकर्मक	दबावणो	दबवावणो	—	दबवाड़णो

अकर्मक तथा सकर्मक वाच्य रूप	व्युत्पन्न प्रेरणार्थक वाच्य रूप			
अकर्मक	ऊभणो	उभावणो	उभाणणो	उभाडणो
सकर्मक	उभावणो	उभवावणो	उभवाणणो	उभवाडणो
अकर्मक	उडणो	उडावणो	उडाणणो	उडाडणो
सकर्मक	उडावणो	उडवावणो	उडवाणणो	उडवाडणो

क्रियाप्रकृति कोटि घ के प्रेरणार्थक प्रतिरूप निम्नलिखित हैं।

सकर्मक वाच्य रूप	व्युत्पन्न प्रेरणार्थक रूप क	ख	ग
गावणो	गवावणो	गवाणणो	गवाडणो
राखणो	रखावणो	रखाणणो	रखाडणो
देखणो	देखावणो	देखाणणो	देखाडणो
जीमणो	जीमावणो	जीमाणणो	जीमाडणो
रमणो	रमावणो	रमाणणो	रणाडणो
चूंघणो	चूंघावणो	चूंघाणणो	चूंघाडणो
चाखणो	चखावणो	चखाणणो	चखाडणो
लिखणो	लिखावणो	लिखाणणो	लिखाडणो

६.११. –ईज प्रत्यय सहित अवस्थित होने वाली मूल भाववाच्य क्रियाओं को छोड़कर सामान्यतः आ० राजस्थानी क्रियाओं के भाववाच्य-कर्मवाच्य रूप दो प्रकार से निर्मित होते हैं—(क) क्रियाप्रकृति के साथ –ईज प्रत्यय के योग से, तथा (ख) क्रिया-प्रकृति के पूर्णतावाचक कृदन्त रूप के साथ जावणो क्रिया की आसक्ति से। इन दो प्रकार से निर्मित भाववाच्य-कर्मवाच्य रूपों को क्रमशः श्लिष्ट भाववाच्य तथा जा भाववाच्य रूपों की संज्ञाओं से अभिहित किया जा सकता है।

सामान्य रूप से अकर्मक, सकर्मक तथा प्रेरणार्थक रूपों से भाववाच्य-कर्मवाच्य रूपों की निष्पत्ति पर भाषा में कोई विशेष व्याकरणिक प्रतिबन्ध नहीं है।

६.११.१ श्लिष्ट भाववाच्य रूपों की रचना के कतिपय उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

अकर्मक/सकर्मक वाच्य रूप	श्लिष्ट भाववाच्य रूप
दौड़णो	दौड़ीजणो
निकळणो	निकळीजणो
टपकणो	टपकीजणो
गिटणो	गिटीजणो
बैठणो	बैठीजणो

सामान्यत व– अन्त्य क्रियाप्रकृतियो के साथ श्लिष्ट भाववाच्य प्रत्यय –ईज के योग से –व का लोप हो जाता है। यथा—

व– अन्त्य क्रियाप्रकृति	श्लिष्ट भाववाच्य रूप
खावणो	खाईजणो
दरसावणो	दरसाईजणो
रोवणो	रोईजणो
जावणो	जाईजणो
आवणो	आईजणो
हूवणो	हूईजणो

किन्तु पीवणो का भाववाच्य रूप पीवीजणो ही होता है।

अनेक अनुकरणात्मक क्रियाप्रकृतियो के दो-दो रूप भाषा मे प्रचलित हैं। इनके व– अन्त्य रूपो के श्लिष्ट भाववाच्य रूपो की रचना मे –व का लोप हो जाता है।

द्विरूपीय अनुकरणात्मक क्रियाप्रकृतिया	श्लिष्ट भाववाच्य रूप
खदबदणो	खदबदीजणो
खदबदावणो	खदबदाईजणो
जगमगणो	जगमगीजणो
जगमगावणो	जगमगाईजणो
डगमगणो	डगमगीजणो
डगमगाणो	डगमगाईजणो

कतिपय अन्य अनुकरणात्मक क्रियाप्रकृतियो की स्थिति उपरोक्त प्रकार की द्विरूपीय अनुकरणात्मक क्रियाप्रकृतियो से भिन्न है। इनका मूलरूप तो एक ही होता है किन्तु श्लिष्ट भाववाच्य रूप दो-दो उपलब्ध होते हैं।

अनुकरणात्मक क्रियाप्रकृति	श्लिष्ट भाववाच्य रूप
फड़फड़ावणो	फड़फड़ीजणो (१)
	फड़फड़ाईजणो (२)

इस स्थिति में रूप सख्या (१) और (२) मे अर्थ भेद भी हो जाता है (११३, ११४)। रूप सख्या (१) अकर्मक

(११३) आज तो अणूतो तावड है। गरमी सू जीव फड़फड़ीजै।

(११४) इण कबूतै सू पांख ई नी फड़फड़ाईज।

क्रिया का श्लिष्ट भाववाच्य रूप है और रूप सख्या (२) सकर्मक अर्थ प्रयुक्त रूप का श्लिष्ट भाववाच्य (अथवा कर्मवाच्य) रूप।

कुछ क्रियाओं के अकर्मक वाच्य में दो-दो रूप उपलब्ध होते हैं, परन्तु उनका श्लिष्ट भाववाच्य रूप एक ही उपलब्ध होता है।

अकर्मक वाच्य द्विरूपीय	श्लिष्ट भाववाच्य
टकरणो~टकरावणो	टकरीजणो
चकरणो~चकरावणो	चकरीजणो

घवराणो~घवरावणो का श्लिष्ट भाववाच्य रूप घवरीजणो होता है। इसी प्रकार लेवणो, देवणो आदि का श्लिष्ट भाववाच्य रूप भी क्रमश लिरीजणो, दिरीजणो आदि होता है।

६ ११२ जा— भाववाच्य रूपों में केवल जावणो क्रियाप्रकृति के पूर्णतावाचक कृदन्त जायो से जायो जावणो रूप निर्मित होता है। अन्य क्रियाओं के पूर्णतावाचक कृदन्त रूपों में ऐसा भेद नहीं होता।

जा— भाववाच्य रूपों में सकर्मक और प्रेरणार्थक क्रियाप्रकृतियों के पूर्णतावाचक कृदन्त रूपों में मूल वाक्यों के कर्मानुसार लिंग-वचन का अन्वय होता है। यथा

देखियो जावणो (पुल्लिंग, एक वचन)
देखिया जावणो (पुल्लिंग, बहुवचन)
देखी जावणो (स्त्रीलिंग, एक/बहुवचन)

कर्मस्थानीय संज्ञा के साथ नैं परसर्ग की अवस्थिति होने पर भी संज्ञा और जा— भाववाच्य क्रियारूप में अन्वय विद्यमान रहता है (११५)।

(११५) इण भगती रो तो वो परताप है कै भाटै में जीव घालियो जा सकै, भाखरा नैं हवा में उडाया जा सकै अर अथाग समुन्दरा नैं पलक में सुखाया जा सकै।

६ ११३ श्लिष्ट भाववाच्य और जा— भाववाच्य क्रियाओं के समापिका क्रिया रूप सामान्य क्रियाओं के समान ही निर्मित होते हैं। अकर्मक क्रियाओं से निर्मित भाववाच्य रूपों में अन्वय नहीं होता अर्थात् समस्त रूप पुल्लिंग एक वचन में ही अवस्थित होते हैं। जा— भाववाच्य रूपों में समापिका क्रिया जावणो क्रिया के साथ सलग्नित होते हैं।

६ ११४ कतिपय श्लिष्ट भाववाच्य क्रियाओं वाले वाक्यों के कर्तरि प्रयोग वाले प्रतिस्थानीय नहीं होते। ऐसे वाक्यों के जा— भाववाच्य रूप भाषा में उपलब्ध नहीं हैं। यथा वाक्य संख्या (११६) का कर्तरि प्रयोग प्रतिरूप होता है (११६क)।

(११६) पछै उण सू दौडीजै कोनी।

(११६क) पछै वो दौडै कोनी।

वाक्य सख्या (११६) का जा–भाववाच्य प्रतिरूप भाषा मे सम्भाव्य है (११६ख) किन्तु वाक्य सख्या (११७) का

(११६ख) पछै उण सू दौडियौ कोनी जावै।

(११७) भळै बरसात हुई तौ हाथी रै उण खोज मे पाणी भरीजग्यौ।

का जा– भाववाच्य प्रतिस्थानीय अनुपलब्ध है।

६ ११ ५ प्रत्येक कर्तरि प्रयोग वाक्य के भाववाच्य प्रतिस्थानीय मे कर्त्ता-स्थानीय सज्ञा के साथ सू परसर्ग की अवस्थिति होती है (११८, ११९)।

(११८) आज री रात ई औ काम हूणौ चाहीजै। प्रजा रौ औ कळपणौ अबै म्हारै सू नी देखीजै।

(११९) इण वबूडी रौ औ बिखौ म्हारै सू नी देखियौ जावै।

किन्ही स्थितियो मे सू के स्थान पर रै हाथा (सू) (१२०) अथवा नै (१२१) की अवस्थिति होती है।

(१२०) बादरौ हाथ जोडतौ थकौ कैवण लागो–आप धणी रै हाथा (सू) मारियौ जाऊ, इण सू बिन भाग म्हारा भळै की व्है नी।

(१२१) म्हारै सुख आगै नी तौ म्हनै दूजा गै दुख दीसै अर नी सुणीजै। म्हैं तौ म्हारै सुख मे डूबोडो।

किन्ही वाक्यो मे मूल कर्त्ता के स्थान पर साधन वाचक सज्ञा की भी सू परसर्ग के साथ अवस्थिति होती है (१२२-२४)।

(१२२) काटा अर सूला सू पगथलिया बीधीजगी।

(१२३) रजी सू टपरी ढकीजगी।

(१२४) गुळी रै परताप सू उणरौ रग तौ कदाक बदळीजग्यौ पण उणरौ सभाव कीकर बदळै।

साधनवाचक सज्ञाओ के स्थान पर कभी-कभी सयोजक कृदन्त की भाववाच्य वाक्यो मे अवस्थिति होती है (१२५)।

(१२५) अेक निजर बांधणियौ जोगी कैयौ—भगवान रामचदर ई सोना रौ मिरगलौ देख छलीजग्या तौ बापडो औ राजकवर तौ काई बडो बात।

सामान्य कथन सूचक वाक्यो मे कर्त्ता स्थानीय सज्ञाओ का लोप भी हो जाता है (१२६)।

(१२६) ठकराणी जो कैयो—आप ई वंडी बिलळी बाता करो। सता री जात-पात थोडी ई देखोजै।

६ ११ ६ भाषा में कतिपय क्रियायें ऐसी हैं जिनके भाववाच्य प्रतिरूप तो उपलब्ध हैं किन्तु उनके प्रेरणार्थक रूपो का अभाव है। इस प्रकार की क्रियायें हैं मठोठणो, मोणणो, मुळमुळावणो रणकारणो जतावणो, चापळणो, बकारणो, भणकारणो, मिण-मिणावणो मूंदणो, बागोलणो इत्यादि।

६ १२ सयुक्त क्रियाओ के समान ही भाषा मे कतिपय क्रिया सयोजन ऐसे हैं जिनका अर्थ की दृष्टि से महत्त्व है। ऐसे क्रिया सयोजनो को अर्थ के आधार पर निम्न वर्गों मे विभाजित किया जा सकता है

(क) इच्छार्थक
(ख) स्ववृत्यार्थक
(ग) आसन्नबोधार्थक
(घ) आरम्भमाणार्थक
(ङ) अनुज्ञार्थक
(च) बाध्यतार्थक
(छ) आवृत्यार्थक

६ १२ १ इच्छार्थक क्रिया सयोजन की रचना भावार्थक सज्ञा के साथ चावणो अथवा चाहीजणो क्रियाओ की आसक्ति से होती है इच्छार्थक क्रिया सयोजन भावार्थक सज्ञा के -ओ- प्रत्यय और -ई- प्रत्यय रूपो के आधार दो प्रकार के होते हैं। इनकी वाक्यो मे अवस्थिति के उदाहरण निम्नलिखित हैं (१२७-२८)।

(१२७) राणी तो राजा रो मूडो ई नी देखणो चावती। राजा रै पाखती आना ई वा अपूठो मुडनै मूडो फेर लियो।

(१२८) वो तो राणी सू सला-सूत बिचारिया-बिनाई दीवाण नै बुलाय आदेस कर दियो कै अेडा नाजोगा कुमाणसा री वा मूडो ई नी देखणी चावै।

६ १२ २. स्ववृत्यार्थक सयोजन की रचना -ओ अथवा -ई प्रत्यय भावार्थक सज्ञा के साथ आवणो क्रिया की आसक्ति से होती है (१२९-३०)।

(१२९) इदर भगवान रो ओ अणचीत्यो ओळबो सुणनै राजकवर हाको-बाको हुयग्यो। उणसू पाछो एकाएक जबाब देवणो ई नी आयो।

(१३०) बाई बारणै उभी सगळी बाता सुमट सुणी। उणसू की जवाब देवणो नीं आयो।

६ १२.३ आसन्नबोधार्थक सयोजन की रचना प्रत्ययरहित भावार्थक सज्ञा के साथ आवणौ क्रिया की आसक्ति से होती है (१३१-३२)।

(१३१) बेटौ ई बीस ई बरसा रो लडदो हुण आयो पर हाल ताई कमाई री गैल ई नी ढूकौ।

(१३२) अंस ई भादवौ ढळण आयो अर हाल लावै पर्नै रो खेंखाड करतो बामरो बाजै।

६ १२ ४ आरम्भमाणार्थक सयोजन की रचना प्रत्ययरहित भावार्थक सज्ञा के साथ समणौ, लागणौ, ढूकणौ तथा मडणौ क्रियाओ मे से किसी एक की आसक्ति से होती है (१३३-३६)।

(१३३) रूळियारणी करला हाथोहाथ अपडीजग्यौ तौ लोग उणनै कूटण समिया।

(१३४) मा री देखादेख बाप नै ई पंलका टाबर अळखावणा लागण लागा।

(१३५) सो आ वात बिचार वे दारू पीवण ढूका जको ढबिया ई नी।

(१३६) इण भात राजकवर रै रगमैल मे दोना री प्रीत रा चाद-सूरज ऊगण मडिया सो वगत परवाण नित ऊगता ई गिया।

६ १२ ५ अनुज्ञार्थक सयोजन की रचना प्रत्यय रहित भावार्थक सज्ञा के साथ देवणौ क्रिया की आसक्ति से होती है (१३७)।

(१३७) सेसनाग रौ बेटौ पुण हिलावतौ बोलियौ बिना वरदान मागिया म्हैं थानै अठै सू चुळण ई नी दू ।

६ १२ ६ बाध्यतार्थक सयोजन की रचना भावार्थक सज्ञा के साथ पडणौ क्रिया की आसक्ति होती है। इस रचना मे भावार्थक सज्ञा और कर्त्ता अथवा कर्म मे लिंग-वचनानुसार अन्वय विद्यमान रहता है।

(१३८) फगत गरीबी रै कारण थानै सात पेरा री परणियोडी छोडणी पडती।

(१३९) सेवट कायौ होय म्हनै म्हारो सुभाव बदळणौ पडियौ।

६ १२ ७ आवृत्यार्थक सयोजन की रचना -इया (१४०) अथवा-बौ (१४१) प्रत्यय सहित क्रिया प्रकृति के साथ करणौ क्रिया की आसक्ति से होती है।

(१४०) रजपूता रै केई बळा खांडा सू ई परणीजिया करै।

(१४१) मर्वारयो अंदी रो कळाई संग दिन गिटबौ करै, तौ ई उणरी भूख को मार्गं नी।

६ १३. आ. राजस्थानी असमापिका क्रियारूपो के निम्नलिखित भेद हैं—

(क) संयोजक कृदन्त
(ख) कृदन्त विशेषण
(ग) पूर्णता वाचक कृदन्त
(घ) अपूर्णता वाचक कृदन्त
(ङ) भावार्थक संज्ञा

६ १३ १ संयोजक कृदन्त की रचना क्रियाप्रकृति के साथ अनै अथवा अर चिह्नकों की अवस्थिति अथवा वैकल्पिक रूप से इन दोनो की अनवस्थिति द्वारा होती है। निम्नलिखित वाक्यो मे इन तीनो प्रकार की संयोजक कृदन्त परक रचनाओं के उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१४२) राणी री बाता सुणनै राजा उणरै गुण अर उणरी समझ माथै घणो ई राजी हुयौ।

(१४३) अजाणचक री बोली सुण'र राजा जो चमकियो। अठी-उठी जोयौ पण की निगै आयो नी।

(१४४) सेसनाग रो बेटौ ई आ साढै री बात सुण अणूतो राजी हुयौ।

सामान्य रूप से चिह्नक अनै तथा अर दोनो के अ का लोप होकर इनके वैकल्पिक रूप नै तथा 'र ही भाषा मे अवस्थित होते हैं।

संयोजक कृदन्त परक पदबन्धो मे निपात परौ की अवस्थिति भी होती है। इस प्रकार की रचनाओ के अंगो का क्रम होता है क्रियाप्रकृति + परौ ± अनै अथवा अर।

(१४५) गधो निजर आया पछै उण रै जेज कठै। वो तौ होळै होळै ढावा सू उतर परो नै लप गधेडा रो कान झाल लियौ।

(१४६) अै इण माल ई एम एड कर परा 'र आया है।

(१४७) डेरा आगै सगळा घरग खडा देखिया तौ आडोसी-पाडोसी ई अचभौ कर परा खनै आया।

समस्त अवस्थितियो मे परौ निपात का आधार वाक्य की कर्ता-स्थानीय संज्ञा से लिंग-वचनानुसार अन्वय होता है।

नैरन्तर्यबोधक अर्थ मे संयोजक कृदन्तपरक पदबन्ध मे क्रियाप्रकृति की आवृत्ति भी होती है।

(१४८) काली मामी ताळिया माथै त ळिया बजावती दोवडी होय-होय नै हसण ढूकी अबै हसती ढबो ई नी।

संयोजक कृदन्त परक पदबन्धो की कतिपय विशिष्ट अवस्थितियो के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

निम्न वाक्यों में क्रिया से निर्मित संयोजक कृदन्त "अधिक" (१४९) तथा "बड़े से बड़ा" (१५०) के अर्थों में अवस्थित है।

(१४९) अेक सूं अेक अकल में बदनें।

(१५०) राजा बद-बदनें बोल करियो तद वा रूसणो छोडियौ।

निम्न वाक्यों में करणो से निर्मित यौगिक क्रिया की विविध संयोजक कृदन्तपरक अवस्थितियों के वैशिष्ट्य का निदर्शन किया जा रहा है।

अवस करनें "अवश्य ही, जरूरी ही" (१५१)

(१५१) बीनणी जवाब दियौ—कवर नी होवण रै कारण वो अवस करनें मिनख हुवतौ हुआ ! म्हारी निजर में कवर बिचै मिनख रो घणो मान है।

किणी सूं इदक करनें मानणो 'किसी से बढ़कर मानना" (१५२)

(१५२) बाप नें इण विध कळपतो देख तीनूं बेटा बद-बदनें कैयौ कै वे छोटकिया भाई नें खुद रै जीव सूं ई इदक करनें मानैला।

किणी नें सत्रा करनें मानणो "किसी को सत्रा (के रूप में) मानना" (१५३)

(१५३) पूतळी घडणवाळौ तौ बाप री ठौड़ हुयौ अर अा इणनें घणो करने मानै।

खाणै नै परसाद करनै खावणो 'भोजन को प्रसाद मानकर खाना" (१५४)

(१५४) पैली घणी नै जीमावती, पछै बचियै-खुचियै खाणै नैं परसाद करनै खावती।

नीचे जाण करनें "जान-बूझकर" (१५५) तथा जाणनें 'समझकर" १५६ की अवस्थितियों के उदाहरण दिये जा रहे हैं।

(१५५) फगत बडोड़ा भाइयां नै चिडावण सारू वो जाण करनें लारली बात करी।

(१५६) गाव री आ बात तो साव साची ही कै गधेडौ जाणनैं जद वो मच देणी रा मिंघ गै कान जोर सूं पकड़ियौ तौ पछै उणनैं नाहरा रै बाधियौ जिसौ चुरकारौ ई नी करियो।

निम्न वाक्यों में चलावनें (१५७-५८) की अवस्थितियों का वैशिष्ट्य स्पष्ट है।

(१५७) अेक सवार उणनें सावळ समझावता कैयौ—बावळा, देस री घणी थनै चलायनै मांगण सारू कैयो, अर थूं अदाता रै सामीमाम ई नटै, थारी छाती तो नी आई।

(१५८) चौधरी रै खाता पानडा तो लिखियोडा हा कोनी, तद मरिया उपरांत घुण चलायनै हामळ भरै ।

इस प्रकार के कतिपय अन्य प्रयोगों के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।
हाथा करनै 'जान बूझ कर"

(१५९) पण अठीनै सत खुद मन-ई मन कळपण लागी कै हाथा करनै भ्रो डाळो गळा में लियो ।

पगा हालनै 'अपने पैरों से चलकर, जान बूझकर"

(१६०) पगा हालनै मौत रै मूडै फदियो ।

निम्न वाक्यों में हुयनै की अवस्थितिया भी महत्वपूर्ण हैं।

(१६१) बोलियो—म्हैं एक छोटो जिनावर हुयनै कूदग्यो । थारे वास्तै तो आ बात सैंल म्हैला ।

(१६२) अेकर अेक हाथिया रो टोळो पाणी पीवण नै ऊदरा री उण नगरी मायं-कर हुयनै जावण लागो ।

निम्न वाक्य में लेयनै की परसर्गवत् अवस्थिति निर्दिष्ट है ।

(१६३) म्हारै खिचिया री पोती री बात लेयनै म्हारै घादो पडग्यो ।

लेयनै की परसर्गवत् अवस्थिति से मिलती-जुलती जायनै की अवस्थिति के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं ।

(१६४) बकरी हमैं जायनै बादरै री चलाकी पिछाणी, पण सादो काई सागै ।

६ १३ २ कृदन्त विशेषण की रचना क्रियाप्रकृति के साथ –ण प्रत्यय के योग से होती है । इस प्रकार निर्मित रचना के साथ वाळो अथवा हार/हारो तत्वों की अवस्थिति हो सकती है, अथवा वैकल्पिक रूप से लिंग वचन प्रत्ययो का योग होता है । यथा जावणो क्रिया से जावणवालो जावणहार, जावणहारो, जावणो आदि रूप व्युत्पन्न हो सकते है । समस्त कृदन्त विशेषणों की भाषा के वाक्यो मे गुणवाचक विशेषण स्थानीय अवस्थिति होती है ।

कृदन्त विशेषण की, हार –अन्त्य रूप को छोड़कर, विकारी गुणवाचक विशेषणों के समान शब्दरूपतुल्य रचना होती है ।

कृदन्त विशेषण की वाक्यों मे अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है ।

(१६५) ग्यान नै कठां करणियो ग्यानी नीं है, ग्यान रो सिरजन करणवालो अर ग्यान नै ग्रापरा करमा में बरतणियो ग्यानी व्है ।

(१६६) थें बतावौ तौ एक पूछू कै दुनिया मे पेट रै जाया चौतहरा सू अर मुहाग नै रावणहारै धणी सूं कोई तीजी चीज पेर ई की बत्ती है नाई ?

सामान्य कृदन्त विशेषण (अर्थात -णौ अन्त्य कृदन्त) के अभिव्यजक रूप भी भाषा मे निर्मित होते हैं। समभणौ को आधार मानकर इस रूपावली का निदर्शन करने वाली सभावनाए निम्नलिखित हैं।

लिंग	कृदन्त विशेषण	अभिव्यजक	प्रतिरूप
पुल्लिग	समभणोडौ	समभणोडकौ	समभणोडलौ
अल्पार्थक	समभणाडियौ	—	—
स्त्रीलिग	समभणोडी	समभणोडकी	समभणोडली

उपरोक्त अभिव्यजक रूपो की भाषा मे अवस्थिति उतनी अधिक नही होती।

६ १३ ३ पूर्णतावाचक कृदन्त की रचना का उल्लेख प्रकरण सख्या (६ ८ १ १) मे किया जा चुका है। अत इसकी अभिव्यजक रूपावली सूचित की जा रही है। उक्त रूपावली को सूचित करने के लिए बैठणौ तथा लिखणौ क्रियाओ को आधार माना गया है।

बैठणौ क्रिया के पूर्णतावाचक
कृदन्त की अभिव्यजक रूपावली

लिंग	पूर्णतावाचक कृदन्त रूप	अभिव्यजक प्रतिरूप			
पुंलिग	बैठौ	बैठोडौ	बैठोकडौ	बैठोडकौ	बैठोडलौ
अल्पार्थक	—	बैठोडियौ	—	—	—
स्त्रीलिंग	बैठी	बैठोडी	बैठोकडी	बैठोडकी	बैठोडली

लिखणौ क्रिया के पूर्णतावाचक
कृदन्त की अभिव्यजक रूपावली

लिंग	पूर्णतावाचक कृदन्त रूप	अभिव्यजक प्रतिरूप		
पुंलिग	लिखियौ	लिखियोडौ	लिखियोडकौ	लिखियोडलौ
अल्पार्थक	—	लिखियोडियौ	—	—
स्त्रीलिंग	लिखी	लिखियोडी	लिखियोडकी	लिखियोडली

उपरिलिखित विकार्य रूपो मे, गुणवाचक विशेषणो के समान ही, कर्ता अथवा कर्म के लिंग-वचनानुसार विकार होता।

पूर्णतावाचक कृदन्त के उपरोक्त विकार्य रूपो के अतिरिक्त अविकार्य रूप की भी रचना होती है। इस रूप का निर्माण क्रियाप्रकृति के -या अथवा -इया प्रत्यय के योग से होता है। ई- अन्त्य क्रियाओ के साथ -या प्रत्यय का योग होता है और अन्य क्रियाप्रकृतियो के साथ -इया का। अविकार्य पूर्णतावाचक कृदन्त की अवस्थिति वाक्यो में क्रिया-विशेषण स्थानीय ही होती है (१६७-७०)।

(१६७) वामणी काई पढूतर देवती। नीची घूण करिया बोली बोलो ऊभी री।

(१६८) माथे सूखोडी खालडी लिया वौ बडलै रै माथै चढनै बैठग्यो।

(१६९) आपा रै साथै रैया इण बाळक नै भूखो तिरसो मरणो पडैला।

(१७०) धणी रै मरिया अबै आ देह फगत माटी री है, जकौ बगत आया माटी मे ई मिळ जासी।

अविकार्य पूर्णतावाचक कृदन्त के साथ कतिपय परसर्गो की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१७१) पण अबै डरिया सू ई दुस्मी छोडैला नी नी।

(१७२) खासी ताळ ताई वौ राणी सू मीठी मीठी बाता करी। चोगणी पगार रौ लोभ दिया पछै ई राजी नीठ मानियौ।

(१७३) भला म्हारै गाव गायकर पधारो अनै गोठ गूगरी जीमिया विगर पधारण दा आपनै। आप तो म्हारै मू गा पामणा हो।

(१७४) पण म्है हाल कवारी किन्या हू। फेरा खाया विना मरू तौ अगत जावू ला।

अविकार्य पूर्णतावाचक कृदन्त के साथ अवधारक निपात ई की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(१७५) पण इचरज री बात कै देस-निकाळा री बात सुणिया ई राजकवर तौ अगै ई दुमना नी हुया।

(१७६) अैडा पापिया रौ तौ परस करिया ई पाप लागै।

(१७७) सिपाई मरिया ई हाथ सू सस्तर नी छोडै जकौ जीवता ई सस्तर लारै छोडनै गिया परा।

(१७८) ठाकरसा सामी देखनै घोडै री लगाम हाथ मे झेलिया ई केवण लागो -म्है राजाजी रो फरमाण लेयनै आयौ हू।

पूर्णतावाचक कृदन्त के विकार्य तथा अविकार्य रूपो की वाक्यो मे आवृत्ति भी होवी है (१७९-८०)।

(१७९) पण सो बुद्धि री आजम रा मल्ला भेळा व्है उण जगा बैठियौ जको बैठौ-बैठौ ई आपरै नीचै सू पल्ला नै काड आगा फैंक दीना।

(१८०) कवर रा पग झालिया-झालिया ई बावौ वेटी माथै चिडतौ बोलियौ— राजा अर कवर रै हाथा कदेई कसूर नी हुया करै।

§ १३४ अपूर्णतावाचक कृदन्त की रचना का उल्लेख प्रकरण सख्या (§ ८१२) मे किया जा चुका है। नीचे जावणौ और लिखणौ क्रियाओं को आधार मानकर इसके अभिव्यजक रूपो का सूचित किया जा रहा है।

जावणौ किया के पूर्णतावाचक
कृदन्त की अभिव्यजक रूपावली

लिंग	अपूर्णतावाचक कृदन्त रूप	अभिव्यजक प्रतिरूप			
सामान्य पु	जावत	—	—	—	—
विशेष पु	जावतौ	जावताडौ	जावतडौ	जावतोडकौ	जावतोडलौ
अल्पार्थक पु	—	जावताडियौ	—	—	—
स्त्रीलिंग	जावती	जावतोडी	जावतडी	जावताडकी	जावतोडली

लिखणौ किया के पूर्णतावाचक
कृदन्त की अभिव्यजक रूपावली

लिंग	अपूर्णतावाचक कृदन्त रूप	अभिव्यजक प्रतिरूप			
सामान्य पु	लिखत				
विशेष पु	लिखतौ	लिखतोडौ	—	लिखतोडकौ	लिखतोडलौ
अल्पार्थक पु	—	लिखतोडियौ	—	—	—
स्त्रीलिंग	लिखती	लिखतोडी	—	लिखतोडकी	लिखतोडती

सामान्य पुंलिंग रूप को छोडकर अन्य सब रूपो मे विकार्य विशेषणो के समान लिंग वचनानुसार विकार होता है।

अपूर्णतावाचक कृदन्त के उपरोक्त अभिव्यजक रूपों के अतिरिक्त एक अन्य रूप भी भाषा मे उपलब्ध होता है। इस रूप की रचना क्रियाप्रकृति के साथ –न्त् प्रत्यय के योग से होती है। –न्त् अन्त्य रूपो मे भी विकार्य विशेषणो के सामान विकार होता है, यथा जावतौ जावतो, लिखतौ, लिखतो। न्त्– अन्त्य रूप की वाक्य मे अवस्थिति का उदाहरण निम्नलिखित है।

(१८१) गोडा रळकती काळी भंवर आटी रो फटकारो देय ठकराणी भचके आडी फिरी ।

उपरोक्त समस्त रूपो के अतिरिक्त अपूर्णतावाचक कृदन्त के निम्न अन्य रूप भी उपलब्ध होते हैं ।

(क) आमेडित रूप, यथा रोवतौ रोवतौ (१८२) ।

(१८२) वन मे रोवती-रोवती कैयो-म्हारै आगे-लारै कोई कोनीं ।

(ख) थकौ-सलगित रूप, यथा मुळकतौ थकौ (१८३) ।

(१८३) लखी मुळकती थकी जवाब दियो —आपरो ई दियोडो खावूं हू ।

(ग) –आ अन्त्य रूप, यथा देखता, मळापता (१८४) ।

(१८४) मारग मे मळापता सिंग खिरगोसियै नै भळै पूछियो—कित्तोक अळगो है उणरो किलौ ।

(घ) –आ-अन्त्य आमेडित रूप यथा सोचता सोचता (१८५) ।

(१८५) सोचता-सोचता सेवट उणनै अेक अटकळ सूजी ।

(ङ) –आ अन्त्य ईं आसन्न रूप, यथा सुणता ईं (१८६) ।

(१८६) गीत री भणक सुणता ईं हाथी तौ मस्त हुयौ पण हुयौ ।

(च) –आ अन्त्य थकाईं सलगित रूप, यथा हूवता थका (१८७) ।

(१८७) खुद रै घर रो ठरको निसैवार हूवता थका ईं वो मळीच हौ ।

(छ) –आ अन्त्य थका सलगित रूप, यथा हूवता थका (१८८) ।

(१८८) वन मे राजा रै हूवता थका किणी रै साथै इन्याव व्है, इणसूं तो निजोगी वात भळै काई व्है ।

अवधारक निपात ईं के स्थान पर कभी-कभी अपूर्णतावाचक कृदन्त के साथ पाण की भी अवस्थिति होती है (१८९) ।

(१८९) स्याळ री आ वात सुणता पाण सिंगा रा धैं छिनग्या ।

पाण के पूर्व अपूर्णतावाचक कृदन्त के सामान्य रूप की अवस्थिति भी होती है (१९०) ।

(१९०) राणी तो आवत पाण राजा सू लडण लागी—आछो धोको दीनो म्हनै ।

६ १३५ भावार्थक सज्ञा की रचना क्रियाप्रकृति के साथ –णौ प्रत्यय के योग से होती है । रूप की दृष्टि से भावार्थक सज्ञा और कृदन्त विशेषण (विशेष रूप से कृदन्त

विशेषण की सौ– अन्त्य अवस्थितियो) मे भेद नहीं होता। किन्तु इन दोनो के पार्थक्य को समझने के लिये यह जानना आवश्यक है कि भावार्थक सज्ञा की अवस्थिति सज्ञा स्थानीय होती है और कृदन्त विशेषण की विशेषण स्थानीय (१९१-९५)।

(१९१) किणी सत नै सतावणो श्राप नै ई फोड़ा घालेला। सतां रौ तौ की नी बिगडैला।

(१९२) उणनै राज करणौ ई छाड देवणौ चाहीजे।

(१९३) समझावणौ म्हारौ फरज हौ, मानौ नी मानौ थारी मरजी।

(१९४) अत मे कैयौ—मर जावणौ कबूल है पण पाछौ घोडी री गवाडी सामी तौ मूडो ई नी करू।

(१९५) वौ लाडू खावणा तौ पालरग्यौ। वानै खावण री इकावळी घोखती गियौ।

उपरोक्त उदाहरणों म भावार्थक सज्ञा की सज्ञा स्थानीय अवस्थिति ऋजु रूप मे एक तथा बहु दानो वचनो मे है। किन्तु तिर्यक रूप मे अवस्थितियो म भावार्थक सज्ञा के साथ औ– अन्त्य सज्ञाओ के समान –आ~ऐ (एकवचन मे) और –आ (बहुवचन में) प्रत्ययो का योग नही होता, यथा (१९६-९८)।

(१९६) म्हारै हसण रो फगत औ इज म्यानौ है।

(१९७) दो तीन दिना पछै ठाकरसा भळै उठीकर घूमण पधारिया तो सेठ वानै अणूता राजी निगै आया।

(१९८) जवरै सू ज्वरै नै जोवण छळिया, सो दो तौ दिना हेरिया ई मिळग्या।

उपरोक्त उदाहरणो मे हसण (१९६), घूमण (१९७), तथा जोवण (१९८) आदि रूपो को अविकार्य भावार्थक सज्ञा रूप कहना अधिक युक्ति सगत है।

अनिवार्य भावार्थक सज्ञा रूपों से निर्मित क्रिया सयोजको का उल्लेख प्रकरण सख्या (९ १२) मे किया जा चुका है।

किन्तु उपरोक्त सामान्य नियम के अतिरिक्त किन्ही विशेष परिसरो मे –आ~ऐ अन्त्य भावार्थक सज्ञा रूप की अवस्थिति भी हा सकती है।

(१९९) रामूडो कदैई थारै देखणा मे आवै तौ फट देतो रा म्हनै समचार कर दीजै।

(२००) ल्हास नै रावळा मे मगवाई। रोवणा धोवणा रै मागै हलावौ-चलावौ ई सरु हुयौ।

अविकार्य भावार्थक सज्ञा के दोनों प्रकार के रूपो म सामान्य तथा विशिष्ट के आधार पर अर्थ भेद होता है।

६ १४ पिछले प्रकरणो मे वर्णित सयुक्त क्रियाओ एव क्रिया सयोजनो के अतिरिक्त भाषा मे अनेक ऐसे क्रिया$_1$ + क्रिया$_2$ (=क्रि$_1$ + क्रि$_2$) अनुक्रम उपलब्ध होते हैं जिन्हें सामान्य रूप से सयुक्त क्रियाओ आदि के साथ परिगणित करने की भ्राति हो सकती है।

(२०१) सिंघ मलापनैं पाज मायै आय ऊभो ।

(१०२) भौजाइया नैं ममभावण लागौ कै हूणी मो हुय छूटी ।

(२०३) ठाकर सा तौ क्वर जळमण री बधाई सुणनैं दारू चपणौ माडियो जको नव दिना ताईं लगोलग पीवता ई गिया ।

उपरिलिखित वाक्यो मे आय उभो हुय छूटी तथा चूपणो माडियो वस्तुत अपनी आतरिक सरचना के आधार पर सयुक्त क्रियाओ एव क्रिया सयोजनो से भिन्न कोटि की रचनाए हैं। इन क्रिया$_1$ + क्रिया$_2$ अनुक्रमो की रचना इस अध्याय मे वर्णित विविध प्रक्रमो द्वारा होती है। नीचे इन क्रिया अनुक्रमों का उनमे अन्तर्निहित प्रक्रमो सहित सोदाहरण विवरण किया जा रहा है।

६ १४ १ आय ऊभणौ मार गेरणौ आय घालणौ मनाय छोडणौ ले डूबणौ जाय ढबणौ ले ढळणौ आय टूकणौ हार थाकणौ कय दरसावणौ आय धमकणौ बांध मेरणौ जाय पकडणौ लाय पटकणौ, आय पूगणौ जाय पूगणौ लेय फिरणौ उतार फकणौ तोड वगावणौ निकळ बहणौ आय बाजणौ आय विराजणौ गड य बूरावणौ आय बैठणौ जाय बैठणौ छान मारणौ मार वाळणौ लेय सिधावणौ आदि रचनाए वस्तुत अविसित सय जक कृद त + समापिका क्रिया अनुक्रम हैं जिनमे समापिका क्रिया के मूल सयुक्त क्रिया रूप मे अवस्थित विवारक क्रिया लुप्त है। यथा आय उभणौ आदि का मूल रूप है आय (नैं) उभग्यो। उपरिलिखित समस्त क्रि$_1$ + क्रि$_2$ अनुक्रमो का निष्पत्ति छाण मारणौ इत्यादि कतिपय अनुक्रमो को छोडकर उल्लिखित प्रक्रम द्वारा हुई है। आय (न) उभग्यो सामान्य सयोजक + सयुक्त क्रिया के परिवर्तित रूप आय ऊभो मे अप्रत्याशित क्रिया व्यापार का होना ध्वनित होता है जबकि उसके मूल रूप मे ऐसा अर्थ ध्वनित नहीं होता।

इन क्रि$_1$ + क्रि$_2$ अनुक्रमो मे आय पूगणौ जाय पूगणौ आदि की व्याख्या अन्य प्रकार से भी की जा सकती है। वह यह है कि इस प्रकार के अनुक्रमो का मूल रूप है पूग आयो तथा पूग ग्यो और आय पूगो जाय पूगो आदि रूप मूल सयुक्त क्रिया के दोनो अगो (मुख्य क्रिया + विवारक क्रिया) म क्रम परिवतन का परिणाम हैं।

छाण मारणौ (२०४) आदि अनुक्रम ऐसी रचनाए है

(२०४) आखो राज छाण मारियो पण कठै ई उजास रो रेसो निजर नीं आयो।

जिनकी व्युत्पत्ति उपरोक्त दोनो प्रक्रमो से पृथक है। छाण मारणौ वस्तुत एक सयुक्त क्रिया है जिसमे प्रावस्या विवारक न्हांखणौ के स्थान पर उसके अभिव्यजक प्रतिस्थानीय मारणौ की अवस्थिति हुई है।

६ १४ २   इसी प्रकार 'चूपणो माडणो" (६ २२ ८) क्रिया अनुक्रमो मे (जिनमे प्रथम अग असमापिका क्रिया रूप भावार्थक सज्ञा की अवस्थिति होती है) भावार्थक सज्ञा की कर्त्ता अथवा कर्म स्थानीय सज्ञाओ के स्थान पर अवस्थिति हुई है। इस कोटि के अनुक्रमो के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(२०५) बोलणो सीखियौ तद सू आज दिन ताई घणो ई भूठ बोलियौ।

(२०६) सुथार रौ बेटौ तौ फगत माया खरचणी जाणतौ सो खुलै खाळ खरचण लागौ।

(२०७) मा गे तौ रोवणो ढबियो पण म्हारौ रोवणो नीं ढबियौ।

(२०८) व दोनू तौ जाणे बोलणो ई बिसर ग्या व्है।

(२०९) खुद रै फोडै बिचै उणरै होवै टाबरा रो कळपणो घणो घणो साल्हतौ।

६ १५   आ राजस्थानी मे वाक्याशो अथवा समापिका क्रियापदबन्धो के आमेडण द्वारा विविध रूप से अभिव्यजक रचनाए निर्मित होती हैं। उदाहरण के लिये निम्नलिखित वाक्य मे वर्णित सूर्यास्त के दृश्य को लिया जा सकता है।

(२१०) अबै गुलाल रौ ओ गोळ मट्ट थाळ आधौ खाडो ह्यग्यो। ओ डूबो! ओ डूबो!

इस वाक्य मे ओ डूबो! ओ डूबो! ऐसी ही आमेडित रचना है। इन रचनाओ का, अभिव्यजक सरचना के अध्याय मे वर्णन करके न अलग से विवरण करना इसलिए आवश्यक है कि उक्त रचनाए अभिव्यजक होते हुए भी कतिपय वाक्यविन्यासात्मक युक्तियो पर आधारित हैं। ये युक्तिया भाषा की वाक्यविन्यासात्मक सरचना का अविभाज्य अग हैं। नीचे इस कोटि की रचनाओ का सोदाहरण विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

६ १५ १   इस कोटि की प्रथम अभिरचना है पण द्वारा समापिका क्रिया पदबन्ध की आवृत्ति (२११-१२)।

(२११) उणरी आता डर रै कारण कुळकुळावण लागी। गाबड घुमाय च्यारू खांनी भाळियौ। सिघणी गै रूप धार काळ तौ आयौ पण आयौ।

(२१२) नी मानणवाळा आगै ई मत मानौ, म्हैं तौ थानै हुई जकी बात बताव्ू कै थोडा दिना पछै ई बिना माईना रै उण छोरा रौ डको बाजियौ पण बाजियौ।

इस कोटि की द्वितीय अभिरचना मे समापिका क्रिया पद की जको ईज के अन्तनिवेश द्वारा आवृत्ति होती है।

(२१३) घरवाळा घणी ई समझाइस करी पण ठाकर तौ नीं मानिया जको नी इज मानिया।

(२१४) लोगां घणा ई हाथ जोडिया, पण सेसनाग तो धत पकड ली जकी पकड इज ली ।

तृतीय अभिरचना मे समापिका क्रिया पदबन्ध, + जको + समापिका क्रिया पदबन्ध, + ई की अवस्थिति होती है। इस अभिरचना की अवस्थिति सामान्य रूप से विरोधवाचक प्रतियोगिक वाक्यो के पण-वाक्याश के पूर्व होती है ।

(२१५) धरम रै वास्तै चढायोडो पूजापो कदै ई अकारथ नी जावै । आगलै जलम में तो वो लाधै जको लाधै ई, पन इण जलम मे ई वो चौगणो होय पाछो हाथ आवै ।

चतुर्थ अभिरचना मे समापिका क्रिया पदबन्ध की आवृत्ति के साथ 'क का अन्तर्निवेश होता है ।

(२१६) दैत री बेटी डर सू धूजती बोली कै उणरो बाप आयो 'क आयो ।

एक अन्य अभिरचना मे समापिका क्रिया पदबन्ध की ई अन्तर्निविश आवृत्ति होती है ।

(२१७) राजा री निजर तो घोडा माथै ई चिपगी । अंडै घोडा री कीरत तो कानां सुणी ई सुणी ही । निजरा देखण री काम तो आज ई पडियो । राजा तो हीस रै समचै ई घोडा री परख कर ली ही ।

सयोजक समुच्चय बोधक नियात अर के अन्तर्निवेश सहित भी समापिका क्रिया पदबन्ध की आवृत्ति होती है ।

(२१८) *माथो निवायनै कैवण लागी — आज तो आपरा दरसण हुया अर हुया ।*

अवधारक निपात तो के अन्तर्निवेश सहित भी समापिका क्रिया पदबन्ध की आवृत्ति होती है । यह अभिरचना सामान्यतया हेतुमद् रचनाओ तक ही सीमित है, यद्यपि हेतुमद् वाक्य चिह्नक की भी अवस्थिति होना अनिवार्य नही है ।

(२१९) बात सुणता ई राकस रा तो धै छिलग्या । अबै करै तो काई करै । आज तो औ जम किणी भाव नी छोडॅला ।

समापिका क्रिया पदबन्ध, + तो + कर्त्ता अथवा कर्म समुद्देशक सर्वनाम + समापिका क्रियापदबन्ध भी एक दूसी कोटि की महत्त्वपूर्ण अभिरचना है ।

(२२०) पछै क्यू पूछणो । उण रै पगा री रज माथै रै लगावण सारू लोग अडवडिया तो वे अडवडिया ।

समापिका क्रिया पदबन्ध, + तो पछै + कर्त्ता अथवा कर्म समुद्देशक सर्वनाम + इज + समापिका क्रिया पदबन्ध, अभिरचना निदर्शन निम्न उदाहरण द्वारा होता है ।

(२२१) सगळा जगळ मे हायतोबा मची तौ पछै वा इज मची।

नौं + समापिका क्रिया पदबन्ध की आवृत्ति से निर्मित रचना का उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

(२२२) न्याव, मेळप, भाई चारो अर बराबरी रै उपदेसा कुदरत री ढारौ नी बदळीजै, नी बदळीजै।

सहसम्बन्ध वाचक सर्वनाम + समापिका क्रिया पदबन्ध की आवृत्ति से निर्मित अभि रचना के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(२२३) पण आ अपछरा हाल म्हारी राणी नीं है सो नी है।

(२२४) राजा वाचा देय-देय नै हार थाकियो, पण राणी नै पतियारो नी हुयौ सौ नी हुयौ।

(२२५) गाव रै गोखौ आवना ई भाणजा री पेट दूखण मडियौ सो वो मडियौ। कवूडो लुटै ज्यू लुटण लागो।

समापिका क्रियापदबन्ध की सामान्य आवृत्ति के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(२२६) बोलणो सीखियो तद सू आज दिन ताई घणो ई झूठ बोलियो, घणो ई झूठ बोलियौ।

(२२७) अेक पग रै पाण नीचे टिरियोडो वो ऊचौ उडतौ ई ग्यो, उडतौ ई ग्यो।

नीचे इस कोटि के वाक्यो के कतिपय अन्य उदाहरण दिये जा रहे हैं जिनमे प्रत्येक वाक्य तत्सम्बन्धी अभिरचना का प्रतिनिधित्व करता है।

(२२८) नीद मे सूतोडो नै अैडो सपनो आयौ हूवतौ तौ खुलिया पछे तूट जावतौ। पण जागतोडो रौ औ सपनो कीकर अर कद तूटैला।

(२२९) कैयो—हा, थारी वात तौ माव साची पण झूठ री आधी आगै साच री भुतियौ टिकनै कित्तोक टिकै।

(२३०) म्हनै तौ फगत इण बात रौ इचरज व्है कै आ कुलखणी मा रै पेट मे नौ महीना खटी तौ खटी इज कीकर।

(२३१) अमोलक हीरा री बात सुणनै उणरो जीव डिगियो तो अैडो डिगियो कै अजेज उण चिडी नै छोड दीनी।

(२३२) देवियो—अेक कालिदर फुण करिया फूला रै जोडै डसण री ताक मे वैठो। आज तौ वचिया ज्यू ई वचिया। पाधरो मूठ माथै हाथ ग्यो।

किन्ही स्थितियो मे क्रिया पदबन्धो की तीन बार भी अवस्थिति होती है।

(२३३) पौर मे बरसियौ तौ बरसियौ ई बरसियो—पछै क्यू पूछो वाता।

७. क्रियाविशेषण

७ १ आ राजस्थानी क्रियाविशेषणो को उनके प्रकार्यों के आधार पर दो वर्गों मे विभाजित किया जा सकता है, (क) वाक्यात्मक क्रियाविशेषण, और (ख) सामान्य क्रियाविशेषण।

७ १ १ वाक्यात्मक क्रियाविशेषण मात्र क्रिया पदबन्धो के आश्रित अग न होकर, सम्पूर्ण वाक्यों के विशेषण होते हैं। निम्न वाक्यो मे नीठेक (१) तथा नीठ (२) की अभिव्यक्तियों से क्रमश वाक्यात्मक एव सामान्य क्रियाविशेषणो के प्रकार्यात्मक पार्थक्य स्पष्ट निदर्शन हो रहा है।

(१) पग ऊदरी तौ किणरौ किरियावर मानै, सासी भूडती कैयौ—नीठेक तो घणा दिना सू गुळ रौ भौरौ आखिया देखियौ पण होळी ऊठियै नै ओ ई को सवायौ नी।

(२) अर तठा उपरात असमान जोगी सेठा री बेटी नै आपरी मौत रौ भेद बतायौ। अटकतौ अटकतौ नीठ बोलियौ—सात समुदरा पार अेक मिदर है।

इन दोनो उदाहरणो स यह स्पष्ट है कि *वाक्यात्मक और सामान्य क्रियाविशेषणो का* परस्पर पार्थक्य शब्दरूपात्मक अथवा परस्पर व्यावर्तक शब्द-सवर्गों आदि पर आधारित नही है। इस तथ्य को अधिक स्पष्ट करने के लिए वाक्यात्मक क्रियाविशेषणा के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(३) सेवट काई हुयनै वा आपरै मन मे कँवण लागी—इयां खाटा बडछ अगूरा सारू साव ई कुण भझ्पा मारै।

(४) पण आईदा म्हैं न्यारौ ई म्हारा मुकाम मे भोजन करू ला।

(५) चिडी छोटी तौ अवस ही पण ही इधक चतर।

(६) समभ फगत बतावण रै आमरै नी हुया करै।

(७) लगोलग बिखा माथै बिखो पडण सू वामणी रो काळजो काठौ हुयग्यो।

(८) राजा री कवर नित-हमेस उण मारग ई सैर सपाटा वास्तै घोडा चढियो निकळतो।

(९) स्याळणी तुरताफुरता अेक अटकळ विचार ली।

उपरिलिखित वाक्यों मे सेवट (३), आईंदा (४), अवस (५), फगत (६), लगोलग (७), नितहमेस (८), तथा तुरताफुरता (९) की वाक्यात्मक क्रियाविशेषण रचनाओ के रूप मे अवस्थिति हुई है।

७ १ २ सामान्य क्रियाविशेषणो के मुख्य वर्ग हैं (क) सार्वनामिक क्रिया विशेषण (ख) क्रिया विशेषण के रूप में अवस्थित होने वाली सज्ञाए तथा विशेषण और (ग) अन्य विविध क्रिया विशेषण पदबन्ध।

७ १ २ १ सार्वनामिक क्रियाविशेषणा के अन्तर्गत सर्वनामो की जिन कोटियो को वर्गीकृत किया जा सकता है वे हैं (क) निजवाचक सर्वनाम (ख) अन्योन्याश्रय वाचक सवनाम, (ग) परिमाणवाचक सर्वनाम (घ) गुणवाचक सर्वनाम, (ङ) प्रकारता बोधक सर्वनाम, (च) रीतिवाचक सर्वनाम (छ) स्थानवाचक सर्वनाम (ज) काल वाचक सर्वनाम तथा प्रकरण सख्या (४ २) मे उल्लिखित कतिपय सर्वनाम (यथा, कीं न काई, काई न काई इत्यादि)। कतिपय अन्य वर्गों के सर्वनामो की भी सीमित रूप स क्रियाविशेषण स्थानीय अवस्थिति होती है।

इन समस्त सर्वनाम वर्गो का उल्लेख पहले किया जा चुका है। इनका विशेष विवरण वाक्यविन्यास के अन्तर्गत किया जायगा।

७ १ २ २ क्रियाविशेषण के रूप मे अवस्थित होने वाली सज्ञाओ में मे कुछ तो ऐसा हैं जिनकी क्रियाविशेषण स्थानीय अवस्थिति भाषा मे रूढ हो चुकी है। इनमे स्थान—दिशावाचक क्रियाविशेषण कालवाचक क्रियाविशेषण और रीतिवाचक क्रियाविशेषणो को सम्मिलित किया जा सकता है। अनेक गुणवाचक तथा निर्धारक विशेषण भी रीतिवाचक क्रियाविशेषणो मे सम्मिलित किये जा सकते हैं। इन तीनो कोटियो के क्रिया विशेषणो के कतिपय उदहरण नीचे सकलित किये जा रहे हैं।

कतिपय स्थान वाचक क्रियाविशेषण

माय, मायनै, मायकर माय री माय, माठ, तलबै, हेटै, बारै, धकलै वळ, आडैक्ट, कूट-कूट ठौड ठौट ठाडै, दर-दर, मथर ऊपरै, ऊचौ, मथारै, सिध, सारै पाखती, पाडै, आजू-बाजू, नैडो आगो, खानी चौ तरफ च्यारू मेर, च्यारू दिस, काठै, डाबी बाजू, छेडै, सौ कोस अळगा, सामी, सौ कोस आतरै, आगै, आगै-पाछै, धकै, बिचाळै, दर-दर इत्यादि।

कतिपय दिशा वाचक क्रियाविशेषण

लाणी कूट, फळ दिसा (उगुण) परियाण कूट, लकावू दिसा, निरात कूट, आथूण दिसा, पचाद कूट, धुरादु दिसा, लाणी कूट इत्यादि।

कतिपय कालवाचक क्रियाविशेषण

बेळा बगत सायत बगत बेवगत टाणै फर फरू अकर सालोसाल आयेंबर पौर परार तैपरार अष्ट पौर आठ पौर बत्तीस घडी एक बार सात बळा पैलकै पार अक दिन पिरसूं खिणक एक पलक धमेक आज रै नि भाग फाटौं सदियँ सदिय तडकै तडक विनूई पैली दूज दिन सार सूणती भखावटै भाभरकै दिन रै बघाण मिझ्या आथण सवार आज काल रोज रोज ना बेगौ अजेज अणजेज निरो ताळ खासी ताळ घणी ताळ सरूपोत सिरैपोत पैल पोत हाल हाल ई हाल तौ हाल ताई हमेसा।

राजस्थानी महीनो के नाम भी इसी कोटि मे आते हैं—यथा चैत बैसाख जेठ आसाढ सावण भ दवा आसोज काती मिगसर पोह माह फागुन।

कतिपय रीतिवाचक क्रियाविशेषण

धीमैं होळैं ध रै पैन्ल लाकौ बेगौ जल्दी धणकरा छानै ओलै उदास अचाणचक सटकै इत्यादि।

उपरोक्त वर्गों के अतिरिक्त सज्ञाओ की परमर्गों सहित (तथा कुछ परिसरो मे तियक रूप मे किन्तु परसग रहित) अवस्थिति क्रियाविशेषण संवग की मुख्य विशेषता है (१० ११)।

(१०) हाथी तौ उणरी बोलीरी मोय मे भळैं उठै स दौडियौ चौगणै बेग सू दौडियौ।

(११) थे बोला बोला पवन रै बेग जैनाणै री मीव मे बड जावौ। भाटिया र सरणै पूगिया पछ जीव न जोखौ नी।

इन उद हरणो मे (चौगणै बेग सू (१०) तथा पवन रै बेग (११)) बेग सज्ञा की क्रमश परसग सहित तथा परसग रहित अवस्थितियो के उदाहरण है।

सज्ञाओ की परसग सहित अथवा परसग रहित क्रियाविशेषण स्थानीय अवस्थितियो की कतिपय व्याकरणिक विशेषताओ का उल्लेख करने से पूव आधुनिक राजस्थानी परसर्गों का विवरण प्रस्तुत करना आवश्यक है।

७ १ २ ३ आ राजस्थानी परसर्गों को दो कोटियों मे विभाजित किया जा सकता है न सू तक रो मे भर इत्यादि परसर्गों को छोडकर शेष समस्त परसग री के तियक रूप र/री के साथ कतिपय सज्ञ ओ अथवा विशेषणो की आसत्ति से निर्मित होते हैं। कुछ परसर्गों की रचना र/री के स्थान पर सू की अवस्थिति से भी होती है।

नीचे आ राजस्थानी के समस्त ज्ञात परसर्गों की सूची प्रस्तुत की जा रही है।

रै अडीअड के समीप'
रै अठै के यहा
रै अलावा के अलावा, के अतिरिक्त
रै असवाडै पसवाडै के आस पास'
र आगै के सहारे
रै आगै के आगे
सू आगै से आगे'
रै आगै लारै क आगे पीछे
रै आडो के आगे पर
रै आडै पाडै के आस पास'
रै आपै के सहारे'
रै आरपार के आरपार
रै आसरै के आसरे'
रै उठै के यहा'
रै उनमान के समान'
रै उणियार के जैसा'
रै उणियारै के जैसा के समान'
रै उपरात के बाद, के पश्चात्'
रै ऊपर के ऊपर पर'
रै ओळै दोळै | के इधर उधर के
रै ओळा दोळा | चारो ओर'
रै ओलै के बहाने के पास'
रै ओळावै के बहाने'
रै कनै के पास'
री कळाई 'की तरह'
रै कारण के कारण
रै कू तै
केरा का'
रै कनाकर के पास से
रै कनै सू से के द्वारा'
री खातर 'के लिए
रै खातर के लिए के कारण'
रै खानी की ओर'
रै खानी खानी से इधर उधर'
रै खानी खानी सू के चारों तरफ से'
रै खिलाफ के खिलाफ'

रै गळैकर | 'के पास से के नजदीक
रै गळाकर | (से)'
रै गोडै के पास'
री जात (के) जैसा'
रै जितो (के) जितना
रै जैडो (के) जैसा'
रै जोग के लिए के उपयुक्त'
रै जोगो के योग्य के उपयुक्त'
रै जोडै के बराबर के साथ, के सामने, के समान के पास'
रै ज्यू के समान क जैसा की तरह
रै टाळ | के सिवाय के अलावा के
री टाळ | अतिरिक्त के बिना'
रै टिप्पै के आधार पर'
रै ठौड | 'की जगह के स्थान पर'
री ठौड |
तक तक'
रै तणो के समीप के निकट तक, के सहारे के आधार पर का
री तरै 'की तरह'
रै तळाकर | के नीचे से के नीचे के
रै तळैकर | तरफ से'
रै तळै के नीचे के तल पर'
रै ताई तक के लिए'
रै ताळकै के हवाले के अधिकार म, के लिए'
रै तौर माथै के तौर पर'
रै थाळै के धरातल पर पर'
रै दाई के समान के तुल्य के बराबर
दीठ प्रति प्रति एक हर एक को
रै धकै के आगे के सामने के सम्मुख के मुकाबले मे'
रै धकै धकै के आगे आगे
रै धको की ओर'
रै धथोपै के सहारे
रै नाव माथै के नाम पर'
रै नाव सू के नाम पर'

रै नीचै 'के नीचे'
सू नीचै से नीचे से नीचे की ओर'
नै को की तरफ के लिए'
रै नैडा कर के नजदीक से'
रै नैडो 'के निकट'
रै पछै 'के बाद के पश्चात् के पीछे के उपरान्त से लेकर के बाद से'
सू पछै 'से बाद मे'
रै पछै पछै के पीछे पीछे के बाद ही बाद मे
रै परवान के अनुरूप के समान, के तुल्य, के बराबर, के सदृश की भांति के मुताबिक'
रै परवानै के मुताबिक के अनुसार के अनुरूप'
रै पसवाड के पास मे के निकट के एक ओर'
रै पाण के सहारे के बल के कारण, के हेतु के आधार पर, द्वा'
रै पाखती | 'के पास के निकट,
रै पागती | के समीप'
रै पाडै के पास के निकट
रै पायँ के पास
रै पार के पार'
रै पुराण के अनुसार
रै पेटै के निमित्त के बदले मे के एवज मे क लिए के नाम पर'
रै पैला के पहले के पूर्व'
सू पैला से पहले, से पूर्व'
रै पैली क पूर्व से पूर्व के पहले'
सू पैली से पहले'
रै पैली पैली के पहले ही से पहले ही'
सू पैली पैली से पहले ही'
रै प्रमाण के जैसा के समान'
रै बदळै के बदले के समान' के एवज मे के वास्त कृते'
रै बदळै मे 'के बदले मे'
रै बळ सू के बल पर'
रै बस के वशीभूत होकर, के कारण'
रै बाबत के बाबत के सम्बन्ध मे, के निमित्त, के लिए के वास्ते'
रै बारै के बाहर'
सू बारै से बाहर'
रै बारै मे के बारे मे'
रै बिगर 'के बगैर बे-, के अलावा के अतिरिक्त'
रै बिचाळै के बीच अपना मध्य मे'
रै बिचै के बीच, आपस मे'
रै बिचै को अपेक्षा की तुलना मे, की बनिस्वत'
रै बिना के बिना'
रै बिरोबर | के बराबर'
रै बराबर |
रै बिलू के पक्ष मे'
रै बीच मे के बीच मे'
रै बैगी के लिए'
भर भर'
रै भरोसै के भरोसे'
री भात की भांति'
रै भेळा के सग के साथ'
रै मझ्झ के मध्य म
रै मतै की मति के अनुसार अपने आप'
रै मान के बराबर के प्रमाण मे के समान'
रै माय के भीतर के अन्दर'
रै माय माय के भीतर भीतर'
रै माय कर मे से (होकर)'
रै माय बारै के अन्दर बाहर'
रै मायनै म'
रै मायनै सू मे से'
रै माफूल के अनुरूप'

रै माडै 'के बिना'
रै माथै 'पर, बाद के लिए'
रै माथावर | 'के ऊपर से,
रै माथैकर | के ऊपर की तरफ से'
रै माथै सू 'के ऊपर से'
रै मारग 'के रास्ते'
रै मारफत 'के द्वारा, के माध्यम से
के मारफत'
रै मिस 'के बहाने के रूप में'
रै मुजब 'के अनुसार के मुताबिक
के माफिक'
रै मू डै मू ड 'के रूबरू के सामने'
रै मूडागै 'के सामने'
रै मुताबक 'के मुताबिक'
म 'में'
रै मौके 'के मौके पर'
रौ 'का के लिए'
रूप सू 'रूप से'
रै रूप मे 'के रूप में'
रूपी 'रूपी'
लग 'तक, पर्यन्त'
रै लगतौ 'लगातार'
रै लगै टगै 'के करीब के लगभग,
के निकट'
रै लायक 'के समान के जैसा'
रै लारै 'के पीछे के साथ
के कारण से'
रै लारै-लारै 'के पीछे पीछे
के साथ साथ'
सू लेय तक 'से लेकर तक'
सू लेय ताई 'से लेकर तक'
रै वास्ते 'के वास्ते के लिए'
रै सधो कै 'के सधिस्थल पर'
रै समचै 'ही के समान, के अनुसार,
के आधार पर'
रै समान 'के समान'
रै समेत 'के समेत के सहित'
सर 'के अनुसार'
रै सरीखौ | 'के सरीखा के बराबर'
रै सरीसौ |
सरूप 'स्वरूप'
रै सलबै 'के नजदीक, के निकट,
के समीप, के पास'
रै सस्तै 'के समान'
रै सामी 'के सामने की ओर'
रै सामीसाम 'के प्रत्यक्ष'
रै सैडै 'के पास की तरफ'
रौ सौ 'का सा'
रै सागै 'के साथ से'
रै साटै 'के बदले'
रै सायै 'के साथ पूर्वक, से'
रै साथै साथै 'के साथ साथ'
रै सार 'के बारे मे'
रै सारू 'के लिए'
रै सारै 'के सहारे'
रै सिवाय 'के सिवाय'
सू 'से, के द्वारा'
रै सूणौ 'के बराबर, तक, के समान'
रै सूरो 'के समेत'
हदी 'तक, को, पर'
रै हलै 'मे'
रै हवालै 'के हवाले'
रै हा नै 'के वश मे, सामने'
रै हाथ 'के हाथ'
रै हाथा 'के हाथो'
रै हेटै 'के नीचे'
सू हेटै 'से नीचे'
रै हेटोकर | 'के नीचे की ओर से'
रै हेटैकर |

सामान्य रूप से रौ, री से निर्मित परसर्गों के रौ, री अंगो का लोप हो जाता है, यथा (१२ १६)

(१२) म्हारै जचमी जको लोह री लीक। साची वात रै ग्रागै म्हैं बदनामी री परवा नी करू।

(१६) ऊदरो कैयो—अकल रै बळ ग्रागे भावर नै ई कगूर्क बिरोबर हूवणो पडै।

(१४) दीखता ग्राराम ग्रागै ग्रदीठ दुख रा कळाप क्यू करू।

(१५) सुगनचिडी रै माडा सुगना रै उपरांत ई सगळा इण राज री सींव नै लाघनै परलै राज री सीव मे बडग्या।

(१६) बरस उपरात पाछा इणी दिन उठै आवण रो कौल कर ग्या।

ग्रनेक परसर्गों के पूर्व सज्ञाओ की अवस्थिति के आधार पर विशिष्ट प्रयोग उपलब्ध होते हैं। यथा,

(१७) मेवट मन उपरात लाचरवाई सू कँवल री दिखावौ करियौ।

इस वाक्य (१७) मे मन उपरांत का ग्रर्थ है मन न होने पर भी।'

(१८) इत्तै वेग रै उपरात ई चीतहरा रा खोज उणरी निजर सू रमिया कोनी हा। वारै खोजा मे ई उणरो जीव अटकियोडो हो।

उपरिलिखित वाक्य मे वेग रै उपरांत का ग्रर्थ है वेग के बावजूद भी'।

ग्रनेक सज्ञा + परसर्ग ग्रनुक्रमो क क्रम-परिवर्तित रूप परसर्ग + सज्ञा भी भाषा मे उपलब्ध होते हैं। यथा, गांव सामी (१९) निजरां सामी (२०) बावडी सामी (२१), तथा सामी छाती (२२), सामो चडात (२३), तथा समदर रै मझ (२४) एव मझ बेपारा (२५) इत्यादि।

(१९) स्यालिया री मौत आवै जद गाव सामी जाया करै।

(२०) बागली तो सगळा री निजरा सामी गोरावै री खोगाळ मे हार पटक दीनी।

(२१) माथै सूखो खालडौ ग्रोढनै वो उण बावडी सामी बहीर हुयौ।

(२२) सामी छाती भैलियोडो लाठो घाव देखनै राजाजी कैयौ— ग्राप पगत पूजियोडा सत ई नी हो पण इणरै सागै ग्राप सूरवीर ई किणी सू कम नी।

(२३) नाडी मे सामी चडात पाणी कीकर गिडल ग्यो, म्हारै तो मगज मे ई आ बात बैठे जैडी को दीसै नी।

(२४) ग्रर उठी समदर रै मझ टापू मे कवराणी री विपदा रो काई लेखो हो।

(२५) मझ बेपारा ग्रासिन्न मसळनो बैठो हुयो ग्रर पाधरो महात्मा रै आसण आयौ।

सू परसर्ग की अवस्थिति पुरुषवाचक सर्वनामों के सम्बन्ध वाचक रूप (यथा म्हैं से म्हारो) के तिर्यक एक वचन रूप के साथ होती है। विकल्प से सम्बन्धवाचक सर्वनाम के –रै का लोप भी हो जाता है। इस प्रकार निर्मित समस्त रूप नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

म्हैं	म्हारै सू ~म्हासूं
आपं	आपणैसू ~आपासू
म्हे	म्हारैसू ~म्हासू
थूं	थारै सू ~था सू
थे	थारै सू ~थां सू
आप	आपरै सूं ~आप सू
ओ, आ	इणरै सू~इण सू
अै	इणारै सूं ~इणां सू
वो, वा	उणरै सू ~उण सू
वे	उणारै सू ~उणा सू

७१२४ अन्य विविध क्रियाविशेषण पदबन्धों के अन्तर्गत सर्वप्रथम उल्लेखनीय है अनुकरणात्मक पदबन्धों की अपनी सगत क्रियाओं के साथ अवस्थिति। नीचे इस प्रकार के कतिपय क्रियाविशेषण + क्रिया सयोजनों की सूची प्रस्तुत की जा रही है।

फड़ाफड़ा फौफणो
हड़ा हड़ो हालणो
बड़ा-बड़ा बोलणो
टचा टचा टाचणो
भड़ा भड़ा भचीड़णो
भटा भटा जावणो
भबाभब भबूकणो
टरा-टरा टरकणो
बटाबटा बोलणो
फटाफटा फैंकणो
फणण-फणण फैंकणो
बणण-बणण फैंकणो
गटा-गटा गिटणो
गटागट गिटणो
गळाक गळाक गिटणो
गटल-गटळ गिटणो
खपा खपा खावणो
खपाखप खाणवो

डचाडच खावणो
डचा डचा खावणो
भू भू रोवणो
ढळाक ढळाक रोवणो
छबरा छबरा रोवणो
तचातच ताचकणो
सपासप सबोड़णो
सटासट समेटणो
सबड सबड सबोड़णो
सगग-सगग बैवणो
सगग-सगग सूंतणो
सगग-सगग सिळगणो
सणक सणक सिणकणो
सुरड़ सुरड़ सिसकणो
सडिन्द-सडिन्द सुरड़णो
चटाचट चाटणो
लपर-लपर चाटणो
लपौलप लेवणो

भकळ भकळ भिकोळणो	गडागड गुडणो
पदड पदड कूदणो	तडातड ताडणो
पडापड पडणो	भडाभड बोलणो
गवा गवा जावणो	बडाबड बावणो
टपाटप टपकणो	थरथर धूजणो
धबाधब कूदणो	नच नच नाचणो
फदाफ्द कूदणो	थडथड थेपडणो
फडाफड फाडणो	धमधम उतरणो
फरड फरड फाडणो	खटखट खटखटावणो
गबागब लुकावणो	ढमाढम बजावणो
भटाभटा भापणो	बडि द बडिन्द बजावणो
ठमाठम ठमकणो	घडिंग घडिंग बजावणो
टपाठप ठोकणो	कचर कचर किचरणो
भडाभड भाडणो	खें खें बाजणो
धमाधम धमकणो	फें फें फेंकणो

नीचे उपरोक्त प्रकार की रचनाओ के वाक्यो म उदाहरण दिये जा रहे हैं।

(२६) सेवट टर्वलिया साव ढचू ढचू पजा रे आपे दोडण लागो।

(२७) असमान जोगो गे आरत ग्रर तिमणा रो चरखो इणी भात वगण-वगण चालतो रियो।

(२८) फूल जैडो कवळो रुपाळो टाबर तो ठिरडक नीठ चाले ग्रर आप घोडे माथे ईलोजी रो कळाई जमियो है।

(२९) गुडाळिया पछे थडी ग्रर थडी पछे ठम्मक ठम्मक हालणो सीखियो।

(३०) वसूबल मुखमल रा सिरख पथरणा ग्रर ओसीसो पळापळ चिमकण लागो।

(३१) ऊपर ग्राभा मे अणगिण तारा पळापळ खिवै।

(३२) चढतै उतरतै हीडै रै सागै उणरो रूप भवभव खिवतो हो।

(३३) सापडियोडी चादणी छोळा रै पालणे झूलण लागी। उणरै परस सूं मावळो पाणी जगामग नगामग पळकण लागो।

(३४) नवी राणी झवाझब बणाव करनै मेला चढतो ही के वा इज मूडै लागी डावडी भळै सामी धकी।

(३५) बात सुणता ई म्हारो आखियां सामी भपाभप बीजलिया मळावा मारण लागी।

(३६) गरणं सात मीठी पुडियां बाधी ही। सोनळ मछळी पाणी मे पळापळ नाचती नाचती अेक-अेक टुकडो निगळती गी।

(३७) वो तो गपाक-गपाक बिना दांत लगाया ई गिटण लागो।

(३८) सेस नाग मन करतो जकै जिनावर नैं दटाक दटाक गिट जातो।

(३९) सायड तो भरड भरड पाका आबा चिगळती ही।

(४०) राजा डकळ-डकळ पीवण सारू घणो ई खपियो, पण पावण वाळा राजी नी हुयो।

(४१) मनवार करता ई असमान जोगी तो दो कचौळा भरनैं गटागट पीगो।

(४२) अेक ई सास म डग-डग सगळो पाणी गरलै खळकाय जोर सू डकार खाई।

अनेक अनुकरणात्मक शब्दो की तिर्यक एक वचन मे अनेक क्रियाओ से सगति का निदर्शन करने के लिये कतिपय उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

(४३) टाकर गै घोडो मारग-मारग भरणाटै दौडतो रियो।

(४४) मोतिया रै खोजा खोजा राजकवर भरणाटै उडियो।

(४५) वो घोडं मायं भरणाटै जाय पाछो आवं।

(४६) सुगन मिळता ई वो तो पछै भरणाटै हालियो।

(४७) वो आवाज खानो बहीर हुयो। तरतर बाळक री रोवणो सुभट हुवतो गियो।

(४८) जीभ तरतर बत्ती पळोटा खावण लागगी ही।

(४९) लोगा री निवलाई सू कवर री खीझ गी तरतर आघण उकळतो ई गियो।

(५०) सता री तरतर कळेस बधण लागो।

(५१) चाद तरतर ऊचो चढण लागो।

(५२) . कै राणो री सरीर तो तरतर छीजतो ई गियो।

(५३) अेकर तो मरिया पछै ई जची, पण धकळ धकळ लोई री तू ताडिया छूटती देख म्हैं मन मायं नीठ काबू राखियो।

(५४) मागी तरवार देखनैं धग धग धूजण लागो।

(५५) म्हारै सू तो चुळीजै ई कोनी, माय धपळ-धपळ मिळगै।

(५६) लोग आछी तरै जाणता कै वो मरिया ई साच नी बोलै, तो ई साच बोलावण सारू घरेळ धरेळ हाडका भागिया बिना नी मानता।

(८८) आडै मारग गोडा-गोडा पाणी वहण लागो, तो ई वो सासरै री कोडायो साव नागो तडग छपळक छपळक करतो चालतो ई गियो।

(८९) आ कैंवता ई मासी री आखिया मूं तो छवरां छवरां आसू बरसण लागा।

(९०) लोगा रौ बतूळियौ पगां हालियौ।

(९१) खावता ई कवरा री फूका सास निकळ जावैला। पछै वा आपरै हाथा सू आठू राजकवरा नै खाडा बूच करनै पाछी आय जावैला।

(९२) बेटी तो बैराग लेय तडकै ई हमेसा रै वास्तै माळरा रम जावैला।

(९३) राणी आपरी अखूट जवानी नै लडाभूम सिणगार रगमैलां चडती ही कै वा इज डावडी जाणनै सामी धकी।

(९४) खेत रौ धणी तो रीसां बळता आपरै हाथा रा बेजा इज बट काडिया।

८. विस्मयादि बोधक

८ १ आ राजस्थानी के विस्मयादि बोधक, सम्बोधक कतिपय विशिष्ट निपातो एव अन्य इसी प्रकार के तत्वो का इस अध्याय मे सोदाहरण विवरण प्रस्तुत किया जायगा।

८ २ नीचे भाषा मे सामान्य रूप से प्रचलित कतिपय सम्बोधक उदाहरण सहित सकलित किये जा रहे हैं।

हा

(१) डोकरी हाथ जोडनै बोली—हा सता पूरा सात गधेडा हा।

रे

(२) व श्रेक लाठी छाक लेयनै हाजरिया नै पूछियो—ओ कैणो हाको है रे? परभात री वेळा अँ जँ जँ करता कुण काण खावै?

ग्रे

(३) गुचळकिया खावती बोली—चिडी बाई, बारे काड ग्रे।

हा

(४) दैत राजी होय बोलियो—हा आ बात तो म्हनै ई कबूल। मानण जैडो बात व्है तो क्यू नी मानू।

ऊ हू

(५) काळिदर फुण हिलाकतो बोलियो—ऊ हू म्हनै अैडी गुण नी मनावणो।

अरर

(६) अरर, आ छवकाळी तो सगळा नै मात कर दियो।

आ हा

(७) मुखिये जबाब दियो—आ हा, अै तो अगै ई गूगा-बोळा कोनी। दाछट बोलै।

हे हे

(८) तर-तर सूरज ढळण लागो। तपता तपता सेवट अवै आथमण री जचगा दीसै। हे हे आ कोर पाणी मे गीली व्ही। कठै ई बासदी री गोळो बुझ नी जावै।

निम्न वाक्य (९) म देखणौ क्रिया के आज्ञावाचक बहुवचन रूप देखो की सम्बोधक स्थानीय अवस्थिति हुई है।

(९) पछै मा टिचकारी देवती कैयो—देखो म्हारा ईं हीया फूटा जको आपनै रेकारो देवू ।

यहा इस तथ्य का उल्लेख कर देना आवश्यक है कि अपनी अभिव्यंजकता के कारण उपरोक्त सम्बोधक विस्मयादि बोधको से निश्चयात्मक रूप से पृथक नहो किये जा सकते।

८ ३ नीचे आ राजस्थानी के कतिपय विस्मयादि बोधक शब्दो तथा पदबन्धो को उदाहरण सहित सकलित किया जा रहा है।

म्हा

(१०) गरणौ भाटकता भाटकता वो टाबर री कळाई बोलियो—म्हा अबै तो सातू ई पुडिया निठगी। म्हारी सोनल मछी थनै भळै काई लवाडू ।

हकनाक

(११) कवर रै साम्ही मूंडौ करनै रूखै सुर म बोली—हकनाक बापडै जीव री थेह री ठायौ छुडायो।

छो

(१२) इदर भगवान कोप करैला तो छो करता।

(१३) नाच सपूरण हूवता ई कवर जाणै नसै मे व्है ज्यू ई बोलियौ—छो हुई कथूडो म्हैं तो इण सू ईं ब्याव करूला।

छेवास

(१४) वाको फाडण वाळा मोटियार रा मौर थापलतो राईको बोलियौ—छेवास रे डारा थारै जैडा सचवाया मिनख रै औ नाढ लोग इत्तो छोजत करी।

भला

(१५) बाप हेटै लुळ खुणिया सूदा हाथ जाडनै कैयो—भला म्हारो कॉई ठरको कै आपनै हॉण पुगावा।

जाणै

(१६) आपरो दुख सुणावता तो बाबै री आखिया फगत जळजळी हुई ही पण बामणी री विपदा सुणिया तो उणरी आखिया सू आसुवा री जाणै बिरखा हुयगी।

टालाभूला

(१७) अै टालाभूला तो अठै ई मरचूटा।

म्हारौ

(१८) म्हारौ औ चोर तौ जबरौ। सुणता पाण लप हूंकारौ भर लियौ।

८४ नीचे कतिपय सज्ञाओं तथा सज्ञा पदबन्धो के सम्बोधनार्थक रूपो की वाक्यो म अवस्थिति के उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१९) भूडण आसू पामती बोली—म्हारा लाडला इण बात री सोच थें आछौ करियौ।

(२०) म्हारी लाडल बेटी रीस रैं कारण थू आपौ बिसरगी।

(२१) हेलो मारियौ—आजा पारबतां म्हारैं सू औ पपाळ नीं सभै।

(२२) बावळी आवें चोसळै मे थारैं हीयैं री पीड समझणवाळौ म्हारैं सिवाय कोई दूजौ कोनी।

(२३) *तद वा आपरैं बेटैं रे साम्ही देख बोली—कांहूडा अबै ढोल मत कर।*

(२४) पूछियौ—थू कुण है भाया ? इत्ता दिन तौ कदैं ई नी देखियौ।

(२५) महात्मा घडी घडी कैवतौ— मला मिनखां म्हारैं हाथ म की सिद्धाई कोनी।

८५ प्रकरण सख्या (८४) मे वर्णित सज्ञाओ के सम्बोधक रूपो के समान ही निम्न वाक्यो मे सम्बोधको तथा वाक्य पूर्वाश्रयी रचनाओ की अवस्थिति हुई है।

(२६) हे भगवान ! लुगाई रैं अतस म रीस रा खीरा चेतन करतौ बगत उणरी रीस नैं पागळी क्यू करी।

(२७) कुम्हारो रैं मूडै साम्ही जायौ। राम जाणैं रूसियोडा उणियारा इत्ता सुहावणा क्यू लागै।

(२८) भगवान नीज करैं आपरैं जीव रैं कौ जोसौ हुयग्यौ तौ इण बादल मैल रा काईं दीन व्हैला।

८६ सही (२९) तौ सही (३०) तौ सरी (३१) तौ खरी (३२) की विस्मयादि बोधकार्थक अवस्थितियों के उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(२९) राज पाच महीना उडीक रा आणद उठायो तौ अेक महीनौ भळै सही।

(३०) उण कैयौ—मानण जोग बात व्हैला तौ म्हैं अवस आपरी बात मानू ला। आप फरमावौ तौ सही।

(३१) बामणी धणी नैं झिझकैडती बोली— कठै सू चोर नैं लाया बतावौ तौ सरी।

(३२) इचरज अर हरख रैं सुर मे बकाई खावती बोली—चालौ देखौ तौ खरी, आपा रैं गीगलो हुयौ।

८७ सूत्रीकृत वाक्य और वाक्यात्मक रचनाए जो कि भाषा मे स्थायी कथनो के रूप मे अवस्थित होते हैं व्याकरण की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इनके कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(३३) तो रामजी भला दिन दे ग्रेक गाव मे अेक बामण परिवार रैवतो हो।

(३४) बा तो धोळो धोळो सैंग दूध जाणती।

(३५) अर जे इण चाळ चोळ रै बिचाळै कोई अणचीती तोजा वैठगी तो पछै पूणगो ई काई!

(३६) थानै मी पोसावै तो थानै सूं ई थाळाणो करू। म्हे भली अर म्हारी माटी भली।

(३७) हाथी सूड री बिच्छू काटै री अर सासू आपरै जस री घणी आसा रखाळी राखिया करै।

(३८) राजा नै आसरो रैयत रो, रजपूत नै आमरो तरवार रो साहूकार नै आसरो धनरो बामण नै आसरो विद्या रो अर गरीब नै आसरो भगवान रो।

८८ मार, इत्याद बीजो, मातर, फ्लोणा, घर आदि अनेक ऐसे शब्द हैं जिनकी वाक्यो मे अवस्थिति का व्याकरण मे उल्लेख करना आवश्यक है। इस प्रकार के शब्दो के वाक्यविन्यासात्मक प्रकार्यों की व्याख्या कोश में सामान्य रूप से नही की जा सकती। इनके महत्व को ध्यान मे रखते हुए इनके कतिपय उदाहरण ही नीचे सकलित किये जा रहे हैं।

(३९) तठा उपरात दीवाण जी री बहू बानै बग्घी म सार्थ ले जावण लागी तो हवेली मे मार धरळियो मचग्यो।

(४०) देखता देखता केई अजगर केई साप केई सूवा, तीतर कबूडा कागला, गिरजडा चीता सूअर सिंघ स्याळ छाळीनारिया बळद गाया अर घाडा इत्याद भात भात रै जिनावरा रो मेळो मचग्यो।

(४१) वो सगळो माल बीजो लेयनै गाव पूगग्यो है।

(४२) बेटा जद थारै जित्तो घोर नास्तिक म्हारै दरसण मातर सू परमेस्वर रो भगत बणग्यो तो आ म्हारी मुगता विचै ई मोटी बात है।

(४३) बाप नै अरज कराई, म्हारो नाळेर फलोणा कवर जी रै उठै भेजावो।

(४४) धर मजला धर कूचा हालतो ई गियो हालतो ई गियो।

८९ —वाळो प्रत्यय की अवस्थिति से निर्मित शब्दात्मक रचनाओ का व्याकरण मे अलग से उल्लेख करना आवश्यक है क्योकि इस तरह की समस्त रचनाए अर्थ की दृष्टि से वस्तुत वाक्यात्मक हैं, यथा—

(४५) सात चादी री, सात सोनै री अर सात हीरा मोतिया री पोळां रै पछै राजकवर नै सपनैवाळौ बाग परतख आपरी निजरा दीखियौ ।

वाक्य (४५) म अवस्थित पदवन्ध सपनैवाळौ बाग का अर्थ है "सपनै मे देखियौ जकौ बाग" अथवा "जिण बाग नै सपनै मे देखियौ वो बाग" ।

८.१० भळै तथा उससे निर्मित अन्य रचनाओ की वाक्यो मे अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित है ।

भळै 'फिर'

(४६) मारग मे मळापत्ता सिग खिरगोसिया नै भळै पूछियौ— किन्नौ'क अळगौ है उणरो किलो ।

भळै 'और'

(४७) पण इणरै सागै आज री रात म्हारौ अेक प्रण भळै कै इण सराप नै आसीस म बदळ देणौ ।

भळै 'और, अतिरिक्त'

(४८) सेसनाग री मिणिया रौ हार भळै व्है तौ काई पूछणौ ।

सळै 'अन्य, अतिरिक्त'

(४९) नतीजो नीति पुराण ई राखणौ चोखौ है, हू भळै काई कंवू ।

भळै ई फिर भी'

(५०) पण खिरगोस तौ भळै ई हसतौ रियौ ।

८.११ आ राजस्थानी अवधारक निपात तथा अवधारक रचनाओं का सोदाहरण विवरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है ।

ई भी'

(५१) बामणी बोली—आप बौपारी हौ तौ मैं ई अेक मा हू ।

नीतर ई 'वैसे भी'

(५२) कवर नीतर ई सिधावणवाळौ हो ।

ई 'ही''

(५३) बाप घणौ ई बरजियौ पण कवर तौ नीं मानियौ ।

(५४) कुम्हारी पाछी जावण सारू बिमाण मे पग धरियौ ई हौ कै असमान जोगी-माथै उणरी निजर पडी ।

इज 'ही'

(५५) भगवान रै पछै म्हनै आपरी इज आस है।

(५६) पण काल सिझ्या सू ई खेत री रूखाळी रो जिम्मो म्हारो इज है।

तो 'तो'

(५७) सेनापति कैयो—वा ई तो आपरै साम्ही अरज करनी चावौ।

तो ई तो भी'

(५८) काळ रो की भरोसो कानी तो ई दूर छिण अलेखू जीव जलमैला।

तक 'तक'

(५९) इण चितवणी हालत मे वा आपरो ओरणो तक ओढणो पातरगी।

धुराधुर तक, भी'

(६०) अलेखू भगत उणरै चरणा मे माथो निवावता। राजा धुराधुर डडौत करता, चरणा मुगट धरता।

ना न'

(६१) किणी बातरी कोताई करजै मती नीं।

नी न'

(६२) पोटा न्हाखण दो। मोडो हुयग्यो! सैणा हो नी।

६. सामान्य वाक्य संरचना

९ १ आ राजस्थानी मे सामान्य वाक्यो के अन्तर्गत मुख्य रूप से तीन प्रकार की रचनाओ को परिगणित किया जा सकता है--(क) अकर्मक क्रिया से निर्मित वाक्य (ख) सकर्मक क्रिया से निर्मित वाक्य, तथा (ग) सयोजक क्रिया स निर्मित वाक्य ।

९ १ १ अकर्मक क्रिया से निर्मित वाक्यो मे अवस्थित क्रियाओ के सोपाधिक परिसरो के अनुसार इन वाक्यो का तीन कोटियो मे वर्गीकरण किया जा सकता है । नीचे इन तीनो कोटियों के वाक्यो के उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

(क) क्रिया विशेषण सोपाधिक परिसर वाक्य

(१) वा आवती होय माळै सू हेटै उतरी । उरआणै पगा ई वारै साम्ही आई ।

(२) सावण री तीज सू ई पैला आ लाठी तीज किसी आई ?

(३) दोनू जणां बावडी रै पाणी मू वारै निकलनै अतलोक मे आयग्या हा ।

(४) जोग रो बात कै अेकर आधी अर मे दोनू सागै आया ।

(५) म्हे आपरो की बिगाड नी कराला । म्हे घणो मोद करनै अठै आया ।

(६) आसाढ उतरिया सुरगो सावण आयो ।

(७) अदाता रै काना हाल अै सुभ समचार नी पूगा दीसै । बीकाणै सू राज रो कासिद आयो ।

(८) सात पाणी रो, सात हवा री अर सात उजास रो पोळा पार करिया सेवट पयाळ लोक आयो ई ।

(९) इण बावडी मायै वा पेर वदेई पाछी सिनान करण सारू तो अवस आवैला ।

(१०) कालै जिण बगत थारै घर साम्हो म्हारो रथ आयो हो, आज उणी बगत हीरा मोतिया सू भरियोडी सात गाडिया आवैला ।

(११) आपरै बारणै कै तो जगळ रो राजा आय सकै कै मिनखा रा राजा ई आय सकै ।

(ख) क्रियानामिक सोपाधिक परिसर वाक्य

(१२) अेक परी कयो कै माटै री पूतळी बणिया रैवता तो कीकर घरवाळी री याद आवती ।

(१३) एक पलक मे ई उणरै मन मे अै सगळा विचार आयग्या।

(१४) अन्नदाता म्हारै माथै जद औ सकट आयनै पडियो है तौ पछै कळजुगी अवतार फेर कद काम आवैला।

(१५) पगिया नाच नाच हार थाकी तौ ई उणरी आखिया मे इण विध रै नाच री सैमूळी रगत नी आई।

(१६) राजाजी नै जाणै जित्ती रीस आई। दात पीसता थका बोलिया—फावू रौ माल चरता था लागा नै लाज को आवै नी।

(१७) . अर मरणारो इणसू सिरै मौको फेर कद आवैला।

(१८) अर ठेट उपरलै पगोतिया पूगिया पछै किणी सत नै दुनिया री किणी बात माथै रीस नी आवै।

(१९) रीस अर आमना रै कारण वारी आखिया म आसू आयग्या।

(२०) जाटणी दात पीसती बोली—मर जाती तौ पापौ कटतौ। दुनिया नै सोरौ सास तौ आवतौ।

(२१) थानै म्हारौ तौ ध्यान ई का आवै नी।

(२२) अर आडी हूवता ई उणनै नींद आयगी।

(ग) पूरक सोपाधिक परिसर वाक्य

(२३) पण म्हारौ माथौ तौ साव भवियोडौ। सुभट अर सीधी बाता ई दोरी समझ म आवैला।

(२४) अैडौ बिलालौ मोटियार तौ सुपण म नी आयौ।

(२५) बूढा-बहेरा तौ आ बात जाणता ई हा कै फैफ रा फूला री तमास मे जकौ ई गियौ उणरी पूठ तौ देखी पण पाछौ मू डौ देखण म नी आयौ।

(२६) गा कैयौ तौ ई बेटी रै आ बात मानण मे नीं आई।

(२७) पाछी हजार बरस ई आखिया दूखणी आय जावै तौ वो धाणी मे पीलीजण सारु त्यार।

(२८) म्हनै परख रौ डर नी। खरौ उतरूला।

(२९) पण बेटा आ लाडैसर देवी नी तौ पूजिया बस मे व्है अर नी मिवरिया काबू म आवै।

(३०) सिंघ री खाल पैरियाडो औ नो मोटौ गधौ निकळियौ।

(३१) बावळा बगत माथै थारै काम ना आवू तौ पछै किणरै काम आवू।

९ १ २ सकर्मक क्रियाओ से निर्मित वाक्यो का भी, उनमे अवस्थित क्रियाओ के सोपाधिक परिसरो के आधार पर त्रिविध वर्गीकरण किया जा सकता है।

(क) क्रिया विशेषण सोपाधिक परिसर वाक्य

(३२) मिनखा देह रै इण खोळिया मे म्हैं कळजुगी अवतार रै ओळखिया कोनीं।

(३३) लक्खी बिणजारो वा सगळा नै ई आपरै रथ माथै बिठाण लिया।

(३४) वो आपरी बही खोलनै बाळक रो नाव धाम वगत मिती वार अर संवत् इत्याद सगळी बाता टीपली।

(३५) वे सगळी मिल परी नै आपरै मन री बात बामणी नै बताई।

(३६) आज सू इण गवाडी नै थू ई सभाळ। ओ घर अबै थारो है म्हारो नी।

(३७) मागियोडो दाणा री पोटळी वो नवी बीनणी रै हाथ मे भिलाय देतो।

(ख) क्रिया नामिक सोपाधिक परिसर वाक्य

(३८) कागलो हिरण नै घणो वरजियो कै इण छळी अनजाण स्याळ रो पतियारो मत कर।

(३९) कीडी नै कण अर हाथी नै मण देवण रो जिणनै ध्यान वो साई आपा रो ई ध्यान राखैला।

(४०) म्हारै साथै धोखो करियो तो वो खुद ई सवायो धोखो खायो।

(४१) आरै बिना तो वे सास ई नी लै सकै।

(४२) हरख रा आसू ढुळकावतो गळगळै सुर मे बोलियो—अतरजामी आज म्हारी भगती सुफल हुई।

(४३) रैयत री सगळी रीस राजा कवरा माथै भाडी। रीस मे कडकतो बोलियो—दुस्टिया म्हारै सू लारलै भौ रो काई ओटो साफो।

(४४) पण अदाता कदैई म्हनै ई हाजरी रो मौको दिराजो।

(४५) गादी री थोडी घणी तो लाज राखिया करो।

(४६) थारी नेक सला सू वो आख राज री रगत ई बदळ सकै।

(४७) बारै बरसा रै तप रै पछै ई रीस अर मद माथै वो काबू नी पा सकियो अर औ आठू रा आठू भाई राजकवर होयनै ई रीस अर मद रै नैडा कर ई नी निकळिया।

(४८) नवी अपछरा तो वा नै अंडा बस मे करिया कै वे अक छिण वास्तै ई रग-मल सू बारै नी निकळला।

(४९) तो ई घर री नवी धणियाणी नित हमेस आपरै धणी नै सुसरैवाळी सीख याद अणावनी।

(५०) राजकवर कैयो—म्हा हर सास रै समचै थारी सीख नै याद राखसा।

(ग) पूरक सोपाधिक परिसर वाक्य

(५१) खूटोडा मिनख म्हनै काली गिणै तौ म्हैं किसा बानै समझणा गिणू।

(५२) बात ग्रर भाटै री काई बिठावौ ज्यू ईं वैठै। कोई उणनै रैदास भगत रौ रूप जाणता तौ कोई उणनै रामदेवजी रौ नवौ अवतार मानता।

(५३) हिरणी बोली —म्हैं तौ इणनै बाबी कैयनै बतलावूला।

(५४) मिनख खुदोखुद नै ग्रक्ल रौ उजागर ग्रर समझ रौ सागर मानै।

(५५) ग्रसमान जोगी तुरत ठाडौ पडनै बोलियौ—थू तौ इन बादळ मेल री खास धणियाणी। थनै भला चाकर कुण कैवै?

९ १ ३ सयोजक क्रिया स निर्मित कतिपय वाक्यों के उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(५६) भतीजा री लाड करनै उणनै समझायौ कै ओ पाणी तौ खारौ आक है।

(५७) वा सोनल नै पूछियौ वा हा थू कुण है? इदर री परी सुरग री अपछरा क कोई डाकण स्यारी?

(५८) सोनल रौ भतीजौ ईं उठै उभौ हौ।

(५९) चौधरण सालस ग्रर भली ही।

(६०) लाग घणा ईं खपता तौ ईं मनागत नी कर सकता कै वा पूतळी है कै कोई परतख जीवतौ उणियारौ है।

(६१) ग्रक जाट रौ गाया माथै ईं गुजराण हौ। करसन वास्तै जमीं री चाम ईं नी ही।

(६२) ग्रक स्वाळख रा चौधरी नै फूठरा फबता नागौरी बळदा री अणूतौ कोड हौ।

(६३) थें म्हानै कीकर ग्रर कित्ता जल्दी मार सकौ काई थारौ ग्यान इणी बात मे है। जे इणरौ नाव ग्यान है तौ पछै म्हारौ अग्यान घणौ वत्तौ।

९ २ प्रकरण सख्या (९ १) में वर्णित विविध वर्गीकरण समस्त राजस्थानी क्रिया प्रकृतियो पर लागू होता हो है ऐसी बात नहीं है। उक्त प्रकार के वर्गीकरण का मुख्य उद्देश्य है भाषा की वाक्यविन्यासात्मक सरचना के सभी ज्ञात पक्षो का उदघाटन करना। अत इस नियम क अपवाद स्वरूप यह कहा जा सकता है कि सामान्य रूप से आवश्य ग्रनुकरणात्मक और सज्ञा तथा विशेषण जात क्रियाप्रकृतियों से क्रियाविशेषण सोपाधिक परिसर वाक्यो की ही रचना होती है इत्यादि।

९ ३ प्रकरण सख्या (९ १ १ ९ १ २ तथा ९ १ ३) म सूचित वाक्यों की आतरिक ग्रधिक्रमिक सरचना के सन्निहित ग्रवयवो का विश्लेषण निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है।

(क) वाक्य → कर्त्ता · विधेय

(ख) विधेय → { अकर्मक क्रिया पदबन्ध
कर्म सकर्मक क्रिया पदबन्ध
यौगिक क्रिया पदबन्ध

प्रकरण संख्या (९ १ १ ९ १ २ तथा ९ १ ३) में सूचित कतिपय वाक्यों का नीचे पुनर्उल्लेख किया जा रहा है। इनमें उपरोक्त नियम (क) और (ख) के अनुसार क्रमश प्रथम क्रम अवयवों को $(\ )_1$ द्वारा तथा द्वितीय क्रम अवयवों को $(\ )_2$ चिह्नित किया जा रहा है।

(१) (वा)$_1$ (आसती होय माळै सू हेटै उतरी।)$_2$

(२०) (दुनिया नै सोरी सास लौ)$_1$(आवतो।)$_2$

(२१) (थानै म्हारो तो ध्यान ई)$_1$(को आवलो नी।)$_2$

(२४) (अैडो बिलालो मोटियार तो)$_1$(सुणण मे नी आयो।)$_2$

(३३) (लक्खी बिणजारो)$_1$(वो सगळा नै ई थापरै रथ माथै बिठाण लिया।)$_2$

(३९) (वो माई)$_1$(आपा रो ई ध्यान राखैला।)$_2$

(५२) (म्हैं तो)$_1$(इणनै वाबी वैयनै बतलावूला।)$_2$

(७९) (चौधरण)$_1$(सालस अर भली ही।)$_2$

(६२) (अैक स्वाळख रा चौधरी नै फूठरा, फबता नागोरी बळदा री बणूतौ कोड)$_1$(हो।)$_2$

$(\ )_1$ द्वारा चिह्नित अवयवों का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि कर्त्ता-स्थानीय अवयवों को दो कोटियों में विभाजित किया जा सकता है, अर्थात्

(ग) कर्त्ता → { संज्ञा पदबन्ध
क्रिया नामिक पदबन्ध

उपरोक्त पुनर्लिखित उदाहरणों में वाक्य संख्या (२०, २१ तथा ६२) में क्रियानामिक पदबन्धों की कर्त्ता स्थानीय अवस्थिति है। शेष समस्त वाक्यों में संज्ञा पदबन्धों की। इसी प्रकार $(\ )_2$ द्वारा चिह्नित अवयवों में भी कर्म-स्थानीय अवयव भी दो प्रकार के है यथा

(घ) कर्म → { संज्ञा पदबन्ध
क्रियानामिक पदबन्ध

कर्म स्थानीय अवयवों के दोनों प्रकारों का पार्थक्य स्पष्ट करने के लिए तद्विषयक उदाहरण एक बार फिर उद्धृत किए जा रहे हैं। उनमें $(\ )_2$ द्वारा चिह्नित अवयवों को रेखांकित करके सूचित किया जा रहा है।

(३३) (लक्खी विणजारो)₁ (वा मंगला नै ई आपरै रथ माथै बिठाण लिया ।)₂

संज्ञा पदबन्ध

(३९) (वो साई)₁ (प्राणां री ई ध्यान राखैला)₂

क्रियानामिक पदबन्ध

अकर्मक क्रिया पदबन्धो और सकर्मक क्रिया पदबन्धो के साथ क्रियाविशेषणो की वैकल्पिक अवस्थिति और पूरकों की अवैकल्पिक अवस्थिति का पार्थक्य स्पष्ट करने के लिए नियम (ङ) का उल्लेख किया जा रहा है। इसी नियम मे यौगिक क्रिया पदबन्ध के अवयवो का विश्लेषण भी स्पष्ट किया जा सकता है।

(ङ) अकर्मक क्रिया पदबन्ध, सकर्मक क्रिया पदबन्ध, यौगिक क्रिया पदबन्ध →

(क्रिया विशेषण पदबन्ध) { अ क्रि पदबन्ध / स क्रि पदबन्ध / यौ क्रि पदबन्ध }

क्रिया विशेषणो का विवेचन अध्याय (७) मे किया जा चुका है।

अ क्रि पदबंध स क्रि पदबन्ध और यौ क्रि पदबन्ध नामक अवयवो में भी दो प्रकार के पदबन्ध है—(क) पूरक + अपूर्ण क्रिया पदबंध तथा पूर्ण क्रिया पदबन्ध। इन दोनों कोटियो के पदब धो का पार्थक्य निम्न नियम द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

(च) क्रि पदबन्ध → { पूरक + अपूर्ण क्रिया पदबन्ध / पूर्ण क्रिया पदबन्ध }

प्रकरण सख्या (९ ३) मे पुनर्लिखित वाक्यो मे वाक्य सख्या (२४) (५३) और (५९) मे क्रमश पूरक + अपूर्ण अकर्मक क्रिया, पूरक + अपूर्ण सकर्मक क्रिया तथा पूरक + यौगिक क्रिया अवयवो की अवस्थिति हुई है। इन अवयवो का निर्देश करने के लिए इन वाक्यो को पुन लिखकर उनमे उपरोक्त अवयवो को रेखांकित किया जा रहा है।

(२४) (ग्रैडो बिलालो मोटियार तो)₁ (सुणण मे नी आयो ।)₂

पूरक — अपूर्ण अकर्मक क्रिया

(५३) (म्हैं तो)₁ (इणनै बाबी कैयनै बतलावूला ।)₂

पूरक — अपूर्ण सकर्मक क्रिया

(५९) (चोधरण₁ (सालम अर भली ही ।)₂

पूरक — यौगिक क्रिया

९ ४ सज्ञा पदबन्धो म समानाधिकरण सम्बन्ध की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(६०) कमेडी रा पजिया झाल राजकवर नाहरसिंघ बारै टापू माथै आयौ तौ समदर हिबोळै चढियोडो हौ।

(६१) राजकवर बहादरसिंघ राज रै केई दीवाण अर केई पारखिया नै केसा रौ कोयौ बतायौ।

समानाधिकरण सम्बन्ध वाले पदबन्धों मे निम्न रचनाओ को भी सम्मिलित किया जा सकता है।

(६२) राजाजी रा फरमाण री बात सुणता ई ठाकर अर वो दोनू ई मन मे अणूता डरिया।

(६३) अगुर, दाडम सेव जामफल नारगी, इरड काकडी सीताफळ इत्याद केई मीठा-मीठा फळ।

९ ४ १ भाषा मे अनक एसी वाक्यवत् रचनाए हैं जो स्वतन्त्र वाक्य न होकर, अपने पूर्ववर्ती वाक्यो का अग हैं यथा

(६४) पिडतजी कैयौ—नी बेटा आपरा स्वास्थ सारू मारग चालता बटाव नै नयू तक्लीफ द्यू। सुण्यौ कै किणी देस रा आठ राजकवर उठै आयोडा है। दया अर करुणा रा सागर। किणी दुरभाग रा दुख तौ वे देख ई नी सकै।

इस उदाहरण मे रेखाकित रचना न तो स्वतन्त्र वाक्य है और न ही पूर्ववर्ती वाक्य के साथ किसी प्रकार से सयोजित है। किन्तु ऐसा होते हुए भी अर्थ की दृष्टि से अपने पूर्ववर्ती वाक्य का अग है। इस प्रकार की रचनाओ को वाक्य पूर्वाश्रयी की सज्ञा से अभिहित किया जा सकता है।

निम्नलिखित उदाहरणो मे रेखांकित रचनाए भी वाक्य पूर्वाश्रयी हैं।

(६५) म्हारौ बडभाग कै रौटी उतरण रै सागै म्हारी गवाडी कोई पावणौ आयौ।

(६६) उण बगत वा म घोडै जित्तौ करार आयग्यौ हौ। वे घडा घडी किडकिया चावता अर कैवता जावता—आया बापडा गरीबा रौ मोच करणवाला!

(६७) आपनै म्हारी आण अेक पावडौ ई धकै दियौ तौ।

९ ५ सामान्य रूप से सकर्मक क्रियाओ के पूर्णतावाचक समापिका क्रियारूपों म पूर्णतावाचक कृदन्त के लिंग-वचन कर्म स्थानीय सज्ञा के अनुसार और सहायक क्रिया के पुरुष वचन कर्त्ता सज्ञा (अथवा सर्वनाम) के अनुसार होते हैं। अन्वय की इन विविध सभावनाओ का निदर्शन निम्नलिखित वाक्यो द्वारा किया जा रहा है।

(६८) म्हैं तो आज म्हारी आंखिया इण सूरज रो पळको दीटो हूं।

(६९) पण तो ई जका लोगां नै समझावण रो म्हैं प्रण करियो हूं, वां लोगा नै अेक दिन समझायनै ई छोडूला।

(७०) ढावा माथै उभनै मा नै डूबती देखी तो वो खुद नदी मे कूदण वास्तै त्यार हुयो कै नदी सू आवाज आई—नीं बेटा, नीं।

कर्मस्थानीय सज्ञा के साथ नै 'को' परसर्ग की अवस्थिति होने पर भी पूर्णतावाचक कृदन्त और कर्म स्थानीय सज्ञा मे पारस्परिक लिंग वचनानुसार अन्वय का नियम अक्षुण्ण रहता है।

(७१) पछै वो उण खबर मिकोतरी नै राज दरबार मे ढावी अर बाकी सगळिया नै मीस देय बहीर करी।

(७२) वा आपरै हाथा सू बोरडी रा काटा भेळा करिया। ठेट आगा ई आया जायनै न्हाकिया।

कर्मस्थानीय मुख्य सज्ञा के साथ नै परसर्ग की अवस्थिति और वाक्य मे गौण कर्म की अवस्थिति मे भेद है। उपर्युक्त अन्वय केवल मुख्य कर्म स्थानीय सज्ञा (जो कि ऋजु रूप मे हो अथवा नै परसर्ग सहित) और सकर्मक क्रिया के भूतकालिक कृदन्त मे ही होता है। गौण कर्म की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(७३) दूजै दिन ई धणी सू छानै ओलै आपरै हिवडारो हार अेक सुनार नै बेच दियो।

अन्य समस्त स्थितियो मे समापिका क्रियारूपो के लिंग वचन तथा पुरुष वचन कर्त्ता स्थानीय सज्ञाओ के अनुसार होते हैं।

एक वचन पुंलिंग अथवा स्त्रीलिंग सज्ञा की कर्त्ता स्थानीय अवस्थिति मे आदरार्थक अन्वय होने पर क्रिया बहुवचन पुल्लिंग मे होती है, यथा (७४-६)।

(७४) उखरडी रै खनाकर निकळता उखरडी कैयो हळदी बाई टळिया टळिया वीकर जावो, सोना रो गैणो गांठो लेता जावो।

(७५) उखरडी सू उतरता ई ऊंट अरडायो। सगळै गाव मे खळबळ माची। नानाणा सू हळदी बाई आया रे हलदी बाई आया रे।

(७६) ठाकर सा सू तुरत की जवाब देवता नी बणियो तो थूक गिटता बोलिया—भगवान री बात न्यारी है। ये म्हांरो कैणो मानो तो थारा पावणा नै अठै कोट मे बुलावो। इणनै सावळ परखा।, आपारी निजर सूं उणरो पतियारो ला।

९ ६ अनेक स्थितियो मे सकर्मक क्रियाओ के कर्म स्थानीय सज्ञाओ के साथ नै परसर्ग की अवस्थिति सामान्यतया नही होती (७७)।

(७७) गिलोला सू पछी मार-मारनै ढिग कर देता। यू नित बोछरडाया पछै अेक दिन वानै नवी ई कुबद सूझी।

किन्तु अनेक अन्य स्थितियो मे नै परसर्ग की अवस्थिति अनिवार्य है (७८-८१)।

(७८) थारो वड भाग कै थारा दरद नै अेक जिणी तौ समझै है।

(७९) राजा री सिंघ रै मिस मौत न परतख आवती देखी।

(८०) थू माईता रै साम्ही रोय रोय हार थाकी तौ ई व थारी पीड नै नी पिछाण मकिया। सेवट थनै ई माठ झेलणी पडी।

(८१) राजकवरी आमुवा नै पूछती थकी बोली— इण कडाव अर अगन देवता रै च्यारू मेर सात वळाका दवणा। थै कडिया तणा लुळनै थकै थकै चालो अर म्हैं लारै लारै।

वाक्य सख्या (७८-८१) मे कर्म स्थानीय सज्ञा के साथ नै परसग की अवस्थिति इन वाक्यों के सन्दर्भों मे व्यक्त उद्देश्य को चिह्नक है। इन वाक्यो मे अवस्थित कर्म स्थानीय सज्ञाओ दरद (७८), मौत (७९) पीड (८०) तथा आसु (८१) के अर्थ वैशिष्ट्य को जानने के हेतु इन वाक्यों के सन्दर्भों का ज्ञान आवश्यक है क्योंकि ये सज्ञाए अपने सामान्य अर्थों मे अवस्थित न होकर सन्दर्भों मे वर्णित विषयानुरूप विशिष्टार्थक हैं।

९ ६ १ निम्नलिखित वाक्यों मे सकर्मक क्रिया के मुख्य कर्म की बहुवचन मे किन्तु आमेडित रूप म अवस्थिति होन पर सज्ञा और क्रिया मे एकवचन अन्वय है।

(८२) चानणो करनै खुणो खुणो जोयो, पण उठै तौ को नी लाधो।

९ ७ सामान्य रूप से भाषा मे प्रेरणार्थक वाक्यों का दो कोटियो मे वर्गीकरण किया जा सकता है— (क) आदरार्थक प्रेरणार्थक वाक्य, तथा (ख) सामान्य प्रेरणार्थक वाक्य।

९ ७ १ आदरार्थक प्रेरणार्थक वाक्यो मे सामान्यत क्रियाओ के सकर्मक रूपो के स्थान पर उनके प्रेरणार्थक रूपो की अवस्थिति कर दी जाती है। इस प्रकार के वाक्यो के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किय जा रहे हैं।

(८३) पण अदाता, कदैई म्हनै ई हाजरी रो मौको दिराजो।

(८४) इण भात नगरी मे रौळो दगो ई नी हुवैला अर आपरी मनचाही हुय जावैला। मानो तौ म्हारी आ सला है, पछै राज री मरजी व्है ज्यू हुकम दिरावै।

उपरिलिखित दोनो वाक्यो मे देवणो के स्थान पर उसके प्रेरणार्थक रूप दिरावणो की आदरार्थक अवस्थिति हुई है।

९७२ सामान्य प्रेरणार्थक वाक्यों को केवल प्रेरणार्थक वाक्य न कहकर, कारण-बोधक प्रेरणार्थक वाक्य कहना अधिक उपयुक्त है। इस तथ्य को स्पष्ट करने के लिए कतिपय उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

(८५ क) राम मोवन नै कैयनै उण खनै सूं कागद लिखायौ।

(८५ ख) औ कागद मोवन राम रै कैण सू लिखियौ।

वाक्य संख्या (८५ क) और (८५ ख) की परस्पर तुलना करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि पत्र लिखने का क्रिया व्यापार' मोवन नामक व्यक्ति ने राम नामक व्यक्ति की प्रेरणा से किया है और दोनो वाक्यों का यह सामान्य अर्थ है। इस आधार पर वाक्य-युग्म (८५) के दोनों घटक ही वस्तुत प्रेरणार्थक वाक्य हैं। ऐसा होते हुए भी इन दोनों वाक्यों मे अर्थ भेद है। इस वाक्य युग्म के घटक (क) का अभिप्राय है वक्ता द्वारा मोवन नामक व्यक्ति के कागद लिखने के (किसी अन्य के कहने पर) क्रिया व्यापार के करने के कारण का उल्लेख। इसके विपरीत घटक (ख) का अभिप्राय है मोवन नामक व्यक्ति के किसी अन्य की प्रेरणा से कागद लिखने के क्रिया व्यापार मे प्रवृत्त होने तथा उसे पूरा करने के कार्य का वक्ता द्वारा उल्लेख। घटक (क) क्रिया का रूप प्रेरणार्थक है और घटक (ख) मे अप्रेरणार्थक। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि इस वाक्य युग्म का घटक (क) कारणबोधक प्रेरणार्थक वाक्य और उसका प्रतिरूप घटक (ख) कार्यबोधक प्रेरणार्थक वाक्य।

इसके अतिरिक्त मोवन नामक व्यक्ति अपनी मरजी से भी पत्र लिख सकता है (८५ ग)।

(८५ ग) मोवन आपरी मरजी सू कागद लिखियौ।

वाक्य संख्या (८५ ग) मे मोवन के द्वारा किये गये क्रिया व्यापार का तो उल्लेख है किन्तु उसने वह कार्य अपनी इच्छा से किया है, किसी अन्य की प्ररणा से नही। अत वाक्य (८५ ग) को कार्यबोधक अप्रेरणार्थक वाक्य की सज्ञा से अभिहित करना युक्ति सगत है।

नीचे कारणबोधक प्रेरणार्थक वाक्यों के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(८६) बापजी हाथ जोड अरज करू कै अैडी रीस मत अणावौ।

(८७) राजाजी रै आदेस सू बावडिया ई राजगरू नैं उ चा य मैला मे लेगी।

(८८) अै च्यारू सिरदार जिणनै नाई जाण टाट रो इलाज करवायो, वो नाई थोडी ई है।

(८९) वो माई सू मिलण सारू घणा ई लालरिया लिया, पण लोग मानिया कोनी। हाका धाग सोना रा रथ मे बैठाय राजतिलक करण सारू लेय ग्या।

(९०) आवता ई राजा नै वधायो। चवरा ढुळाय सोना रा रथ मे बिठांण दरबार में ले ग्या। राजतिलक करियो। बामण रो डीकरो देखता देखता राजा बणग्यौ।

(९१) बालग जोगो असमान जोगी होडँ हीडती आठू ईं लुगाया नै आपरै विमाण मे बेसाण ले ढळियो।

(९२) हो तो घणो ई भूल। न्याव करावण वाळा पचा रो घाटिया अेकण सागै मरोड सकतो केई चाळा कर सकतो। लाग्या उत्तन उठाण सकतो। पण चार बरमा सू प्रीत रै खोळियै उणरो अतस बदळग्यो।

(९३) इण बादळ मेल तो मरिया ई जिद नी छूटै। इमी रै कूपले रा छाटा देय असमान जोगी पाछी जीवाड दे।

९ ७ ३ कारणबोधक प्रेरणार्थक वाक्यो मे प्रेरणार्थक कर्त्ता और प्रेरणार्थक समापिका क्रिया रूप म लिग-वचन और पुरुप वचन अन्वय सामान्य वाक्यो के समान ही होता है (प्रकरण सख्या ९ ५) किन्तु प्रेरित अथवा मूल कर्ता के साथ (रै) खनै सू परसर्ग की अवस्थिति होती है।

९ ८ पीछे प्रकरण सख्या (६ ११) मे भाववाच्य तथा कर्मवाच्य क्रिया रूपो की रचना का विवरण किया जा चुका है। यहा इन क्रिया रूपो के वाक्यविन्यासात्मक प्रकार्यों का सक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत किया जायगा। जा भाववाच्य तथा कर्मवाच्य एव इज-भाववाच्य तथा कर्मवाच्य वाक्यो (९४ ९५) के समान

(९४) खिरगोस नै जीवतो आवतो देखियो तो सगळा जीव डरिया कै हमैं तो जीया मौत मारिया जावाला।

(९५) उण सू अँडा तोल नी उठाईजै।

भाषा मे अकर्मक क्रियाओ से निर्मित इस प्रकार के वाक्य हैं जो रूप की दृष्टि से तो नही, कि तु अर्थ तात्विक दृष्टि से भाववाच्य वाक्यो से मिलते जुलते हैं (९६,९७)।

(९६) बेजा काम करण री माफी मागण मे ई म्हनै लाज को आवै नी। पण बिना कसूर करिया म्हारै सू कसूरवार माडै नैं बणीजै।

(९७) छोटकियो हसनै जवाब दियो—म्हारा मन री किणी सू बण नीं आवै, तद बतावणी बिरथा। थारै दाय पडै ज्यू कर न्हाखो।

उपरिलिखित वाक्यो की तुलना करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि वाक्य सख्या (९७) मे बणणो क्रिया के भाववाच्य रूप बणिजणो की अवस्थिति न होने पर भी अर्थ की दृष्टि से इसे कर्त्तरि-वाच्य नही कहा जा सकता। इस वाक्य (९७) मे भाववाच्य क्रिया की अनवस्थिति होने पर अर्थ के आधार पर इसे भाववाच्य वाक्या के अन्तर्गत परिगणित करना आवश्यक है और यह भी आवश्यक है कि क्रियाओ के भाववाच्य इत्यादि रूपो और अकर्मक क्रियाओ की भाववाच्यवत् अवस्थितियो मे, यदि कोई अर्थ पार्थक्य है तो उसका स्पष्टीकरण किया जाये।

९ ८ १ भाषा मे किसी भी क्रिया प्रकृति का चाहे वह अकमक हो अथवा सकर्मक (अथवा प्रेरणार्थक) द्विविधात्मक अर्थ होता है जिसे उक्त क्रिया प्रकृति के (क) क्रिया व्यापार तथा (ख) उक्त क्रिया व्यापार के फल की सज्ञाओ से अभिहित किया जा सकता है। यथा रोटी पोवणौ क्रिया का क्रिया व्यापार है आटा गू धना रोटी बेलना बेली हुई रोटी को तवे आदि पर डालकर आग पर सेंकना इत्यादि और इस क्रिया का फल है उक्त क्रिया व्यापार के द्वारा तैयार की गई रोटी इत्यादि। इस प्रकार प्रत्येक क्रिया प्रकृति के उसके अर्थ की दृष्टि से दो भाग हैं यथा उस क्रिया प्रकृति का वाच्य क्रिया व्यापार तथा उस क्रिया व्यापार द्वारा जनित फल।

उपरिलिखित उदाहरण सख्या (९४ ९५ तथा ९६) म उन वाक्यो म अवस्थित क्रियाओ के भाववाच्य कमवाच्य रूपो से उक्त क्रियाओ के मात्र क्रिया व्यापार का वाचन होता है। इसके विपरीत वाक्य सख्या (९७) मे अवस्थित क्रिया के क्रिया व्यापार द्वारा जनित फल का ही उल्लेख वाक्य के वक्ता का अभिप्राय है। सामान्य रूप से व्याकरण मे क्रिया प्रकृतियो के जिन रूपो का (अर्थात् बणणौ से बणियौ जावणौ तथा बणीजणौ) भाववाच्य कमव च्य रूपो की सज्ञा से अभिहित किया जाता है उनका सम्बन्ध क्रिया व्यापार के फल से न होकर मात्र क्रिया व्यापार के उल्लेख से ही ह ता है। इसके विपरीत भाववाच्य कमवाच्यवत् अवस्थित क्रियाओ का सम्बन्ध क्रिया व्यापार से न होकर तज्जनित फल से होता है।

निम्नलिखित उदाहरणो मे क्रिया प्रकृतियो के क्रिया व्यापार के उल्लेख को स्पष्ट तया लक्षित किया जा सकता है।

(९८) राजाजी थोडा सा गरम हायनै कैवण लागा—आज दस दिन हुयग्या राणी रै मैल सू नवलखौ हार चोरीजग्यौ।

(९९) धणी जवाब दियौ म्हनै पैला जैडौ चेतौ हो ऊडौ चैतौ घर्कै रासीजैला।

(१००) झू पडी रै लारै चावळ मीझरिया है सक्कर छाणीज रीहै अर घी तपाईज रियौ है।

(१०१) डोकरी हसनै कैवण लागी—थारै बरसा ही जद चाद अपडण ही हूस राखती पण अब तौ पहली ई नी लाधोज भू रूख माथै चढण री बात भला क्हो।

(१०२) आ वात वैय वो सूवटा री घाटी मरोडी। डाकण री ई घाटी मुरडीजी। भ्ररडावण री घणी कोसीस करी पण बोल नी निकळिया।

९ ८ २ कमवाच्य-भाववाच्य वाक्यो मे क्रिया के लिंग वचन और पुरुषवचन या तौ मूल वाक्य की कम स्थानीय सनानुसार ह ते हैं (जैसा कि उदाहरण सख्या (१०२)

से स्पष्ट है) अथवा, अकर्मक क्रिया वाले वाक्य से निर्मित भाववाच्य मे पुल्लिंग, एकवचन अन्य पुरुष म (१०३)।

(१०३) पछै उणसू दौडीजियौ कोनी। तडाच खाय'र हेटै पडग्यो।

मुल वाक्य के कर्त्ता के साथ कर्मवाच्य भाव वाच्य वाक्यो म (रै) सू परसग की अवस्थिति होती है (१०४-५)।

(१०४) म्हारै सू नी सळटाईजै जद भगवान रै दुवार हाजर हुजे।

(१०५) पछै ता उणरै बाप सू इं खपेडै बारै को निकळीजै नीं।

१०. संयोजित वाक्य

१०१ तद्सम्बन्धवाचक सर्वनाम सो की अवस्थिति सामान्यतः निर्विकल्प आवृत्ति अथवा अविच्छिन्न घटना चिह्नक के रूप मे होती है। इसकी अवस्थिति द्वारा निर्मित कतिपय सयोजित वाक्यो के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१) मौको मिळता ई अममान जोगी सू कही सो बाता पूछ समचार पुगाय देवैला।

(२) बेटा तो घर गाव अर मा नै छोड बहीर हुया सो अेक छिन वास्तै ई नी ढबिया। हालता हालता तीन दिन अर तीन राता बीतगी।

किन्ही परिसगो मे सो की वो अथवा वा स्थानीय अवस्थिति भी होती है।

(३) आ बाता नै अबूझ समझै सोई अबूझ।

(४) म्हैं तो मरिया ई उणरी बात नीं टाळा। आप करो जकौ न्याव अर आप फरमावौ सो साच है।

१०२ कार्य-कारण वाक्यो मे प्रथम उपवाक्य मे किसी कारण का उल्लेख करके, उसके अनुवर्ती उपवाक्य म उक्त कारण के कार्य अथवा परिणाम का उल्लेख किया जाता है। इन दोनो उपवाक्यो का सयोजन क्यू कै इण वास्तै, इणी खातर इण खातर आदि सयोजको द्वारा होता है। नीचे इस कोटि के वाक्यो के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(क) कारण उपवाक्य + क्यू कै + कार्य उपवाक्य

(५) घर-धणी कै दूजा किणी नै इण बात रो पतो नीं पडण दियो। क्यू कै ठा पडिया को न की राफ्ो पड जावतो।

(ख) कारण उपवाक्य + इणीखातर + कार्य उपवाक्य

(६) गोपणियो सू सावतो वा मास्टर रै सुर मे बोली—भाटिया सू हाल थारो पानो नी पडियो दीसै इणी खातर अैडी बिलळी बात करी।

(ग) कारण उपवाक्य + इण खातर + कार्य उपवाक्य

(७) उणरै रूपाळै डील नै निजर नी लाग जावै, इण खातर उणरा घरवाळा दिन मे दस बार उणनै थुथकी न्हाखता हा।

(घ) कारण उपवाक्य + इणो वास्तै + कार्य उपवाक्य

(९) गरीबा री मनचीती नी हुया करै इणी वास्तै तो वे गरीब है।

(ङ) कारण उपवाक्य + इण वास्तै + कार्य उपवाक्य

(९) आप पैला सूं ई हजारूं बाता समझियोडा हौ, इण वास्तै म्हा टाबरा री समझ आपरै हीयै नी ढूकै।

(च) कारण उपवाक्य + इण वास्तै + कार्य उपवाक्य

(१०) मिनख नै अगलै छिण री जाच नी पडै, इण वास्ते धरती माथै नित नवी नवी वाता अवतरै।

१०३ कै– सयोजित वाक्यो के दोनो अगो, अर्थात् मुख्य उपवाक्यो तथा उत्तरवर्ती कै– उपवाक्यो के पारस्परिक सम्बन्धो के आधार पर कै– उपवाक्यो के विविध, प्रकार्य निर्धारित किये जा सकते हैं। इस प्रकरण मे उन विविध प्रकार्यों का सक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

१०३१ कै– उपवाक्यो की अवस्थिति अपने मुख्य उपवाक्यो की अकर्मक क्रियाओं तथा सकर्मक क्रियाओ के क्रमश: कर्ता एव कर्म स्थानीय प्रकार्यो मे होती है। इस प्रकार्यो के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(११) इसा ढगसा पछै म्हनै तो लागै कै म्हारो कोई दूजो नाव हुय ई नी सकै।

(१२) लोग कैवता कै उण दिन सू ई मा रो जीव उपडग्यो।

इस कोटि के कै– सयोजित वाक्यो के मुख्य उपवाक्यो मे अवस्थित क्रियाओ का वर्ग ही इस तथ्य का नियामक है कि उनके साथ कर्त्ता-स्थानीय (अकर्मक क्रियाओ के लिये) और कर्म-स्थानीय (सकर्मक क्रियाओ के लिये) कै-उपवाक्य अवस्थित हो सकते हैं। इस वर्ग की कतिपय अन्य क्रियाएं हैं जाणणो, मानणो, सुणणो, चावणो, तथा लागणो इत्यादि हैं।

१०३२ व्याख्यक कै– उपवाक्यो के अन्तर्गत दो प्रकार के उपवाक्यो को परिगणित किया जा सकता है।

सामान्य शब्द व्याख्यक उपवाक्यो द्वारा मुख्य उपवाक्य के अन्तर्गत् बात इत्यादि शब्दो की कै– उपावाक्यो द्वारा व्याख्या की जाती है।

(१३) नगर मे किणी रै बस री बात कोनी कै कोई सिंघ नै मार सकै।

(१४) घणा बरसा पैली री बात कै किणी अेक गाव मे मायापत सेठ रैवतो हो। आखै मुलक मे विणज बधियोडो।

अन्य व्याख्यक उपवाक्यो का विनिष्ट आविर्भाविना व्याख्यक के-उपवाक्यों की सज्ञा से अभिहित किया जा सकता है। इन वाक्यो द्वारा मूल वाक्यो मे अवस्थित कर्त्ता अथवा कर्म स्थानीय सज्ञाम्रो की विशिष्ट आविर्भावनाम्रो का उल्लेख किया जाता है।

(१५) तद नगर सेठ हसनै कैयो—धरवाळा दूजी कमाई तो नी पण चौपड पासा साथै बाधिया। पण म्हाम आ मोटी खोड कै बाजी लगाया बिना दाव नी रमू।

(१६) म्हारा वडभाग की थू म्हनै बेटी रै नाव सू बतलाई।

(१७) बानै तो सपना मे ई ठा कोनी कै कैडी जाळ साजो। राजा कवरा रो मू डो वयू नी देखनी चावै। सगळा गताघम मे पडग्या।

विनिष्ट आविर्भावना व्याख्यक वाक्यो के अतर्गत उन के- उपवाक्यो को भी परिगणित किया जा सकता है जिनके सम्बधित मुख्य वाक्यो मे कर्ता एव कर्म स्थानीय सज्ञाम्रो क पूर्व सावनामिक निरधारक विशेषणो–**इसो किसो ग्रैडो, इण विध, इण** भांत आदि की अवस्थिति है।

(क) (१८) कवराणी नै रीस तो अैडी आई कै वा कवर री जीभ खाचलै।

(१९) थोडी ताळ मे ई सयोग री बात ग्रैडा बणी कै पारवती रै राज री राजकवर शिकार रमनै बावडी रै गळाकार न सरियो।

(२०) पछै आपरै धणी साम्ही इगारो करती बोली —इणरा लखण तो ग्रैडा है कै तिरसा मरतो मर जावै तो म्हारी लार टूटै।

(ख) (२१) आफ्ळता–आफळता वो चुकलिया रै तळै मे इत्ता कांकरा न्हाख दीना कै पाणी गळवैरी कोर तक चडग्यो।

(२२) राणी औ म्यानो सुण इत्ती राजी व्ही कै हाथोहाथ हीरा मोतिया रो थाळ भरनै बधाई मे दियो।

(२३) म्है थानै इत्ती ई लडती कै म्हारै बेटा नै आडो मत दो। पण थे थारी बाण नी छाडी।

(ग) (२४) भजन रो नसो इणविध लोगो रै मन्यै मे छायो कै वे बावळा-सा हुयग्या।

(२५) अठी उठी भटका देयनै इण भात फफोडियो कै ठौड-ठौड सू सार री माळ तूटगी।

१०३३ निम्नलिखित उदाहरणो मे प्रथम उपवाक्य के क्रिया व्यापार का उल्लेख कं– उपवाक्य द्वारा होता है।

(२६) छोटकियौ भाई पोहरा मायं इण भांत आळाच करतौ हौ के अणछक उणनै खोपग हिलतौ निगै आयौ। मूजेवडौ सू बधियौ मडौ अठा-उठा खसण लागौ।

(२७) मावचेती सू उभौ हौ कै उणनै किणी रै रावण री तीखी आवाज सुणाजी। पोरायतौ रा कान गळगळा हुयग्या।

(२८) लखी बिणजारौ की कैवण वाळौ हौ कै बामणी रै मन म अेक विचार आयौ।

(२९) मां री इत्तौ कैवणौ हौ कै उणरे हाचला सू दूध री बत्तीस धारावां सागै छूगी।

(३०) राजमैल रै माय राणिया नै दरसण देयनै राव अपरै मुकाम जावतौ हा कै राजा साम्ही धकिया।

उपरिलिखित समस्त उदाहरणो म कै उपवाक्यो म वर्णित क्रिया व्यापार सवथा अप्रत्याशित है।

१०३४ नीचे निर्दशित प्रश्नोत्तर स्थिति मे कै की अवस्थिति उल्लेखनीय है।

(३१) वा उणनै भरमावण सारू अठी उठी री बाता पूछन लागी

जू जू सिध जावै अे?
डीरा खू टण नै

सावै कीकर अे?
कै सवड सबड।

यू बिछावै काई अ?
कै छाजलौ?
भू ओढै काई अे?
कै खेरणौ।

१०३५ कि ही परिसरो म कै- सयोजित वाक्यो मे सयोजक कै अनवस्थिति होती है।

(३२) मैं म्हारै घर म मोकळा मिनखा नै देखिया तौ मन में जाणियौ म्हारी सीढौ बाथै है जीवत सिनान करावै है अर अबै म्हनै बालण नै जासी।

१०४ विभाजक समुच्चय बोधक नियात कै के द्वारा विविध विभाजक समुच्चय बोधक पदबन्धो तथा वाक्यो की रचना होती है।

१०४१ विभाजक समुच्चय बोधक कै से निर्मित कतिपय संज्ञा पदबन्धों के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

(३३) मिणगार कै बणाव कराया लुगाई रै झेडी सू चाटी लग झाळ-झाळ ऊठै। पछै वै तौ लुगाई रै सागै रांणी जी हा।

(३४) मिण कै चांगिया चिमकै ज्यू उण काळै-बोळै अधारै मे ई परिया रो उघाडौ डील पळपळाट करतो हो।

(३५) देखौ भगवान रै कबूल करिया भगत लोग चढावौ कै परसाद कित्ताक दिना ताई चाढैला।

(३६) आखतौ पाखतौ रै गावा मे कठैई भजन, सगत, जागण कै रातीजोगा हुवता तौ लोग परिहार नै अवस करनै बुलावता।

१०४२ विभाजक समुच्चय बोधक वाक्यो मे अवस्थित विविध वाक्यविन्यासात्मक युक्तियो का नीचे सोदाहरण विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

(क) वाक्य$_1$ कै वाक्य$_2$ (३७ ९)

(३७) राजा म्हनै घणी चावै कै वो आपरै कवरा सू घणो नेह करै।

(३८) कवर रो रू रू उभो हुयग्यो। आ कोई छोकरी है कै चडी है। थोडी ताळ मे वा खेत रै बारै माठ मायै आई।

(३९) उणनै टा नी पडी कै चादणी समन्दर नै सिनान करावै कै समन्दर चादणी नै सपाडो करावै।

(ख) कै तौ वाक्य$_1$ (अ?) कै वाक्य$_2$ (४० ३)

(४०) कै तौ म्हारी सेवा वदगी मे खामी है अर कै आपरी भगती म खामी है।

(४१) पछै विना किणी लाग लपेट रै इण भात बोलण लागो जोणै पिंडत जी उणरा बाळ गोठिया व्है। उणरी बोली कै तो अंडी जाणै साचाणी गळै मे लुअयाडा दोय कागला काव काव करै अर कै किणी कागळै नै ई बामण रो वरदान मिळग्यो व्है।

(४२) जागतौ जित्तै कै तौ योगो रमतौ कै सलरा सू कजिया करतौ।

(४३) पोहरायतौ नै आप रै गाढ रो पूरो पूरो पतियारो हो। डरियो तौ कोनी पण इचरज अणू तौ हुयो। आ काई बात हुई। कै तौ घरवाळा भूळ सू जीवतै नै मसाण ले आया कै मडै मे पाछो जीव बावडियो।

१०४३ किन्हीं परिसरो मे कै की अवस्थिति अव्यक्त भी रहती है (४४)।

(४४) हमैं रीस नी रावै अर म्हारै सू मिळण ग्रवस आवै। जावणौ नी जावणौ थे जाणौ।

१०४४ विभाजक समुच्चय बोधक निपात कै से मिलते-जुलते अर्थ मे, चाहे द्वारा भी विकल्पात्मक सयुक्त वाक्यो की रचना होती है (४५,४६)।

(४५) .. ...तौ थोडी निरात सू सोचौ कै नका माईत म्हनैं बीस बरसा तक आपरी गोद मे पाळ पोसनै मोटी करी, बटा गिणौ चाहे बेटी गिणौ, वारै वास्तै तौ नैग म्हैं इज हू, पछै वीकर म्हारै विना वानैं चैन पडली व्हैला।

(४६) विडी माळी पडतां थकां कह्यौ--म्हनैं तौ म्हारा विखा रै पार की सूझै ई नीं। म्है तौ म्हारै मरता, टाबरा रै विखा री राव रत्ती ई अदाज नीं लगा सकू। राणी मा म्हनैं थ भडी कौ चाहे भली, म्हारै नौ लुगाई बिना अेक पलक ई नी सरै।

१०५ सोद्देश्य सयोजक अनै~नै तथा सामान्य सयोजक अर~'र द्वारा पदो पदबन्धो एव वाक्यो का सयोजन होता है।

१०५१ अनै~नै द्वारा सयोजित कतिपय पदो, पदबन्धो एव वाक्यो के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(४६) पयाळ लोक री तौ माया ई अनूठी। सोना रूपा रा रूख। हीरा मोतिया रा भूमका। धरती माथै वावरा री ठौड मिणिया ई मिणिया। .. सुथार रौ बेटौ पयाळ लोक री छिब देखण लागौ। बगीचा मे केसर रै रूख विरणा रै हीडै सस नाग री किन्या हीडता हीं। उणरी छिब अर आव देखता ई सुथार रै डीकरा री जोत सवाई वधगी। दुनिया म फगत दो ई चीजा रूपाळी—अेक कुदरत नैं दूजी नार। बाकी सै पयाळ।

(४७) किणी अेक वन रा हलका मे अेक स्याळ रैवतौ हौ। ओ घणौ चतुर नैं जल ई घणौ हुसियार हौ। मौका माथै उणरी बुध घणी फिरती ही।

(४८) कागली आपरै रूप री वखाण सुणनै घणौ अजस करियौ। .. ..लूकडी तौ बोलती ई गी—जैडी रूपाळी काया है, वैडौ ई भगवान मीठौ अर सुरीलौ गळौ दियौ है, म्हारा हाडा राव नैं। .. ...म्है तौ आपरै मीठा गळा नैं तरसू। गरीबणी माथै दया करौ नै कोई मीठौ गीत उगेरौ। म्है तौ आपरै गळा रौ मीठौ इमरत पीवण अळगी भाय सू आई हू। म्हारै हिवडा री आसा पूरी नै कोई मीठौ गीत उगेरौ। खुसामद रा नसा मे कागला री अकल गैळीजगी।

१०५२ सामान्य सयोजक अर~'र की अवस्थिति म भी कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(४६) छोटा-मोटा राजा उमराव अर ठाकर ठेठर तो उणरै धडा मे जुवता हा।

(५०) अेक हो सेठ। तिणरै बेटा सात अर बेटी अेक। वा सबसू छोटी।

(५१) वा सात दिना ताई लगती सोवै अर लगती जागै।

(५२) राणी री बाता सुणनै राजा उणरै गुण अर समझ माथै घणो ई राजी हुयो।

१०.५.३ अर की विभाजक-संयोजकवत् अवस्थिति के भी कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(५३) सेठ री मोटोड़ी वहू कैयौ—बादळा रो काई भरोसौ, बरसै अर नी बरसै।

(५४) छोटकिया बेटा री रूड़ जाणै कान बणग्यो। सगळी बात नै ध्यान सू सुणी। सुणिया ई सबर राखी। सगळी जणिया रै साम्ही पूछिया बदाम भद दवै अर नी देवै। वो होठा उफनता बोला माथै नीठ थाम देय राखी।

१०.६ निषेधवाचक वाक्यो म निषेधार्थक निपातो की अवस्थिति क अतिरिक्त, लक्ष्यार्थ द्वारा निषेधात्मकता की अभिव्यजना भी होती है। यथा वाक्य संख्या (५५) म,

(५५) इण हिसाब सू मिनख जमारै रै खोलिये री लाज रो तो कुण कूती कर सकै?

वक्ता का अभिप्राय सामान्य प्रश्न का कथन न होकर, लक्ष्यार्थ द्वारा यह अभिव्यजित किया गया है कि "मिनख जमारै रै खोलिये री लाज री कूती" करने वाला कोई नही है अथवा ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिससे यह कार्य हो सकता है, इत्यादि। इसी प्रकार के कतिपय अन्य वाक्यो के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(५६) पखेरू म काज वाळो हूस अर ताकत व्है तो वो इण भात निवळो बिण दाणा चुगै।

(५७) *गुत्ता ई रा कवर री अक्ल सुधी—कठै राजकवरी, कठै अपछरावा, कठै सोनै रा रूप, कठै सोनै रा परवत, कठै मालिया रा भूमका अर कठै दावड।*

आ० राजस्थानी के निषेधवाचक निपात निम्नलिखित है

(क) सामान्य निषेधार्थक ना, न

(ख) अवधारक निषेधार्थक कोनी, कोयनी

(ग) आज्ञार्थक निषेधार्थक मत

(घ) उद्बोधक निषेधार्थक मती

(ड) अभिव्यजक निषेधार्थक नीज

१०६१ सामान्य निपात की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(५८) थू नी मानै तौ पछै काई करू ।

(५६) बेटी री सीख बाप री समभ म नीं आई।

नीं के वैकल्पिक रूप न की अवस्थिति के भी कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(६०) इग्यारै बजिया स्कूल री छुट्टी हुई ही, पण अजै जीमिया न जूठिया भूवा ई बारै गया है।

(६१) पण हार्नै नै डोनै बैठी बोली बोली मुणै है।

१०६२ अवधारक निषेधायक निपात कोनीं की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(६२) अर मिनख भरम करै कै जठै उणनै की नी दीसै उठै की है ई कोनी।

(६३) ठाकर इत्ती ताळ नीठ चुप रिया। वे दारू नेवण म मस्त हा। आधी वाता सुणी अर आधी सुणी ई कोनी।

(६४) असवार मा गी निवायनै बोलियौ—इण ससार म आपरै वास्तै की काम कठण कोनी।

कोनीं के वैकल्पिक रूप कोयनीं की अवस्थिति के भी कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे ह।

(६५) ऊदरी नै आ बात चोखी लागी कोयनी।

(६६) अतावळी अर जास रै कारण वो तौ पूरौ दळियौ ई कोयनी। फटाफट आपरी टूच घमण लागी।

(६७) मा बोली—बटा म्हारी मादगी री दवा वैद खनै कोयनी।

किन्ही परिसरो मे अवधारक निषधायक निपात कोनीं की कतिपय तत्त्वों से अन्तर्निविष्ट अवस्थिति भी होती है।

(६८) खुसामद री मार कदै ई खाली को जावै नीं।

(६९) अेक ही ऊदरी नै एक ही ऊदरी। ऊदरी अचपळी अत घणी ही। उणरै हाथा पगा दिया जगता हा। की न की वाद्धरडाई करिया विना को मानती नीं। ऊदरी घणौ ई समभावती—देख घणी रोळिया मत कर। कदै ई कुमौत मारी जावैला। पण ऊदरी किण री सीख मानै।

१०६३ आज्ञार्थक मत तथा उद्बोधक मती दोनो निषेधार्थक निपातो की अवस्थिति (जैसा कि इन दोनों निपातों के नामकरण से स्पष्ट है) अपने सगत समापिका क्रियारूपों के साथ ही होती है। इन सगत अवस्थितियो के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

(७०) म्हनैं तौ फगत आइज बात कैंवणी है कै थे म्हारी जै मत बोलौ, इण भगती री जै बोलौ।

(७१) थूं आ मत जांणै कै थारी काळी मांसी जलम सूं ई औ धमकौ लेय जलमी व्हैला।

(७२) पगार म्है आपनैं मूडै मांगी देवूंला, पण आप जावण री बात तौ करौ ई मती।

(७३) ..... बोली—बेटी अर पावणैं नैं तौ अेक दिन निभावणौ ई पड़ै। राणी वणिया जामण नैं बिसराजे मती।

१०६४ अभिव्यजक निषेधार्थक निपात नीज की सामान्य अर्थ है "कभी नहीं, कभी न।" नीज की अवस्थिति लगभग मत और मती की अवस्थिति के परिसरों में ही होती है।

(७४) जान बहीर हुवती वगत बींद री बाप कैयौ—जानिया सूं कोई नवटाई कै बदमासी हुयगी व्है तौ सिरदार माफ करावैं। पडूत्तर में बेटी री बाप बोलियौ—आप सूं गळती नीज व्है।

नीज का मुख्य अभिव्यजक प्रकार्य है किसी के कथन में अन्तर्निहित अमंगल की आशंका के निराकरण की वक्ता द्वारा उत्कट इच्छा (७५)।

(७५) राजा रा मूंडा सूं आ बात सुणनैं राणी गोद सूं आपरौ माथौ ऊंचौ करियौ। बोली—अैड़ी बात आपरा मूडा सूं नीज काढौ। आप सूं बत्ता म्हनैं कवर थोडा ई लागै.. .. ।

१०६५ तुलनावाचक उभयपक्ष निषेधवाचक वाक्यों में दोनों उपवाक्यों में निषेधार्थक निपातों की अवस्थिति होती है। इस कोटि के वाक्यों की विविध सम्भावनाओं के उदाहरण नीचे सूचित किये जा रहे हैं।

(क) नीं . .. नीं

(७६) बामणी बोली—औ गैणौ गाठौ नीं थारौ है नी म्हारौ। औ तौ सगळौ राजकवर रौ है।

(ख) नीं.. .. अर नीं......

(७७) नी आप लोग पाछा अेक दिन में टाबर हुय सकौ, अर नीं म्हैं अेक दिन में आप लोगां री उमर उलांघ सकूं।

(ग) नी तौ . .. अर नी, नी तौ......नी .... अर नी......

(७८) सेवट कायौ होयनैं राजा कैयौ—राणी, थनैं थारै कंवरा री इत्तौ डर है अर थूं म्हारी बात री पतियारौ ई नी करै तो वचन राखण सारू म्हैं पैली

ई मर जावू। नी तौ म्हैं जीवतौ रैवूला अर नी राजकवरा रै वास्तै दुमात री जोखौ व्हैला।

(७६) बामणी बोली—नी तौ म्हनै पीवर जावणौ है, नी सासरै अर नी नानेरै।

(घ) ......नी .... ~ ......न... .

(८०) काई दसै कै राणी सौ भाटा री मूरत ज्यू बैठी छबरा-छबरा आमू ढळकावै। बोलै नी कोई चालै।

(८१) अेक राजा रा कवरजी की भणिया न कोई पडिया, मा मूरख।

(८२) बोलै न चालै। आप रै किरतब मे तन मन मू लाग रिया है।

१०६६ विकल्पात्मक निषेधवाचक वाक्यो मे प्रथम उपवाक्य मे कै तौ, तथा अनुवर्ती उपवाक्यो नींतर आदि निपातो की अवस्थिति होती है।

(८३) राजा-राणी इणरौ काई जवाब देवता। खीभ करनै बोलिया—कै तौ इण भेद रौ पतौ लगावौ, नीतर म्हैं सगळा रा माथा कलम कर दिरावूला।

१०६७ विकल्पात्मक सकारात्मक निषेधवाचक वाक्यो मे दोनो उपवाक्यो का कै द्वारा सयोजन होता है। इनमे पूर्ववर्ती उपवाक्य सकारात्मक तथा उत्तरवर्ती उपवाक्य निषेधवाचक होता है।

(८४) जे इण सिंघ नै मारणा री काम गळै पडग्यौ तौ सिंघ तौ मरैला कै नी मरैला पण म्हनै तौ मरणौ ई पडमी।

किन्ही स्थितियो मे कै की अवस्थिति नही भी होती।

(८५) असगान जोगी नै यौ—थे डरौ तौ म्हारै वास्तै वा इज बात, नी डरौ तो म्हारै वास्तै वा इज बात।

(८६) म्हैं लखण राखू तौ म्हारी मरजी अर नी राखू तौ म्हारी मरजी।

(८७) म्हैं बोलू जकौ ई झूठ अर नी बोलू जकौ ई साच।

१०६८ इस प्रकरण मे सामान्य निषेधार्थक निपात नीं की आवृत्ति एव उसके साथ कतिपय अन्य तत्त्वो की अवस्थिति के उदाहरण दिये जा रहे हैं।

(क) नी नी (८८)

(८८) जे बीकांणै रै राजकवर नै इण बात री सोय हूवती कै सूवर री सिकार चढिया, आगै नी नी म्हैं जैडी अजोगती बाता वणैला तौ वो भवै ई जैमाणै री सीव मे सूवर रै लारै घोडौ नी दावतौ।

(ख) नी ई सई (८६)

(८६) ओ नी मानै तौ नीं ई सई, म्हनै तौ सात लटका कर'र इण आगै निमणो पडै ।

(ग) नी जणै (६०)

(६०) नी जणै भूखा भळै मरसा । पाणी है न आटो ।

१०७ कालवाचक सर्वनाम जद, तद इत्यादि से संयोजित वाक्यों की कोटि में जद तद हेतुमद् शब्द एक प्रमुख उपकोटि के रूप में परिगणित किये जा सकते हैं। इस उपकोटि के वाक्यों के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत है ।

(६१) वेमाता राम जाणै क्यूं अवळा लुगाई रा अंतस मे प्रेम करण री चावना भरी । जद उणरी की आपी नी तद क्यू उणनै प्रेम री हिमाळो सूप्यो ।

(६२) खुद भगवान रो ई जद आपरै आगै पसवाडो नी फिरै तद बापडै मिनख री तौ बिसात ई काई ।

उपरिलिखित दोनों उदाहरणों में काल के साथ-साथ प्रासंगिक रूप से हेतुमद् भाव का समाहित उल्लेख है, किन्तु तद के स्थान पर तौ का आदेश होने पर हेतुमद् भाव का उल्लेख आनुषंगिक हो जाता है (६३, ६४)।

(६३) म्हारी भगती रै जोर सू जद चील आयनै मटी में हार टाक जावै तौ लोग सिघ रै मरणै री धीजो क्यूं नी करै ।

(६४) इण उपरात जद कालै वाळै बरसतै पाणी में पावणा आपरै डील माथै अेक ई छाट नी लागण दी तौ आ बात सुणता ई जाणै सगळा गाव वाळा री बचियोडी सुधबुध ई जाती री ।

१०७१ जद तौ वाक्यो के हेतुमद् भाव समाहित कालवाचक अर्थ के अतिरिक्त, केवल कालवाचक अर्थ भी होता है (६५, ६६)।

(६५) बावडी पार करिया जद हवा री पोळ आई तौ वारी जीव में की नेहचो हुयो ।

(६६) गाय रै बिछियै नै जद इण वात रो पतो पडियो तौ वो ठळाव ठळाक रोवण लागो ।

निम्न वाक्य म जद की "जब कभी" के अर्थ मे अवस्थिति हुई है (६७) ।

(६७) जद उणरै मूडै माथै दया हूवती तौ देखणवाळा नै अैडो लखावतो कै इण नै रीस तो सपनै मे ई नी आवती व्हैला ।

निम्न वाक्य में जद की अवस्थिति "जैसे ही" के अर्थ में हुई है।

(९८) जद मेत री धणी जाळ भेळी कर'र पावडा पचासे'क आगौ आयौ कै कागलौ तो क्राय क्राय करणौ माडियौ।

१०७२ कालवाचक वाक्यो मे सामान्यतया जद की ही अवस्थिति होती है। इस कोटि के वाक्यो मे जद की विविध अर्थों मे अवस्थितियो के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(क) जद 'तब"

(९९) दो र्तीन घडी रात ढळी जद पाछौ उणनै चतौ बावडियौ।

(ख) जद ई "तभी तो"

(१००) दो घोटी जोर मूं बोलनै जवाब दियौ—म्हनै तौ दीसै है जद ई आपनै अरज करू।

(ग) जद इज "तभी तो"

(१०१) थू म्हारै माथै भरोसौ कर। म्हारी बाई, म्है दुनिया री घणी घणी ठोकरा खाई हू, जद इज म्हैं इणरा हथकडा नै आज मावळ समभण जोग वणी हू।

(घ) जद इज तौ "तभी तो"

(१०२) बौलियौ—अबखी मळै कद पडै, अबखी पडी जद इ तौ इण समदर रै काठै आयौ।

(ङ) जद तो 'तब तो"

(१०३) थू ई म्हारै मू चोज राखै जद तौ बात साव ई खूटगी। थू निरभै रै।

(च) जद सू "जब से"

(१०४) म्हारा लोक थपिया जद मू जको भेद परगट नी करियौ वो थानै बतावू।

१०७३ तद की कतिपय अवस्थितियो के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(१०५) बामणी री वा काणवी डिकम्प बटी परणावण जोग हुई तद वा आपरै धणी नै कैयौ कै मोटोडी बेटी री माप रै साथै अर उण री बटी रै किणी लखपती रै बेटे साथै व्याव करै तौ घरवास राखै नीतर वा आपरै पीहर जावै।

(१०६) कुदरत री सुभाव आपमूं दसी वुण जाणे, तद आ वात आप सूं ई अछाणी कोनी व्हैला कै जीव-जिनावर किसा नित भेळा व्है।

(१०७) असमान जोगी पणी वटापोरिया करी तद वा नीठ मानी।

उपर वर्णित जद संयोजित वाक्यों और इस प्रकरण मे वर्णित तद-संयोजित वाक्यो मे अर्थ भेद है। जद के द्वारा मात्र काल-क्रम का अर्थ द्योतित होता है जबकि तद-संयोजित वाक्यो मे काल-क्रम के अतिरिक्त तद-उपवाक्य म कथित व्यापार अपने पूर्ववर्ती वाक्य मे कथित तथ्य का स्वाभाविक अनुसरण, फल अथवा परिणाम इत्यादि होता है।

१०७४ जणे की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं।

(१०८) गोडै तणो पाणी आयो जणे भळै कैयो—मान जा, रामकवरी मान जा।

(१०९) अबै तो राणी री हार हाथ जावै जणै वात विणै। इण काम सारू म्हनै जावण दो।

१०८ प्रतीतिवाचक वाक्यो मे वक्ता जाणे चिह्नक के द्वारा किसी प्रस्तुत के विषय मे, अपनी प्रतीति के अनुसार कथन करता है। वक्ता की प्रस्तुत विषयक अभिव्यक्ति के मुख्यत तीन रूप है—(क) प्रतीयमान रूप मे, (ख) भासमान रूप मे तथा (ग) स्वभावप्रवण रूप मे।

१०८१ प्रस्तुत की प्रतीयमान रूप मे अभिव्यक्ति के कतिपय उदाहरण नीचे दिये जा रहे है।

(११०) डावड़ी रै मूडा सू आ वात सुणता ई वाई तौ जाणे चित्रवरणी हुयगी।

(१११) हाथिया रै गळै भूलता वीरघट, ऊटा रै गोडा लूमती नेवरिया, घोडा रै पगा खणकता आवला री गमक सू काकड री कण कण जाणे सुनाग हुयग्यो।

(११२) फेफ रै फूला री हार गळा मे घालता ई राणी रै रूप म जाणे मोळै चाद जुडग्या। उणरै जोवन म जाणे सूरज री उजास घुळियो।

१०८२ भासमान रूप मे अभिव्यक्ति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(११३) ताळी खाय पेटी री ढकणी काई उघाडियो जाणे उण सारू सुरग रा पाट खुलग्या व्है।

(११४) अणवक डाढाळो ढवियो। जाणे काई उणरै चारू पगा नै मेंठा भाल जम कर दिया व्है।

(११५) राजा खुद घाड़ै चढियौ मारत आपरी निजरा राजकवरा री निमडा पणौ देखियौ तौ जाणै सोर नै तिणग बताई।

१०८३ प्रस्तुत की स्वभावप्रवण रूप मे प्रतीति की अभिव्यक्ति के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(११६) बामणी आरसी मे आपरौ मूडौ जोयौ तौ इण भात डरी कै जाणै कालिदर री फण जोयौ।

(११७) इण मे कदेई नागा हुय जावै तौ रावळै जाणै जित्तौ म्हानै डड दिरावजो भलाई।

१०९ प्रथम काटिक जकौ सयोजित वाक्यो म मूल उपवाक्य म किसी विशिष्ट प्राणी, वस्तु अथवा विषय का कथन करके, जकौ-उपवाक्य मे उक्त प्राणी, वस्तु अथवा विषय पर वक्ता द्वारा टिप्पणी की जाती है (११८ २०)।

(११८) पण राजकवरी तौ कवर री कळाई साव अबूझ ही। सपनावाळी बात सुणनै कवर माथै मोहित व्हैगी। मोटा बाजणिया लोग तौ साची बात नै छिन्काय दै। अर अेक औ है जकौ सपनावाळी बात नै ई छोडणी नी चावै।

(११९) दुनिया म औ वगत सबसू अमोलक है, जकौ थे हाया करने गमाय दियौ।

(१२०) जगळ रै पछी जिनावर अर कीडी मकोडा सारू वो पैलौ अर आखरी मिनख हौ जकौ वारौ राजा बणियौ।

इस कोटि के वाक्यो म कथित प्राणी, वस्तु अथवा विषय के वैशिष्ट्य के सकेत करने वाले चिह्नक अथवा निर्धारक विशेषण सामान्यत विद्यमान रहते है, जिनके आधार पर जकौ उपवाक्य मे तद्विषयक टिप्पणी की जाती है। उपरिलिखित तीनो उदाहरणो म अेक (११८), औ (११९), वो (१२०) आदि चिह्नक अवस्थित हुए हैं। नीचे काई (१२१), अैडौ (१२२), अैडौ काई (१२३), इसरी (१२४), किसौ (१२५) आदि की चिह्नक रूप म अवस्थिति के उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे है।

(१२१) कुभारी रा गधा अर छान मायला मोगरा विना देखिया बताय दिया तौ अबै इण देगची रै माय काई चीज है जकौ बतावौ।

(१२२) सतगरू तौ अैडा गिरस्त म वळिया जकौ नाव लेवण री ई वळा नीं री।

(१२३) गाव री अैडौ काई सत निकळग्यौ जकौ बऊ नै भारी पगा नाव रै बारै जावण दा।

(१२४) पेट पाणा व्है। हू तौ थानै ग्यासू। इसरी छूट दू जकौ ई म्हारी महर वाना है कै मरिया पैली अेकर थारै इस्टदेव रौ जाप करौ।

(१२५) म्हे किसी डाकी हू जकी फेर रोग्या पीवी । आज री टक तो थे तेरे मोगरा घणा । थवै तक्लीफ करण री की जरूरत कोनी ।

१०.६.१ द्वितीय कोटि के जकी सयोजित वाक्यो मे, जकी उपवाक्य म किसी प्राणी, वस्तु अथवा विषय का इस प्रकार उल्लेख किया जाता है कि पूर्ववर्ती और अनुवर्ती उपवाक्यों म विविध सम्बन्धो को लक्ष्य किया जा सकता है। नीचे इन सम्बन्धो का स्पष्टोल्लेख करते हुए उदाहरण दिये जा रहे हैं ।

(क) हेतुहेतुमद् भाव सम्बन्ध (१२६) ।

(१२६) जकी मत अमावस री रात चाद उगाय सकै, चाल्ती नदिया नै ढाब लवै, उण वास्तै तो नवलखा हार री पतो लगावणो साव सैंग बात है ।

(ख) विरोधात्मकता भाव सम्बन्ध (१२७)

(१२७) पण दर असल आपरै सोचण म जकी भलाई अर मगळ री बात है, वा म्हारै सोचण म दुख अर क्लेस री बात है ।

(ग) अप्रत्याशित भाव सम्बन्ध (१२८)

(१२८) जका दिना टाबरपणै म्हे ढला डूगी रा नित न्याव रचायनै वारा घणा घणा कोड करती, वा ई दिना अेक दिन म्हारी ई अणचीयो न्याव हुयायो ।

(घ) सशर्तकथन सम्बन्ध (१२९)

(१२९) किणी सू जकी काम वण नी आवैंना फगत वो काम ई म्हैं करूंला ।

(ङ) कार्य-परिणाम सम्बन्ध (१३०)

(१३०) म्हैं तो अेक नाजुक आदमी हू । लाठो है तो आ भगती है । जकी ई भगती करैला वो रामजी री पद पा सकैला ।

(च) शर्त स्वीकृति कथन (१३१)

(१३१) थू इणरी मनजाणी कीमत माग । जकीई मागैला वा ई देवू ला ।

(छ) कार्य फलाफल निर्देश कथन (१३२)

(१३२) कालिंदर री विस भूरतै जकी उणरी मिण री लोभ करै, उणनै मरणो ई पडै ।

(ज) घटना अतिरिक्त प्रभाव कथन (१३३, १३४)

(१३३) भाग्या री अेक नाजुक छोकरी मगळी मूरापणो भाड न्हाकियो, मा जनी गमियो जकी इकलाई म ।

(१३४) डाकरी भूवा ई मरै नै बादरी रो डर जकी न्यारी ई। मूसनै काटो हुयगी ।

१०६२ तृतीय कोटि के वाक्यों में जको ई-उपवाक्य द्वारा किसी प्राणी, वस्तु अथवा विषय के वैशिष्ट्य लक्षण का निर्देश करके, अनुवर्ती उपवाक्य में पारिभाषिक कथन की पूर्ति की जाती है।

(१३५) बाकी तौ सगळा अफडा है। भगती करतो बगत जको ई आपरी सुध-बुध विसर जावै, म्हैं उणनै साची भगती कैवूं, अर यूं दुनिया में अफडा री किसी कमी है।

(१३६) जको ई मारग सामी आयौ, वा तौ नाक री सोय भरणाटै दौडती ई गी।

(१३७) थौ जको ई काम करै इणनै मरजी सूं करण दो। इणनै थें कदेई ओडौ मत दिया करौ।

१०६३ चतुर्थ कोटि में उन वाक्यों को परिगणित किया जा सकता है जिनमें पूर्ववर्ती जको उपवाक्य का नामिकीकरण करके निर्मित पदबन्ध का उत्तर उपवाक्य में उपयुक्त सज्ञा स्थानीय अन्तर्निवेश कर दिया जाता है। यथा (१३८) में "जको चोखी पढाई करी" पूर्व-उपवाक्य

(१३८) जको चोखी पढाई करी, वो पास हुयौ

का नामिकीकृत रूप 'चोखी पढाई करी जको" की वाक्य संख्या (१३८) के उत्तर उपवाक्य में "वो" के स्थान पर अन्तर्निवेश करके निम्न वाक्य निर्मित होता है (१३९)।

(१३९) चोखी पढाई करी जको पास हुयौ।

वाक्य संख्या (१३८) में एक सामान्य तथ्य का कथन किया गया है, किन्तु उसका रूपान्तरित पर्याय वाक्य (१३९) वक्ता के अभिप्राय की अभिव्यंजना करने वाला और व्यक्ति विशेष के प्रति कथित वाक्य है। वाक्य संख्या (१३९) के सन्दर्भानुसार विविध अभिव्यंजक अर्थ हो सकते हैं।

इस कोटि के वाक्यों के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१४०) उणरी सास घर घर फिरनै कै यौ—इत्ता दिन काना सुणी जको बाता साख्यात साम्ही हुवणा।

(१४१) हाथ जोडनै बोलिया—हुकम, आपरै दाय पडै जको घोडो टाळ लिरावौ। घोडा रा गुण आप सूं काई अछाना है।

(१४२) राजा अर कवर री जोस तौ दवता सारू ई हुया करै। दवै अर गिरणावै जकै नै वै मारिया बिना को छोडै नी।

(१४३) म्हारी अरज सुणिया पछै, अन्नदाता मरजी आवै जको म्हानै डंड दिरावै।

(१४४) कसूर करियौ जकै रै पगा माथा निवाय माफी मागौ। औ कठै री न्याव। म्हैं की ऊधौ काम नी करियौ।

१०.६४ *जकौ-संयोजित वाक्यों में जकौ के अन्य विविध प्रकार्यों का निर्देश करते हुए नीचे उनके उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।*

(क) जकौ की कैं स्थानीय अवस्थिति (१४५, १४६)

(१४५) *राजा जी रै काना में राम जाणैं काई मुरकी न्हाखी जकौ हायौ हाथ जवत हुयोडा गांव पाछा वाल करवाय लिया।*

(१४६) अवार एक कागलै रौ भाग जागौ जकौ माखण मीसरी लागोडी अेक रोटी हाथ आई।

(ख) जकौ की 'सो' के अर्थ में अवस्थिति (१४७-५०)

(१४७) डेडरिया री बात सुणनै हाथी हुसण लागौ जकौ व्हा ई नी करै।

(१४८) अदाता, आपा रै गाव रा मोटा भाग जकौ अैडा पावणा रा दरसण तौ हुया।

(१४९) अबै म्है काई करू अर कठै जावू। रोवण मार्थं जोर जकौ बैठी आपरै करमा नै रोवू।

(१५०) हार तो गियो जकौ गियो ईं, फेर की सवाय मे हूतो।

(ग) जकौ की 'तो' के अर्थ में अवस्थिति (१५१)

(१५१) लडाई में मरता तौ मिनख री मरणौ हुतौ। अबै मरौला जकौ वा गिंडक री मौत व्हैला।

(घ) जकौ की "अत" अथवा "इसलिए" के अर्थ में अवस्थिति (१५२, १५३)

(१५२) हुसती हुसती ई बोली—राजा म्हे तौ जाणती कै थू इत्तौ मोटौ राज सभाळै जकौ थारै मैं की न की तौ अक्कल व्हैला उज।

(१५३) दोनू राजकवर कैयौ—रमण खेलण रा दिन है, जकौ धूड मे रमा। म्हारी ममा तौ भूडी है कोनी।

(ङ) जकौ की "पर", "जबकि" के अर्थ में अवस्थिति (१५४)

(१५४) छान रै माय उभा रा गाभा आला व्है जकौ थे तौ मारग चालता आया।

(च) जकौ की "जोकि" के अर्थ में अवस्थिति (१५५-५७)

(१५५) बेटी हौळैंसी'क पडूत्तर दियौ—आ कोई नवादी बात तो कोनी जकौ पूछण री जरूरत पडै।

(१५६) इण आश्रम म म्है अणगिण जीव-जिनावरा नै मारिया जकौ म्हैं आप सगला ने विगतवार बताय चुकियो हू।

(१५७) बोलिया—नीं अदाता, *म्हारी अवल भाग थोडी ई लायाडी* जकौ म्हे अैडा भूडा गचळका काढू।

१०.६५ किन्ही परिसरो मे जकौ के स्थान पर जिण की अवस्थिति भी होती है (१५८-६३)।

(१५८) पण हे अंतरजामी, थूं म्हारी इत्ती करडी परख क्यूं ली। जिणनैं पुरवार मडी सूं बारैं काढियौ, उणनैं ई हाव भाव सूं पाछौ रिझाणौ है।

(१५६) जिण दिन इण धरती सूं राजपूतां री वीरता खूट जावैला उण दिन आ दुनिया ई खूट जावैला।

(१६०) गवाडी आस करनै आयौ जिणनैं हाथ सूं ई उत्तर दियौ, मूंडै सूं नी।

(१६१) बेटी! जिण भांत थूं अणचीती कवराणी बणी, उणी भांत अेक दिन म्हैं ई अणचीती बीनणी बणी।

(१६२) जिण तरैं थूं उठै पूगौ वा सगळी बात माडनैं बताजे।

(१६३) चोरी करनैं धनमाल जिणकिणी नैं दियौ है, उणरी म्हनैं ठा पडिया रैसी।

१०.१० रीतिनिर्धारक ज्यू-त्यू संयोजित वाक्यों को उनमें अवस्थित ज्यू, त्यू आदि संयोजकों के आधार पर विविध कोटियों में विभाजित किया जा सकता है। नीचे इन वाक्यों का सोदाहरण विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

१०.१०.१ प्रथम कोटि में उन वाक्यों को परिगणित किया जा सकता है जिनमें पूर्ववर्ती और अनुवर्ती दोनों उपवाक्यों में ज्यू की आवृत्ति होती है।

(१६४) कवर थोडी सी सानी कर देता तौ रैयत रौ औ समन्दर सगळा राज नैं गिट जावतौ। राजा राणी रौ की जोर नी चालतौ। अेक पलक में ज्यू राजकवर चावता ज्यू होवणौ पडतौ। खुद भगवान ई उण होवणा नैं टाळ नी सकतौ।

(१६५) सेनापति हाथ जोड़नैं बोलियौ—अदाता, आप धणी हौ, ज्यू इछा व्है ज्यू कर सकौ।

(१६६) राजा जी देखियौ कै साल भर पछै ज्यू भरैं पडैला ज्यू सलट लेवू ला। आज क्यू अडावू।

उपरिलिखित वाक्यों में प्रथम ज्यू का लोप करके इनके निम्नलिखित वैकल्पिक रूप भी हो सकते हैं।

(१६४क) . अेक पलक में राजकवर चावता ज्यू होवणौ पडतौ।

(१६५क) अदाता, आप धणी हौ, आपरी इछा व्है ज्यू कर सकौ।

(१६६क) राजा जी देखियौ कै साल भर पछै भरैं पडैला ज्यू ई सलट लेवू ला।....

किन्तु निम्नलिखित वाक्य का उपरोक्त प्रकार का वैकल्पिक रूप व्याकरणिक दृष्टि से सम्भव नहीं है।

(१६७) राम ज्यू मामी बोलती ग्यौ ज्यू उणरै जोसा नैं धणी रीस आवती री।

कारण-कार्य वाक्यों में दोनों उपवाक्यों में ज्यू की अवस्थिति अनिवार्य है, जैसा कि वाक्य सख्या (१६७) से स्पष्ट है। इस प्रकार के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१६८) रामूडो आज दिन ज्यू पढाई करै है ज्यू इज करतो रियो तो इण नै कोई फेल नी कर सकै।

१०.१०.२ द्वितीय कोटि के वाक्यों में प्रथम उपवाक्य में ज्यू तथा द्वितीय उपवाक्य में त्यू की अवस्थिति होती है।

(१६९) ज्यू माया बधती गी, त्यू उणरो लोभ बधतो गियो। हीयै री दया माया सूरगी।

(१७०) असमान जोगा ज्यू आसू न्हवै त्यू बस्तो राजी व्है। खेवती जुगाया उणनै न्हाली इज घणी लागै।

(१७१) सेठा री बात कह्या—फगत अठै ई कांई, कई बाता में थारी कम नी पूगै पण थानै इणरो बेरो कोनी। आपरी करामाता री आपनै अगू तो वेम है। ताम दिना ताई भठै रईश री आणद लिरावां। पछै ज्यू रावळी इच्छा व्हैला त्यू व्है जावैला।

उपरिलिखित वाक्य में प्रथम उपवाक्य में ज्यू का लोप तथा द्वितीय उपवाक्य में त्यू के स्थान पर ज्यू का आदेश करने से वाक्यार्थ में अर्थ भेद हो जाता है। प्रथम वाक्य का अर्थ है पीछे जैसे आपकी इच्छा होगा (अर्थात् जिस इच्छा का वक्ता को ज्ञान है) वैसा हो जावेगा। इस वाक्य के परिवर्तित रूप (१७२) का अर्थ है 'पीछे जैसा आपका इच्छा होगी।

(१७२) पछै रावळी इच्छा व्हैला ज्यू हुय जावैला।

(अर्थात जैसा भी आप चाहेंगे) वैसा ही जावेगा।"

१०.१०.३ तृतीय कोटि के वाक्यों में प्रथम उपवाक्य में ज्यू तथा द्वितीय उपवाक्य में उण भात, वो इत्यादि की अवस्थिति होती है (१७३ १७४)।

(१७३) प्रजा रै लारै ई तो राजा रा सोभा है। ज्यू पाणी बिना सरवर अडोळो लागै उण भात बिना प्रजा रै राजा अडोळो लागै।

(१७४ ज्यू कुम्हारी बतायो वा री वा ठरको निजर आयो।

१०.१०.४ चतुर्थ कोटि के वाक्यों में प्रथम उपवाक्य में ज्यू ज्यू तथा द्वितीय उपवाक्य में त्यू त्यू की अवस्थिति होती है।

(१७५) ज्यू ज्यू लोग डर बतायो अर वरजियो त्यू त्यू उणरै मन में घणी घणी हूस बधी।

(१७६) ठकराणी घणी री रग पिछाण ली। वा ज्यूं ज्यूं कौल तोडण री बात करती ठाकर ज्यूं-ज्यूं कौल रै जाळ मे बन्ता फदीजता गिया।

१० १० ५ पचम कोटि के वाक्यो मे दोनो उपवाक्यो का मान ज्यूं-ज्यूं द्वारा सयोजन होता है।

(१७७) सगळा गाववाळा कवराणी री घणी घणी मान राखण मारू खपता ज्यूं-ज्यूं उणरी घणी मरण हुवतो।

१० १० ६ षष्ठ कोटि के वाक्यो मे दोनो उपवाक्यो का ज्यूं ई द्वारा सयोजन होता है।

(१७८) वा तौ चुपचाप आयी ज्यूं ई पाछी आपरै मुकाम पौच ग्यो।

(१७९) पण म्हारी काई दोस। मारता कैयी ज्यूं ई करियो।

१० १० ७ सप्तम कोटि मे प्रथम उपवाक्य मे ज्यूं ई की और द्वितीय उपवाक्य मे तौ, कै इत्यादि की अवस्थिति होती है।

(१८०) वा खुसी मे उडाण भरतौ ज्यूं ई आपरै नीवडै माथै बैठियो तौ उणनै डाळै रै नीचे ऊभी अेक लोकी निगै आई।

(१८१) वो घरै जायनै ज्यूं ई रोटी खावण नै बैठी कै बारै सू पुलिस वाळै उणनै हेलौ पाडियो।

किन्ही स्थितियों द्वितीय उपवाक्य मे किसी सयोजक की अवस्थिति नही होती।

(१८२) वो ज्यूं ई अठै पुगै, उणनै म्हारै खनै मेल दीजे।

(१८३) नरमा ज्यूं ई रिजल्ट दखियौ, नपैलडा म्हारै खनै दुज आया।

१० १० ८ इस कोटि के वाक्यो मे पूर्ववर्ती उपवाक्य का उत्तरवर्ती उपवाक्य से सयोजन होता है तथा दानो उपवाक्यों के वाक्यो की पारस्परिक समानता का निर्देश।

(१८४) कोई कैवता कै म्है सत नै धरती माथै चालै ज्यूं पाणी माथै चालता देखिया।

(१८५) पेट मे हौल री उठाव हुयो सो दो घडी मे कबूडी लुटै ज्यूं लोटनै प्राण छोड दिया।

(१८५) च्यारू कवर उणरी आखिया मे सूल खुबै ज्यूं खुबण लागा।

उपरिलिखित वाक्यों मे ज्यूं से सयोजित दोनो क्रिया व्यापारों की पारस्परिक समानता निम्न वाक्यों मे अभिव्यक्त समानता से तुलनीय है।

(१८७) वो बगनो व्है ज्यूं उणरै उणियारै साम्ही टुग-टुग जोवण लागो।

(१८८) कवर टावर री ळाई आडो लेवतो व्है ज्यू बोलियो—म्हारा करम नीज फूटै ।

(१८९) थोडी ताळ तो वा बैठु ठी व्है ज्यू बैठी री, पण हवा रो अेक जोर सू भोळो आयो अर वा जमी माथै गुडगी ।

१०.१०.९ निम्नलिखित वाक्यो म ज्यू उपवाक्य की अवस्थिति संज्ञा+परसर्ग बन है जिसका प्रकार्य है मुख्य उपवाक्य से क्रियाविशेषण क रूप मे सगति ।

(१९०) रैयत री सगळी खुसिया लोप हुयगी । लुगाया, टावर अर बूढा ठाडा मुणियो जका रो ई माथो अर डील सुन्न हुयग्यो, जाणै बारै माथावर बाण बैग्यो व्है ज्यू ।

निम्नलिखित वाक्य म ज्यू उपवाक्य की अवस्थिति जको मे मिलकर "ताकि" के अर्थ म हुई है ।

(१९१) सोनजी नै अठै ला जको समभाऊ ज्यू ।

१०.१०.१० निम्न वाक्यो म ज्यू की अवस्थिति जको से तुलनीय है । इन वाक्यो म वक्ता ने ज्यू का प्रयोग जैसा कुछ, वैसा कुछ के अर्थ मे किया है ।

(१९२) तोडै री सासू ई खासी भली समभणी ही । वा हाजरिया नै पावणा कैयो ज्यू नी बतायो ।

(१९३) बोलिया—म्हनै आपरी आ बात ई मजूर है । बारै महीना पछै आप हुकम फरमावोला ज्यू करूला ।

(१९४) इण घर मे थारो अजळ है, मीर सस्कार है, थारी मरजी व्है ज्यू खा पी । थनै कुण ई ओडी देवणियो नी ।

१०.११ सम्बन्ध वाचक परिमाण वाचक सर्वनाम जितरो जित्तो गुणवाचक विशेषण संज्ञा तथा क्रिया पूर्व परिसरो मे अवस्थित होकर मान अथवा सख्येयता का बोधक होता है । सख्येयता बोध केवल सख्येय संज्ञाओ के साथ आसत्ति मे, और वह भी बहुवचन म होता है । इस प्रकार क वाक्यों म प्रथम उपवाक्य मे जितरो जित्तो द्वारा पदार्थ परिमाण का उल्लेख होता है, तथा उत्तर वर्ती उत्तो उपवाक्य उक्त पदार्थ परिमाण विषयक विविध कथन ।

(१९५) लुगाया जित्ती सँगी दँसै उत्ती सँणी व्है कोनी ।

(१९६) चीज तो जित्ती दोरी हाथै लागै उत्तो ई उणरी कीमत व्है ।

(१९७) जित्ती नवी लुगाया लावै उत्ता ई माटा भरणा पडै । अवार सेठा री बेटी अर बहुवा रै परवाण आठ माटा भरै ।

(१९८) राजा नै राणी री समझ अर उणरै गुणा माथै जित्तौ भरोसौ हौ, राणी नै उत्तौ ई राजा री नासमझी अर उणरी मूढता रौ भरोसौ हौ।

(१९९) बेटी जित्ती रूपाळी ही उत्ती ई भोळी अर अबूझ ही।

इसी कोटि के कतिपय वाक्यों म उत्तौ क स्थान पर उत्तरवर्ती उपवाक्य म अन्य सर्वनामो की भी अवस्थिति होती है।

(२००) इण भगती री म्है जित्तौ ई बखान करू वो थोडौ है।

(२०१) अै तौ बगत बगत री बाता है। राणी जित्ती रूपाळी ही उणसू सवाय ओछी अर हीण सुभाव री ही।

१० १११ एक अन्य कोटि के वाक्यो म जित्तौ उपवाक्य क नामिकीकृत रूप की उत्तरवर्ती उपवाक्य के पूर्व अवस्थिति होती है। इस कोटि के वाक्यो मे जित्तौ उपवाक्य सामान्यतया इच्छाथक परिमाणबोधक होते है।

(२०२) भावै जित्तौ खावै है अर बाकी रौ जमी माथै ऊधावै है।

(२०३) आखी उमर झूठ बोलिया तौ जाणै जित्ता फोडा पडिया।

(२०४) सोच करिया सोच मिटतौ व्है तौ दोनू भेळा बैठ, चावा जित्तौ सोच करला।

(२०५) म्हारै सू पूग आवैला जित्ती मदत करूला। पछै थारै जचै ज्यू करजे।

१० ११२ जितरौ—जित्तौ के तिर्यक रूप से सयोजित वाक्यो म जित्तै आदि का अर्थ होता है "जब तक" अथवा "तब तक।"

(२०६) भेख री पूजा करणिया मिळै जितै औ बिणज दाखट चालै।

(२०७) म्हे तौ मिजरौ नी देखू जित्तै किणी रै कैयै रौ पतियारौ नी करू।

(२०८) राव फौज मे पूगौ जित्तै सगळा सिपाई सस्तर हेटै न्हाक दिया।

(२०९) आपा री फौजा चढैला जितै तौ दुस्मी री फौजा नगर माथै पूरौ कब्जौ कर लेवैला।

वाक्य सख्या (२०६ ९) म द्वितीय उपवाक्य म वर्णित क्रिया व्यापार की प्रथम उपवाक्य मे कथित व्यापार से पूर्व ही होने की ध्वनि विद्यमान है।

इसी कोटि के वाक्यो मे जितै के स्थान पर उसके आम्रेडित रूप जितै जितै की अवस्थिति भी होती है। इन वाक्यों म पूर्वउपवाक्य के क्रिया व्यापार की कालावधि म अथवा उसके समापन के पूर्व ही, अनुवर्ती उपवाक्य मे वर्णित क्रिया व्यापार के होने का उल्लेख है।

(२१०) बेटै रै अमल लागू ई हुयौ तौ अैडौ कै सोळै बरस पूगा जितै जितै वो साठ बरस रै बाप सू ई सवायौ अमलदार हुयग्यौ।

(२११) दूजै दिन सूरज उगियाँ जि ी जिनै तौ उपर उजास म इ पैनी सारे नगर म खबर फनगी कै राज रै खजानै म चोरी हुयग ।

उपरिलिखित वाक्यो म (२१० ११) पूर्ववर्ती उपवाक्य म वर्णित क्रिया व्यापार की क्रमिक भाववृद्धि अथवा वद्ध मान तीव्रता की ध्वनि भी विद्यमान है।

१० ११३ नीचे जितर तौ तथा जित ई की अवस्थिति के उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे है।

(१) द थाण जा अठान उठानै दागियो जितरै ता डावरा री दमी मह यौ हुय र सूरज कोनी— राजा रा बगसि डा सिरोपाव मकन पर्दै।

(१३) भौत री अधारी कै जको वदाक थो ओ ज है। पण आ अधारी है जि ो ई तौ जायणी है।

१० ११४ नाचे इत्तो तथा उत्तो द्वारा सयोजित वाक्यों के उदाहरण प्रस्तुत किय जा रहे है।

(२१४) समदर रै पाणी चढता चढता इत्तो ऊचो चढियो कै वो मिन्दर रै मवारै माथ ढकीजण लागो।

(१५) र्ल्कै ववण नायौ—म्है मात ताळिया बजाऊ उत्तो ताळ म चुवतो गाहरा न टोळ ण भजहा रै मोळी मोळी अवठ अळी बर जो ई साचो।

१० १ गुणवाचक सर्वनामो द्वारा सयोजित वाक्यो म प्रथम कोटि म ऐसे वाक्यो को परिगणित किया जा सकता है जिनम पूर्ववर्ती उपवाक्य म जडो द्वारा गुण कथन किया जाता है और उत्तरवर्ती वहो अथवा उडो उपवाक्य म उक्त गुण कथन के विषय म टिप्पणी।

(१६) वेगी बिचाळै ई जोर सू खिलखिल हूसी जाणी कोयल हुसी हवै। जाना— बा ! म्हे तो जैडी कयराणी उडो ई महाराणी। आप बधाइ माह फालतू ई पोडा भुगतिया।

(१७) माईता नै सोचो लाग आयो। राजा रो जैडो नाव वैडा ई गुण न्यसाया।

(१) भूलोक म जैडी गुणता उडो ई इन्दरलोक री दाग ही।

१० १८ १ प्रथम उपवाक्य के नामिकीकृत रूप द्वारा निर्मित जडो-सयो जित वाक्यो के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(२१६) फूलकवर कयो—माया रो विरयास भी बरै जैडो इज है पण थ साथ ही तो विस्वास करणो इज पडै अभरोसो थे कर कर।

(२२०) फूल रै कवळास अर उणरै रग नै ई मात करै जैडा उणरै डील री पसम।

(२२१) बकरी तौ सदावत सू करै जैडी ई मीगणिया करी।

(२२२) आध घडी मे आय खातण चावळ सम्भाळिया तौ हा जैडा अर अठा अरटियौ घडीजण आयौ।

(२२३) राजा आपरै जीवण मे थाळी तिराया तिरै जैडी अर लिल उछालिया हूटै नी पडै उई भीड आज आपरी आखिया म देखी।

१०१२२ प्रथम उपवाक्य मे जैडौ की अवस्थिति और द्वितीय उपवाक्य मे अन्य वाक्यविन्यासात्मक युक्तियो द्वारा निर्मित वाक्यो के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित है।

(क) जैडौ जाणै (२२४)

(२२४) ठाकर सा नै जैडौ लखायौ जाणै उण रूप रा बवाग सुण खुदौखुद दारु ई नै नसौ चढायौ।

(ख) जैडौ कै (२२५)

(२२५) पण इण आणद रै बिचाळै अेक अजोगती बात जैडौ बणी कै वा रौ जीवणौ हराम हुयग्यौ।

जैडौ की अवस्थिति के कतिपय अन्य उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे है।

(२२६) सुख अर न्याव रा नवा कायदा बणता। राजा व्है तौ अैडौ व्है। दीवाण व्है तौ अैडौ व्है।

(२२७) इण बगत धणी नै बचावणौ ई सिरै हौ। जीव अर लाज दोनू बच जावै जैडी जुगत बण जावै तौ ठीक रैवै।

१०१२३. जैडौ–उपवाक्यो की कतिपय अन्य नामिकीकृत अवस्थितियों के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(२२८) देव राजी होय बोलियौ–हा, आ बात तौ म्हनै ई कबूल। मानण जैडी बात व्है तौ क्यू नी मानू।

(२२९) देख था मे जाणै जैडो करूला। पण स्याळ तौ ई बारै को आयौ नी।

१०१२४ नीचे सवोई 'जैसे ही, ज्यों ही" की अवस्थिति के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(२३०) अेक दिन सजोग री बात जैडी बणी कै सवोई तौ वा अभ्यागत धीवडी धडूणी देय बोर भाडती ही कै सिकार जावतौ राजा गळाकर नीसरियौ।

(२३१) सजोग री नावो अेंडो पीयो कै सबोई हथमार वाळ गोपाळ नै खपेडे मे सुवाग कोई चारेक खेतवा अळगो गियो व्हैला कै विणजारै सू मिळण आवतै मुनीम रै काना किसी बाळक रै रोवण रौ साद सुणीजियो।

१०.१३ हेतुमद वाक्यो मे सामान्यतया जे "यदि, अगर" उपवाक्य द्वारा किसी कारण अथवा कारणस्वरूप का कथन करें, अनुवर्ती तौ—उपवाक्य मे उक्त कारण अथवा कारण स्वरूप के परिणाम इत्यादि का कथन किया जाता है (२३२)।

(२३२) किणी रै माथै विना कसूर सीफ करणी अर राणिया नै दुहाग देणी औ राजा रा खास गुण है। नीतर वो राजा ई काई। आपा मे अर वा मे पछै भेद ई काई। म्हानै तौ आपरी माथो ई भवियोडो दीसै। जे आप सू चौथो पाती रौ रूप ई म्हारै पाखती हुवतो तो सिंघां नै ई बस मे कर लेती। रूप री आ छिब देखनै मिनख रौ जायो रूसणो करले तौ पछै खामी आप मे ई है। जे आप चावता तौ कवर जी ताडियां ई इण मेडी रौ ठायो को छोडता नी। पण आपरी रीस तौ रूप सू ई चौगणी है।

उपरिलिखित उदाहरण मे अर्थ की दृष्टि से दो प्रकार के हेतुमद् वाक्यों की अवस्थिति हुई है। प्रथम वाक्य म वक्ता ने "यदि आप से चौथा हिस्सा रूप भी मेरे पास होता" कारणस्वरूप गुण का उल्लेख करके, उक्त गुण के प्राक्कल्पित परिणाम अथवा फल का कथन किया है, अर्थात "तो वह (किसी मनुष्य की तो बात ही क्या है) सिंहों को भी बस मे कर लेती।" इसके विपरीत द्वितीय उपवाक्य म यथाघटित प्रत्यक्ष का तौ उपवाक्य मे उल्लेख वक्ता का अभिप्रेत है, अर्थात् "तो कवर जी ताडना करने पर भी इस "मेडी" के स्थान का परित्याग नही करता" कथन द्वारा यह उल्लेख किया गया है "कि आपके द्वारा ताडना करने पर कवर जी ने "मेडी" के स्थान का परित्याग किया। (जो कि यथाघटित प्रत्यक्ष है), किन्तु वस्तुत उन्होंने इसलिए ऐसा किया है कि आप नही चाहती थी कि वे यहां ठहरें इत्यादि। प्रथम वाक्य से सर्वथा विपरीत द्वितीय वाक्य मे किसी प्राक्कल्पित अथवा यथाघटित प्रत्यक्ष को परिणाम स्वरूप मानकर, उक्त परिणाम स्वरूप के सभावित कारणस्वरूप का उल्लेख है।

जे हेतुमद् वाक्यों के, जैसा कि ऊपर स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है, दो मुख्य प्रकार्य हैं। अर्थात् किसी कारण स्वरूप का जे उपवाक्य द्वारा उल्लेख करके, तो उपवाक्य में उक्त कारणस्वरूप के परिणाम की परिकल्पना, तथा जे उपवाक्य द्वारा किसी संभावित कारणस्वरूप का उल्लेख करके, उक्त कारणस्वरूप के प्राक्कल्पित अथवा यथाघटित प्रत्यक्ष के स्पष्टीकरण का प्रयत्न।

एक अन्य प्रकार के हेतुमद् वाक्य की अवस्थिति भी उपरिलिखित (२३२) सन्दर्भ मे हुई है। (२३२क) इस वाक्य मे हेतुमद् वाक्य

(२३२ क) रूप री आ छिब देखनै मिनख रौ जायो रूसणो करलै तौ पछै खामी आप मे ई है।

विह्लक जे की अनवस्थिति है, तो भी यह वाक्य हेतुमद् वाक्य ही है। इस वाक्य मे प्रथम उपवाक्य में एक सामान्य अथवा अनुभूत मान्यता को कारण स्वरूप का प्रतिस्थानीय मानकर, तो-उपवाक्य द्वारा उसकी अवश्यभावी फलपरक प्रतिज्ञप्ति का उल्लेख किया गया है। इस वाक्य मे जे की अनवस्थिति यह संकेत कर रही है कि प्रथम उपवाक्य म कथित सामान्य अथवा अनुभूत मान्यता वक्ता द्वारा परिकल्पित कारण न होकर एक वास्तविक सत्य है।

नीचे कारणस्वरूप परिकल्पित परिणाम वाचक जे हेतुमद वाक्यो के कतिपय अन्य उदाहरण दिये जा रहे हैं।

(२३३) जे थारै साम्ही सपनै मे ई झूठ बोलू तो म्हनै अगलै जलम पाछो ओ ई जमारो मिळजो।

(२३४) राजी रो उजियारो निरखती खुशी बोली—जे म्हारै फूला अर म्हारै मन मे सत हुयो तो आपा रो दुनिया म प्रलै ताई बिछोव नी हुवैला।

(२३५) मावा रै पालिया जे मौत ढबती व्है तो आज दिन ताई कोई बेटो मरतो ई नी।

(२३६) जे फरगंट घोड नै इण झूलरै रै मायकर निकालू तो कैडो मजो वणै। नामी खिलको रैवैला।

नीचे संभावित कारणस्वरूप-प्राक्कल्पित/प्रत्यक्ष घटित जे हेतुमद् वाक्यों के कतिपय अन्य उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे है।

(२३७) जे आपरी बाता समभण री म्हा लोगो मे खमता हुवती तो म्हे छोटा ई क्यू रैवता।

(२३८) जे अैडी ठा हुवती तो म्हैं उठै ई क्यू चूकतो। पण अवै काई व्है। हाथा करनै करम फोड लिया।

(२३९) अर आपरी येह रै माय भूडण घणी अर पेट रा जाया रै विघाळै आणद मे गरक हुयोडी बैठी ही। जे वानै ई आपरी दीठ रैखिणा रै पार दीसण लाग जातो तो वै क्यू इण भाल फौज रै मिस काळ री नचीता बैठा बाट न्हाळता।

निह्लक जे की अनवस्थिति वाले कतिपय हेतुमद् वाक्यों के उदाहरण निम्न-लिखित हैं।

(२४०) भगवान सू कोई भूल व्है तो राजा सू ई कोई भूल व्है।

(२४१) बामणी बोली—आप बोपारी हो तो म्हैं ई अेक मा हू।

(२४२) म्हे तो सगळा मरियै समान हा। मरियोडी न्हास नै किणी वातरो अनुभव व्है तो म्हानै व्है।

(२४३) लुगाई री ठौर कोई मोटियार हुवतौ तौ म्हैं जीभ सू नी बतळाय तीर सू बतळावतौ ।

(२४४) घरै आवता डावी अर दिसावर सिधावता सुगन चिड़ी जीमणी घकै तौ मन जाणिया आछा सुगन व्है ।

जै की अनवस्थिति वाले हेतुमद् वाक्यो मे द्वितीय उपवाक्य मे तौ के स्थान पर तौ ई (२४५), तौ पछै (२४६), तौ फेर (२४७) का भी आदेश होता है ।

(२४५) अबै थू कैवै तौ ई म्हैं इण जगळ म नी ढबू । मासी रै घात पछै इण जगळ मे सास लवणौ अधरम ।

(२४६) राजा जी कैयौ—वो काम तौ आप नीं करौला तौ पछै कुण करैला ।

(२४७) मोटियार बोलियौ—अेक मिनख नैं मिनख रै दुख-दरद सू लेणौ देणौ नी व्है तौ फेर किणनै व्है ?

१०.१४ स्थानवाचक सर्वनामो द्वारा सयोजित वाक्यों मे अवस्थित वाक्यविन्यासात्मक युक्तियो को सूचित करते हुए तत्सम्बन्धी उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।

(क) अठीनै अठीनै (२४८) ।

(२४८) हिरण स्याळ नै कैयौ—कैडी'क मोकौ मजियौ, अठीनै म्हारी फमणी हुयौ अठी नै म्हारै मितर री आवणौ हुयौ ।

(ख) अठै तौ...उठै (२४९) ।

(२४९) पछै वो हाथ सू इसारौ करतौ बोलियौ—छाट पडती अठै तो बदौ पडतौ उठै । डील रै एक छाट ई नी लागण दी ।

(ग) अठीनै.. अर उठीनै (२५०) ।

(२५०) अठीनै डोकरा-डोकरी अजसनै मोद सू आपरै बेटा रै बारै म बाता करता हा, अर उठीनै ठिकाणा मे रैवता उण री मानता दिना-दिन वधती गी ।

(घ) जठै...उठै (२५१) ।

(२५१) एकली बिणजारी जोम मे कैवण लागी—जठै जावणौ चावौ उठै छोड दू ।

(ड) जठालग... तठालग (२५२) ।

(२५२) जठालग इण दुनिया मू मिनख री बिणास नी व्है, तठालग अैडा नगारा तौ नित धुरैला ।

(च) जठै...उण ठौड (२५३) ।

(२५३) अेकली लुगाई नै जठै गिरस्तिया री बस्ती मे अेक रात री भरोसौ कोनी, उण ठौड इण पातर रै आमरै सोळै बरसा री मौलगत मिळै है ।

(छ) उठी...अठी (२५४)।

(२५४) अठी तीजणियां गीता रैं मिस रस घोळै। उठी विडिया अठी तीजणियां।

१०.१४.१ स्थानवाचक सर्वनामो द्वारा सयोजित वाक्यो के प्रथम उपवाक्यो के नामिकीकृत रूपों के इन सर्वनामो की अवस्थिति के विविध उदाहरण नीचे सकलित किये जा रहे हैं।

(क) उठै ई (२५५), उठै ताई (२५६), उठी नै ई (२५७)।

(२५५) भला, नेक अर सालम मिनखा सारू सगळी दुनिया घर रैं उनमान है। थारो तो जावो उठै ई घर है, पछै कैडो देस-निकाळो।

(२५६) म्हारै राज री स्याही ढुळै उठै ताई अै पाणी नी पीय सकै!

(२५७) आधी ढळिया वो बडेरा री ठायो छोड पग लेगा उठीनै ई बहीर हुयग्यो।

(ख) जठै (२५८), जठै ई (२५९), जठीनै ई (२६०), जठै तक (२६१), जठै ताई (२६२), जठालग (२६३)।

(२५८) म्हारै कमरै मे थारी मरजी हुवै जठै ईडा दे। म्हे थारी साळ-सभाळ करला।

(२५९) उणनै देवता ई लुगाया रा पग सौ हा जठै ई रुपग्या।

(२६०) वो तो वितबगो हुयग्यो। घकै पड़ी जठीनै ई आपरो जीव लेयनै सोकड मनाई।

(२६१) वो आवै जठै तक थूं धाप'र थारो नीडियो पूरो करलै।

(२६२) विसनो जो बोलिया—परणीजै जठै ताई बोलै कोनी क? कैयो—कोनी बोलू।

(२६३) पण यूं सौरै सास इण दुस्ट रैं हाथ आवणियो म्हैं ई कोनी। जठालग म्हारै जीव मे जीव है इण येह रैं आणद री खातर म्हैं पूरो रीठ वजावूला।

१०.१५ प्रतियौगिक वाक्यो को विवरण की सुविधा के लिये निम्न वर्गों मे विभाजित किया जा सकता है: (क) विरोध-धाचक वाक्य, (ख) प्रतिषेधात्मक वाक्य, (ग) अपवादात्मक वाक्य, (घ) इतर प्रतियौगिक समुच्चयात्मक वाक्य, तथा (ङ) व्यवच्छेदक वाक्य। नीचे इन पाचो वर्गों के वाक्यों का सक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जायगा।

१०.१५.१ विरोधवाचक वाक्यों मे प्रथम उपवाक्य मे किसी धारणा, तथ्य आदि का उल्लेख करके, द्वितीय उपवाक्य मे उक्त धारणा, तथ्य आदि का खण्डण किया जाता है। दोनो उपवाक्यो को विरोधवाचक समुच्चयबोधक निपात पण द्वारा योजित किया जाता है

(२६४) म्हनै तौ परणीजती जकी ई राणी हूवती, पण थारै सू हथळेवौ जोडतौ जकी कवर तौ भवै ई नी हूवतौ।

(२६५) लजालू नागकिन्या निजर नीची करनै कैयौ—आप फरमावौ तौ म्हैं मानूं ई हू, पण आप तौ मन परवाण धोळी धोळी सैं दूध ई जाणौ।

(२६६) थू नाकुछ चिडो म्हारो सत्यानास करै। म्हारौ सत्यानास तौ काई ठा कद व्हैला पण थारौ तौ इणी सायत कर दू।

(२६७) रग मे तौ आपरी मा रै उणियारै ई है पण सूरत बेमाता दूजी ई दीनी है।

(२६८) वो सगळी दुनिया नै देखै पण उणनै कोई नी देखै। फगत वादळ मेल रै माय उणरी रूप परगट व्है।

(२६९) मा बापा री हर तौ अवस आवती, पण म्हारै दुख री खास कारण औ इज हो। म्हे डरती आपनै कैयौ कोनी।

विरोधवाचक निपात पण के अतिरिक्त विरोधवाचक समुच्चय बोधक वाक्यों मे, पूर्ववर्ती वाक्यो मे भी कई तत्त्वो की अवस्थिति होती है, जिनसे अनुवर्ती वाक्य के खण्डनात्मक उपवाक्य होने का सकेत होता है।

(२७०) लखी थावस देवती लाड सू बोली—थारै भलाई समझ मे नी बैठे, पण म्हारै तौ थनै दखतौ ई समझ मे बैठगी के म्हैं औ धधौ थनै मरिया ई नी करावूला।

(२७१) माया विचै ई वत्तौ माया री ठाणौ कीकर व्हैगौ। उणनै हरावणो अगै ई मोटी बात नी, पण आज तौ आ छोटी बात ई सवसू लाँठी होय थोयौ गुमान करै।

(२७२) राजा जी खुद तौ सबूरी री सीख देय उठा सू व्हैर हुयौ, पण वारा सू एक छिणरी सबूरी नी हुई।

उपरिलिखित वाक्यो मे भलाई, अगै, तौ इत्यादि ऐसे सकेतक है जिनसे अनुवर्ती वाक्य के विरोध वाचक उपवाक्य होने का स्पष्ट सकेत हो रहा है।

अनेक परिसरों मे विरोधवाचक निपात पण की अवस्थिति नही होती (२७३-७६)।

(२७३) हाडी भलाई सोनै री ई व्हौ, ढकणौ उघाडिया पछै कौ आणद नी। ढकणै री तौ आणद ई दूजौ।

(२७४) राणी मा म्हनै थे मूडौ को चाहे भळा, म्हारै तौ लुगाई विना अेक पलक ई नी सरै।

(२७५) थें त्यार व्हौ चाहे नी व्हौ, मौत थानै कठैई बगसैला नी।

(२७६) काले आप घर गोडिया रजपूत री बेटी हा, आज आप बीकाणै रै टणकल राजकवर री कवराणी हो।

किन्हीं परिसरों में पण के स्थान पर अर का भी आदेश होता है (२७७)।

(२७७) म्हैं थनैं हमार इण कैयो हो कैं बगडी में आयोड़ै दुरमी नैं भवैं ई नी छोड़णो, अर थू म्हनैं छोड दी।

१०.१५.२ प्रतिषेधात्मक प्रतियोगिक वाक्यों में प्रथम उपवाक्य में किसी तथ्य आदि की एकान्तिकता आदि का प्रतिषेध करके, उसकी विस्तृति अथवा अन्य गुणों का भी उल्लेख किया जाता है (२७८, २७९)।

(२७८) आ ठड़ाई नी ता ताई है। मान नी अपमान है। आगै माल रै छींद पत्तलैं काम नै बूड में रळावण बाळी गदा पाणी है।

(२७९) किसरी ई निकामो है पण है तौ म्हारैं घर रौ धणी। औ नी मानैं तौ नी ई सई, म्हनैं तौ सात जटका कर'र इण आगे निमणौ पड़ै।

१०.१५.३ अपवादवादात्मक प्रतियोगिक वाक्यों में पूर्ववर्ती उपवाक्य में किसी सामान्य तथ्य का उल्लेख होता है और उत्तरवर्ती उपवाक्य में उसके अपवाद का प्रतियोगी रूप में कथन किया जाता है। इस कोटि के कतिपय वाक्यों के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं जिनमें अवस्थित संयोजकों को रखांकित किया गया है।

(२८०) मनिया उणमू अणूंती राजी ही। राजकवरी धणी ई समझाइस करी सोई वे पयाळ लोक सू बारैं जावण वास्तै राजी नी हुई।

(२८१) म्हारी तौ अगैं हुई चूक नी हुई तौ ई आप म्हारैं माथैं चिड़ौ हौ।

(२८२) हाडा आयाडी मुळक माथैं वा माड़ाणी स्यामदेवती वो री थें बाता में तौ वेमाता नैं ई नी धारी, पछै म्हारी काई जिनात।

(२८३) उण जाणियो कैं अवै मरणा में तौ घाटो नी, पछै डरणै में काई मार निकळै।

(२८४) बामणी गरीब अर फाटोड़ै वेस में ही, सौई सतीपणा रौ तेज उणरैं रूं रूं सू छिटकतो हो।

१०.१५.४ इतर प्रतियोगिक वाक्यों की कोटि में ऐसे वाक्यों को परिगणित किया जा सकता जिनके दोनों उपवाक्यों का नीतर आदि समुच्चयबोधकों द्वारा संयोजन होता है।

(२८५) मन रौ मानणो ई तौ सबसू लाठी बात है। दुनिया मानैं तौ भगवान है, नीतर फगत भाटो है।

(२८६) लुगाई रै आयाँ गिरस्ती रै लटै सू बधग्यो तौ उणरौ मगज ठाणै आय जावैला। नींतर आ भगतो थनैं फोड़ा घालैला।

(२८७) आज तौ राजा जी म्हारैं मार्थे अणूता राजी है, इणमू न्याम दीवाण बणावणी चावैं, पण जिण दिन खीझ गया तौ व सूळी चढावता ई जेज

नी करैला। हारवाळी यात तौ सुनै ई पार पडगी, नौनर खास दीवान जी नैं तौ भ्राज ई मूळी चढणी पडती।

(२८८) पक्कौ घर अर जोडी रौ वर दाय आयग्यौ, नींजणै छोरा गाव में भळै घणा ई है। पण बापडा नै कुण पूछै ?

(२८९) बापडौ पोगमी न्याव करदै तौ भलाई, नीं तौ राजा मौरा देवैला नी।

(२९०) बावळा, राजा नैं किणी दूजी चीज सूं वदै ई नसो नी आवै। राजमद सूं सगळा ई नसा माडा है। हा अलबत, इण प्रीत री नसौ राजमद सूं सवायौ है।

१०.१५५ व्यवच्छेदक प्रतियोगिक वाक्यों के विविध प्रकार भाषा में प्रचलित हैं। उनमें अवस्थित वाक्यविन्यासात्मक युक्तियों सहित उनके उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(क) जितै... उत्तै ई (२९१)

(२९१) राजा री डावडिया जितै कोडसूं बामणी नै राणी बणाई उत्तै ई कोडसूं चोर आपरै हाथा उणरौ राणी भेख उतारियौ।

(ख) (अठी) अर उठी (२९२)

(२९२) राजकवर बरसा लग सुख सूं राज करियौ अर उठी मसाण मे बरसा लग वो आक धतूरौ उणी भात उभौ रैयौ। लोग माय थूकता, खोळा-खाळी कूदता, बळबळता पाणी सूं सींचता अर भाटा बगावता।

११. आधुनिक राजस्थानी शब्द रचना

११ १ आ राजस्थानी मे शब्द रचना के अन्तर्गत तीन विषयो का उल्लेख करना आवश्यक है— (क) प्रतिध्वन्यात्मक शब्द रचना, (ख) अनुकरणात्मक शब्द रचना और, (ग) सामान्य शब्द साधन।

११ १ १ प्रतिध्वन्यात्मक शब्द रचना मे किसी सामान्य शब्द के रूप मे किसी व्यजन अथवा स्वर आदि मे परिवर्तन करके, नव-निर्मित प्रतिध्वन्यात्मक रूप को मूल शब्द के साथ आसक्ति कर दी जाती है। यथा, निम्न वाक्यो मे **भगवान** (१), **वरदान** (२), **हिबोलो** (३), **टोटको** (४) **दरसन** (५) आदि शब्दों के क्रमश आदि व्यजनो भ, व, ह, ट, तथा द, के स्थान पर फ का आदेश तथा इस प्रकार से निर्मित प्रतिध्वन्यात्मक रूपो **फगवान, फरदान, फिबोलो, फोटको** तथा **फरसन** आदि की अपने मूल शब्दो के साथ अवस्थिति हुई है।

(१) वो राईको तो पगा हालणो सीखियो तद सू अेवड रै लारै ढरर करतौ भटकतो रियो, सो भगवान–फगवान रै लफडा मे की समझतौ-बूझतौ ई नी हो।

(२) आ वरदाना फरदाना नै म्हैं नी समझूं।

(३) जटा माथै हाथ फेरनै जोगी कैवो—हिबोलां-फिबोला री तौ म्हनै ठा कोनी।

(४) असमान जोगी रै वादळ मंल धरती रा टोटका फोटका नी चालै।

(५) दरसन फरसन ई करावणा व्है तो बेगा कराजो, म्हनै घणी वेला कोनी।

प्रतिध्वन्यात्मक शब्द रचना की भाषा मे तीन विधियां हैं—(क) शब्द के आदि व्यजन के स्थान पर स्, ब्, फ् अथवा ह् का आदेश, (ख) आदि स्वर के साथ व्यजन का योग, तथा (ग) आदि अक्षर मे स्वर परिवर्तन। नीचे इन तीनो विधियो का सोदाहरण विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

(क) आदि व्यजन के स्थान पर स्, व्, फ्, ह् का आदेश।

मूल शब्द	प्रतिध्वन्यात्मक प्रतिरूप सहित युग्म स् आदेश	व आदेश	फ् आदेश	ह आदेश
काग	काग साग	काग वाग	काग फाग	
खेजडी	खेजडी सेजडी	खेजडी वेजडी	खेजडी फेजडी	
गाडी	गाडी साडी	गाडी वाडी		
घोडा	घोडा सोडा	घोडा वोडा	घोडा फोडा	
चारो	चारो सारो	चारो वारो		
छाक	छाक साक	छाक वाक	छाक फाक	
जाच	जाच साच	जाच वाच	जाच फाच	
भाग	भाग साग	भाग वाग	भाग फाग	
टिलोडी	टिलोडा सिलोडा	टिलोडी विलोडी	टिलोडी फिलोडी	
डाक	डाक साक	डाक वाक	डाक फाक	
ताच	ताच साच	ताच वाच	ताच फाच	
पाळा	पाळा साळा	पाळा वाळा	पाळा फाळा	
लडाई	लडाई सडाई	लडाई वडाई	लडाई फडाई	
मा		मा वा		मा हा
गास		गास वास		गास हास
चारण	चारण-सारण	चारण वारण		
गाय	गाय साय	गाय वाय		
भाई	भाई-साई	भाई वाई		
खोद	खोद सोद	खोद वोद		

(ख) आदि स्वर के साथ व्यंजन का योग

मूल शब्द	प्रतिध्वन्यात्मक रूप सहित युग्म स् आदेश	व आदेश	फ आदेश
अकडणो		अकडणो वकडणो	अकडणो फकडणो
आणो		आणो वाणो	आणो फाणो
इमरत	इमरत सिमरत		इमरत फिमरत
ईतर	ईतर सीतर	ईतर वीतर	ईतर फीतर
उजाड	उजाड सुजाड	उजाड वुजाड	उजाड फुजाड
अंठ		अंठ वंठ	अंठ फंठ
ओछो	ओछो-सोछो	ओछो वोछो	ओछो फोछो
ऊट	ऊट सूट	ऊट वूट	ऊट फूट

(ग) आदि अक्षर में स्वर-परिवर्तन

आ के स्थान पर ऊ का आदेश

चाक	चाक चूक
डाक	डाक डूक
काज	काज कूज
काकड	काकड कूकड

ई के स्थान पर ऊ का आदेश

कीमत	कीमत कूमत
ईतर	ईतर ऊतर

अ के स्थान पर ऊ का आदेश

अंठ	अठ ऊठ

ओ के स्थान पर ऊ का आदेश

ओछो	ओछौ ऊछौ
कोजौ	कोजौ कूजौ

औ के स्थान पर ऊ का आदेश

औखद	औखद ऊखद
कौल	कौल कूल

उ के स्थान पर आ का आदेश

कुवेर	कुवेर कावेर

अ के स्थान पर उ का आदेश

कड्डी	कड्डी-कुड्डी

१११२ अनुकरणात्मक शब्द रचना किन्ही समुद्देश्यों का अनुकरण (अथवा ध्वन्यानुकरण) मात्र न होकर, चाक्षुष, स्पर्श्य तथा स्पर्श्य संवेदनों का मन भाषावैज्ञानिक आधार पर भाषा के स्वनिमिक तत्वों द्वारा अभिव्यक्तिकरण है। भारतीय आर्य भाषाओं में इस कोटि की शब्द रचना पर्याप्त जटिल एवं विस्तृत है।

नीचे आ राजस्थानी के ज्ञात स्वानिमिक मातृकों की सूची प्रस्तुत की जा रही है।

आधुनिक राजस्थानी के ज्ञात अनुकरणात्मक स्वनिमिक मात्रक और उनके योग

प्रथम मात्रक	द्वितीय मात्रक: क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	ळ	व	स	श	ह
क					कड	कच					कट	कठ			कण			कद									कर	कल	कळ		कस		
ख					खड	खच					खट				खण			खद		खन	खप	खफ	खब		खम		खर	खल	खळ		खस		
ग					गड	गच					गट				गण			गद			गप	गफ	गब				गर		गळ		गस		
घ					घड	घच					घट				घण					घन	घप	घफ			घम		घर		घळ		घस		
च	चक				चड						चट	चठ			चण					चन	चप		चब	चभ	चम		चर	चल	चळ		चस		
छ	छक		छग		छड						छट				छण					छन	छप	छफ	छब		छम		छर	छल	छळ				
ज			जग		जड						जट										जप		जब				जर	जल	जळ				
झ	झक	झख	झग		झड						झट	झठ			झण					झन	झप	झफ	झब		झम		झर	झल	झळ				
ट	टक		टग		टड	टच									टण					टन	टप		टब		टम		टर	टल	टळ	टव	टस		
ठ	ठक		ठग		ठड	ठच									ठण					ठन	ठप	ठफ	ठब		ठम		ठर		ठळ		ठस		
ड	डक		डग		डड	डच									डण						डप	डफ	डब		डम		डर				डस		
ढ	ढक		ढग		ढड	ढच									ढण						ढप	ढफ	ढब		ढम		ढर	ढल	ढळ		ढस		
त	तक		तग		तड़	तच					तट				तण					तन	तप		तब				तर	तल	तळ				
थ	थक		थग		थड	थच															थप	थफ	थब		थम		थर						
द			दग		दड	दच					दट									दन	दप		दब		दम		दर		दळ				

ध धक .... धग .... धड़ धच .... धट .... धण .... धन धप ... धव .... धम ... धर ....

न .... नच ... . नर .. . .

प .... पच .... पट .... पद .... पर पल पळ पव पस ....

फ फक .... फग .... फड फच . .. . फट .... फण .... फद .... फन .... फर .... फळ .... फस ....

ब बक बख बग .... बड बच .... बट .... बण .... बद ... बन .... बफ .... बम ....

भ भक भख भग .... भड़ भच ... . भट .... भण .... भन भप .... . . भभ भम .... भर .. भळ भस ....

म .... मड़ मच .... मट .... मर ... मळ .... मस ....

र .... रग .... रप . रव .. . . रळ ....

ल लक .... लग .... लड लच .... लट .... लड .... लप लफ लव ... . लर .... लळ .... लस ... .

स .... सग ... सड़ .... सट .... सण .... सन सप . . .. सर .. . सळ ....

स़ .... स़ट .... स़ण .... स़प .... स़व .... स़र स़ल स़ळ ....

ह हक .... हच .... हण .... हन हप हफ हव .... हम .... हर हल हळ .... हस ....

उपरिलिखित स्वनिमिक मात्रकों के साथ विविध स्वनप्रक्रियात्मक विकारों की अवस्थिति से अनुकरणात्मक शब्दों की रचना होती है। स्वनिमिक मात्रक कच को आधार मानकर इस प्रकरण मे उन विकारों का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

स्वनिमिक मात्रकों के साथ अवस्थित होने वाले समस्त ज्ञात विकार नीचे सूचित किये जा रहे हैं

(१) मात्रक की स्वयं अवस्थिति यथा कच।

(२) मात्रक अक्षर के अ का इ अथवा उ मे स्वर परिवर्तन यथा कच से किच और कुच की रचना।

(३) मात्रक अन्त्य व्यंजन का द्वित्वीकरण यथा कच्च किच्च और कुच्च की रचना।

(४) द्वित्वीकृत अन्त्य व्यंजन वाले रूपों को छोड़कर अन्य रूपों के साथ अर -अल तथा अड प्रत्ययों की अवस्थिति यथा कचर किचर कुचर कचल किचल कुचल एवं कचड किचड कुचड रूपों की रचना।

(५) उपरिलिखित नियमों द्वारा रचित रूपों के साथ अक अथवा -आक प्रत्ययों की अवस्थिति यथा कचक किचक कुचक कचाक किचाक कुचाक

कच्चक किच्चक कुच्चक कच्चाक किच्चाक कुच्चाक
कचरक किचरक कुचरक
कचराक किचराक कुचराक
कचळक किचळक कुचळक
कचळाक किचळाक कुचळाक
कचड़क किचड़क कुचड़क
कचडाक किचडाक कुचडाक

(६) उपरिलिखित ४५ मात्रक प्रकृतियों का आम्रेडण

नियम संख्या (६) द्वारा जनित समस्त मात्रक रूपों को नीचे सूचित किया जा रहा है।

(१) कचकच किचकिच कुचकुच
(२) कच्च कच्च किच्च किच्च कुच्च कुच्च
(३) कचर कचर किचर किचर कुचर-कुचर
(४) कचळ कचळ किचळ किचळ कुचळ कुचळ
(५) कचड कचड किचड किचड कुचड कुचड
(६) कचक कचक किचक किचक कुचक कुचक

(७) कचाक-कचाक, किचाक किचाक, कुचाक कुचाक
(८) कच्चक-कच्चक, किच्चक किच्चक, कुच्चक कुच्चक
(९) कच्चाक-कच्चाक, किच्चाक-किच्चाक, कुच्चाक कुच्चाक
(१०) कचरक कचरक, किचरक किचरक, कुचरक-कुचरक
(११) कचराक कचराक, किचराक किचराक, कुचराक-कुचराक
(१२) कचळक कचळक, किचळक-किचळक, कुचळक-कुचळक
(१३) कचळाक-कचळाक, किचळाक किचळाक, कुचळाक-कुचळाक
(१४) कचड़क कचड़क, किचड़क किचड़क, कुचड़क कुचड़क
(१५) कचड़ाक कचड़ाक, किचड़ाक-किचड़ाक, कुचड़ाक कुचड़ाक

(७) उपरिलिखित सूची मे मात्रक प्रकृति संख्या (१-५) के दोनो तत्वो के साथ -आ प्रत्यय के योग से निम्न प्रकृतियो को रचना होती है।

(१६) कचा-कचा, किचा किचा कुचा-कुचा
(१७) कच्चा-कच्चा किच्चा किच्चा, कुच्चा कुच्चा
(१८) कचरा कचरा, किचरा-किचरा, कुचरा-कुचरा
(१९) कचळा-कचळा, किचळा-किचळा, कुचळा-कुचळा
(२०) कचड़ा-कचड़ा, किचड़ा-किचड़ा, कुचड़ा-कुचड़ा

(८) मात्रक प्रकृति संख्या (६, १०, १२, १४) के अन्त्य क के द्वित्वीकरण द्वारा निम्नलिखित प्रकृतियों की रचना होती है।

(२१) कचक्क-कचक्क, किचक्क-किचक्क कुचक्क कुचक्क
(२२) कचरक्क-कचरक्क, किचरक्क किचरक्क, कुचरक्क-कुचरक्क
(२३) कचळक्क कचळक्क, किचळक्क किचळक्क, कुचळक्क कुचळक्क
(२४) कचड़क्क-कचड़क्क, किचड़क्क किचड़क्क कुचड़क्क कुचड़क्क

(९) मात्रक प्रकृतियां कच, किच, कुच, कचर, किचर, कुचर, कचल, किचल, कुचल, कचड, तथा किचड, कुचड, के प्रथम अक्षर के स्वरो म निम्न परिवर्तन हो सकते हैं

(क) अ के स्थान पर आ का आदेश।
(ख) इ के स्थान पर ई ए का आदेश
(ग) उ के स्थान पर ऊ ओ का आदेश

इन स्वर परिवर्तनों द्वारा निम्न रूपों की रचना होती है

(२५) काच, काचर, काचळ काचड

(२६) कीच, केच, कीचर, केचर, कीचळ, केचळ, कीचड, केचड

(२७) कूच, कोच, कूचर, कोचर, कूचळ, कोचळ, कूचड, कोचड

(१०) नियम संख्या (४) से व्युत्पन्न रूपों की -णो प्रत्यय के योग में भाषा में क्रियाओं के रूप में अवस्थिति होती है।

(११) नियम संख्या (४) से व्युत्पन्न रूपों के साथ -आट तथा -आटो प्रत्ययों के योग से क्रमशः स्त्रीलिंग और पुल्लिंग रूप, यथा कचराट, कचराटो संज्ञाओं की रचना होती है।

(१२) कच, किच, कुच रूपों के साथ ईड, -ईडो, -अन्द, -अन्दो, तथा -कार, -कारो की अवस्थिति से संज्ञाओं की रचना होती है। विकल्प से -अन्द, -अन्दो के स्थान पर पर -इन्द, -इन्दो की अवस्थिति भी हो सकती है।

(१३) नियम संख्या (६) द्वारा व्युत्पन्न रूप कचकच, किचकिच, कुचकुच, के साथ -ओ (पुंलिंग), -आट (स्त्रीलिंग) तथा -आटो (पुल्लिंग) के योग से संज्ञाओं की रचना होती है।

(१४) नियम संख्या (६) द्वारा व्युत्पन्न रूप कचकच, किचकिच, कुचकुच की -(आ) णो प्रत्यय के योग से अनुकरणात्मक क्रियाओं की रचना होती है।

(१५) नियम संख्या (६) द्वारा व्युत्पन्न रूप संख्या (१) तथा (२) के साथ मध्य-प्रत्यय -आ- के योग से कचाकचा, कच्चा कच्च आदि रूपों की रचना होता है।

उपरिलिखित नियमों द्वारा निष्पन्न रूपों की समस्त सम्भावनाओं की भाषा में अवस्थिति होती है अथवा नहीं इसके विषय में निश्चयात्मक रूप से नहीं कहा जा सकता। साथ ही-साथ दो महत्वपूर्ण तथ्य ऐसे हैं जिन्हें अस्वीकार नहीं किया जा सकता। अनुकरणात्मक रचनाओं की भाषा के वाक्यों में अवस्थिति वक्ता की स्ववृत्ति जन्य स्थितियों पर निर्भर होती है, तथा भाषा में अनेक अनुकरणात्मक रचनाएं विविध अर्थों में रूढ हो चुकी है। कोश में इस प्रकार की रचनाओं को सूचित किया गया है। किन्तु फिर भी अनेक ऐसी हैं जिनका विवरण उपलब्ध नहीं होता।

अनुकरणात्मक शब्द रचना की उपरिलिखित मुख्य विधियों के अतिरिक्त, अन्य विधियां भाषा में उपलब्ध हैं। इन समस्त ज्ञात विधियों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जायगा।

(ब) दो भिन्न किंतु समवर्गी ध्वनिमिक मात्रकों के योग से जगमग, डगमग, तगमत, कलमल, झलमल, टलमल, झड़पड़, चड़पड़, छड़पड़ आदि अनुकरणात्मक शब्दों की रचना भी होती है।

(ख) उपरोक्त कोटि में परिगणित किये जा सकने वाले मात्रकों के साथ -अड़ तथा -अर प्रत्ययों के योग करके भी संयोजनों की रचना होती है, यथा खटर-पटर, चरड़-परड़ इत्यादि।

(ग) लटर-पटर, चरड-मरड इत्यादि संयोजनों के दोनों अंगों के साथ -अक प्रत्ययों के योग से भी लटरक-पटरक, चरडक-मरडक आदि नवीन संयोजन निर्मित होते हैं।

(ग) अनेक मात्रकों के अन्त्य व्यंजनों के द्वित्व करण के अतिरिक्त, उनके अन्त्य अक्षरों का अभ्यास भी होता है।

यथा,	तग्ग तग्ग	तगग-तगग	
	दग्ग-दग्ग	दगग दगग	
	धग्ग-धग्ग	धगग-धगग	
	फग्ग-फग्ग	फगग फगग	
	बग्ग-बग्ग	बगग-बगग	
	भग्ग-भग्ग	भगग-भगग	
	खण्ण खण्ण	खणण-खणण	खुणण खुणण
	गण्ण गण्ण	गणण गणण	गुणण गुणण
	चण्ण चण्ण	चणण-चणण	चुणण चुणण

प्रयत्न करने पर इस प्रकार के अन्य संयोजनों का भाषा में मिल जाना असंभव नहीं है।

(घ) अनुकरणात्मक मात्रकों के आद्य व्यंजनों के अभ्यास द्वारा भी विविध प्रकार की अनुकरणात्मक रचनाएं होती हैं।

अभ्यस्त व्यंजन के साथ सानुनासिक ऊ, अ तथा आ के योग से निर्मित रचना की मूल मात्रक के पूर्व आसक्ति द्वारा निम्न प्रकार के शब्द बनते हैं।

चूंचाड	खंखेड	मंखोळी	खांखळ	कांकर	चांवड
छूंछाड	गंगड	गंगोळी	दांदळ	खांखर	चांचड
ढूंढाड	छंछड	डंडोळी	भांभळ	चांचर	टांटड
टूंटाड	जंजड	पंपोळ	ढांढळ	छांछर	तांतड

कंकर, मंमर, पंपाळ, जंजाळ आदि अनेक शब्द इसी कोटि के हैं।

(ङ) नियम (४) द्वारा निर्मित कतिपय रूपों (तथा खरड चरड आदि) और खरड चरड आदि के –अक प्रत्यययुक्त रूपों के पश्चात् इन शब्दों के आदि व्यंजन के साथ ऊ का योग करके निम्न प्रकार के अनुकरणात्मक शब्दों की रचना होती है।

खरड खू	—
चरड चू	चरडक चू
झरड झू	झरडक झू
टरड टू	टरडक टू
डरड डू	डरडक डू
—	ठरडक ठू
परड पू	परडक पूं

(च) नियम (४) द्वारा निर्मित रूप चरड आदि के पश्चात् उक्त रूप के आदि व्यंजन के साथ –अप्प का योग करके निम्न प्रकार के अनुकरणात्मक शब्दों की रचना होती है।

खरड खप्प
गरड गप्प
चरड चप्प
झरड झप्प

१.१.१.३ सामान्य शब्द साधन के अन्तर्गत दो प्रकार के प्रत्ययों का विवरण प्रस्तुत किया जायगा — (क) ऐसे पूर्व-तथा पर-प्रत्यय जिनके योग से शब्दों के सवर्ग परिवर्तित हो जाते हैं (यथा रस संज्ञा में ईलो प्रत्यय के योग से रसीलो विशेषण की रचना होती है), तथा (ख) कतिपय अभिव्यंजक प्रत्यय, जिनके योग से शब्दों के सवर्ग तो परिवर्तित नहीं होते किन्तु उन प्रत्ययों से युक्त शब्दों के समुद्देश्यों के प्रति वक्ता का दृष्टिकोण बदल जाता है।

नीचे राजस्थानी के मुख्य पर प्रत्ययों की सूची प्रस्तुत करते हुए, उनसे निर्मित शब्दों के उदाहरण सूचित किये जा रहे हैं। इन पर-प्रत्ययों से निर्मित शब्दों के उदाहरण देते समय उन उदाहरणों का विश्लेषण प्रस्तुत नहीं किया जायेगा क्योंकि इस विवरण का उद्देश्य भाषा के इन तत्वों की स्थापना है।

(१) –आण बधाण
मडाण
कमठाण
भगाण
रधाण
आलखाण

(२) –आणी	गेहाणी सोमाणी	
(३) –आणी	माडाणी साचाणी भूठाणा	
(४) –आत	दलात उचात	
(५) –आतियौ	पगातियौ सिरातियौ आगातियौ पाछातियौ	
(५) –आद~ –आण	मिचळाद~मिचळाण मडाद	
(६) –आदरौ	पीळादरौ काळादरौ	
(७) –आइस	समभाइस बुभाइस फरमाइस पैमाइस	
(८) –आई	सुगराई कालाई इदकाई टणकाई	मुधराई मुघडाई चिकणाई
(९) –आपौ~पौ	पाचापौ भाईपौ रडापौ छूटापौ वधापौ छीजापौ	मापौ इकलापौ पूजापौ मेटापौ राजीपौ सैणापौ
(१०) –आप	धणियाप	मिळाप

(११) –प	भोळप	भेळप
	भाईप	सैणप
	बाळप	
(१२) –आयत	जाडायत	नैठायत
	नातायत	अडपायत
	गनायत	साळायत
	वटायत	पौरायत
	पचायत	नातरायत
(१३) –आयती	पौरायती	धामायती
	दवायती	नातायती
	जापायती	पचायती
	खाळायती	
(१४) –आठ~इयाठ	इयाठ	मथाठ
	जीमणियाठ	थयाठ
	आठाठ	
(१५) –आळो	रूपाळो	मूंछाळो
	काडियाळो	हैजाळो
	धणियाळो	कडियाळो
	बरमाळो	लबाळो
	मतवाळो	
	छागाळो	
	जाडाळो	
	थाटाळो	
(१६) –आव	पसराव	घटाव
	बरताव	कटाव
	निभाव	निराव
	उकसाव	छळाव
	उतराव	तणाव
	उफणाव	छिडकाव
(१७) –आवट	बणावट	गिरावट
	सजावट	कचावट
	दिखावट	पत्रावट

(१८) -आवण	करड़ावण ∼ करड़ाण	
	भरावण	
	लगावण	
	सिरावण	
	बधावण	
	रिझावण	
(१९) -आवो	दिखावो	धकावो
	पिछतावो	हुलावो
	छुड़ावो	फुरावो
	धीजावो	पचावो
	भुलावो	मुणावो
(२०) -आस	पीळास	मिटास
	खारास	खटास
	काळास	धोळास
	चरखास	फीकास

(२१) -ओकड़,-ओकड़ी,-ओकड़ी,-ओखड़ी

बातोकड़		रमेकड़ो	बधोखड़ी
भूलोकड़	भूलोकड़ो		
पिदाकड़	पिदाकड़ो		
रमोकड़			

(२२) -इन्दो	रातिन्दो
	रातून्दो
	बातिन्दो ∼ बातन्दो
(२३) -इयारो	कठियारो
(२४) -ई	जोरावरी
	उन्मादी
	कुचमादी
(२५) -ईव	मराठीव
	रमणीव
	पूजनीव

(२६) –ईलो	रसीलो	वसीलो
	चादीलो	फुर्तीलो
	अडीलो	खातीलो
	आटीलो	हठीलो
	गटीलो	गर्वीलो
(२७) –ऊ	प्रतावू	अगटाऊ
	अड्डू	धपावू
	मारगू	कमावू
(२८) –ऊड़ियो	बलूड़ियो	गजूड़ियो
(२९) –एति	कामेति	रूपेति
	गामेति	धामेति
(३०) –एल	टणकेल	जणकेल
(३१) –एता~इता	मानेता ~ मानिता	
	जाणेता ~ जाणिता	
(३२) –एरो	नानेरो	दादेरो
	बानेरो	मामेरो
(३३) –एरण	भातेरण	कातेरण
	गीतेरण	पानेरण
	कमतेरण	
(३४) –क	फाटक	खाटक
	धाटक	पाटक
	दाटक	राटक
	बूटक	
(३५) –कार	[illegible]णकार	झणकार
	ततकार	टणकार
(३६) –कारो	रेकारो	हुकारो
	रणकारो	ततकारो
	चुसकारो	होकारो
(३७) –गरो	भारीगरो	

(३८) –गर	सौदागर	
	जादूगर	
(३९) –गारि	पुरस्गारि	
(४०) –गारो	छळगारो	धुतारगारो
	झगड़ागारो	चाळणगारो
	कामणगारो	छळागारो
(४१) –गी	मादगी	सादगी
	माजगी	बानगी
(४२) –गौ	नावगौ	
(४३) –चारो	मिनखीचारो	भाईचारो
(४४) –ची	काणची	खामची
	बदूकची	काळची
	घोळची	पोळची
	गोरची	
(४५) –त	वगत	छीजत
	बळत	रजत
	आगत	पाछत
	मागत ~ मगत	
(४६) –ता	विडरपता	
	क्रूरता	
	परवसता	
(४७) –ती	गिणती	मिळती
	विरती	बिणती
(४८) –तौ	नचीतौ	
(४९) –दार	चोबदार	चवडेदार
	चरवादार	कामदार
	चूडोदार	नकीबदार
(५०) –पणौ	लुगाईपणौ	बालपणौ
	टाबरपणौ	राजापणौ
	कामदारपणौ	गोलापणौ
	गधापणौ	भाईपणौ
	ठागपणौ	मिनखपणौ
	मळीचपणौ	अबूझपणौ
	दातारपणौ	गिवारपणौ
	बोदापणौ	नुगरापणौ

	मगसापणो	ओछापणो
	गेलापणो	लाटापणो
(५१) -पत	राखपत	
	रखापत	
(५२) -बायरो,-बायरी	लखणा बायरो	
	आसग बायरो	
	लाज बायरो	
	सिध्या बायरो	
	चेता बायरो	
(५३) -मा -मो	अपटमा	ढेलमो
	दपटमा	
(५४) -रत	गिनरत	
	गागरत	
(५५) -रोळ	भमरोळ	
(५६) -लो	छेहलो	ऊपरलो
	लारलो	साम्हेलो
	धकलो	मायायलो
(५७) -वड		गावड
		मावड
(५८) -वाड		पारवाड
(५९) -वाडो,-वाडी,-वाड		
	मरवनाडो	बोरावाडी
	सूगलीवाडो	
	रजवाडो	मगतवाड
	पातरवाडो	
	मारवाडो	
	मुफतवाडो	
	ऍठवाडो	
	वेंचवाडो	
(६०) -वान,-वती	समभवान	धनवती
	सम्पवान	सतवती
(६१) -वास, -वासी	घरवास	रानवासो
	रैवास	
	सहवास	
(६२) -व	गाटवो	
	पाटवो	

(६३) –हीण, -हीणौ	वस्तरहीण	पतहीणौ
	करमहीण	

नीचे आ. राजस्थानी के मुख्य पूर्व-प्रत्ययों की सूची प्रस्तुत करते हुए, उनसे निर्मित शब्दों के उदाहरण सूचित किये जा रहे हैं। इन पूर्व-प्रत्ययों से निर्मित शब्दों के उदाहरण देते समय उन उदाहरणों का विश्लेषण नहीं किया जायगा क्योंकि इस विवरण का उद्देश्य भाषा के इन तत्वों की स्थापना मात्र है।

(१) अ–	अकथ्य	अडोळौ	अजेज
	अमोलक	असैंधौ	अजाण
	अखूट	अनूम	अजोगतौ
	अन्याव	अभरोसौ	अपचौ
	अकरम	अलगाव	अवेळौ
(२) अध–	अधकालौ		अधगावळौ
	अधकीचरियौ		अधवरडौ
	अधरोगलौ		अधफोटौ
	अधमरियौ		अधवूड
	अधरातियौ		अधराणौ
(३) अण–	अणचीत्यौ		अणछक
	अणगिण		अणभणियौ
(४) अस्ट–	अस्टपौर		
(५) औं–	औंगण		
(६) का–	कावळ		
(७) कु–	कुलखणी		कुवेळा
	कुबाण		कुरूप
	कुमया		
(८) चौ–	चौफेर		
	चौरगौ		
(९) दु–	दुथनी		
	दुघडियौ		
(१०) दुर–	दुरगत		
	दुरगध		
(११) ना–	नाकुछ		
	नासमझी		
(१२) सं–	संजोग		
	सपूरण		
	सतोष		

(१३) नि-	निमर	निपूतो	
	निकट्ठो	निरोच्यो	
	निपगो	निसरा	
(१४) निर-	निरपख	निरमाही	
	निरलज्ज	निराकार	
(१५) निस-	निस्कारो	निसार	
(१६) नु-	नुगरो		
(१७) न-	नगम		
(१८) ब-	बखतो,	बभाव	बराजा
(१९) वि-	विजोग		
	विवाद		
	विणाग		
(२०) स-	सभाग		
(२१) सा-	सावळ		
(२२) सु-	सुलखणा	सपूत	सगरो
	सुरगी	सुजाग	
(२३) स-	सरीनो		

११.१४ अभिव्यंजक प्रत्ययों की अवस्थिति का उल्लेख इस व्याकरण में यत्र तत्र किया गया है। फिर भी भाषा में उक्त प्रत्ययों एवं और विशेष रूप से संज्ञाओं के साथ उनकी अवस्थिति से शब्दों के जो विविध रूप निर्मित होते हैं, उनका विवरण शब्द रचना के प्रकरण में करना अधिक समीचीन है।

अ। राजस्थानी में मुख्य रूप से चार अभिव्यंजक प्रत्यय हैं- -अक~क, -अल~ल, -अड़~ड़ तथा -अट~ट। इन चारों प्रत्ययों द्वारा वक्ता अपने सम्वादी (जिस व्यक्ति अथवा वस्तु इत्यादि के विषय में वह अपने श्रोता से बातचीत कर रहा है) की क्रमशः किसी क्रिया व्यापार में संलग्नता के प्रति सक्रियता उसकी (अर्थात् सम्वादी) की स्थल में सम्बन्धात्मकता उसके प्रति अपनी भावगुणात्मकता तथा उसकी क्षमता आदि के विषय में विविध दृष्टिकोणों की अभिव्यक्ति करता है।

इन प्रत्ययों की अवस्थिति पुरुष अथवा स्त्री प्रदत्त नामों के ह्रस्वीकृत अंशों के साथ, मानवेतर प्राणीवाचक संज्ञाओं तथा अप्राणीवाचक संज्ञाओं के साथ हो सकती है। इन प्रत्ययों की इन संज्ञाओं के साथ अवस्थिति का अनुकूलन उपादान है वक्ता की अपने सम्वादी के प्रति सवेगात्मक अभिवृत्ति की अभिव्यक्ति। अतः प्रत्ययों की अवस्थिति के लिए भाषावैज्ञानिक प्रतिबन्धों के अतिरिक्त विविध समाजशास्त्रीय शर्तों का होना भी अनिवार्य है और दोनों प्रकार के प्रतिबन्धों के साथ साथ ही वक्ता की स्वभावजन्य वृत्तियों में परिवर्तनशीलता भी एक सम्बन्धित तथ्य है।

उपरिलिखित चारों प्रत्ययों के विविध संयोजनों का निदर्शन करने के लिये नीचे व्यक्तिवाचक पुरुष अथवा स्त्री नाम मोन के साथ इनकी अवस्थिति से निर्मित रूपावली प्रस्तुत की जा रही है।

व्यक्तिवाचक पुरुष अथवा स्त्री नाम मोन की रूपावली

रूपावली संख्या		अभिव्यंजक रूप लिंग			
		सामान्य पुंल्लिंग	विशिष्ट पुल्लिंग	अल्पार्थक पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
(१)	(क)	मोन	मोनको	मोनकियो	मोनकी
	(ख)	—	मोनकडो	मोनकडियो	मोनकडी
	(ग)	—	मोनकलो	मोनकलियो	मोनकली
(२)	(क)	मोनल	मोनलो	मोनलियो	मोनली
	(ख)	—	मोनलको	मोनलकियो	मोनलकी
	(ग)	—	मोनलडो	मोनलडियो	मोनलडी
(३)	(क)	मोनड	मोनडो	मोनडियो	मोनडी
	(ख)	—	मोनडको	मोनडकियो	मोनडकी
	(ग)	—	मोनडलो	मोनडलियो	मोनडली
(४)	(क)	मोनट	मोनटो	मोनटियो	मोनटी
	(ख)	—	मोनटको	मोनटकियो	मोनटकी
	(ग)	—	मोनटडो	मोनटडियो	मोनटडी

नीचे मोन के अल्पार्थक रूप मोनू के भी विविध रूप प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(५)	(क)	मोनूड	मोनूडो	मोनूडियो	मोनूडी
	(ख)	—	मोनूडको	मोनूडकियो	मोनूडकी
	(ग)	—	मोनूडलो	मोनूडलियो	मोनूडली

व्यक्तिवाचक नामों के अभिव्यंजक रूपों के उपरिलिखित लिंग रूपों का पुरुष अथवा स्त्री व्यक्तियों से सहसम्बन्ध नहीं है। इस कथन का अभिप्राय यह है कि प्रत्येक पुंलिंग अथवा स्त्रीलिंग रूप की अवस्थिति पुरुष अथवा स्त्री व्यक्ति के लिये निर्बाध रूप से हो सकती है। इस तथ्य का स्पष्टीकरण करने के लिए नीचे एक ही रूप के स्त्री तथा पुरुष व्यक्तियों के समुद्देशन के वाक्यात्मक उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

मोनको (पुल्लिंग रूप) की पुरुष-समुद्देशक अवस्थिति (६)

(६) इती जेज लगाय दी, मोनको पछै काई करतो हो।

मोनको (पुल्लिंग रूप) की स्त्री समुद्देशक अवस्थिति (७)

(७) मोनको ठटो घर में दीसे बायरी निसरयो परो।

उपरोक्त अभिव्यजक प्रत्ययो की अवस्थिति जाति वाचक, मानवेतर प्राणीवाचक, वस्तु इत्यादि वाचक सज्ञाओ तथा विशेषणो के साथ भी होती है। इन कोटियो की समस्त सज्ञाओ तथा विशेषणो से निर्मित समस्त रूप भाषा मे उपलब्ध नही होते, और साथ ही साथ रूप निर्माण की प्रक्रिया इतनी अनियमित है कि इसके विषय मे सामान्य नियमो का कथन अति दुसाध्य कार्य है। अत इनके कतिपय उदाहरण देकर ही सतोष पडता है।

(क) जातिवाचक, मानवेतर प्राणीवाचक तथा वस्तु इत्यादि वाचक सज्ञाओ की उपलब्ध अभिव्यजक रूपावलियो के उदाहरण।

सज्ञा		उपलब्ध अभिव्यजक रूप
जातिवाचक	चोर	चारको, चोरडो चौरटो, चोरडियो चोरटियो, चोरकी, चोरडी, चोरटी।
मानवेतर प्राणी वाचक	मिन्नी	मिनको, मिनकियो, मिनकी, मिनकड, मिनकडो, मिनकडियो, मिनकडी, मिनलो, मिनलियो, मिनली, मिनलडी, मिनड, मिनडो, मिनडियो, मिनडी, मिनडक, मिनडको, मिनडकी, मिनूड, मिनूडो, मिनूडियो, मिनुडो।
वस्तु इत्यादि वाचक	घरटी	घरटलो घरटलियो घरटली, घरटलको, घरटलडो घरटड घरटडो घरटडी, घरटूलडो।

(ख) कतिपय विशेषणो की उपलब्ध अभिव्यजक रूपावलियो के उदाहरण।

खारो	खारोडो, खारोडको खारलो
मोटो	मोटोडो, मोटोडको मोटलो
नवो	नवोडो, नवोडको
अेकलो	अेकलडो
असली	असलीडियो
घरमो	घरमीडो
रोगी	रोगीडो
पैलो	पैलोडो, पैलको, पैलोडको, पैलियो, पैलोडियो, पैलकियो, पैलोडकियो, पैली, पैलोडो, पैलकी, पैलोडकी
म्हारो	म्हारोडो, म्हारोडको, म्हारडलो

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या (ऊपर से)	अशुद्धि	शुद्ध पाठ
१२	१	कौ	को
१२	४	अधारित	आधारित
१२	१७	आधियौ	आदियौ
१३	२१	काचरौ	काचर
१४	३	दातलियौ	दातळियौ
२६	२७	सभैं-पाडौ	भैंस-पाडौ
२७	८	समिक्ष	समिश्र
२९	९	कडोरदान	कटोरदान
३२	८	(=$स_2$ का $स_2$)	(=$स_1$ का $स_2$)
३२	१०	$म_2$-घटको की	$स_1$-घटको की
सर्वत्र	—	आमेडित	आम्रेडित
३५	१४	वादरा	चादरा
४८	१८	नही	नीं
५०	२२	सेठावू	सेढावू
५३	१५	(५,४)	(५ ४)
५५	१	कै के	कै
५७	१३	शून्य के	शून्य के लिए
६२	२४	सौकर्म	सौकर्य
६४	७	विकल्प	वैकल्पिक
७४	२२	उछेल्न	उद्वेलन
७६	१	उर	डर
७६	६	वस्तुत	वस्तुत
८०	२	मुक्त	युक्त
८२	२०	समश्रकोटि	समिश्रकोटि
८८	३	माम	माय
९०	१९	क्रियाओ	इन क्रियाओं
१०८	१५	स्याळ-स्यालणी	स्याळ-स्याळणी
१०९	२८	नियात	निपात
११०	८	पारौ	परौ

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या (ऊपर से)	अशुद्धि	शुद्ध पाठ
१११	१६	अंटणी	अंटणो
११२	७	चिरावणी	चिरवावणी
११२	१०	लुटवावणी	लुटावणी
११२	२७	उठावणी	उठाणणी
११२	२८	उठवावणी	उठवाणणी
११२	३०	बेंठवणाणी	बेंठवावणी
१२१	१८	१५६	(१५६)
१२३	१	एक	एक बात
१२४	४	क्रिवा–	क्रिया–
१२४	२७	केवण	कंवण
१२५	२६	लिखती	लिखतो
१२६	१६	थका	थकाई
१२७	२१	अनिवार्य	अविकार्य
१२८	१८	अविमित	अवसित
१२६	१७	करके, न	न करके,
१३०	७	पन	पण
१३०	१२	अन्तर्निविण	अन्तर्निविष्ट
१३०	१६	नियात	निपात
१३०	२६	अभिरचना	अभिरचना का
१४७	१	म्हारौ	म्हाटो
१४७	२	म्हारौ	म्हाटो
१४७	३	८५	८४
१४८	७	पूणगो	पूछणो
१४६	१५	सळे	भळे
१६६	१६, १८	पयाळ	पयाळ
१७१	६	नें	न
१७४	२२	होना	होता
१७६	१५	ख)	(ख)
१७७	२६	नाव	गाव
१८३	२६	च्वारू	च्यारू
१८४	२५	उत्तो उपवाक्य	उत्ती-उपवाक्य में
१६१	४	रूपो के	रूपो के साथ